

पुस्तक

चन्दन की सौरभ

संपादिका

साध्वी चन्दनवाला, जैन सिद्धान्ताचार्य

आवृत्ति

प्रथम मार्च १९६९

प्रकाशक

सम्मति ज्ञानपीठ

लोहामटो, आगरा-२

मूल्य

चार रुपए पचास पैसे

मुद्रण

रामनारायण मेढगवाल

धो रिप्पु प्रिंटिङ्ग प्रेस

राजा की गद्दी, आगरा-२

प्रस्तुत पुस्तक 'चदन की सौरभ' प्राचीन जैनचरित्र साहित्य की एक महत्वपूर्ण संपादन है।

राजस्थानी भाषा के चरित साहित्य की अपनी एक गौरवपूर्ण परंपरा रही है, उसका स्वारस्य और माधुर्य आज भी जीवित है, उगकी प्रेरकता और श्रेष्ठता का मूल्य वर्तमान युग में भी किसी प्रकार कम नहीं हुआ है। प्रस्तुत संपादन राजस्थानी भाषा के प्राचीन कवि-मनीषियों की कृतियों का सरस संपादन है, जो भाषा, भाव और उपादेयता की दृष्टि से एक अनूठापन लिए हुए है।

समिति ज्ञानपीठ, जहाँ साहित्य के नवनिर्माण की दिशा में अपनी नवीन उपलब्धियों के साथ अग्रसर हो रहा है, वहाँ प्राचीन साहित्य के संपादन, अनुसंधान व प्रकाशन की दिशा में भी सतत प्रयत्नशील है।

प्राचीन कृतियों का अनुसंधान एवं वर्गीकरण करके प्रस्तुत करने का यह श्रम-साध्य कार्य महासती श्री शीलकुंवर जी की शिष्या साध्वी चदनबालाजी ने किया है। इस संपादन में उनकी साहित्यिक सुशुचि एवं ऐतिहासिक कृतियों के प्रति अनुशीलनात्मक अनुराग परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति हमारे जिज्ञासु पाठकों को प्रिय लगेगी, विशेषकर उनको, जिनकी कि मातृभाषा राजस्थानी है और जिन्हें प्राचीन रास एवं चौदालिया से विशेष लगाव है। इसके प्रकाशन में राजस्थान के कुछ विशेष महानुभावों ने अथ सहयोग करके अपनी उदारता का परिचय दिया है, जिन्हें हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। पुस्तक की पाठ्यलिपि कहीं-कहीं अस्पष्ट व अशुद्ध होने के कारण विदुषी महासती श्री सुमतिकुंवर जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर शुद्ध करने की कृपा की उसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं। तथा पुस्तक की कलात्मक एवं शुद्ध रूप में मुद्रित कराने में हमारे कायकता श्रीचंद मुराना 'सरस' न मनोयोग पूर्वक जो श्रम किया है उसके लिए विशेष प्रशंसा के साथ ही धन्यवाद।

आशा है यह प्रकाशन पाठकों की सुशुचि को परिपुष्ट करेगा।

भद्री

समिति ज्ञानपीठ

- ११००) शाह हस्तीमल जी, जेठमल जी जिनाणी, गढसिवाना
 ५००) शाह सुखराज जी छोगालाल जी जिनाणी, गढसिवाना
 ५००) शाह अक्षवचन्द जी पारसमल जी जिनाणी,
 -सुपुत्र श्री मिश्रीलाल जी जिनाणी, गढसिवाना
 ५००) शाह धीगढमल जी मुलतानमल जी वानुगा, गढसिवाना
 ४००) श्रीमती प्यारीवाई के सुपुत्र वादरमल जी अमोचद जी
 जवेरीलाल जी वागरेचा, गढसिवाना

षदन की सौरभ के प्रवाशन मे उपरोक्त महानुभावो ने
 अर्थ सहयोग दिया, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद !



सम्पादिका की कलम से

भारतीय इतिहास के निर्माण में राजस्थान की अपनी एक विशिष्ट देन रही है। इस मूखण्ड का अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सभी दृष्टियों से इसका महत्त्व अशुष्क है। जहाँ वह रणबादुरे वीर यादवों की श्रीढाभूमि है, वहाँ वह सारस्वतों की पुण्यभूमि भी है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स टाड ने लिखा है—'राजस्थान में एक भी छोटी रियासत ऐसी नहीं है जिसमें घर्मोपोली जैसी युद्धभूमि न हो और कदाचित् ही कोई ऐसा नगर हो, जिसमें नियोनिडास जैसा योद्धा और होमर जैसा कवि उत्पन्न नहीं हुआ हो।' यहाँ के साहित्यकार लेखनों के साथ तलवार के भी घनी रहे हैं।

श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री रामनिवान हारीत ने राजस्थानी साहित्य का वर्गीकरण दो भागों में किया है^२—

(१) ढिगल साहित्य

(२) साधारण बोलचाल का राजस्थानी साहित्य

श्री सीताराम नालस ने राजस्थानी साहित्य को चार भागों में विभक्त किया है^३—

१ जैनसाहित्य

२ चारणसाहित्य

३ भक्तिसाहित्य

४ लोकसाहित्य

१ दो एनल्स एण्ड एंटिक्विटीज आफ राजस्थान,

२ राजस्थानी रा दूहा भाग १ प्रस्तावना पृ० ४२

३ राजस्थानी शब्दकोष, प्रस्तावना पृ० ८४

क्या बाध्य के अतर्गत आदर्श व्यक्तियों के पवित्र चरित्र आते हैं। चरित्र के माध्यम से दान, शील, तप और भावना आदि सद्गुणों को ग्रहण करने पर बल दिया जाता है, इन गुणों को ग्रहण करने से जीवन कितना पवित्र, निम्न बनता है, यह चरित्र के पात्र द्वारा प्रष्ट किया जाता है और शोध, मान, माया और लोभ आदि दुर्गुणों से जीवन का कितना अधः पतन होता है, यह बताया जाता है। कहा भी है —

दान, शील तप भावना, चार चरित बहेस ।

शोध मान माया बसी, लोभादिक पमणेत ॥^१

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन जैन मुनियों द्वारा रचित विविध चरित्रों का सङ्कलन है। ये चरित्र भाव भाषा और शैली की दृष्टि से प्राचीन हैं। इनमें सिनेमा की राग रागिणियों की तरह चमक-दमक का अभाव है, तथापि जहाँ हृदय का प्रश्न है, भावनाओं का सवाल है, वहाँ प्राचीन होते हुए भी चिरनवीन हैं। आज भी इनमें हृदय को झकझोरने की अद्भुत शक्ति है। जब पाठक तमस होकर बैठे गाता है, तो श्रोता भूम उठते हैं। उनमें वैराग्य की मध्य भावना भगवाइयाँ लेने लगती हैं।

मुझे स्मरण है—इन चरित्रों को एक साथ प्रकाश में लाने की इच्छा मेरी दाद गुरुणी जी परमविदुषी शास्त्रमूर्ति श्री धूलखुवर जी म०, एवं स्थविर-पद विभूषित स्व० माता जी श्री गभूकुवर जी महाराज के अतर्मानस में उत्पन्न हुई थी, उन्होंने सप्रह भी किया था, पर किन्हीं कारणों से वे उन्हें मूल रूप प्रदान नहीं कर सकी।

सन् १९६८ का वर्षावास परम श्रद्धेय गुरुदेव राजस्थानकेसरी प्रसिद्ध-वक्ता श्री पुष्कर मुनि जी महाराज की आज्ञा से श्रद्धेया सद्गुरुणी जी शीत-वृत्त जी महाराज ठा० १ ने गढ़सिवाना किया। गुरुणी जी महाराज ने एक दिन वार्तालाप के प्रसंग में मुझे कहा कि स्वर्गीया सद्गुरुणी जी महाराज व माता जी म० की इच्छा को पूर्ण करना है। गुरुणी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर मैं चरित्रों के सङ्कलन करने में लग गई। सद्गुरुणी जी महाराज का दिसादशन व सेवामूर्ति मातृस्वरूपा सायखुवर जी महाराज की प्रबल प्रेरणा से मैं प्रस्तुत कार्य सम्पन्न कर सकी। यदि सद्गुरुणी जी महाराज व

सागर हुआ वर जी महाराज की अपार कृपा दृष्टि नहीं होती तो यह कार्य इतना शीघ्र पूर्ण नहीं हो सकता था । कितने ही चरित्र गुरुणी जी महाराज व सागर हुआ वर जी महाराज से सुनकर लिये हैं और कितने ही चरित्र प्राचीन पत्रों के आधार से लिये हैं । अतः इनमें कहीं-कहीं पर भाषा आदि की दृष्टि से स्वतन्त्रता है परन्तु शुद्ध प्रति के अभाव में मन से परिवर्तन करना योग्य नहीं समझा गया अतः उन्हें उसी प्रकार रखने दिया गया है ।

पाण्डुनिधि तैयार करने के पञ्चाशत् श्रद्धांश सद्गुरुदेव श्री पुनर मुनि जी महाराज ने समयाभाव होने पर भी आत्मीय भाव से प्रारम्भ से प्रान्त तक अवलोकन कर अनेक स्थानों पर परिभाजन किया, अतः सद्गुरुदेव का मैं हृदय में आभार मानती हूँ । गांधी जी मेरे उपस्थित गुरु आता प० श्री हीरामुनि जी महाराज के प्रथम प्रयाग से दसवा प्रयाग सुवर्णिष्ठ साहित्य-संस्था समिति में बसि गये हैं । अतः मैं प० श्री हीरामुनि जी महाराज की कृपा-दृष्टि को भी भूल नहीं सकती । मेरे स्नेह मेरे आग्रह को सम्मान देकर श्री देवेन्द्र मुनि जी, गांधी, गांधीपरान ने प्रायः पर मानीय मुत्सुकन निगरान जो मुझे अनुदीर्घ किया है उसे व्यर्थ करने के लिए उपयुक्त बातें मेरे पास नहीं हैं ।

अतः मैं उन श्रद्धालु भावकों को आता गुरु भक्ति को भी विवृत नहीं कर सकती, जिसके उदार अर्थ साधनों से ही प्रत्युत प्रायः प्रकाशित हो रहा है और महाशयजी श्री सोमनाथ कुंवर जी, श्री गुरु कुंवरजी, गुरु कुंवरजी, गुरु कुंवर जी, दया कुंवरजी, दया कुंवर जी, पटना जी तथा गुरु कुंवर जी व लेखाजी अमृति गणेशजी का स्नेहांग सद्गुरुदेव भी महाशयजी प्रायः पर बसता रहेगा । उन सभी का मैं हृदय में आभार प्रार्थना करती हूँ जिसका शान व अभाव का मैं मुझे साधनों दिया है ।

श्री २० अक्षयजी अक्षयजी

गुरुदेवजी

गुरुदेवजी

गुरुदेवजी

भारतीय साहित्यरूपी सुमनवाटिका को सजाने, सवारने वा जितना कार्य जैन मनीषियों ने किया है, सम्य है, उतना अथ किसी सम्प्रदाय विशेष के विना ने नहीं किया। उन्होंने ज्ञान विज्ञान, धर्म और दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्र में जो रंग विरंग चटकीले फूल खिलाने हैं, वे अपने असौम्य सौंदर्य और सौरभ से जन-जन के मन को आकर्षित करते रहे हैं। जैन साहित्य जितना प्रचुर है, उतना ही प्राचीन भी। जितना परिमार्जित है उतना ही विषय-नैविध्यपूर्ण भी, और जितना प्रौढ़ है उतना ही विविध शैली सम्पन्न भी। इसमें तनिकमात्र भी सदाय नहीं कि जब कभी भी निष्पक्ष दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का इतिहास लिखा जाएगा उसका मूल आधार जैन साहित्य ही होगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे आलोचक साधन सामग्री के अभाव में यदि प्रस्तुत-साहित्य को 'धार्मिक नोट्स मात्र कहकर उपेक्षित करते हैं तो वह साहित्य को कमी नहीं, पर अन्वेषणा को ही कमी कही जाएगी, किन्तु वर्तमान अन्वेषणा के तथ्यों के आधार से यह मानना ही पड़ेगा कि भारतीय चिंतन के क्षेत्र में जैन साहित्य का स्थान विशिष्ट है जितना गौरव बुद्ध साहित्य का है उतना ही महत्त्व धर्म सम्प्रदाय के पास सुरक्षित चरित्र-साहित्य राशि का है।

जैन साहित्यकार आध्यात्मिक परम्परा के सृजक रहे हैं। आत्मलक्ष्यी सत्सृष्टि में गहरी आस्था रखने के बावजूद भी वे देश, काल एवं सज्जय परिस्थितियों के प्रति अनपेक्ष नहीं रहे हैं, उनकी ऐतिहासिक दृष्टि हमेशा खुली रही है। उनका अध्यात्मवाद वैयक्तिक होकर के भी जन-जन के कल्याण की मंगलमय भावना से ओत-प्रोत रहा है। यही कारण है कि उनके द्वारा सम्प्रदाय मूलक साहित्य का निर्माण करने पर भी उसमें सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथ्य इतने अधिक हैं कि वैज्ञानिक पद्धति से उनका सर्वेक्षण किया जाए तो भारतीय इतिहास के कई तिमिराच्छन्न पक्ष आलोकित हो उठेंगे।

जैन लेखकों ने मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ ही विभिन्न ग्रंथों पर सारगम्य एव पांडित्यपूर्ण टीकाएँ लिखकर साहित्य की अविस्मरणीय सेवा व सरक्षा की है, यह कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकती। समीक्षकों ने जैन साहित्य को पिष्टपेषण से पूर्ण माना है, यह सत्य है कि औपदेशिक वृत्ति के कारण जैन साहित्य में विषयान्तर से परम्परागत बातों का विवेचन-विवर्तन हुआ है, किन्तु सम्पूर्ण जैन साहित्य में पिष्टपेषण नहीं है। और जो पिष्टपेषण हुआ है वह बेचन सोकपदा की दृष्टि से ही नहीं, अपितु भाषा भास की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। जैन लेखकों ने भारतीय चिंतन के नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, भाषाशास्त्री की जन भाषा की समुचित शैली में ढालकर, पिरोकर, सवारकर राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तर को उन्नत, समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य परम्परा को राष्ट्र के रूप-रस से निःशक्तकर भाषा के बहते प्रवाह में अवगाहन कराना, अभिव्यक्ति के मन-मन्ये च मेघ छानित किये।

विभिन्न जैन परम्परा के प्रष्ट्यवतिमागम्य मुनिवरों ने जो साहित्य की अपूर्व सेवा की है, उगवा सूर्यों सता-जाना सेने का मत तो यही अवसर ही है और न अवकाश ही, यही तो प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में ही संक्षेप में कुछ विचार अभिव्यक्ति किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ में एक ही कवि की रचनाओं का संग्रह नहीं किया गया है, अतः विभिन्न परम्परा के मुनिवरों की रचनाओं का सुन्दर सङ्कलन-जाकलन किया गया है। प्रत्येक कवि के स्वयं के स्वयं का पद्यानि चयन से मार रहा है। प्रत्येक कवि आत्मा की अगु मे खुद की ओर, तमगु मे ज्याति की ओर, एव मुन्दु मे अवस्था की ओर से जाने की अपूर्व क्षमता रखता है।

अन्तर्गत अध्याय के कवि में राजेश्वरी के मुह मे रखनेमि का कटाहने हार गम्भीरार का निराला कर रहे हैं —

समस्त भोजन छोड़ो हा, मुनिवर ।
 गुणिना को जग साध ।
 देहोदर या गुण देतने हो मुनिवर ।
 मरत न मरे कब ।
 शीर साध भोजन करो हा मुनिवर
 कविता कविता ।

वमिया सी वाछा करे हो, मुनिवर

काग कुत्ता के नीच ॥

राजोमती के हृदयग्राही उपदेश से रपनेमि पुन साधना के मार्ग में स्थिर हो जाते हैं। उनको हृत्त श्री के तार भनमना उठते हैं कि अयि राजमती ! तूने मुझे नरक में गिरने हुए को बचा लिया, धन्य है तुझे—

नरक पड़ता राखियो हे राजुल,
इम बोल्यो रहनेम ।

मुझने धिरता कर दियो हे राजुल,
बचन अकुश गज जेम ॥

महारानी देवकी के चरित्राङ्कन में कवि ने वात्सल्य रस के सयोग के चित्र अत्यन्त तमयता के साथ प्रवृत्त किये हैं। महारानी देवकी के छहों पुत्र देवता के उपनाम से मृत घोषित हो जाते हैं। श्री कृष्ण का तालन-पालन भी वह नहीं कर पाई। जब उसे भगवान् नेमिनाथ के द्वारा यह सूचना मिलती है कि ये छहों मुनि तुम्हारे ही पुत्र हैं, तो उसका मातृत्व वरसाती नदी की तरह उमड़ पड़ता है। वह उन छहों मुनिवरो के पास जाती है। देखिए कवि श्री जयमल जी के शब्दों में सयोग वात्सल्य का सफल चित्र

तडाक से तूटी कस कचू तणी रे,
थण रे तो छूटी दूधाधार रे ।

हिवडा माहे हर्ष मावे नही रे
जाणे के मिलियो मुझ करता रे ॥

रोम रोम विकस्या, तन-मन ऊनस्या रे,
नयणे तो छूटी आसू धार रे
विलिया तो बाहा माहे मावे नही रे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हाथ रे ॥

प्रस्तुत चरित्र में वियोग वात्सल्य का वर्णन भी कम सुन्दर नहीं है। माता देवकी के हृदय की याह वही माता पा सकती है जिसने सात पुत्रों को पैदा करके भी मातृत्व का सुख नहीं लिया। उसके हृदय में शल्य की तरह यह बात चुभ रही है कि उसने अपने प्यारे बालों को हाथ पकड़कर चलाया नहीं, रोते विलसते हुआ को बटलाया नहीं। वह अपने प्यारे पुत्र श्री कृष्ण से कहती है —

जैन लेखकों ने मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ ही विभिन्न ग्रन्थों पर सारगर्भित एवं पाठित्यपूर्ण टीकाएँ लिखकर साहित्य की अविस्मरणीय सेवा व सरसा की है, वह कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकती। समीक्षकों ने जैन साहित्य को पिष्टपेषण से पूर्ण माना है, यह सत्य है कि औपदेशिक वृत्ति के कारण जैन साहित्य में विषयांतर से परम्परागत बातों का विवेचन-विश्लेषण हुआ है, किन्तु सम्पूर्ण जैन साहित्य में पिष्टपेषण नहीं है। और जो पिष्टपेषण हुआ है वह केवल लोकपक्ष की दृष्टि से ही नहीं, अपितु भाषा शास्त्र की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। जैन लेखकों ने भारतीय चिंतन के नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, मायताशा को जन भाषा की समुचित शैली में ढालकर, पिरोकर, सवारकर राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तर को उन्नत, समुन्नत किया। उन्होंने साहित्य परम्परा को संस्कृत के कूप-जल से निकालकर भाषा के बहते प्रवाह में अवगाहन कराया, अभिव्यक्ति के नये-नये उन्मेष चोत्तित किये।

विभिन्न जैन परम्परा के प्रकृष्टप्रतिभासम्पन्न मुनिवरों ने जो साहित्य की अपूर्व सेवा की है, उसका संपूर्ण लेखा-जोखा लेने का न तो यहाँ अवसर ही है और न अवकाश ही, यहाँ तो प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में ही संक्षेप में कुछ विचार अभिव्यक्त किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में एक ही कवि की रचनाओं का संग्रह नहीं किया गया है, अपितु विभिन्न परम्परा के मुनिवरा की रचनाओं का सुंदर सकलन-आकलन किया गया है। प्रत्येक चरित्र में त्याग बैराग्य का पयोषि चखलें मार रहा है। प्रत्येक चरित्र आत्मा का अस्त से सत् की ओर, तमस् से ज्ञाति की ओर, एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखता है।

भगवद्गीता नमिनाथ के चरित्र में राजीमती के मुह से रघुनेमि का पञ्चारत्न रूप छाम्पावार का निरूपण कर रहे हैं —

धमृत भोजन छोड़ने हो, मुनियर ।
 सुखिया को गुण साथ ।
 देवलोच रा गुण देगने हो मुनियर ।
 नरख न पाये दाय ॥
 गौर साठ भोजन करो हो मुनियर,
 गणियो कदमकीच ।

वमिया सी वाछा करे हो, मुनिवर
काग कुत्ता के नीच ॥

राजोमती के हृदयप्राही उपदेग से रचनेमि पुन साधना के मार्ग में स्थिर हो जाते हैं। उनको हस्त श्री के तार मनमना उठते हैं कि अयि राजमती ! तूने मुझे नरक में गिरने द्रष्टे को बचा लिया, धन्य है तुझे—

नरक पढता राखियो हे राजुल,
इम बोल्यो रहनेम ।
मुझने थिरता कर दियो हे राजुल,
वचन अकुश गज जेम ॥

महारानी देवकी के चरित्राङ्कन में कवि ने वात्सल्य रस के सयोग के चित्र अत्यन्त तामयता के साथ अंकित किये हैं। महारानी देवकी के छहों पुत्र देवता के उपक्रम से मृत घोषित हो जाते हैं। श्री कृष्ण का लालन-पालन भी यह नहीं कर पाई। जब उसे भगवान् नेमिनाथ के द्वारा यह सूचना मिलती है कि ये छहों मुनि तुम्हारे ही पुत्र हैं, तो उसका मातृत्व वरसाती नदी की तरह उमड़ पड़ता है। वह उन छहों मुनिवरों के पास जाती है। देखिए कवि श्री जयमल्ल जी के शब्दों में सयोग वात्सल्य का सफल चित्र

तडाक से तूटी कस कचू तणी रे,
थरा रे तो छूटी दूधाधार रे !
हिवडा माहे हर्ष मावे नही रे
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥

रोम रोम विकस्या तन-मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आसू धार रे
विलिया तो बाहा माहे मावे नही रे,
जाणे तूट्यो मोल्या रो हार रे ॥

प्रस्तुत चरित्र में वियोग वात्सल्य का वर्णन भी कम सुन्दर नहीं है। माता देवकी के हृदय की याह वही माता पा सकती हैं जिसने सात पुत्रों का पैदा करके भी मातृत्व का सुख नहीं लिया। उसके हृदय में शल्य की तरह यह बात चुभ रही है कि उसने अपने प्यारे बालों को हाथ पकड़कर चलाया नहीं, रोते बिलखते हुयों को धुनाया नहीं। वह अपने प्यारे पुत्र श्री कृष्ण से कहती है —

हू तुज आगल, सू कर्हू कन्हैया,

बीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल ।

दुखणी जग में छे घणी कन्हैया,

पिए घणी दुखणी थारी मात रे

जाया मैं तुम सारिखा, कन्हैया,

एकण नाले सात रे ।

एकण ने हुलरायो नही, कन्हैया,

गोद न खिलायो सण मात रे ॥

रोवतो मैं राख्यो नही, कन्हैया,

पालणिये पोढाय रे ।

हालरियो देवा तणो, कन्हैया,

म्हारे हूस रही मन माय रे ॥

भोडणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,

टोपो न दीधी माय रे ।

काजल पिए सायों नही, कन्हैया,

फदिया न दीधा हाथ रे ॥

सब तो यह है महाकवि सूरदास जो वात्सल्य रस के सम्राट् माने जाते हैं वे भी इस प्रकार का चित्र प्रस्तुत नहीं कर सके हैं ।

भगवान् भैमिनाथ के पावन प्रयत्न को अवण कर गजमुकुमाल रायस के कटकाकीर्ण महामाग पर बढ़ना चाहते हैं । माता देवकी न ज्यों ही यह बात सुनी त्योंही वह भूविद्ध होकर जमीन पर दुनव पड़ती है —

बचन अपूरव एह, पुत्र ना सामली-री माई ।

घणी भूद्धा-गति साय, धमके धरणी छली ॥

सतकी हाथा री चूड, माये रा केश बीसर्पा री माई ।

भोडण हुयो दूर, धानिं धामू शर्पा ॥

मेघकुमार के चरित्र में माता धारणी का मेघकुमार नहीं है कि मां भौतिक पदार्थ के गुण मध्ये गुण नहीं है, य आकाश में उमड़-भुमड़ कर भाते हुए बादलों की तरह क्षणिक है । कवि कहता है —

ससार ना गुन सट् नाथा,

इणुमोर धर्यां जाले नाथा ।

भोग विषय में रह्या कलीजे,

मैं तो जाणी ए काची माँया,

विललावे जिम वादल छाया,

ऐसी जाणी कहो कुण रीक्षे ॥

इस प्रकार चरित-न्यायो में कतिपय स्थल अत्यन्त मार्मिक बन पड़े हैं ।

भृगुपुरोहित के चरित्र में जब भृगुपुरोहित अपनी विराट् सम्पत्ति का कर श्रमण बनने के लिए प्रस्तुत होता है तब राजा उसकी सम्पत्ति लेने के लिए उद्यत होता है । इस प्रसंग पर महारानी कमलावती का दयोघन नितांत ममस्पर्शी है । वह कहती है—राजन् ! एक ग्राहण के द्वारा रित्यक्त सम्पत्ति को आप ग्रहण न करें । राजा का भाग्य बड़ा होता है । च्छद्वष्ट आहार की इच्छा तो बीवा और कुत्ता ही करता है, तुम्हें प्रस्तुत त्ति शोभा नहीं देती है, यह बाय लज्जास्पद है । सारे विश्व की विभूति भी हो जाय तो भी तृष्णा शांत नहीं हो सकती । एक दिन इस विराट को छोड़कर एकाकी ही प्रस्थित होना पडगा अतः वीतराग धर्म को करो, वही त्राण और कल्याण का माग है । कवि की काव्यमयी वाणी

सीमल महाराजा, ग्राहण छाडी हो,

रिध मती आदरो ।

राजा का मोटा भाग,

वमिया आहार की हो ।

वाछा

कुण करे

करे छे कुतरो ने काग ॥

काग ने कुत्ता सरीखा

किमे हवो, नही प्रससवा जोग ॥

भृगुपुरोहित ऋष तज नीसयों,

थे जाणो आसी मारे भोग ।

एकदिन मरणो हो रोजोजी, येंदा तेंदा,

छोडो नी काम विशेष ॥

बीजो तो तारण जर्ग मे को नही,

सारे जिरांजी रौ धर्म एक ॥

रानी राजा से आगे चलकर कहती है कि एक तोते को रत्न-जडित पिंजरे में भले ही बंद कर-दिया जाय, पर वह उसे बधन मानता है, वैसे ही राजमहलों को मैं बधन मानती हूँ। यहाँ मुझे तनिक मात्र भी आनन्द की उपसन्धि नहीं हो रही है, अतः मैं समय को ग्रहण करना चाहती हूँ, वह राजा से नम्र निवेदन करती है —

‘रत्न जडित हो राजा जी पिंजरो,
सुबो तो जाणे है फद ।
इसडी परण हू थारा राज, मे,
रति न पाऊ आणद ॥
स्नेहरूपिया ताता तोडने,
ओर बधन सू रह सू दूर ।
विरक्त थई ने सजम में ग्रहू,
ये भी परण होय जाओ सूद ॥

‘मुनि का वेश धारण करने भी यदि मन में श्रमणत्व नहीं है, तो वह वेश भी कलकल्प है। आपादभूतिजनगार के चरित्र में आभूषणों से लदी हुई साध्वी को निहार कर आचाय कहते हैं —

सुण महासती, या लखणासु जैन धर्म अति लाजे ।
गुण, नहीं रती, लोका माहे निगंन्यणी यू बाजे ॥
यू चाले छे चाला करती,
शुद्ध ईर्यासिमिति नहीं घरती ।
लोक लाज सु नहीं डरती,
यू लावे गोचरी झरझरती ॥

बपेटसहित साधना—साधना नहीं, अपितु विराधना है। वह आत्म-बंधना है। अनंतकाल से आत्मा इस प्रकार साधना करता रहा, किन्तु जीवमोक्षान नहीं हुआ, अतः कवि कह रहा है —

बपेट त्रिधा से नहीं सरिया,
बाज आपारी पेट भरिया ।
इसा सांग तो यदु भरिया,
महिमा बारण करि माया ॥

भोला नर ने भरमाया,

स्यू कपट घरम प्रभु फरमाया ।

इस प्रकार चन्दन की सौरभ की सभी रचनाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं प्रत्येक पक्ष को समुन्नत बनाने की पुनीत प्रेरणा प्रदान करती हैं । काव्य के भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से यह समग्र मूल्यवान है । राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में चन्दन की सौरभ अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी, ऐसी आशा है ।

मैं परम विदुषी महासती श्री शीलकुँवर जी की मुशिष्या महासती चन्दन-वाला जी को हृदय से धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने प्राचीन जैन कवियों के चरित्रों का सुन्दर सकलन किया है । सकलन सुन्दर है, बालक से लेकर बड़ा सब के लिए उपयोगी है । सम्पादन, आकलन अपने आप में एक कला है, आनेवाला युग प्रस्तुत सम्पादन का और महासती चन्दनवाला जी की प्राचीन चरित्रों के प्रति गहरी निष्ठा का समादर करेगा । आम्स्यतर सुन्दरता के साथ पुस्तक की बाह्य सुन्दरता भी चित्ताकपक है । मैं आशा करता हूँ महासती चन्दनवाला जी भविष्य में मौलिक साहित्य का निर्माण कर जैन साहित्य की श्रोवृद्धि कर यशस्वी बनें ।

जैन स्थानक रविद्वार पेठ
नासिक सिटी, फरवरी १९६६ }

—देवेन्द्रभुनि, शास्त्री
साहित्यरत्न

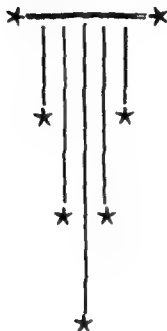
चन्दन की सौरभ

विषयानुक्रम

१	भगवान नेमिनाथ	१
२	महारानी देवकी	२१
३	मेघकुमार	६२
४	स्मदक ऋषि	८५
५	भृगु पुरोहित	१००
६	महावीर स्वामी का चौडालिया	११४
७	रहनेमि अणगार	१२१
८	पावरध्या अणगार	१२६
९	आपादभूति अणगार	१३५
१०	जवमुनि	१४६
११	आपाद भूति	१५६
१२	आभरिया मुनि	१६७
१३	रोहाकुमार	१७२
१४	जुठल श्रावक	१८३
१५	आनद श्रावक	१८६
१६	आनदादि श्रावक	१८८
१७	कामदेव	२०७
१८	रेवतो श्राविका	२१४
१९	महारानी रोहिणी	२१८
२०	विजयकुमार	२२३
२१	सुमति कुमति का चौडालिया	२२६
२२	बियालीस दोष	२३६
२३	भरत चक्रवर्ती	२४०

२४ अरणक मुनि	२४६
२५ सनत्कुमार चक्रवर्ती	२४६
२६ तिलोकसुन्दरी चरित्र	२४४
२७ मरुदेवी	२६६
२८ महारानी चेलना	२७५
२९ सम्राजि	२८२
३० सदकजी	२८२
३१ भैरव्य मुनि	३०२
३२ अर्जुन मासी	३१०
३३ प्रत्येकबुद्ध	३१६
३४ विनयाराधना	३२४
३५ चार धर्म का सवाद	३३४
३६ दशवर्कालिक	३४३
३७ आत्म निदा	३५३
३८ महासती सोहनबुद्ध जी	३६४

चन्दन की सौरभ



चन्दन की सौरभ से मानव -

मन का हो कण-कण सुस्मित ।

सात्विक सुपमा से साधक का

जीवन हो महिमा-मदित ॥



ढाल १

राग—करो दान शील ने तप

१— 'शख' राजा ने 'यशोमती' रानी,
जिए साघा ने वंरायो दाखारो पानी ।
हुवा नेम कवर राजुल नारो,
सुध-दान थकी खेवो पारो ॥

२— 'अपराजित' थी चव आया,
ज्यारी दिप दिप दीप रही काया ।
जस फेल्यो सहू ससारो,
सुध दान थकी खेवो पारो ॥

ढाल २

राग—चन्द्रायण

१—नगर 'शोरीपुर' राजियो रे, 'समुद्रविजय' राय धीरो ।
तस नदन श्री नेमजी' रे, सावल वरण शरीरो ॥
सावल वरण शरीर विराजे,
एक सहस्र आठ लक्षण छाजे ।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजे,
दशन दीठा दारिद्र्य भाजे ।
श्री नेमीश्वरजी हो ॥

२—एक दिवस श्री नेमजी रे, आया आयुधशालो ।
पचायन शख पूरियो रे, चाढ्यो घनुप करालो ॥
चाढ्यो घनुप कियो टकारो,
शब्द सुण्यो श्री कृष्ण' मुरारो ।
ए नर उठ्यो कोई अवतारो,
आय ने जोवे तो नेमकुमारो ॥ जी० ॥

ठाल ३

राग—आवे काल सपेठा सेतो रे

- १— बाबा मल अखारे चालो रे,
माने थारो बल देखालो रे।
अखाडे मढ्या दोनू भाई रे,
घणा देखें लोग लुगाई रे ॥
- २— देखो या मे कुण जीते कुण हारे रे,
गोप्या मन एम विचारे रे।
'हरि' तब कर ऊँचो कीधो रे,
'नेमजी' पाछो दीधो रे ॥

ठाल ४

राग—ब्रह्मयज्ञ

- १— तब बलतो 'हरि' भु वियो रे सायों 'नेम' नो हाथो।
हिडोला जिम हीचियो रे, गोप्या तणो इज नाथो ॥
सोले सहस्र गोप्या रो स्वामी,
खाचे घणी ग्रामी ने सामी।
'नेम' री बाह नमावण—कामी,
तो पिण 'नेम' री बाह न नामी। जी० ॥
- २— बल देखो श्री 'नेम' नो रे, वृष्ण' थया दिसगोरो।
बावीसमा जिनजी धछे रे, इण सू नहो विगारो ॥
इण सू नही बिगाठ र भाई,
मन चित्ता म करो याई।
तो पिण पूरी समता न भाई,
एव तारी इणा ने दो परणाई ॥ जी० ॥

ठाल ५

राग—हूँ बनिहारी यादवाँ

- १— 'हरि' हरणी ने चामिधो, गाये गोप्या रो बूद बे।
नंदा धन विष पर्यया, 'नेम' महित मेसे गोविंद बे ॥
हूँ बनिहारी यादवाँ ॥

२—कान बजावे वासुरी, गोपी नाचे ताली छद के ।

पाए नेवर रुण भरणे, हस हस रामत रमे आणद के ॥

हूँ बलिहारी नेम की ॥

३—बिच मेलिया 'नेम' ने, दोली फिर रही मगली नार के ।

नदन वन मे आणद म, कोयल रा तिहा हुवे टट्टुकार के ॥

४ बलिहारी नेम की ॥

४—हाव भाव गोप्या करे, बलि बलि इधवो नेम ने देख के ।

जादव-मन भोजे तहो, शीन मवग तणो विशेष के

हूँ बलिहारी नेम की ॥

छाल ६

राग—होली

१—देवर ने 'रुकमण' हसे, 'हरि' निभावे अनेको रे ।

भाई तू निभावी न सके, तिण सू टरतान परणो एको रे ॥

भाई व्याप मनावे 'नेम' को ॥

२—बलती दूसरी इम कहे, इण रा मन मे आको रे ।

तोरण आया करे आरती, टीको बाढने सामू साचे नाकोरे ॥

वाई, इम डरतो परणो नही ॥

३—बली तीसरी इम कहे, तोने बात कहूँ विचारो रे ।

वाई चित करने चवरी चढे, तीन कैरा लेणा पटे लारो रे ॥

वाई, साबलियो इम परण नही ॥

४—बलती चौथी इम कहे, साभल एक विनारो हे वाई

जुवाजुई रमता थका, रखे वनडो जावे हारो हे वाई ॥इम०॥

५—बलती पाचमी इम कहे, साभल भोरी बातो हे वाई ।

दोरो हे कावण दोरडो, सोनणो गडे एरुण हायो हे वाई । इम०॥

६—'गौरी' 'रुकमण' ने कहे, म्हारा मगिया वछिन काजो हे वाई ।

तीन सो वरसा रा नेमजी करारा फिरता आव लाजो ए वाई ॥इम०॥

७—अवर तो बात किनोळ री, साचो एह उपायो ह वाई ।

आण आण नितरी यह, ओ दुग सह्यो न जायो हे वाई ॥उम०॥

ढाल ७

राग—हूँ बलिहारी यादवा

१—नारी घर रो सेहरो, नारी सू बाजे घर बार के ।
जिए घर मे नारी नही, ते घर गिएती मे गिणे नही ससार के ॥
ये क्यू परणो नी देवर नेमजी ॥

२—हिवडा तो खबर न का पडे,
बुढापो थाने घरसी आय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ॥ये०॥

३—पुत्र बिना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल भ्यवहार के ।
पुत्र बिना प्रभुता किसी,
पुत्र जिना नही वधे परिवार के ॥ये०॥

४—एक नारी रो काई ढावणो,
नारी होवे घर को सिएगार के ।
नारी बिना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ॥ये०॥

५—राणी मिल सब डम कहे,
एक धर्ज विनति अवधार के ।
इसडा कठोरज काई हुवा,
योडो तो हिरदा मे विचार के ॥ये०॥

ढाल ८

राग—चंदावन

१—कृष्ण गोप्या मिल नेम ने रे, फाग रमण से जायो ।
जस मू भरी गहोमली र, पेठ पाणी रे मायो ॥
पेठा तिहा पागती पाणी,
नेमजी मांहे उछात्यो पाणी ।
मायो मायो जाणी जाणी,
ध्याव माय नियो माहोणी जी ॥नेमीवरजी॥

- २— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती बहु रूपो ।
 शील गुणो कगी सोभती रे, चतुराई बहु चूपो ॥
 चतुराई बहु चूप सिखाणी,
 घणी विचक्षण मधुरी वाणी ।
 चौसठ कला मे शील-समाणी,
 बीजली केरी ओपमा आणी ॥जी०॥
- ३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो ।
 'उग्रसेन' राय इम कहें रे, एक भुणो हमारी रेसो ॥
 एक सुणो ये रहस हमारी,
 विध सू जान करो तुमे भारी ।
 आवो म्हारा घर मझारी,
 तो परणाऊ राजकुमारी ॥जी०॥
- ४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो ।
 ब्राह्मण लगन लिया थका रे, हरल्या राणी राणो ॥
 हरल्या राणी राणज कोई ।
 नेमजी आगल पीठी ठोई ।
 माहे घाली घणी कसबोई,
 न्हाय घोय कल्पवृक्ष ज्यू होई ॥जी०॥

ढाल ९

- १— महाराज चढे गज रथ तुरिया
 हय गय रथ पायक—सुख दायक ।
 नयन-कमल हरसत ठरिया ॥महा०॥
- २— खूब वरात वनी—ब्यावन की ।
 घोर घटा उमटी झरिया ॥महा०॥
- ३— लाल गुलाल, अवीर अगारचो ।
 चळ दिस नाच रही परिया ॥महा०॥

ढाल ७

राग—हूँ बलिहारी यादवा

१- नारी घर रो सेहरो, नारी सू बाजे घर बार के ।
जिए घर मे नारी नही, ते घर गिणती मे गिणे नही ससार के ॥
ये क्यू परणो नी देवर नेमजी ॥

२- हिवडा तो खबर न का पड़े,
बुढापो थाने घरसी आय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ॥ये०॥

३- पुत्र विना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल व्यवहार के ।
पुत्र विना प्रभुता किसी,
पुत्र विना नही बधे परिवार के ॥ये०॥

४- एक नारी रो काई ढावणो,
नारी हाँवे घर को सिणगार के ।
नारी विना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ॥ये०॥

५- राणी मिल सय इम बहे,
एक भज विनति भवधार के ।
इसाठा पठोरज काई हूया,
थोडो तो हिरदा मे विचार के ॥ये०॥

ढाल ८

राग—चंद्रायन

१- कृष्ण-गोप्या मिस नेम ने रे, फाग रमण से जायो ।
जस गू भरी गढोगसी रे, पेठ पाणी रे मायो ॥
पेठा तिहा पागमो पागो
गमजी मांह उदात्या पाणी ।
मायो मायो जाणी जाणी,
इसाठा पठोरज काई हूया, थोडो तो हिरदा मे विचार के ॥ये०॥

- २— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती बहु रूपो ।
शील गुणो कगी सोभती रे, चतुराई बहु चूपो ॥
चतुराई बहु चूप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी ।
चौसठ कला मे शील-समाणी,
बीजली केरी ओपमा आणी ॥जी०॥
- ३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो ।
'उग्रसेन' राय इम कहे रे, एक भूणो हमारी रेसो ॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सू जान करो तुमे भारी ।
आवो म्हारा घर मळारी,
तो परणाऊ राजकुमारी ॥जी०॥
- ४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो ।
ब्राह्मण लगन लिया थका रे, हरस्या राणी राणो ॥
हरस्या राणी राजज कोई ।
नेमजी आगल पीठी ठोई ।
माहे घाली घणी कसगोई,
न्हाय घोय कटपवृक्ष ज्यू होई ॥जी०॥

ढाल ९

- १— महाराज चढे गज रथ तुरिया
हय गय रथ पायक—सुख दायक ।
नयन-कमल हरसत ठरिया ॥महा०॥
- २— खूब वरात वनी—व्यावन की ।
घोर घटा उमटी भरिया ॥महा०॥
- ३— लाल गुलाल, अबीर अगारचो ।
चऊ दिस नाच रही परिया ॥महा०॥

ढाल ७

राग—हूँ बलिहारी यादवाँ

१- नारी घर रो सेहरो, नारी सू वाजे घर बार के ।
जिए घर मे नारी नही, ते घर गिएती मे गिए नही ससार के ॥
थे क्यू परणो नी देवर नेमजी ॥

२- हिवडा तो खबर न का पड़े,
बुढापो थाने घरसी आय के
कुण करसी थारी चाकरी,
जोवो नी देवर हिरदा माय के ॥ये०॥

३- पुत्र बिना सजसी नही,
कुण राखेला थारो कुल व्यवहार के ।
पुत्र बिना प्रभुता किसी,
पुत्र बिना नही बधे परिवार के ॥ये०॥

४- एक नारी रो फाई ढायणो,
नारी होवे घर को सिएगार के ।
नारी बिना मन्दिर किसो,
कृष्णजी परण्णा बत्तीस हजार के ॥ये०॥

५- राणी मिल सब इम बहे,
एक धजं विनति अवधार के ।
दसटा पठोरज फाई हूया,
घोरो तो हिरदा मे विचार मे ॥ये०॥

ढाल ८

राग—ब्रजधन

१- कृष्ण-गोष्पा मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जायो ।
जम मू भरी गढोगली रे, पेट पाणी रे मायो ॥
पेठा तिहां पागलो पाणी,
नेमनी मांह उदण्यो पाणी ।
मायो मायो जाणी ब्राणी,
व्याव भाव भियो माटोणी जी ॥नेमीश्वरजी॥

- २— उग्रसेन-राय कन्यका रे, राजमती बहु रूपो ।
 शील गुण करी सोभती रे, चतुराई बहु चू पो ॥
 चतुराई बहु चप सिराणी,
 घणी विचक्षण मधुरी वाणी ।
 चौसठ कला मे शील-समाणी,
 बीजली केरी ओपमा आणी ॥जी०॥
- ३— नेम भणी परणायवा रे, माने कृष्ण नरेसो ।
 'उग्रसेन' राय इम कहे रे, एक भूणो हमारी रैसो ॥
 एक सुणो ये रहस हमारी,
 विध सू जान करो तुमे भारी ।
 आवो म्हाारा घर मझारी,
 तो परणाऊ राजकुमारी ॥जी०॥
- ४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो ।
 आह्वण लगन लिया थका रे, हरस्या राणी राणो ॥
 हरस्या राणी राणज कोई ।
 नेमजी आगल पीठी ठोई ।
 माहे घाली घणी कसबोई,
 न्हाय घोय कल्पवृक्ष ज्यू होई ॥जी०॥

ढाल ९

- १— महाराज चढे गज रथ तुरिया
 हय गय रथ पायक—सुख दायक ।
 नयन-कमल हरसत ठरिया ॥महा०॥
- २— खूब वरात वनी—व्यावन की ।
 घोर घटा उमटी भरिया ॥महा०॥
- ३— लाल गुलाल, अवीर अगारचो ।
 चऊ दिस नाच रही परिया ॥महा०॥

११

राग—चन्द्रायण

इए विघ जान जलूस सु रे, मन मे अधिक जगोसो ।

आगे आय ऊभा रह्या रे शकेन्द्र ने ईशो ॥

शकेन्द्र ने ईशज दोई,

ऊभा जान रह्या छे जोई ।

नेम कवर परणे नही कोई

तिणसू मोने अचिरज होई ॥जी०॥

कृष्ण कहे इद्रा भणी रे, ये रहिजो अबोला सीधा ।

विगर बुलाया आविया रे, थाने किण पीला चावल दीघा ॥

किण दीघा थाने पीला चावल,

जान वणी छे रग वेलावल ।

म्हारे काम पड्यो छे सावल

रखे वजावो दिखणी बावल ॥जी०॥

१२

राग—चलत

मैं नीठ नीठ व्याव मनायो रे,

थे विगर बुलाया क्यू आया ।

ये रहजो अबोला सीधा रे,

पिण पीला चावल किण दीघा ॥

एतो इन्द्र बोले विसेखा रे,

कान्हा । मैं पिण मेली देखा ।

थे जान जोरावर खाटी रे,

किम उतरे नेम पीली पाटी ॥

१३

राग—चन्द्रायण

इन्द्र बोल्या बेऊँ कृष्ण ने हो, लाया थे जान विसेखो ।

नेम कवर परणे जिको हो मैं पिण लेसा लेखो ॥

म्है पिण जोवा व्याव री वाटी,

किम उतरे नेम पीली पाटी ।

५—नेम कु वर तोरण चढ़्या,

पशुवा करी पुकारो ए, हाहाकारो ए,
फूट्यो सगली जानमे क—सहिया ए ॥

प्रक्षिप्त ढाल

राग—ये तो माता पेहरो जडावरी रे लाल

ये तो बें बें करता बोकडा र लाल, ये तो करे रे नेमसु भरदास ।
हो दयालराय ॥

मोडाई व्याव मनावियो रे लाल, नहो अन्तर मन री आश ।
हो दयाल राय ॥१॥

था विन करणा कुण करे रे लाल ॥टेक॥

ये तो हिरणा हिरणी मिल करी रे लाल, सामर सुधर सियाल
हो दया० ॥

केई बाढे केई पिजरे रे लाल, ज्यारे पड रह्या अश्रु असराल
हो दया० ॥२॥

सुवटो सुवटी ने कह रह्या रे लाल, म्हारा बाहर रह्य गया बाल
हो दया० ॥

म्हाने चुगो पाणी कुण देवसी रे लाल, कुण करसी साल सभाल
हो दया० ॥३॥

ढाल १६

राग—फाग

१—सीचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात ।
जादव राय । रोक्री ने रास्या पीजरे, दुख करे दिनरात ॥
जादव राय । तुम विन करणा कुण करे ॥

२—हरिण सूसा ने बाकदा, सूर सावर ने मोर ।
दयालराय । केई बाढे केई पिजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय । तुम विन करणा कुण करे ॥

३—हिरण्यो हिरणी ने कहे, बाहिर गया बाल ।
दयालराय । चुगो पाणी लेवा अणी, कुण करसी साल सभाल ॥द०॥

५—नेम कु वर तोरण चढ़्या,

पशुवा करी पुकारो ए, हाहाकारो ए,
फूट्यो सगली जानमे क—सहिया ए ॥

प्रक्षिप्त ढाल

राग—ये तो माता पेहरो जबावरी रे लाल

ये तो बें बें करता बोकडा र लाल, ये तो करे रे नेमसु अरदास ।
हो दयालराय ॥

मोडाई व्याव मनावियो रे लाल, नही अन्तर मन री आश ।
हो दयाल राय ॥१॥

था विन करुणा कुण करे रे लाल ॥टेक॥

ये तो हिरणा हिरणी मिल करी रे लाल, सामर समर सियाल
हो दया० ॥

केई बाढे केई पिजरे रे लाल, ज्यारे पड रह्या अश्रु असराल
हो दया० ॥२॥

सुवटी सुवटी ने कह रह्या रे लाल, म्हारा बाहर रह्य गया बाल
हो दया० ॥

व्हाने चुगो पाणी कुण देवसी रे लाल, कुण करसी साल सभाल
हो दया० ॥३॥

ढाल १६

राग—फाग

१—सीचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात ।
जादव राय । रोकी ने रास्या पीजरे, दुख करे दिनरात ॥
जादव राय । तुम विन करुणा कुण करे ॥

२—हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सावर ने मोर ।
दयालराय । केई बाढे केई पिजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय । तुम विन करुणा कुण करे ॥

३—हिरण्यो हिरणी ने कहे, बाहिर गया बाल ।
दयालराय । चुगो पाणी लेवा भणी, कुण करसी साल सभाल ॥४०॥

- नफर भणी हलकार ने रे, तोड्या वधन जालो ।
 केई जीवडा दोटो गया रे, केई उड्या तत कालो ॥
 उड गया जीव तत-गालो,
 जवान वूढा नान्हा वालो ।
 नेम रक्षा छे ऊभा भालो,
 जीवा रे वर्त्या मगलमालो ॥जी०॥

॥ १८

- १—गगन जाता जीव देवे प्रासीस के,
 पशु ने पखिया जगदीश ।
 जादव । हिवे चिरजीव जो,
 बलिहारी तुम बाप ने माय के,
 पुत्र रतन जिन जनमियो ।
 स्वामी । थे सारियां, अम्ह तणा काज के,
 तीन भवन रो पाम जो राज के—
 शील अखडित पाल जो ॥

ढाल १९

राग—चव्वायण

- १— वंरागे मन वाल ने रे, तोरण सू फिर जायो ।
 इण अवसर श्रीकृष्णजी रे, आडा फिरिया आयो ॥
 कृष्ण फिर्या छे आडा आई,
 हिवडें धीरज रख चतुराई ।
 तेल चढी ने किम छिटकाई,
 जादव केरी जान लजाई ॥जी०॥
- २— नेम कहे सुण बघवा रे, ए ससार असारो ।
 कुटुम्ब कबीलो छोडने रे, हू लेस् सजम-भारो ॥
 हू लेस् सजम—भारो,
 कामभोग जाण्या खारो ।
 ए नारी न लगाऊं लारो,
 मुक्ति-रमणी स छे मन म्हारो ॥जी०॥

- ४— नफर भणी हलकार ने रे, तोड्या वघन जालो ।
 केई जीवडा दोडो गया रे, केई उड्या तत कालो ॥
 उड गया जीव तत-कालो,
 जवान वूढा नान्हा वालो ।
 नेम रह्या छे ऊभा भालो,
 जीवा रे घर्त्या मगलमालो ॥जी०॥

ढाल १८

- १—गगन जाता जीव देवे घासीस के,
 पशु ने पखिया जगदोश ।
 जादव । हिवे धिरजीव जो,
 बलिहारी तुम बाप ने माय के,
 पुत्र रतन जिन जनमियो ।
 स्वामी । थे सारिया, अम्ह तरा काज के,
 तीन भवन रो पाम जो राज के—
 शील अखडित पाल जो ॥

ढाल १९

राग—चन्द्रायण

- १— बंरागे मन वाल ने रे, तोरण सू फिर जायो ।
 हण अवसर श्रीकृष्णजी रे, आडा फिरिया आयो ॥
 कृष्ण फिर्या छे आडा आई,
 हिवडे घोरज रख चतुराई ।
 तेल चढी ने किम छिटकाई,
 जादव केरी जान लजाई ॥जी०॥
- २— नेम कहे सण बघवा रे, ए ससार असारो ।
 कुटुम्ब कबीलो छोडने रे, हू लेस् सजम-भारो ॥
 हू लेस् सजम—भारो,
 कामभोग जाण्या खारो ।
 ए नारी न लगाऊं लारो,
 मुक्ति-रमणी स छे मन म्हारो ॥जी०॥

४—पूरे भासे पारेवड़ी इम करे अरदास ।
जादवराय । बघन पड्या पग माहरे, ढीला करे कोई पास ॥जा०॥

५—तीतरी कह तीतरी भणी,
गर्भ छे उदर माय ।
जादव राय । सकट पामू अति घणू

६—अशरणा थका कोई पखिया,
कोइक करुणा करि दे छोडाय ॥जा०॥

दयाल राय । छोडावण वालो कोई नही,
बिल बिल करे निरधार ।

छोडावे तो नेमकुमार ॥दयाल०॥

ढाल १७

१— नेम कहे भावत भणी रे, ए जीव किए काजो ।
बलतो बोले सारथी रे साभल जो महाराजो ॥

राग—चंद्रायण

साभल जो महाराज—कुमारो,
व्याव मडयो छे एह तुम्हारो ।
या जीवा रो होसो सहारो,
पोखीजसो तुमरो परिवारो ॥जी०॥

२— वचन सुणी सारथी तणा रे, नेमजी चिते आपो ।
इतरा जीव बिणाससो रे, परणीजण में पापो ॥

परणीजण में पापज मोटो,
जीव—हिंसा से सहज खोटो ।
ए तो दीसे परतख तोटो,
तो लेऊँ दयाधर्म रो ओटो ॥जी०॥

३— करुणा केरा सागरू रे जीवा रो करुणा कीघो ।
माथा रो मुगट वरज न रे, गहणा बघाई में दीघो ॥

गेहणा सब बघाई में दीघो,
नेम जिएद समता रस पीघो ।
इसछो उत्तम कारज कीघो,
तीन लोक में हुवा प्रसिघो ॥जी०॥

- २—पाच से तेसठ जादवाँ, कवर विचक्षण जाण रे ।
 एक सो आठ कृष्ण तणा, बहोतर बलभद्र ना बखाण रे ॥हूँ तो०॥
- ३—बले आठ पुत्र उग्रसेण ना, अठावीस नेम ना भाय रे ।
 सात कहा देवसेन ना, बलि आठ मोटा महाराय रे ॥हूँ तो०॥
- ४—एक वरदत्त पुत्र अक्षोभ' नो, दोय से पाँच यादव भेल रे ।
 श्री नेम साथे सजम लियो ओ सहस्र परष रो मेन रे । हूँ तो०॥
- ५—एतो दश दशरज हरसिया, बले हरस्या हरि बलदेव रे ।
 सुर नर हरस्या अति घणा सारे प्रभुजी री सेव रे ॥हूँ तो०॥

ढाल २१

- १— सखी मुख साभल्यो राजुल वाल,
 नेम गया रथ पाछो वाल के ।
 घरणी ढली ने लही मूरछा—
 चदन लागे छे जेम अगार के ॥
 सखी मोने पवन म लावजो,
 हिरदा में बसे नेम कुवार के—
 राजमती इम बिल बिले ॥

ढाल २२

राग—काईक ह्योजी ह्योजी

- १—आठ भवा रो नेहज हुतो, नवमे दी छिटकाई ।
 तुमसा पूत पनोता होय ने, जादव जान लजाई ॥
 ऊभा रोजी, थे रोजी रोजी रोजी, उभा रोजी ॥
- २—सावलिया—साहिव ऊभा रोजी
 थे छो म्हारा ठाकुर ऊभा रोजी
 म्ह छा थारा चाकर ऊभा रोजी ॥
- ३—हरि हलधर सा जानी वणिया, तुम र कुमिय न काई ।
 बिन परमारथ छोड चल्या, सीख कहा सू पाई ॥ऊभा०॥
- ४—जो कोई खून हुवे मुज अन्दर, तो दू साख भराई ।
 पिण कहो जुग मे न्याय करे कुण, जो हुवे राय अन्याई । ऊभा०॥

३—जो थारे मन मे आ हुँती रे, हूँ नही परणू नारो ।
तो इसडी जान जुलूस सू रे, मोने नही लावणा था लारो ॥

मोने नही लावणा था लारो,
जो मन वर्थो हो इम थारो ।
हू तो लेस सजम—भारो,
तो इतरो काई कियो विस्तारो ॥जी०॥

४—मन माडाणी मनावियो रे, कान्हा । येहिज म्हारो व्यावो ।
म्हारे ता पला हुँतो रे, सजम ऊपरे चावो ॥

चारित्र ऊपर चाव हमारो,
वचन न लोप्यो एकज थारो ।
तिण स् एह हुवो विमतारो,
पिण विरक्त ने कुण राखणहारो । जी०॥

५— कृष्ण मन फेरो दियो रे, इन्द्र कह्यो थो एमो ।
नेम कवर परण नही रे, वचन खाली जावे केमो ॥

इन्द्र-वचन किम जावे खाली,
कृष्ण रह्या विवाह रो सोस पाली ।
वीनणी विहूणी जानज चाली,
वैरागी भूडे इधकी खाली ॥जी०॥

६— कृष्ण भणी समजाय न रे, पाछी वाली जानो ।
लोकातिक प्रतिबोधसू रे, दीघो छमच्छर दानो ॥

एक बरस तक दान ज देई,
कुटुम्ब कवीलो साथे लेई ।
सुर नर वृन्द मिल्या छे केई
तोच कियो सिर नो स्वयमेई ॥जी०॥

ढाल २०

राग—प्लाता उचारी रे

१—मास सावण छठ चानणी चित्रा नखत्र ने माय रे ।

मह्य पुण्य माये बरी रे, सजम लियो जिनराय रे ॥

हू तो नेम नमू रे बावीसमां ॥

- ४— म्हारी मन री हूस रही मन मे,
हू तडफा तोड रही तन मे ।
हू बात किसी कहू पाछी ने आगी ॥नेमीसर०॥

ढाल २५

- १— माता कहे कवरी । मत रोय के,
मणि मडित झारी लेई मुख घोय के ।
नेम गयो तो ए जाण दे,
नेम बिना जग सूनो न होय के ॥
तोने परणाऊ म्हारी लाडली ।
- २— चाव तू पान, फूल सूघ के,
अजे ताई बाई । कोरा मूग के ।
माता आई इम धीर दे ॥

ढाल २६

राग—हंस गया बढाऊ

- १—किन के सरण जाऊ, नेम बिना किन के शरण जाऊ ।
इए जग माय नही कोई भेरो, ताकी मैज कहाऊ ॥नेम०॥
- २—मात पिता सुण सखी सहेल्या, लिख कर दूत पठाऊ ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी सदेसो पाऊ ॥नेम०॥
- ३— म्हे तो पल एक सग न छोडू, छोड कहो किहा जाऊ ।
अब टुक धीरप रथ-हाको, चालो मैं भी थारै लार आऊ ॥नेम०॥

ढाल २७

- १— अरि ! मेरा दुख मत कर जननी ।
म्है जाऊगी गिरनार ।
दीक्षा लेऊगी भव-तरणी ॥
- २— अरि मात पिता सुण सखी सहली
करो क्षमास जननी ।
अब रहण की नाय भई,
मैं करू श्याम मिलणी ॥अरि०॥

ढाल २३

- १— तरसत अखिर्घाँ, हुई द्रुम-पखिया ।
जाय मिलो पिव सू सखिया । ॥
यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतिया
नेमनाथजी-दीनानाथजी ॥
- २— जिण कू ओलभो एतो जाय कहणो,
ये तज राजुल किम भये जातिया ॥नेमनाथजी० ॥
- ३— जाकू दूगी जरावरो गजरो,
कानन कू चूनी मोतिया ॥नेमनाथजी०॥
- ४— अगुरी कू मू दडी-ओढण कू फुमडी,
पेरण कू रेशमी घोतिया ॥नेमनाथजी०॥
- ५— महल अटारी - भए कटारी,
चन्द - किरण तनू दाभतिया ॥ नेमनाथजी०॥
- ६— क्या गिरनार मे छाँय रहे प्रभु,
वनचर नी करत धितिया ॥नेमनाथजी०॥

ढाल २४

राग—नवकार मन्त्र नो

- १—म्हैं चित उम्मेद पेयों घूडो,
म्हारे मेंदी रो रग आयो रूडो ।
पिण सावा री वेला ब्यू टली प्रागी,
नेमीसर बनो भयो बेरागी ॥
- २— हू शिवा दे सासू री बाजी रे बहू,
माने जग सगलाँ मे जाणी ए सहू ।
हू नेमजी री राणी जो बाजी ॥नेमीसर०॥
- ३— कुण ताके तारा ने, छोड शशी—
म्हार सावरिया सरीखी सूरत किसी ।
म्हैं दूजा भरतार नी तृप्णा त्यागी ॥नेमीसर०॥

- ४— म्हारी मन री हूस रही मन मे,
हू तडफा तोड रही तन मे ।
हू बात किसी कहू पाछो ने आगी ॥नेमीसर०॥

ढाल २५

- १— माता कहे कवरी । मत रोय के,
मणि मडित झारी लेई मुख घोय के ।
नेम गयो तो ए जाए दे,
नेम विना जग सूनो न होय के ॥
तोने परणाऊ म्हारी लाडली ।
- २— चाब तू पान, फूल सूघ के,
अजे ताई बाई । कोरा मूग के ।
माता आई इम घोर दे ॥

ढाल २६

राग—हंस गया बढाऊ

- १—किन के सरणो जाऊ, नेम विना किन के शरणो जाऊ ।
इए जग माय नही कोई मेरो, ताकी मैज कहाऊ ॥नेम०॥
- २—मात पिता सुण सखी सहेल्या, लिख कर दूत पठाऊ ।
किए गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी सदेसो पाऊ ॥नेम०॥
- ३ - म्हे तो पल एक सग न छोडू, छोड कहो किहा जाऊ ।
अब टुक धीरप रथ-हाको, चालो मैं भी थारै लार आऊ ॥नेम०॥

ढाल २७

- १— अरि । मेरा दुख मत कर जननी ।
म्है जाऊगी गिरनार ।
दीक्षा लेऊगी भव-तरणी ॥
- २— अरि मात पिता सुण सखी सहली
करो क्षमास जननी ।
अब रहण की नाय भई,
मैं करू श्याम मिलणी ॥अरि०॥

- ३— छपन कोड जादव मिल आये,
 खूब वरात बनी ।
 विन परण्या भुक्त नाथ फिरे,
 सो कीधी बात घनी ॥अरि०॥
- ४— छिन मे काया माया पलटे,
 ज्यू जल डाभ-अणी ।
 कुञ्जर-कान, पान पीपल को,
 ऐसी आय बनी ॥अरि०॥
- ५— मौसू रे मोह तज्यो मुज प्रीतम,
 करी निर्मल करणी ।
 पशुवन के शिर दोष दिया,
 प्रभु मुगत बधू परणी ॥अरि०॥

ढाल २८

- १— सहिया कहे राजुल । सुणो,
 बाई ! कालो नेम कुरूपो ए ।
 भल भूपो ए—
 ओर भलेरो लावसा क सहिया ए ॥
- २— करी कुसामदी ताहरी,
 पिण म्हारे दाय न आयो ए—
 न सुहायो ए ।
 कालो वर किण काम रो क सहिया ए ॥

ढाल २९

- १— राजुल भाखे ह सहिया ! ये तो भूढ गिवार ।
 काला मे किसी खोड-पीत किजे मन भावती ॥
 कालो हाथो हे सहिया ! साहे राज दुवार ॥
 बाली घटा जल-धार ॥

- २— काली हुवे किस्तूर डी काली कीकी हे सहियां ।
 सोहे आस मझार ।
 जिम काला नेम कमार—
 अवर वरेवा ग्रागडी ॥

ढाल ३०

राग—चद्रायण

- १— साजन ने परजन तणी हो, घणी जण्या ने तारो ।
 नेम जिणोसर वादवा रे, पहुँती गढ-गिग्नारो ॥
 सती पहुँती छे गढ-गिग्नारो,
 बिच मे वर्षा हुई अपारो ।
 भीत्र गया कपडा ने साडी,
 एकल जई गुफा-मझारो । जी०॥
- २— कपडा खोल चोडा किया रे, यई उघाडी देहो ।
 झवको पडघो पुरप नो रे, म्यू दीसे छ एहो ॥
 इहा तो नर दीसे छे कोई,
 सती तिहा ह कपे होई ।
 रामे शील भागेला मोई,
 हंठी वेठी अग गुपोई ॥जी०॥
- ३— डरती देख सती भणी रे, इम बोल्पो रहनेमो ।
 हू समुद्रविजयजी रो टीवरो रे, तू सोच करे छे केमो ॥
 तू सोच करे छे केमो,
 हे मुन्दर । घर मोमू पेमो,
 दुर्लभ मिनख जनम एमो,
 आदरमा वले सजम नेमो ॥जी०॥

ढाल ३१

- १— चित चलियो मुनिवर नो देखी, राजमती कहे एम ।
 काम केल करणी इण काया, मोने साचे मन नेम ॥
- २— मुनिवर दूर खराडो रे, लोगो भर्म धरेगा ।
 नारी सग किया यी रे, पापे पिड भरेगा ॥मुनि०॥

- ३— जुवती रच्यो इण मडल जग मे मोटो जाल ।
कामी मिरग मारग के ताई, मूढ मरे दे फाल ॥मुनि०॥
- ४— नाक-रीट देखी माखी, चित मे चिते गट के ।
पिण पग पाख लपट जद जावे, मरे शीस पटके ॥मुनि०॥
- ५— केसरी वरणी कोमल काया मूढ कर मन हूँस ।
ए पिण जहर हलाहल जाणो, जैसो थली रो तूस ॥मुनि०॥
- ६— देखो नेण काजल रा भरिया, जाणो दल उत्पल का ।
कामी देव मारण के ताई, काम देव रा भलका । मुनि०॥
- ७— ऊजल कुल ने कलक लगावे, नाखे दुर्गति ऊ डी ।
खोवे लाज जनम रो खाटी, पर नारी नरक रो कू डी ॥मुनि०॥
- ८— राजा जाणो तो घर लटे, खर चाहे सिर भू डी ।
जग सगलो जाणो भू डो, ए करणो सहू भू डी ॥मुनि०॥ -
- ९— फिरता गिरता राज दुवारे, सचरता पर गलिया ।
हस हाथ दे बजावे ताली, देखाहे आगुलिया ॥मुनि०॥
- १०— दुजन ज्यू ब्यू चिते सामल वात तू मीणी ।
खाख बजावी करसी हासी, जामी लाज लाखिणी ॥मुनि०॥
- ११— बश छोट लागे तुम कुल ने, सहू जग लेसी खीचो ।
तुम पर बार उतरसी पाणी, यादव जोसी नीचो ॥मुनि०॥
- १२ - महासती सू एह अकारज, उत्तम ने नही छाजे ।
जो अति मीठो तो पिण मुनिवर ! अखज कहो किम खाजे ॥मु०॥
- १३— जातिवत कुलवत वहीजे वमिया तू मती रीके ।
खिएण सुख कारण बहु दुख पामो, एहवो काम न कीजे ॥मु०॥

ढाल ३२

राग—सुरसा गरव हरे भयों

- १— गज असवारी छोडने हो—मुनिवर ।
खर ऊपर मती बेस ।
दव लोग रा सुख देखने हो—मुनिवर ।
पाताले मती पेस ॥
सुगणा साधुजी हो मुनि ! थारा मन ने पाछो घेर ॥

- २— अमृत भोजन छोड़ने हो—मुनिवर !
तुसिया को कुण खाय ।
देव लोक रा सुख देखने हो मुनिवर !
नरक न आवे दाय ॥सुगणा०॥
- ३— खीर खाड भोजन करी हो- मुनिवर !
वमियो कर्दम-कीच ।
वमिया री बाछा करे हो —मुनिवर !
काग कुत्ता के नीच ॥सुगणा०॥
- ४— इण परिणामे थाहरो हो—मुनिवर ।
सयम थिर नही होय ।
गन्धण कुल रा सर्प ज्यू हो—मुनिवर ।
वमिया ने मत जोय ॥सुगणा०॥
- ५— वचन सुणी राजुल तणा हो—मुनिवर ।
चित्त ने आण्यो ठाम ।
घन घन राजुल तू सही ह—राजुल ।
घन थारो परिणाम ॥सुगणा०॥
- ६— नरक पडता राखियो हे राजुल ।
इम वोल्हो रहनेम ।
मुजने थिरता कर दियो—हे राजुल ।
वचन-अकुश गज जेम ॥सुगणा०॥
- ७— नेम समीपे जायने हो—मुनिवर ।
शुद्ध थया अणगार ।
निर्मल सजम पालने हो-मुनिवर
पहुता मुगत मभार ॥सुगणा०॥
- ८— शिव सुख राजमती लही हो—मुनिवर ।
पामो परमानन्द ।
चौपन दिन छद्मस्थ रह्या हो—मुनिवर ।
घन घन नेम—जिणद ॥सुगणा०॥

दोहा

- १— 'भदलपुर' पधारिया, बाबीसमा जिनराय ।
भव-जीवाने तारता, मेले मुगत रे माय ॥
- २— 'वसुदेवजी' रा डीकरा, 'देवकी' रा अग-जात ।
सुलसा रे घरे बध्या, ते सुणजो साक्षात ॥
- ३— छऊ वय मे सारिखा, सारिखे, उणियार ।
वैराग पाम्या किण विघे, ते सुणजो बिस्तार ॥

ढाल १

राग—असवेल्पा

- १— नेम जिणद समोसर्या रे लाल,
भदलपुर के बाग हो, भविक जन ।
सुणने लोग राजी हुवा रे लाल,
भवि जीवा रे भाग हो, भविक जन ॥नेम०॥
- २— सहस अठारे साधुजी रे लाल,
अज्जा चालिस हजार, भविक जन ।
तिण ने आण मनावता रे लाल,
शासन रा सिरदार हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ३— नर नारी ने हुवो घरणो रे लाल,
नेम वादण रो कोड हो, भविक जन ।
कोई पाला ने पालखी रे लाल
चाल्या होडा-होड हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ४— केई कहे दरसण देखस्या रे लाल,
केई कहे सुणस्या वाण हो, भविक जन ।
केई कहे परसन पूछस्या रे लाल,
केई कुतुहल जाण हो भविक जन ॥नेम०॥

- ५— राजा प्रमुख आबिया रे लाल,
लारे नर नार्या ना थाट हो, भविक जन ।
लोग बहु लटका करे रे लाल,
बोले विरुदावली चारण-भाट हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ६— नाग सेठ वादण चालियो रे लाल,
लारे छ बेटा लेई साथ हो, भविक जन ।
प्रभुजी रो दर्शन देखने रे लाल,
हिवडें हर्षित थाय हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ७— जिनवर दीधी देशना रे लाल,
सुण ने हर्षित थाय हो, भविक जन ।
परिपदा सुण पाछी गई रे लाल,
छऊ भाई जोड़्या दोनू हाथ हो, भविक जन । नेम०॥
- ८— ए ससार छे कारमो रे लाल,
मैं लेस्या सयम भार हो, भविक जन ।
जिम सुख होबे तिम करो रे लाल,
मन करो ढोल लीगार हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ९— घर आबी कहें मात ने रे लाल,
नेम दीठा मैं आज हो, भविक जन ।
वाणी सुण ने सरदही रे लाल,
प्रभु सारे पर ना काज हो, भविक जन ॥नेम०॥
- १०— दीहना जनम भरण थी रे लाल,
म्हा चावा उत्तम ठाम हो, भविक जन ।
आज्ञा दो तमे मो भणी रे लाल,
म्हे सारा आतम-काम हो, भविक जन ॥नेम०॥
- ११— सुण माता विलखी थई रे लाल,
वात काढी कंसी आज हो, भविक जन ।
सयम छे वछ । दोहिलो रे लाल,
एतो सूर ना काज हो, भविक जन ॥नेम०॥
- १२— मात पिता पाल्या घणा रे लाल,
एतो रून्हा नही लीगार हो, भविक जन ।

नार्या विलविलती रही रे लाल,
नही आण्यो मोह तिवार हो, भविक जन ॥नेम०॥

- १३— सयम लीघो वैराग सू रे लाल,
घणो लाड ने कोड हो, भविक जन
मुगती महल र कारणे रे लाल,
ऊभा घर दिया छोड हो, भविक जन ॥नेम०॥
- १४— नेमजी साथे छऊ जणा र लाल,
करता उग्र विहार हो, भविक जन ।
वैराग रस माहे भलता रे लाल,
सयम तपस्या धार हो, भविक जन ॥नेम०॥

बोहा

- १— वैरागे मन वाल ने, दे तपस्या री नीव ।
वेले वेले पारणो, प्रभु । करादो जावजीव ॥
- २— नेम जिणुद समोसर्या द्वारिका नगरी मझार ।
समोसरण देवा रच्यो देशना दे हितकार ॥

ढाल २

राग—बिनो फरीजे बाई बि०

- १— पहली पोरसी सूत्र चितारे,
बीजी पोरसी अर्थ विचारे ।
जाणो तीजी पोरसी जागी,
वेदन रे वस खुध्या जागी ॥
- २— मुनिवर मिलि जिणुद पे आया,
हाथ जोडी ने बोले वाया ।
प्रभु । तमारी आज्ञा थाय,
तो म्हां द्वारिका मे गोचरी जाय ॥
- ३— भगवत बोल्या इसडी वाय,
देवाणुपिया । जिम सुख थाय ।
रखे घडी री ढील न ल्याचो,
आहार पाणी ने वेगा जावो ॥

दोहा

- १—चचन सुणी भगवत रो मुनिवर हर्ष अपार ।
पढिनेही भोली पातरा, सुन्दर पट अणगार ॥
- २—चरण करण मे ऊजला, च्यार महाव्रत धार ॥
रूप गुणे अति शोभता, नल-कूबर अणुहार ॥

ढाल ३

गाय—वीर बखानी राणी चैलणा

- १—आज्ञा ले भगवत री जी, पट् बाधव मुनि जोय ।
गोचरी करवा ने नीकल्या जी मुनिवर टोलेटोले दोय ।
साधुजी उठचा मुनि गोचरी जी ॥
- २—गोचरी करवा ने नीसर्या जी, द्वारिका नगरी मजार ।
पाडे पाडे मे फिरता थका जी, लेवे छे शुद्ध त आहार । साधु०॥
- ३—ऊच नीच मग्गम कुले जी, इर्या ए जोवता जाय ।
दोष बयालिस टालता जी, लीना छे सयम माय ॥साधु०॥
- ४—बेला तणो मुनि ने पारणो जी, ताक ताक नही जाय ।
अनुक्रमे फिरता थका जी, आया वसुदेव-घर माय ॥साधु०॥
- ५—बैठी सिंहासन देवकी जी, आपरा मंदिर माय ।
गज गति दीठा मुनि आवता जी रोम रोम हर्षित थाय ॥साधु०॥
साधुजी भला पधारियाजी आज ॥
- ६—सिंहासन थी राणी ऊठनेजी, सात आठ पग साम्ही जाय ।
तिबखुता रो पाठ गिणी करीजो, लुल लुल नीची जी थाय ॥साधु०॥
- ७—भाव मु भगति करे घणी जी, पाचे ई अग नमाय ।
आज कृतारथ हूँ यई जी, फली फूली बिकसो घणी काय ॥साधु०॥
- ८—आज भली दशा माहरी जी, दीठी छे मुनि तणो जोड ।
आज भलो भानु ऊगियो जी, पूणा म्हारे मन तणा कोड ॥साधु०॥
- ९—मोदक घाल मरी करी जी, मंदिर माहे थी लाय ।
केशगेमिह जटा जिसा जी, वेङ्गगया उलटे जी भाव । साधु०॥

१०—मृनिवर वेहर पाछा वल्या जी,
लागी छे थोडी सी वार ।

बीजो सिधाडो इहा आवियोजी,
देवकी — घर — वार ॥ साधुजी॥

दोहा

१— उठो ने साम्ही गई, जोडी दोनू हाथ ।
विनय सहित वदना करी, मन मे थई रलियात ॥

ढाल ४

राग—हमोरिया के गीत

१— देवकी हरखी अति घणी,
भले पधारिया रिपिराय, मुनीसर ।
पेहला सिधाडा तणी परे,
भाव सहित बहराय, मुनीसर ॥

२— धन धन राणी देवकी,
प्रतिलाभ्या अणगार, मुनी० ।
चित्त वित्त पात्र तीने भला,
राणी सफल कियो अवतार ॥मुनी०धन०॥

३— जाता ने पोहचाय ने,
पाछी आई तिण ठाई, मुनीसर ॥
तीजो सिधाडो आवियो,
चितवे राणी चित माय ॥मनी०धन०॥

४— पहिला याने जो पूछ सू,
तो नही लेसी मुनि आहार मुनी० ।
बेहर्या पछे ऊभा नही रहे,
इम मन मे करे विचार ॥मुनी०धन०॥

५— जहाज आई हम वारणें,
सहजे पुण्य प्रमाण, मुनीसर ।
मोदक पहला बहराय ने
हैं पृछम जोडी पाण ॥मुनी०धन०॥

- ६— भाव सहित बेहराय ने,
देवकी चिते एम, मुनीसर ।
साधा रे लोभ हुवे नही
वलि वलि आवे छे केम ॥मुनी०धन०॥

दोहा

- १— आडी फिर ने देवकी, लुल लुल नीची थाय ।
एक सदेहो ऊपनो, दीजे मोहि बताय ॥

ढाल ५

राग—जगत गुप्त त्रिसला-नन्दन धोर

- १— भगवत नगरी द्वारिका जी,
वारे जोजन प्रमाण ।
कृष्ण नरेसर राजवी जी,
ज्यारी तीन खड मे आण ॥
मुनीसर एक करु अरदास ॥
- २— सीवन कोट रतन कागुरा जी,
सोभे रुडा आवास ।
भिंग-भिंग करने दीपता जी,
देवलोक जिम सुख वास ॥मुनी०॥
- ३— साठ कोड घर बाहिरे जी,
माहे बहोतर कोड ।
लोग सह सुखिया वसे जी,
राम कृष्ण री जोड ॥मुनी०॥
- ४— भाविक लोक वसे घणा जी,
दातार बहुला थाय ।
धवदे प्रकार नो सूक्तो जी,
अढलक दान दिराय ॥मुनी०॥
- ५— सेठ सेनापति मंत्रवी जी,
ज्यारे घर मे घणो धन्न ।
साधा रे दरसण विना जी,
मुख मे न घाले अन्न ॥मुनी०॥

- ६— लाखा कोटा रा घणो वसे जी,
नगरी मे बहु लोग ।
खाणे पीणे सरचणे जी,
पुन्य सू मिलियो जोग ॥मुनी०॥
- ७— घणी पुन्याई वाई ताहरीजी,
इम बोन्या मुनिराय ।
देवकी मन मे जाणियो जी,
या ने तो खबर न काय ॥मुनी०॥
- ८— बात छे अचिरज सारिखी जी,
माहर हिये न समाय ।
कह्या मे नफो नही नीपजेजी,
बिन कह्या रह्यो न जाय ॥मुनी०॥
- ९— मे आगे इम साभल्यो जी,
नही बार - बार ।
यो मोने अचिरज थयो जी,
पुन्ढा करु निरधार ॥मुनी०॥
- १०— हू पूछ इस कारणे जी,
मुनि ने न लाभे आहार ।
म्हारा पुण्य तणे उदेजी,
आप आया तीजी बार ॥मुनी०॥
- ११— बलि ते मुनिवर इम कहे जी,
वाई शका मूल म आण ।
धारे घर बहरी गया जी,
ते मुनिवर दूजा जाण ॥
देवकी लोभ नही छे कोय ॥
- १२— हाथ जोडी कहे देवकी जी,
साभल जो ऋषि-राय ।
मे स्व-हाथा सु बहरावियो जी,
मो म इग किम नटियो जाय ॥मुनी०॥

- १३— बलि ते मुनिवर इम कहें जी,
बाई ! नगरी में बहु दातार ।
तीन सघाड़े आविया जी,
अमे छा छउ अणगार ॥
देवकी लोभ नहीं छे कोय ॥
- १४— सारखी रूप सपदा जी,
बाई ! सारिखे अणुहार ।
साथे सजम आदर्यो जी,
बाई ! सारिखो तप धार ॥देवकी०॥
- १५— हाथ जोड़ी ने कहे देवकी जी,
सांभल जो मान-राय ।
उतपत थारी किहा अछे जी,
हू सुणमू चित लाय ॥मुनी०॥
- १६— किसान नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी ! बसता कुण से ग्राम ।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ॥मुनी०॥
- १७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई ! सुलसा' म्हारी माय ।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छोडधा छऊ भाय ॥देवकी०॥
- १८— बत्तीसे रभा तजी जी,
बत्तीसे बत्तीसे दात ।
कुटुम्ब मेलो सह रोवतो जी,
बाई विल विल करती मात ॥देवकी०॥

दोहा

- १— हाथ जोड़ी कहे देवकी, सांभल जो रिख राय ।
बेगम पाय्या किण विधे, दीजे मोहि बताय ॥
- २— साध वचन इसडा कहें, सांभल मोरी बाय ।
माहुरी रिध कहा किसी, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल ६

राग—राजगृहो नगरी

- १— वत्तीस कोड सोनैया,
वत्तीस रूपा री कोड री माई ।
वत्तीसे बाजुवध दीघा,
वत्तीस काकण री जोड री माई ।
पुण्य तरा फल मीठा जाणो ॥
- २— वत्तीस तो हार एकावली,
वत्तीस अद्धमरा जाण री माई ।
वत्तीसे नवसरा दीघा,
वत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥
- ३— अण सरिया वले हार वत्तीसे,
वत्तीस कनकावली हार री माई ।
हार मक्तावली ऊजल सोहे,
वत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥
- ४— हीर चीर वले रत्ना जडिया,
पट कुल रा बहु वृन्द री माई ।
भीणा सूत रा वस्तर दीघा,
पहिर्या अति सोहदरी माई ॥पुण्य०॥
- ५— वत्तीसे तो पिलग सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
वत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रत्तना मे वखाण री माई ॥पुण्य०॥
- ६— वत्तीसे तो थाल सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री, माई ।
वत्तीम तो प्याला दीघा
दूध पीवण ने वखाण री, माई ॥पुण्य०॥
- ७— वत्तीसे वाजाट सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
वत्तीसे तो तवा सोना रा,
वत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

- १३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई । नगरी मे बहु दातार ।
तीन सघाडे आविया जी,
अमे छा छउ अणुगार ॥
देवकी लोभ नही छे कोय ॥
- १४— सारखी रूप सपदा जी,
बाई । सारिखे अणुहार ।
साथे सजम आदर्यो जी,
बाई । सारिखो तप धार ॥देवकी०॥
- १५— हाथ जोडी ने कहे देवकी जी,
सांभल जो मुनि-राय ।
उतपत थारी किहा अछे जी,
हूँ सुणसू चित लाय ॥मुनी०॥
- १६— किसान नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी । बसता कुण से ग्राम ।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ॥मुनी०॥
- १७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई । सुलसा' म्हारी माय ।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छोडथा छऊ भाय ॥देवकी०॥
- १८— बत्तीसे रभा तजी जी,
बत्तीसे बत्तीसे दात ।
कुटुम्ब मेलो सह रोवतो जी,
बाई विल-विल करती मात ॥देवकी०॥

दोहा

- १— हाथ जोडी कहे देवकी, सांभल जो रिख राय ।
वैराग पाम्या किण विधे, दीजे मोहि बताय ॥
- २— साथ वचन इसडा कहें, सांभल मोरी बाय ।
माहरी रिष कहा किसी, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल ६

राग—राजगृही नगरी

- १— वत्तीस कोड सोनेया,
वत्तीस रूपा री कोड री माई ।
वत्तीसे वाजुवध दीघा,
वत्तीस काकण री जोड री माई ।
पुण्य तणा फल मोठा जाणो ॥
- २— वत्तीस तो हार एकावली,
वत्तीस ग्रद्धसरा जाण री माई ।
वत्तीसे नवसरा दीघा,
वत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥
- ३— त्रण सरिया वले हार वत्तीसे,
वत्तीस कनकावली हार री माई ।
हार मक्तावली ऊजल सोहे,
वत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥
- ४— हीर चीर वले रत्ना जडिया,
पट कुल रा बहु वृन्द री माई ।
भीणा सूत रा वस्तर दीघा,
पहिर्या अति सोहदरी माई ॥पुण्य०॥
- ५— वत्तीसे तो पिलग सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
वत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रतना मे वखाण री माई ॥पुण्य०॥
- ६— वत्तीसे तो थाल सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री, माई ।
वत्तीम तो प्याला दीघा
दूध पीवण ने वखाण री, माई ॥पुण्य०॥
- ७— वत्तीसे वाजोट सोना रा,
वत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
वत्तीसे तो तवा सोना रा,
वत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

- ८— वत्तीसे तो गोकुल गाथा रा,
दूध पीवण ने दीघ री माई ।
दास्या बढारण खोजा दीघा,
बत्तीस चदण-पीसणा लीघ री माई ॥पुण्य०॥
- ९— इण रीते छऊ कुमारा ने,
सरीखी दाता री तोल री माई ।
पणे लागता सासूजी दीघा
एक सौ ने बाण बोल री माई ॥पुण्य०॥

बोहा

- १— कितरो काल ससार मे भोगबिया सुख सार ।
देव दीगु भक नी परे, बहुलो छे विस्तार ॥

ढाल ७

राग—करेलणा धबदे रे

- १— जातो काल न जाणता जी, म्हे रहता महला मझार ।
दास्या रा परिवार सू जी, वत्तीसे वत्तीसे नार ॥
देवकी हे लोभ नही माहुरे कोय ॥
- २— चन्द्र-वदन मृग-लोयणी जी, चपल-लोचनी बाल ।
हरीलकी, मृदु-भापिणी जी, इन्द्राणी सी रूप रसाल ॥देव०॥
- ३— प्रीतवती मुख आगले जी, मुलकती मोहन-बेल ।
चतुरा ना मन मोहती जी, हस गमणी सू करता बहुकेल ॥देव०॥
- ४— नित नवी चीजा खावणी जी, नित नित नवला वेश ।
सुंदर सू भीना रहे जी, सुपना मे नही कलेश ॥देव०॥
- ५— राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोकार ।
नाटक विध वत्तीसना जी, रंग विनोद अपार ॥देव०॥
- ६— भगवंत नेम पधारिया जी साधा रे परिवार ।
म्हे भगवत ने वादिया जी सफल किमो भवताद ॥देव०॥
- ७— नेम तणी वाणी सुणी जी मीठी दूधाधार ।
प्रतिबोध्या छऊ जणा जी, जाण्यो धयिर ससार ॥देव०॥

- ८—कुटुम्ब कवीलो छोड़ियो जी, मुन्दर बत्तीसे नार ।
धन कचन रिघ छोडने जी, लीघो सयम-भार ॥देव०॥
- ९—बेले बेले पारणो जी, जाव-जीव मन धार ।
मुक्ति भणो मैं उठिया जी, लेवा सुध आहार ॥देव०॥
- १०—दोय दोय मुनिवर जुवा जुवा जी, आया नगर मझार ।
तीन सिंघाडे उठिया जी, द्वारिका नगर मझार ॥देव०॥
- ११—तिण साधा रा वचन मे जी, शका मूल म आण ।
ताहरे घर बेहरी गया जी, ते मुनिवर दूजा जाण ॥देव०॥

दोहा

- १— तिण कारण भोदक तणो, लालच नही मोय ।
घर रो रिघ एहवी तजी, मुगती साहमो जोय ॥
- २— इतरो सुण शका पडो, देवकी करे विचार ।
मोने खबर न का पडो, देखूँ यारो अणुहार ॥

ढाल =

राग— कम परीक्षा करण कु०

- १— नेण निहाले हो राणी देवकी रे,
मुनिवर साम्हो म्हाल ।
जोति काति यारी दीपती रे
मुनिवर रूप रसाल ॥नेण०॥
- २— जिण घर थी ए छऊ नीकट्या रे,
किस्यूँ रह्यु छे लार ।
छऊ सहोदर दीसे सारिखा रे,
नल-कूबर उणिहार ॥नेण०॥
- ३— छपन कोड जादवा री साहिबी रे,
हरिवश-कुल सिणगार ।
दीठा म्हारा सगला राज मे रे
नही कोई यारे उणिहार ॥नेण०॥
- ४— इण उणिहारे म्हारे राज मे रे,
अवर दीसे न कोय ।

जो छे तो काइक म्हारो 'कान' छे रे,
ए मोने अचिरज होय ॥नेण०॥

५— नेडो तो सगपण को दीसे नही रे,
म्हारो हिवडो सगपण जेम ।
लागे मुनिवर म्हाने सुहावणा रे,
इम किम जाग्यो प्रेम ॥नेण०॥

६— श्रावक रो साधा ऊपरे रे,
होवे छे घर्म-सनेह ।
मो जिम परवश काई ना पडे रे,
इम किम उलस्यो माहरो नेह ॥नेण०॥

७— लाडु बहराया राणी देवकी रे,
लागी थोडी सी वार ।
मुनिवर बहरी ने पाछा नीसर्पा रे,
ऊभा न रहे भ्रणगार ॥नेण०॥

८— सूरत थारी प्यारी लागे घणी रे,
कह्यो कठा लग जाय ।
जाणे याते देखवो हूं करू रे,
इम माहरो मोहज थाय ॥नेण०॥

९— मोहणी कर्म मोटो छे घणो रे,
दोरो जीत्यो जाय ।
जीते कोई बड सूरमो रे,
मन मे घोरज लाय ॥नेण०॥

बोहा

- १— देवकी देख हर्षित थई, दिया मुर्गति रा सूत ।
करणी ज्यारी दीपतो, मुनिवर काकरा-भूत ॥
- २— सारिखी जेहनी चामडी, सारिखे अणुहार ।
वरण सारिखो जेहनो, यौवन रूप उदार ॥
- ३— इम चितवता तेहने, उपनो मन सदेह ।
कुण माता पुत्र जनमिया, भरत क्षेत्र मे एह ॥

- ४— वालपणो माख्यो हुंतो, अयवते अणंगार ।
आठ जणेंसी हें देवकी, जिंसा नही जणो भरत मभार ॥

ढाल ९

राग— रे जीव विषय न राविए

- १— भरत खेतर मे सामठा, किण मा बेटा जाया रे ।
तीन सघाडे आविया, मैं हाथा सू वेहराया रे ॥
करे विमासण देवकी ॥
- २— मो आगे कह्यो हुंतो, अयवते ऋषिरायो रे ।
तेतो वात मिलती नही, स्यू रिख वाणी मृषा थायो रे ॥करे०॥
- ३— आज्ञा देता मात नी, जीभ बुही छे केमो रे ।
एहवा बेटा बाहरी, दिन काढेला केमो रे ॥करे०॥
- ४— सूरत दीसे सोहती, घणोइज ज्यारो हेतो रे ।
जिण घर सू ए नीकल्या, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

बोहा

- १— एहवा पुत्र जनम्या बिना, किम थावे आणद ।
हाथ काकण सी आरसी, इहा छे नेम जिणद ॥
- २— इसडो मन मे ऊपनी, वादू भगवत पाय ।
भाव-सहित वदन करू, तन मन चित्त लगाय ॥
- ३— शका छऊ अणंगार नी, मुझ मन उपनी सोय ॥
नेम जिणद ने पूछ ने, ससो भाजु मोय ॥
- ४— इम चित माही विचार ने, सज सोले सिणंगार ।
जिण वादण जावा भली, करे सजाई त्यार ॥

ढाल १०

राग— बोलिया का गीत

- १— चाकर पुरुष बुलाइने,
देवकी बोले इम वाया रे लाला
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ।
तू रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वादण ने जावस्या ॥

- २— चाकर पुरुष गजी थयो,
जाय सभाले जाण रे लाला ।
उवट्ठाणाला छे बाहिरली,
रथ ऊभो रारयो आण रे ॥श्री०॥
- ३— रथ हलको घणो वाजणो,
बले च्यार पेडा रो जाण रे लाला ॥
अशुद्ध शब्द करे नही,
लागे लोका ने सुहाण रे ॥श्री०॥
- ४— हलवा काण्ट नो भूसरो,
बले चोडा पेडा जोत रे लाला ।
मोत्या री जाली लग रही,
छती शोभा को उद्योत रे ॥श्री०॥
- ५— रथ सिणगार्यो फूटरो,
जुहारा सू हालो जोय रे लाला ।
समिल सुहाली हलकी घणी,
ज्यू बलदा एल न होय रे ॥श्री०॥
- ६— खोली भल विराजती,
पाखतिया घू घर माल रे लाला ।
सामग्री सगली सज करो,
जाय बाद्रू दीनदयाल रे ॥श्री०॥
- ७— दीसत दीसे सोभता,
एहवी बलदा री जोड रे लाला ॥
चालत अति ही उतावला,
सींग पूँछ मे नही खोड रे ॥श्री०॥
- ८— घबला ने माता घणा,
बले छोटी सिगडिया जाण रे लाला ।
दोनू बराबर दीसता,
तू एहवा ऋषभ आण रे ॥श्री०॥

- ६— बलदा रे भूलज सोभती,
नाके नघर साल रे लाला ।
राखडी सीगा मे सोभती,
गल बाधी गुघर-माल रे ॥श्री०॥
- १०— सोना री गले मे साकली,
रूपा रो टोकरियो जाण रे लाला ।
सोना री खोली सीग मे,
दोय इसडा बलदज आण रे ॥श्री०॥
- ११— कमल रो सोहे सेहरो,
लटके सीगा रे माय रे लाला ।
नाथ सोने रेशम री भली,
तिणसू नाक दोरो नही थाय रे ॥श्री०॥
- १२— इण रीते सेवग सुणी,
रथ जोतर कियो तयार रे लाला ।
देखत लागे मुहावणो,
रथ चढण रो करे विचार रे ॥श्री०॥
- १३— न्हाई ने मजन करी,
पहिर्या नव-नवा वेश रे लाला ।
माणक मोती माला मूदडी,
गहणा हार विशेष रे ॥श्री०॥
- १४— हाथो मे काकण सोभता,
कठे नवसर हार रे लाला ।
पगे नेवर दीपता,
जाणे देवागना उणिहार रे ॥श्री०॥
- १५— अलकार एहवा सजी,
आई उवट्ठाण साला माय रे लाला ।
रथ सजियो कसियो यको,
कलपवृक्ष समो ते थाय रे ॥श्री०॥

- ५— सुलसा कहे तूठो मुक्त भणी जी, मुक्त करवो तुरत काज ।
पुत्र जीवाडो माहरा जी, वृषा करो महाराज ॥जिणे०॥
- ६— देव कहे नही मुक्त थकी जी तुम्ह नदन जीवाय ।
पिए हु आपिस जीवता जी, पर ना बालक लाय ॥जिणे० ।
- ७— सुलसा ने तू एकण समेजी गर्भ धरे समकाल ।
साथे जणे देव जोग थी जी अनुक्रमे पट्ही बाल ॥जिणे०॥
देवकी सासो मति कर कोय ॥
- ८— मुवा बालक सुलसा जणे जी, ते मेले तुम पास ।
ताहरा मेले जीवता जी, सुरसा री पूरे आस ॥देव०॥
- ९— ते भणी पुत्र ते ताहरा जी, सुलसा रा नही एह ।
मुनि-भाषित मृषा नही जी, न टले कर्म नी रेह ॥
देवकी । कर्म न छोडे कोय ॥
- १०— पाछले भव ते देवकी जी दीधी छाती मे दाह ।
सात रतन ते शोक ना जी, चोर्या नाणी त्राह ॥देव०॥
- ११— तिण ने रोती देखने जी तें मन मे करुणा आण ।
एक रतन पाछो दियो जी, सोले घडी थी जाण । देव०॥
- १२— तिण कर्म चोर्या गया जी, ए थारा छऊ पूत ।
सोले वर्ष थी कृष्णजी ए, आय राख्यो घर-सूत ॥देव०॥
- १३— सुख दुख सव्या आपणा ए, जिके उदे हुवे आय ।
समो विचार्या सुख हुवे ए चिंता म करो काय ॥देव०॥
- १४— कर्म सबल ससार मे ए विन भुगत्या न टलत ।
देव दाणव नर राजवी ए, एकण पथे वहत ॥देव ॥

दोहा

- १— नेम जिणसर वाद ने, आई साधा रे पास ।
निरखे वादे हेत सू हिवडे हरस उलास ॥
- २— मोक्ष तणी किरिया करे ज्यारो घरणीहीज वान ।
सहस्र अठारे साध मे, कठे ही न रहे छान ॥

ढाल १२

चन्दन की सीर

राग—बे बे तो मुनिवर बहरण

१— देवकी तो आई नदन वादवा रे,
ऊमी रही मुनिवर पास रे।
नेरों साधा ने राणी देखने रे

२— हाथ जोड़ी ने राणी वदना करे रे
करवा तो लागी इम अरदास रे ॥देवकी०॥
विनय सू पावे अग नमाय रे।
नरा प्रदक्षिणा दीवी हाथ स रे

३— आज कृतार्थ आशा मुझ फनी रे
लटका करे लुल लुल नीची थाय रे ॥देवकी०॥
रोम रोम मे प्रगट्यो आनन्द रे,
भहारी कूख मा एहवा ऊपना रे,

४— तडके से तूटी कस कचू तरणी रे
घन घन यादव कुल-चद रे ॥देवकी०॥
थरा रे तो छूटी दूधाधार रे।
हिवडा माहे हर्ष मावे नहीं रे,

५— रोम रोम विकस्या तन मन ऊलस्या रे,
जाणो के मिलियो मुझ करतार रे ॥देवकी०॥
नयणो तो छूटी आसू-धार रे।
बिलिया तो बाहा माहे मावे नहीं रे,

६— देवकी आख्या ने अण हलावती रे,
जाणो तूटयो मोत्या रो हार रे ॥देवकी०॥
निरस्या बेटा ने घणी वार रे।
वलि वादी ने आई जिन कने रे
हिये उपनो कवण विचार रे ॥देवकी०॥

देवकी मन माह चितवे, देखो कर्म-सयोग।
मे जनम्या छ बालुडा, पाल्या नि

- २— इम चितव प्रभु वाद ने, आई आपणे गेह ।
दुग्य मन माहे ऊपनो कह्यो न जावे जेह ॥
- ३— चिता सागर भनती नजर घरणी पर राग्य ।
मुख विलखे जोवे नही, विण ही सू नहि भाख ॥
- ४— इण अवसर श्री कृष्णजी मा ने वदन काज ।
आवे प्रणमी चरण युगल, वेठा श्री महाराज ॥
- ५— देवकी तो बोली नही पुन थकी तिण वार ।
तव कृष्णजी मन चितवे मा । तोने चिता अपार ॥
- ६— माहरा सहू इण राज मे, ये ही जा दुखिया होय ।
तो कहो इस मसार मे मुप्तियो न दीमे कोय ।
- ७— बहुवा थारे हुकम मे, लुल लुल लागे पाय ।
सगली पंग लगावता पिट्या को शल जाय ॥

ढाल १३

राग—चन्नायण

- १— माताजी ! किण कारणे हो, वदन तमारो आजो ।
चितातुर दीमे घणो हो, इण वाते आवे लाजो ॥
इण वाते मोने लाज कहावे,
पुन थका मा दुखणी थावे ।
हूँ समझू थारे समझावे,
वात कहो वेला घनी थावे ॥
जी मातजी हो ॥
- २— थाने चिता रो कुरण हेत, कहो तुमे हम भणीजी ।
हूँ करसू हो चिता दूर के, जामण । तुमतरणी जी ॥
- ३— बोले माता देवकी हो मुझ नदन थया सातो ।
लाल्या पाल्या मे नही हो, ए मुझ दुख री वातो ॥
ए दुख मुजने दिन दिन शाले,
साजन सो, जो ए दुख पाले ।
एमो भाग्य लिखो मुज भाले ।
जो आवे हिव वात विचारे ।
जी कान्हजी ओ ॥

- ७— जाया मैं तुम सारिखा कन्हैया !
एकए नाले सात रे, गिर० ।
एकए ने हुतरायो नही कहैया ।
गोद न सित्लाओ सए मात रे, गिर० ॥हूँ०॥
- ८— बालपए रा बोलडा कहैया ।
पूरी नहो कार्र भास रे गिर० ।
भासा भलूधी हूँ रहो कन्हैया ।
भार भुर नय भास रे गिर० ॥हूँ०॥
- ९— रोवतो मैं राखो रहो, कन्हैया !
पालणिये पौठाय रे गिर० ।
हातरियो देवा तणी, कन्हैया ।
म्हारे हूँस रही मन मांय रे गिर० ॥हूँ०॥
- १०— भागणिये न करावो धिरो, कन्हैया ।
भागुलिया विलगाय रे, गिर० ।
हाऊ बेठो छे तिहा, कन्हैया,
भलगो तू मति जाय रे गिर० ॥हूँ०॥
- ११— भोडणियो पहराव्यो नही, कन्हैया,
टोपी न दीधी माय रे, गिर० ।
काजल पिण सार्यो नही, कन्हैया
फदिया न दीघा हाय रे, गिर० ॥हूँ०॥
- १२— रोवाण्यो नही हासी भिते, कन्हैया—
म्है भास लोषण काज रे, गिर० ।
न कर्यो एक नो सासरो कन्हैया ।
करिस्था तेवड भाज रे गिर० ॥हूँ०॥
- १३— न कह्यो केहने मीमलो कन्हैया,
ए माहरे मन घाय रे, गिर० ।
इतरा बोला मायलो, कन्हैया ।
एक न पाम्यो धारो माय रे गिर० ॥हूँ०॥

- १४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया ।
 हर्ष नही मुज तन्न रे, गिर०
 गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया ।
 ते माता छे घन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥
- १५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया ।
 उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
 बीजो कोई जाणे नही, कन्हैया ।
 जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ॥हूँ०॥

दोहा

- १— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
 सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारो आस ॥
- २— जिम तुम नदन थाहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
 मीठा मधुरा वचन सू, सतोपी निज माय ॥
- ३— , माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
 सत्पुरुष वचन चले नही, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल १५

राग—चब्रायण

- १— कृष्ण कहे मातजी ! साभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
 जिम मुम बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ॥
 तिम हू करसू विचारो रे माई ।
 म करो मन मे चिंता काई ॥
 दीजो मोने भनी वधाई,
 जब होवे नानो माई ॥
 जी मातजी हो ।
- २— माता रे पगे लागने हो, आया पीपघ शालो ।
 हरिणगयेसी देवता हो, मन चितवे ततकालो ॥
 मन चितवे ततकाल मुरारी,
 तेलो तप मन माही रे ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने मुविचारी ॥
जी कान्हजो हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो ।
इण कारण मं सिमर्यो हो, बीजो नहो कोई प्रेमो ॥
बीजो नहो कोई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुख विसारे ।
बालक नी लीला चित धारे,
स्त्री ने एहिज सुख ससारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र धायस्ये हो, पिण होषे जव मोटो ।
चारिन लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे ।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

बोहा

१— कोइक सुर ते चव करी गभ लियो अवतार ।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सहु परिवार ॥
२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र किरण दिन कार ॥
३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रग वधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६

राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

- १४— पुत्र तरणी आरती धरणी कन्हैया ।
 हर्ष नहीं मुज तन्न रे, गिर०
 गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया ।
 ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥
- १५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया ।
 उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
 बीजो कोई जाणे नहीं, कन्हैया ।
 जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ॥हूँ०॥

दोहा

- १— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
 सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारो आस ॥
- २— जिम तुम नदन आहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
 मीठा मधुरा वचन सू, सतोपी निज माय ॥
- ३— माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
 सत्पुरुष वचन चले नहीं, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल १५

राग—चब्रावण

- १— कृष्ण कहे मातजी । साभलो हो चिता म करो लिगारो ।
 जिम मुक बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ॥
 तिम हू करसू विचारो रे माई ।
 म करो मन मे चिता काई ॥
 बीजो मोने भनी वधाई,
 जब होवे नानो भाई ॥
 जी मातजी हो ।
- २— माता रे पगे लागने हो, घाया पीपघ शालो ।
 हरिणगमेसी देवता हो, मन चितवे ततवालो ॥
 मन चितवे ततवाल भुरारी,
 तेनो तप मन माही धारी ।

आवी देव बहे तिण वारी,
काम कहो मुझ नें मुविचारी ॥
जी बान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो ।
इण कारण मं सिमर्यो हो, बीजो नही कोई प्रेमो ॥
बीजो नही काई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुग्न विसारे ।
बालक नी लीला चित्त धारे,
स्त्री ने एहिज मुख समारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र घायस्ये हो, पिण होश्वे जब मोटो ।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे ।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी गर्भ लिथो अवतार ।
रग विनोद बधावणा, हरस्थो सहु परिवार ॥
२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घाटिवा, सहस्र किरण दिन-कार ॥
३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रग बधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६

राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तानुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

- १४— पुत्र तणी आरती धणी कन्हैया !
 हर्ष नहीं मुज तन्न रे, गिर०
 गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
 ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥
- १५— मोटी जग माहे मोहणी, कन्हैया !
 उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
 बीजो कोई जाणे नहीं, कन्हैया !
 जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ॥हूँ०॥

बोहा

- १— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
 सोच कोई राखो मती, पूरस्यू थारी आस ॥
- २— जिम तुझ नदन थाहस्ये, करस्यू तेह उपाय ।
 मीठा मधुरा वचन सू, सतोषी निज माय ॥
- ३— माता इण पर साभली, हिवडे हर्ष अपार ।
 सत्पुरुष वचन चले नहीं, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल १५

राग—अत्रायण

- १— कृष्ण कहे मातजी ! साभलो हो चिता म करो लिगारो ।
 जिम मुझ बाधव थायसी हो, तिम हू करसू विचारो ॥
 तिम हू करसू विचारो रे भाई ।
 म करो मन मे चिता काई ॥
 दीजो मोने भनी वधाई,
 जब होवे नानो भाई ॥
 जी मातजी हो ।
- २— माता रे पगे लागने हो, आया पोपध शालो ।
 हरिणगमसी देवता हो, मन चितवे ततकालो ॥
 मन चितवे ततकाल मुरारो,
 तेनो तप मन माही धारी ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो ।
इण कारण मं समयो हो, बीजो नही कोई प्रेमो ॥
बीजो नही कोई प्रेम हमारे,
पुत्र थया मा दुख बिसारे ।
बालक नी लीला चित धारे,
स्त्री ने एहिज मुख ससारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुन थायस्ये हो, पिण होश्वे जव मोटो ।
चारिन लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे ।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी, गभ लियो अवतार ।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सह परिवार ॥
२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र-किरण दिन-कार ॥
३— गर्म दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रग वधावणा, घर घर माहे आणद ॥

ढाल १६

राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्ते लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥

राणीजी कुमार जायो जी ॥

२— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सह परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोला मापा बघारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बाघ्या तोरण, बाटे सीरणी लाला,
चदन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी०॥

५— जीहो-यादव नारी सावठी लाला,
भावे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी०॥

बोहा

१— बाजा बाजे अति भला, बरत्या मंगल-माल ।
सतोपे याचक सुहासणी, हर्षा बाल, गोपाल ॥
२— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मभार ।
मूढ माग्या दीजे धणा, मणि माणक भडार ॥

काल-वही

६— जीहो-दीघा मंगल मोतीडा, लाला
दीघा हयवर हार ।
जीहो-दीघा सोनो सावटू, लाला,
दीघा अर्थ भडार ॥राणी जी०॥

- ७— जीहो बारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम ।
जीहो चद्रकला जिम बघतो, लाला,
रूप—कला—गुण—धाम ॥राणी जी०॥

दोहा

- १— हाथी नो जिम तालवो, देही तिम सुकुमाल ।
बालक हुवो तेहवे, नामे गज—सुकुमाल ॥
२— बालक पाच धाये करी, बाधे भानद-कद ।
एक ग्रही दूजो ग्रहे, दिन दिन अधिक आणद ॥

ठाल-बही

- ८— जीहो खेलावण-हुलरावण लाला,
बुगावण ने पाय ।
जीहो न्हवरावण पेहरावण, लाला,
अगो अग लगाय ॥राणीजी०॥
९— जीहो आखडली अजावणी, लाला
भाल करावण चद ।
जीहो गाला टीकी सावली, लाला,
आलिंगन आनन्द ॥राणीजी०॥
१०— जीहो पग-माडण ग्रही अगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल ।
जीहो गोलण भापा तोतली, लाला,
रिभावण अति ख्याल ॥राणीजी०॥
११— जीहो दही रोटी जिमावण लाला,
अरु चवावण तवोल ।
जीहो मुख सू मुख मे दिरीजता, लाला,
लीला अघर अमोल ॥राणीजी०॥

राणीजी कुमर जायो जी ॥

- २— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ॥राणीजी॥

- ३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीवा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी॥

- ४— जीहो-तोला मापा बघारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बाध्या तोरण, वाटे सीरणी लाला,
चन्दन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी॥

- ५— जीहो-यादव नारी सावठी लाला,
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी॥

बोहा

- १— बाजा बाजे अति भला, बरत्या भगल-माल ।
सतोपे याचक सुहासणी, हर्षा बाल गोपाल ॥
२— भरता जीव छोडाविया, सगले नगर मभार ।
मुह माग्या दीजे घणा, मणि माणक भडार ॥

दाल-वही

- ६— जीहो-दीघा मॅगल मोतोडा, लाला
दीघा हयवर हार ।
जीहो-दीघा सोनो सावट, लाला,
दीघा अर्थ मडाण ॥राणी जी॥

- ७— जीहो बारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम ।
जीहो चद्रकला जिम बघतो, लाला,
रूप—कला—गुण—धाम ॥राणी जी॥

दोहा

- १— हाथी नो जिम तालवो, देही तिम सुकुमाल ।
बालक हुबो तेहवे, नामे गज—सुकुमाल ॥
२— बालक पाच धाये करी, बाघे आनद-कद ।
एक ग्रही दूजी ग्रहे, दिन दिन अधिक आणद ॥

ढाल-बही

- ८— जीहो खेलावण-हुलरावण लाला,
चुगावण ने पाय ।
जीहो न्हवरावण पेहरावण, लाला,
अगो अग लगाय ॥राणीजी॥
९— जीहो आखडली अजावणी, लाला
भाल करावण चद ।
जीहो गाला टीकी सावली, लाला,
आलिंगन आनन्द ॥राणीजी॥
१०— जीहो पग-माडण ग्रही अगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल ।
जीहो गोलण भापा तोतली, लाला,
रिभावण अति ख्याल ॥राणीजी॥
११— जीहो दही रोटी जिमावण लाला,
अरू चवावण तबोल ।
जीहो मुख सू मुख मे दिरीजता, लाला,
लीला अघर अमोल ॥राणीजी॥

राणीजी कुमर जायो जी ॥

- २— जीहो हरस्यो श्री हरि राजनी लाला,
हरस्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ॥राणीजी॥
- ३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीघा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी जाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी॥
- ४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बाध्या तोरण, वाटे सीरणी लाला,
चन्दन केशर हाथा दिराय ॥राणी जी॥
- ५— जीहो-यादव नारी सावठी लाला,
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे माडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ॥राणी जी॥

दोहा

- १— बाजा बाजे अति भला, वरत्या मंगल-माल ।
सतोपे यात्रक सुहासणी, हृष्या बाल गोपाल ॥
- २— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मभार ।
मुह माग्या दीजे घणा, मणि माणक भडार ॥

काल-वृत्ती

- ६— जीहो-दीघा मॅंगल मोतीडा, लाला
दीघा हयवर हार ।
जीहो-दीघा सोनो सावटू, लाला,
दीघा अर्थ भडार ॥राणी जी॥

ढाल १७

राग—रग मेहल मे हो चोपड छेलस्या

- १— वस्त्र ने गेहरा हो घणा शरीर ना,
 सोनैया लाख साढी बार ।
 'प्रीतज दान हो दियो तेहने,
 हप्प्यो बघाई दार ॥
- २— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वादवा,
 नगरी द्वारिका सिणगार ।
 घर घर माहे हो महोच्छव मड रह्यो,
 हप सू जावे नर-नार ॥यादव०॥
- ३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुबो घरणो,
 नेम वादण रो कोड ।
 कोई पाला ने हो कोई पालखी,
 चाल्या जावे होडा होड ॥यादव०॥
- ४— मजन-घर मे हो कृष्ण न्हावण करी,
 सर्व पहेर्या सिणगार ।
 चदन-लेप हो शरीर लगाविया,
 जाणे इन्द्र अवतार ॥यादव०॥
- ५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
 चरच्या तेल सिद्धर ।
 दीसत दीसे हो पर्वत टूक ज्यू,
 चाले आगे हजूर ॥यादव०॥
- ६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
 सुन्दर-सोवन-जडित पिलाण ।
 एव सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
 चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥
- ७— लाख बैयालिस हाथी सिणगारिया,
 बल लाख बैयालिस घोड ।
 लाख बैयालिस रथ सिणगारिया,
 पायदल अडतालिस कोड ॥यादव०॥

- २— जीहो बतलावण ने चालवे लाला,
दीरावण मुख, गाल ।
जीहो आलकरावण आकरी लाला,
सीखावण सुरसाल ॥राणीजी०॥
- ३— जीहो वरस सरस आठा लगे लाला,
लीला बाल, विनोद ।
जीहो सब ही पर मा देवकी, लाला,
पावे अधिक प्रमोद ॥राणीजी०॥
- ४— जीहो पढियो गुणियो मति आगलो, लाला,
माधव जीवन जोय ।
जीहो सहू ने प्यारो प्राण थी लाला,
माताजी ने सोय ॥राणीजी०॥

दोहा

- १— बालक-क्रीडा तेहनी, देखी विविध प्रकार ।
हर्षी माता देवकी, हिवे सफल गिणो अवतार ॥ ॥
- २— यौवन वय आभ्या थका, कीवी सगाई अभिराम ।
'द्रुम' राजा नी पुत्रिका, प्रभावती' इण नाम ॥
- ३— 'सोमल' आहाण नी धिया, 'सोमा' नामे एक ।
प्रत्यक्ष जाणो अपछरा, चतुराई रूप विशेष ॥
- ४— श्रीडा करता तेह ने देखी कृष्ण नरेश ॥
लघु भाई लायक अछे, बाला यौवन वेश ॥
- ५— कीधी सगाई तेहसू, 'सोमा' आई दाय ।
थापी तेहनी भारिया, भेली कुमारी-अतेउर माय ॥
- ६— तिण काले ने तिण समे, करता उग्र विहार ।
भगवत नेम पधारिया, द्वारिका नगर मभार ॥
- ७— वन पालक अनुमत लही उत्तयां बाग मभार ।
वन-पालक दीवी वयावणी, हर्ष्या कृष्ण मुरार ॥

ढाल १७

राग—रग मेहल मे हो चोपड छेतस्या

- १— वस्त्र ने मेहणा हो घणा शरीर ना,
 सोनैया लाख साढी बार ।
 'प्रीतज दान हो दियो तेहने,
 हर्ष्यो बघाई दार ॥
- २— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वादवा,
 नगरी द्वारिका सिणगार ।
 घर घर माहे हो महोच्छव मड रह्यो,
 हर्ष सू जावे नर नार ॥यादव०॥
- ३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुवो घणो,
 नेम वादण रो कोड ।
 कोई पाला ने हो कोई पालखी,
 चाल्या जावे होडा होड ॥यादव०॥
- ४— मजन-घर मे हो कृष्ण न्हावण करो,
 सर्व पहैया सिणगार ।
 चदन-लेप हो शरीर लगाविया,
 जाणो इन्द्र अवतार ॥यादव०॥
- ५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
 चरच्या तेल सिंदूर ।
 दीसत दीसे हो पर्वत टूक ज्यू,
 चाले आगे हजूर ॥यादव०॥
- ६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
 सुन्दर-सोवन-जडित पिलाण ।
 एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
 चाले असचारी आगीवाण ॥यादव०॥
- ७— लाख बंयालिस हाथी सिणगारिया,
 बले लाख बयालिस घोड ।
 लाख बंयालिस रथ सिणगारिया,
 पायदल अडतालिस कोड ॥यादव०॥

- ८— हरि ने हलधर दोनू गज चढ़या,
साथे लियो गजकुमार ।
छत्र ने, चामर दोनू बिजे रह्या,
बाजे बाजा रा भरणकार ॥यादव॥
- ९— देवकी माता आदे राखिया,
साथे सहू परिवार ।
बोले विरुदावलिया, चारण सुजन सव,
जय जय शब्द अपार ॥यादव॥

बोहा'

- १— प्रतिशय देखी ने उत्तर्या, बाद्या दीन दयाल ।
पाच अभिगम साचवी, पाप कियो पेमाल ॥
- २— भगवत दीधी देशना, भवि जीवा हितकार ।
आगार ने अणगार नो, धर्म करो सुखकर ॥
- ३— परिपदा सुण पाछी गई, धलिया कृष्ण नरेश ।
गज मुकुमार बरागियो, लागी धर्म री रेश ॥
- ४— हाथ जोड़ी कहे नेम ने, आणी मन बंराग ।
मात पिता भाई पूछ ने, कसू ससार नो त्याग ॥
- ५— जिम सुख होवे तिम करो, म करो ढील लिगार ।
घर भावी कहे मात ने, चरण गमी तिए वार ॥

ढाल १८

राग—जोषाण जसराज

- १— बाणी श्री जिनराज तणी, काने पढी—रे माई ।
भाज अदर री आस, जामण म्हारी ऊषही ॥
- २— चलती बोले माय, वारी जाऊं तुम तणी—रे जाया ।
मुणी प्रभुजी री वाण, पुयाई ताहरी घणी ॥
- ३— श्रु कर बहे माय । वाण, साची में सरहदी—रे माई ?
मीठी लागी जेम, दूध शायर दही ॥

- ४— अनुमति दीजो मोय, दीक्षा लेसू सही—री माई ।
हिवे आज्ञा री जेज, जामण । करवी नही ॥
- ५— वचन अपूरव एह, पुत्र ना सांभली—री माई ।
घणू मूर्छा—गति खाय, घमके घग्गी ढली ॥
- ६— खलकी हाथा री चड, माथे ग केश वीखरघा—री माई ।
ओढण हुवो दूर, आखे आसू भरघा ॥
- ७— मोह तणे वश आज, सुरती चलती रही—री माई ।
शीतल पवन घाल, माता बंठी थई ॥
- ८— कुवर मामो माय, रही छे जोवती—री माई ।
मोह तण वश वेण, बोले माता रोवती ॥

ढाल १९

गग—सौदागर चलण न वेसू

- १— प्यारे हमारे जाया, एसी न कीजे ।
तुम बिन आछे लाल, कहो किम जीजे रे ॥प्यारे०॥
- २— छतिया मेरे लाल । तीखी खाती ।
कलेजो कापे लाल, अति अकुलाती रे ॥प्यारे०॥
- ३— छतिया मेरे लाल, आगज उठी ।
तनु जाले रे लाल, न समजे भूठी रे ॥प्यारे०॥
- ४— छतिया मेरे लाल । दुख न समावे ।
दाडिम ज्यू रे लाल, फाटी आवे रे ॥प्यारे०॥
- ५— बटा की रे लाल ! आशा एती ।
कही नही जावे लाल । अवर जती रे ॥प्यारे०॥
- ६— ऊची लेई लाल, आभ अडाई ।
नीची किया लाल, जात बडाई रे ॥प्यारे०॥
- ७— रोवत अत ही लाल देवकी राणी ।
भर भर आवे लाल, नयणा मे पाणी रे ॥प्यारे०॥
- ८— कुवर कहे रे लाल, माय न रोजे ।
मग्गी आवे लाल किम सुख सोजे रे ॥प्यारे०॥
प्यारी हमारी अमा अनुमति दीजे ॥

- ६— जनम जरा रे लाल पूठं लागी ।
किम छटीजे लाल, तेहथी भागी रे ॥प्यारे०॥
- १०— उत्कृष्टी रे लाल, कीजे करणी ।
तो रे मिटे लाल, यम की डरणी रे ॥प्यारी०॥
- ११— अजर अमर लाल, हू अरव होस्यू ।
शुद्ध होई लाल ! त्रिभुवन जोस्यू ॥प्यारी०॥

बोहा

- १— मात कहे सुत साभलो, सयम हुक्कर अपार ।
तू लीला रो लाडलो सुख विलसो ससार ॥

ढाल २०

राग—जोधाणे जसराम,

- १— साधपणो नही सहेल, जाया जामण कहे—रे जाया ।
तू न्हानडियो बाल, परोसा किम सहे ॥
- २— त्रिविधे त्रिवध च्यार, महाव्रत पालवा—रे जाया ।
नान्हा मोटा दोप, अहोनिश टालवा ॥
- ३— दोप, बैयालीस टाल, करणी वच्छ गोचरी—रे जाया ।
भमवो भमरा जेम, चिता मोने लोच री ॥
- ४— बनक कचोला छाड, लेवी वच्छ काछली— रे जाया ।
जाव जीव लगे वाट, नही जोवणी पाछली ॥
- ५— रहणो गुरा रे पास, विनय सू भाषणो—रे जाया ।
रातो पड्या एक शीत, वासी नही राखणो ॥
- ६— सरस नीरस आहार, करणो वछ पातरे—रे जाया ।
ए सुख सेज्या छोड सूवणो सायरे ॥
- ७— नहीं करणो सिनान, मुखे बघे मुहपती—रे जाया ।
मेला पेहरे वेश, तिके जैन रा यती ॥
- ८— करणो उग्र विहार, रोहणो सो तावढो—रे जाया ।
पणो हमारो मान, पुत्र तू बाबरी ॥

- ६— ए कायर ने दुलेंम, माताजी ये कह्यो—री माई ।
सूरा ने छे सेहल, कुमर उत्तर दियो ॥
- १०— जनम मरण रा दुख, माता जिएवर कहा—री माई ।
वमियो गमवास, जामण मैं दुख मया ॥
- ११— नही पलक री आस, जाणू काल जपियो—री माई ।
ओ जग मरतो देख, माताजी नपियो ॥

दोहा

- १— बलती माता इम कहे, मामल तू सुजाण ।
परिवार ताहरे छे घणो, म करो दीक्षा री बात ॥

ढाल वही

- १२— सहस्र बहोत्तर भात तात, वसुदेव है—रे जाया ।
जीवन-प्राण आघार, केशव बलदेव है ॥
- १३— भोजाया सहस्र बत्तीस तणो रामेकरो—रे जाया ।
तुम्ह ने अनुमति देवा, कुण होमी मरो ॥
- १४— सहस्र बहोत्तर परिवार, माताजी आवी मिले—रे जाया ।
पर भव जाता साय, कोई ना चये ॥
- १५— पलटे रग पतंग, तिको जिए री जियो—रे जाया ।
तिण ऊपर विश्वास, जामण करणो कियो ॥
- १६— शूर वीर बाबीस, परीसा धार्यो—रे जाया ।
जाणो शिवपुर वास, तिके नर पादना ॥
- १७— सुन्दर वाला दोय, परणीजो पदना—रे जाया ।
सुख लोनी जोवन-वेश, रूप चतुर्गुण ॥
- १८— मृग-नयणी, शशि-वदन इन्द्राणी—रे जाया ।
विलसी सुख ससार, लीजो वाणि ॥
- १९— लिया घणा ने घेर, विषय मर्यादा—रे जाया ।
जग माहे सह नार, माता का कल्याण ॥

- २० — स्वार्थ नी, सगी नार, माता जिनवर कही—री माई ।
अशुच दुर्गन्ध अपार, माता परणू नहीं ॥
- २१— । वाल्यो मन वैराग, विषय रस परिहरी—री माई ।
मल मूत्र नो भडार माता नारी खरी ॥
- २२— किपाक फल समान, विषय जिनवर कहा—री माई ।
दीजे अनुमति आज, कीजे मो पर मया ॥
- २३— नेम जिणेसर पास, महाव्रत आवरी—री माई ।
जाव जीव लगे बात, न करू प्रमाद री ॥
- २४— जाव जीव जप तप, करस्यू खप आकरी—री माई ।
मूल थकी जड काटस्यू, कर्म-विपाक री ॥
- २५— म्हारे क्षमा गढ माय, फोजा रहसी चढी—री माई ।
बारे भेदे तप तणी, चोकी खडी ॥
- २६— घारे भावना नाल, चढाऊँ कागरे—री माई ।
तोडू आठे कर्म, सकल कार्य सरे ॥
- २७— हाथ जोडी ने अर्ज, कु वर माय सू करे—री माई ।
घो अनुमति आदेश, मनोरथ मुक्त फले ॥

बोहा

- १— मोह छकी माता कहे, साभल माहरी बात ।
दुर्लभ अवर फूल ज्यू तुम्ह दर्शन साक्षात ॥
- २— पान फूल नू जीव तू, कोमल केलि समान ।
लड्डो अति लाडलो, लालन लीला थान ॥

ढाल २१

राग—राजविषा ने राज पियारी

- १— देवकी बोले सामल बेटा,
निमुणो माहरी याणी ।
जो माता पर जाणी मोने,
तो मन पर लांजा-लाणी ॥

- २— रे जाया चारिय दोहिलो
जोवो हिये विमासी ।
वेलू कवल लोहना चणा,
मेण दाते न चवासी ॥रे०॥
- ३— द्वारिका नगरी नो राज्य ले तू
मस्तक छत्र धराय ।
सफल मनोरथ करि माता नो,
हाथी घोडा अधिपति थाय ॥रे०॥
- ४— कृष्ण नरेसर खोले लेवे,
निसुणो वचन सुखदाई ।
पगे करी ने अगनी बुझावे,
ज्यू दुकर सयम भाई ॥रे०॥
- ५— बावल बाथ मे लेवी दोरी,
चालवो खाडा नो धार ।
सायर तरवो भुज वल करी ने,
ज्यू दुकर सयम-भार ॥रे०॥
- ६— केशव कहे लघु भाई ने,
जो तू छोडे भसार नो पास ।
पिण द्वारिका नगरी नो,
राज तोने देसू, पूरो माता नो आस ॥रे०॥
- ७— रह्यो अबोलो वचन सुणी ने
तब दीघो माघव राज ।
छत्र ने चामर दोन बीजे,
कीना राज ना साज ॥रे०॥
- ८— गज-सुकुमार कहे केहनो सारो,
अब वरते आण हमारी ।
तो हुकुम माहरो मत उथपो,
थे करो दीक्षा री तयारी ॥रे०॥

- ६— श्री भडार माहे सू काढो,
तीन लाख सोनया लीध ।
बे लाख ना ओघा पातरा,
एक लाख नाई ने दीध ॥२०॥

—

दोहा

- १— दीक्षा महोच्छव कृष्णजी, कीधो हर्ष अपार ।
मझ बाजारे चालिया, आया जिहा करतार ॥

ढाल २२

राग—गवरादे बाई आज बसो०

- १— कुवर कहे कर जोड ने,
साभलो कृपानाथो रे ।
एतो जनम मरण सू डरपियो,
छोडसू सगली आथो रे ।
माहरो कुवर वैरागी सयम आवरे ॥
- २— इण गहणा तनसू उतारिया,
माता खोला माहे लीधा रे ।
जिम सरप विछु ने अलगा करे,
तिम कुमर परा नाखी दीधा रे ॥माहरो०॥
- ३— माता देखी कुमर भणी,
जाग्यो मोह अपारो रे ।
इण रे ठलक ठलक आसू पडे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो रे ॥माहरो०॥
- ४— मोने इष्ट ने कत व्हालो हुतो,
हू देखी ने पामती साता रे ।
पिण म्हारो राख्यो न रह्यो न्हानडो,
इण विष बोले छे माता रे ॥माहरो०॥
- ५— इण ने तपस्या थोडी करावजो,
घणीं थोजो सार संभालो रे ।

हिवे कु वर कने माता आयने,

एतो देवे सीख रसालो रे ॥माहरो०॥

६— बेटा सूरपणो व्रत आदरे,

तो सूरपणोहीज पाले रे ।

तू त्रिया कीजे रे जाया निर्मली,

तू दोनू ही कुल उजवाले रे ॥माहरो०॥

७— झुरती बोले माता देवकी,

साभल तू सुजातो रे ।

तैं मुजने रोवाई इण परे

जिम बीजी म रोवाणें मातो रे ॥माहरो०॥

दोहा

१— लोच कियो निज हाय स, कोण ईशाने जाय ।

वेश पेहरी साधु तणो वादे प्रभुजी ना पाय ॥

२— जनम मरण रा जोड सू, विहनो किरपानाय ।

भवोदधि मोने तार ने, दीजे शिवपुर आय ॥

ढाल २३

राग—सोभागी-सुन्दर

१—नेम जियोसर स्व-हथे जी, चारित्र दीघो तास ।

हप लहे चित मे घणो जी, थई मन मे आस ॥

२—सोभागी मुनिवर घन घन गजसुकुमार ।

भव वधन थी छूटवा जी, छोड्यो माया-जाल ॥सोभागी०॥

३—माधव प्रमुख दुख घरे जी मन मे आणी नेह ।

वादी मुनि ने आपण जी, पोहता लोग सुगेह ॥सोभागी०॥

४—मेहला मे कुवर दीसे नही जी साले आई-ठाण ।

झुरे माता देवकी जी, प्रेम बडो बघाण ॥सोभागी०॥

५—तिणहीज दिन जिनवर भणी जी पूछे ते मुनिराय ।

प्रतिमाए जाई रहू जी, जो तुम आज्ञा थाय ॥सोभागी०॥

६—जिम सुख होवे तिम करो जी, म करो बहु प्रतिवध ।

चाल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मेरुण भव नो द्वंद ॥सोभागी०॥

- ७—गजसुकुमार मसाण मे जी, प्रतिमा रह्यो रे सधीर ।
 मैरु तणी परे नवी डिंगे जी, बड-क्षत्री बड-वीर ॥सोभागी०॥
- ८—आतम ध्यान विचारतो जी, भूकी ममता देह ।
 जड चेतन भिन्न भिन्न करे जी, लागो शिव सू नेह ॥सोभागी०॥
- ९—आपण ने भजे आप स् जी, पुद्गल रुचि न निवार ।
 आतम-राम रमावतो जी, निज-स्वभाव विचार ॥सोभागी०॥
- १०—क्षपक श्रेणि मुनि चढ्यो जी करण अपूरव माय ।
 ध्यान शुक्ल मुनि ध्यावता जी, परीपह उपजे घाय ॥सोभागी०॥
- ११—सोमल आहारण आवियोजी, दोठो मुनिवर तेह ।
 मन मे बहु दुख ऊपनोजी, चिते दुष्टी जेह ॥सोभागी०॥
- १२—प्रति नान्ही भुज बालिकाजी, रूपे देवकुमार ।
 पापी इण परणी नही जी, भूकी ते निरधार ॥सोभागी०॥
- १३—पाखण्ड दर्शन आदर्योजी, पर दुख जाणे नाय ।
 हिवे दुख दू इण ने खरोजी, जिम जाणे मन माय ॥सोभागी०॥
- १४—चित्त माहि इम चितवेजी, निर्दय विप्र चढाल ।
 करे परीसो साधनेजी दे मुख सू घणी गाल ॥सोभागी०॥
- १५—बलता अगारा ग्रहीजी, घडी माहे ते घाल ।
 पापी माथे मेलियाजी, पहिला बाधी पाल ॥सोभागी०॥
- १६—आप कमाया पापियेजी, तू भोगव फल आज ।
 भुज पुत्री दुखणी करीजी, तुजने नावी लाज ॥सोभागी०॥

दोहा

- १— दुसह परीपह मुनि सह, मन मे नाणे रीस ।
 धर्म केवल ध्याने चढे, मुनि ध्यावे जगदीश ॥

टाल २४

राग—रहेनी रहेनी अलणी रहेनी

- १— माता-हाथ तणी वरि भोजन,
 भय आहार गवि सीयो ।

गज मुनि घोर कर्म ने हणवा,
मुक्ति महल मन कीधो ॥
तुम पर वारी मैं, वारो-३ तुम पर वारी ॥

२— महाकाल भसाण व्याल बहु,
लान अवर द्विग दीस ।
उजड भाल बले चेहे झील,
तर-तल रह्या मुनीस ॥ तुम पर० ॥

३— नेत्र-दृष्टि मडो अगुष्ठ,
शिष्ठ सकल विष साजे ।
राचे आतम राम तणे रस,
सर्व पुराकृत भाजे ॥ तुम पर० ॥

४— मस्तक पाल बधी माटी को,
मुनिवर समता रस भरिया ।
भग भगता खयर ना खीरा,
मुनिवर ने शिर घरिया ॥ तुम पर० ॥

५— खदबद खीच तणी परे सीजे,
तड तड नासा तूटे ।
मुनिवर समता-भाव करो ने,
लाभ अनन्तो लूटे ॥ तुम पर० ॥

६— अत समे केवल ऊषारजी,
त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अटल अवगाहना कर ने,
अनन्त चतुष्टय लेह ॥ तुम पर० ॥

७— अल्प प्रव्रज्या, अतुल परीपह,
अष्ट कर्म करी हाण ।
जनम मरण नो अतज कीनो,
सासता सुख निर्वाण ॥ तुम पर० ॥

दोहा

१— मात तात वादण भणी, आवे कृष्ण नरेश ।
दीठो आह्मण डोकरो, सहतो बहु कलेस ॥

- २— इट वहे देवल भणी, कद होस्ये पूरी एह ।
दया आणी मन तेहनी, एक उपाडी तेह ॥
- ३— एक एक ते सहू ग्रही, कृष्ण तणे परिवार ।
मन मे ते हर्षित कहे, कृष्ण कियो उपगार ॥
- ४— करि उपगार शुभ भावसू, चित मे धरि आणद ।
वादण आव्या कृष्णजी, जिहा श्री नेम जिरणद ॥

ढाल २५

राग—पधीडा तू कई भूलो रे

- १— वण प्रदक्षिणा दे करीजी, वाद्या दोन दयाल ।
साध सकल वादियाजी, नही दीसे गज-सुकुमाल ॥
- २— जगत गुस । किहा गयो गज-सुकुमाल ?
हू प्रणमू जई तेहनेजी, त्रि करण-शुद्ध त्रि-काल ॥जगत०॥
- ३— पूछे कृष्ण नरेसरूजी, छाड्यो जिए ससार ।
रमणीय सुहावणो हो, रूप मदन अवतार ॥जगत०॥
- ४— नेम कहे उत्तर इसीजी, पोहतो ते निर्वाण ।
सबल सखाई तसु मिल्योजी, कामधयोसिधजाण ॥जगत०॥
- ५— अचेतन थई देवकी जी, कुरडे सा असराल ।
हीन दीन विल विल करेजी, दोहली पेट री भाल ॥जगत०॥
- ६— मूरछागति धरणी पडघोजी, चेतन पामो जाम ।
बोले कृष्ण दयामणोजी, नेम भणी सिर नाम ॥जगत०॥
- ७— किए उपसर्ग कियो इसीजी, मुजने कहोजिनराय ।
भापू सीस जाई करीजी, जिम मुज रीस बुझाय ॥जगत०॥
- ८— भमने वादण आवताजी, आहारण ने जिम आज ।
ते उपगार कियो भलोजी, तेहनी सायों बाज ॥जगत०॥
- ९— मिलियो ते उपगारियोजी, बहु बाले जे कम ।
न सपता ते थोढे मप्याजी, मत कहभाई । अथम ॥
वृष्णराय । सामलो मोरी बाण ॥
- १०— मै निमहिब जाणोसबू जी, मुज भाई मारण-हार ।
नेम बट ह्ये मांमनोजी, ते मुज बट विचार ॥वृष्ण०॥

- ११— जे नर तुजने देवनेजी, तुरत तजे जे प्राण ।
तिण तुज भाई मारियोजी, ए सच्चो सहिनाण ॥कृष्ण०॥
- १२— सामल वाणी नेमनीजी, ते दुख हिये न समाय ।
कामकिसोकियो पापियोजी ते मुख कह्यो न जाय ॥जगत०॥
- १३— नेम भणी हरि वादनेजी आवे भगरी मभार ।
खिण खिण भाई साभरेजी, प्रीत सबल ससार ॥जगत०॥

बोहा

- १— दुख करता भाई तराणो, कृष्ण घण उदास ।
मभ चोहटो टाल ने, जावे निज आवास ॥
- २— मुनि-घातक ब्राह्मणजिको, डरप्योमन मे अपार ।
सेरी कानी नोकल्यो, जावे नगरी वार ॥

ढाल २६

राग—ऋषभ प्रभुजी ये ए

- १— कृष्ण वदन देखी करिए,
मार्यो हुंतो जिणें साध ।
ते तो मुबो पापियो ए,
आप किया फल लाध ॥
- २— नरेसर हम कहे ए,
साची प्रभुजी री वाण ।
अन्यथा नही होवे ए
ए मुनि-घातक जाण ॥नरेसर०॥
- ३— तुरत बधावी राढ्यें ए,
जेहना हाथ ने पाय ।
नगरी माहे बाहिरे ए,
फेरी जे तसु काय ॥नरेसर०॥
- ४— कराई उद्धोपणा ए,
सारे शहर मभार ।
साध ने दुख दिया तराण ए,
ए फल ताजा सार ॥नरेसर०॥

- ५— फल दीठो ऋषि-घातनो ए,
इम नही करे चडाल ।
ते इण कियो पापिये ए,
खिण खिण होय उदाल ॥नरेसर०॥
- ६— बात सुणी मुनि तणी ए,
बहु यादव - परिवार ।
लेवे सयम भलो ए,
जाणी अथिर ससार ॥नरेसर०॥
- ७— जे चारित्र लेवा मते ए,
ते लेज्यो इण वार ।
माधव कहे मुख सूसो ए,
म करो डोल लिगार ॥नरेसर०॥
- ८— पाछल सह परिवार नी ए,
हू करिसु सभाल ।
दुखिया रा दुख मेटसू ए,
सुणजो बाल गोपाल ॥नरेसर०॥
- ९— वचन सुणी श्री कृष्ण नो ए
हुवा साध अनेक ।
महा महोच्छव हरि करे ए,
'भाणी' हृदय विवेक ॥नरेसर०॥
- १०— केई तो श्रावक हुवा ए,
केई समकित - धार ।
नेम जिएंसद तिहा थकी ए,
जनपद कियो विहार ॥नरेसर०॥
- ११— साता दीजो साधा भणी ए
तन मन चित्त उत्सास ।
भाशा मती उयापजो ए,
ग्यु पामो सागतो धाम ॥नरेसर०॥
- १२— सतगुरु सगति पायने ए,
मत बीजो परमाद ।

पर निन्दा ईर्ष्या तजो ए,
कीजो धर्म - आल्हाद ॥नरेसर०॥

१३— इए आरे धरम पायने ए,
कीजो घणा जतन ।

— थोडा मे नफो घणो ए,
राखीजो ऊजल मन ॥नरेसर०॥

१४— इए अवसर मे चेतजो ए,
धरम खरची लीजो लार ।
गुरु-सेवा कीजो हरस सू ए,
जिम होसी निस्तार ॥नरेसर०॥

१५— एसा पुरुषा सामो जोयने ए,
राखीजो धर्म सू प्रेम ।
ज्यू शिवरमणो वेंगी वरो ए,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥नरेसर०॥



दोहा

- १— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भट्टार ।
 खवदे सो वावन सह, नमता जय जय कार ॥
- २— सूत्र ज्ञाता मे चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव ।
 सक्षेपे करी हू कहूँ, सामल जो धरि चाव ॥

ढाल १

- १— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
 माथा रा तिलक समान री माई ।
 एक कोड ने छासठ लाख,
 गाव तणो अनुमान री माई ॥
 पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥
- २— राज करे तिहा 'श्रेणिक' राजा,
 मंत्री 'अभय' कुवार री माई ।
 महाराजा रे 'धारिणी' राणो,
 साधा ने हितकार री माई ॥पुण्य०॥
- ३— धारणी-श्रेणिक रो अग-जात,
 नामे मेघ-कुमार री माई ।
 सुविनीत बहोतर बसा भणियो,
 बाणी अमृत सार री माई ॥पुण्य०॥
- ४— तिण नगरी मे नालदो पाखो,
 तिण रो इसो अनुमान री माई ।
 खवदे सो बीमागा रिया,
 भगवंत श्री बद्धमान री माई ॥पुण्य०॥

- ५— पूरव भव गवालज केरो,
दान दियो निण खीर री माई ।
जिण पुन्याई इसडी बाघी,
घाली 'गोभद्र' सेठ घर सीर री माई ॥पुण्य०॥
- ६— 'जवू' जैसा इण पाडा मे हुवा,
बले कोडी-घज घर थाय री माई ।
सहस पेंसठ ने लाख इग्यारे,
पणसे छत्तीस घर इण माय री माई ॥पुण्य०॥
- ७— मंदिर मालिया जाली भरोखा,
सोहे पोल प्रकार री माई ।
चीरासी बले चोहटा सोहे,
परतक देवलोक सार री माई ॥पुण्य०॥

बोहा

- १— 'मेघ' कुवर जोवन आया, परणी आठ नार ।
महल माहे सुख भोगवे, मादल नो घोकार ॥
- २— गाम नगरपर विहरता, भगवन्त श्री महावीर ।
शरणे आवे ते प्राणिया पावे भव जल तीर ॥

ढाल २

राग—रसिया के गीत की

- १— वीर पधार्या हो मगध मुदेश मे,
करता धर्म उद्योत—जिणेंसर ।
मेना जीव थया है मिथ्यात मे,
ज्या री उतारता छोट—जिणेंसर ॥वीर०॥
- २— चोतीस अतिशय हो करने दीपता,
वाणी रा गुण पेंतीस—जिणेंसर ।
एक सहस ने आठ लक्षण धणी,
जीत्या राग ने रीस—जिणेंसर ॥वीर०॥

दोहा

- १— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भडार।
 चवदे सो बावन सह, नमता जय जय कार ॥
- २— सूत्र जाता मे चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव।
 संक्षेपे करी हू कहूँ, साभल जो धरि चाव ॥

ढाल १

- १— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
 माया रा तिलक समान री माई।
 एक कोड ने छासठ लाख,
 गाव तणो अनुमान री माई ॥
 पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥
- २— राज करे तिहा 'श्रेणिक' राजा,
 मंत्री 'धर्मय' कुवार री माई।
 महाराजा रे 'धारिणी' राणो,
 साधा ने हितकार री माई ॥पुण्य०॥
- ३— धारणी-श्रेणिक रो भग-जात,
 नामे मेघ-कुमार री माई।
 सुविनीत बहोतर बसा भणियो,
 वाणो भमृत सार री माई ॥पुण्य०॥
- ४— तिण नगरी मे नालदो पाहो,
 तिण रो इसो अनुमान री माई।
 चवदे तो बीमासा दिया,
 भगवत श्री वर्द्धमान री माई ॥पुण्य०॥

वले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे ॥कुवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हर्षित थाय रे ।
हाथ जोड ने इण पर वहे,
ते सुणजो चित लाय रे ॥कुवर० ॥

४— चौवीसमा श्री वीरजी,
तारण तिरण जहाज रे ।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वादण जावे आज रे ॥कुवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणिया थका,
पातिक जावे परा दूर रे ।
साजे ही मन आराधता,
च्यारे ही गति देवे चूर रे ॥कुवर०॥

६— वचन सेवग तणो साभली,
चितवे मेघ कुमार रे ।
हू पण वीर ने वादसू,
वेग सजाई करो तयार रे ॥कुवर०॥

७— वीर वादण तणो मेघ ने,
ऊठघो है प्रेम अपार रे ।
मोटे मडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मज्झ वाजार रे ॥कुवर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवत हर्षित थाय रे ।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुवर०॥

९— भगवत देवे हो देशना,
ते सुणजो घरि प्रेम रे ।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किण विघ होवे छे हेम रे ॥कुवर०॥

वले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे ॥कुवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हृषित थाय रे ।
हाथ जोड ने इण पर वहे,
ते सुणजो चित लाय रे ॥कुवर० ॥

४— चोवीसमा श्री वीरजो,
तारण तिरण जहाज रे ।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वादण जावे आज रे ॥कुवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणिया थका,
पातिक जावे परा दूर रे ।
साजे ही मन आराधता,
च्यारे ही गति देवे चूर रे ॥कुवर०॥

६— वचन सेवग तणो सामली,
चितवे मेघ कुमार रे ।
हू पण वीर ने वादसू,
वेग सजाई करो तयार रे ॥कुवर०॥

७— वीर वादण तणो मेघ ने,
ऊठयो है प्रेम अपार रे ।
मोटे मडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मज्झ वाजार रे ॥कुवर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवत हृषित थाय रे ।
अण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुवर०॥

९— भगवत देवे हो देशना,
ते सुणजो घरि प्रेम रे ।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किय विध होवे छे हेम रे ॥कुवर०॥

दोहा

१—

आगार ने अणगार नो, धम ना दोय प्रकार ।
चउ-विघ घम आराधता, चउ-गति पामे पार ॥

—६

राग—नवकार मत्र नो ध्यान धरो

ढाल ४

१—

जीवडला री आद नही काई,
पुन रे जोग नर-भव पाई ।
भमियो जीव आठ करम बाधो,
इम जाणी दया घरम आराधो ॥

२—

पाम्यो जीव आरज खेतो,
उत्तम घर जनम लहो हेतो ।
तोही सेवे पाच परमादो ॥इम०॥

३—

आऊखा नो सुणिया मानो,
जिम पाको पीपल-पानो ।
पढता वार नही जादो ॥इम०॥

४—

इसडो छे ओछो आयू,
ज्यू ओस सिरे वागे वायू ।
तिण मे रोग सोग बहु असमाधो ॥इम०॥

५—

पाच स्यावर तीन विक्लेन्द्रिय गयो,
सख्यात असख्यात काल रयो ।
हिचे निगोद रो मुणो सवादो ॥इम०॥

६—

जीव हुवो मूलो ने आदो,
घणाजणा सवाद गरी सादो ।
वनम्पति रा भव बहु साधो ॥इम०॥

७—

वक्केन्द्रिय बाय माय रे फसिमो,
उत्पृष्टो सात आठ भय यमियो ।
उदाख उदाख मोही रापो ॥इम०॥

- ८— देवता ने नारकी रे ह्वो,
सुखियो दुखियो जीव बहु मुवो ।
भाख गया देव-देवाघो ॥इम०॥
- ९— इम रुलियो चउ-गति मायो,
अव नीठ नीठ नर-भव पायो ।
समो एक म करो परमादो ॥इम०॥
- १०— कदाच मनुष्य रो भव पामो,
तो कठे आरज क्षेत्र ठामो ।
नीचे कुल मे जनम लाघो ॥इम०॥
- ११— आर्य क्षेत्र कुल सुघ आयो,
तो पूरी इन्द्रिय जीव नही पायो ।
हीण-इन्द्रिय दुखा नो दाघो ॥इम०॥
- १२— कदाच जो पूरी इन्द्रिय पाई,
तो धर्म सुणवो किहा सुख दाई ।
मिथ्या मत्या नो जोर जादो ॥इम०॥
- १३— उत्तम धर्म सुणवो जे रे लह्यो,
पिण सरघा विना जीव यूही गयो ।
काम ने भोग कलण कादो ॥इम०॥
- १४— भुगती इण जीव चउरासी,
शुद्ध धर्म करणी सू मुगति जासी ।
नही तर सुपनो एक योही लाघो ॥इम०॥

दोहा

- १— वाणी सुण ने परिपदा, आई जिण दिश जाय ।
'श्रेणिक' नामे नरपति, वादी वीर ना पाय ॥
- २— 'मेघ' कुमर तिण अवसरे, जोडी दोनू हाथ ।
सध्या रुच्या प्रतीतिया, दीक्षा लेसू जग-नाथ ॥
- ३— बलता वीर इसी कहे, सुणजो 'मेघ' कुमार ।
जो थारो मन वैराग सू, तो म करो जेज लिगार ॥

- ४— प्रभु प्रणमी घर आयने, वदे मात ना ' पाय ।
हाथ जोड़ ने हम कहे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल ५

राग—सोजत रो सिरदार वामां रो सोमी

- १— वारणी श्री जिनराज तणी, काने पडो' रे माई ।
आज अदर री आख जामण । म्हारी ऊघडो ॥
- २— बलती बोले माय, हू वारी जाऊ तुम तणी ।
रे जाया । सुणी जिएद नी वाण, पुन्याई थारी घणी ॥
- ३— पुत्र कहे माय ! वाण, साची में सरदही, री माई ।
सागी मीठी जेम, दूध शाकर सही ॥
- ४— दीजे अनुमत मोय, दीक्षा लेसू सही-री माई ।
हिवे आजा री जेज, करवी जुगती नही ॥
- ५— वचन अपूरव एह पुत्र ना साभली री माई ।
मूर्खगित मट थाय, माता घरणी ढली ॥
- ६— मोह तणे उक्त आज, सूरती चलती रही रे जाया ।
शीतल पवन धाल माता बँठी थई ॥
- ७— पुत्र ने साभी, रही छे जोवती, रे जाया ।
मोहतणे वक्त वेण, बोले माता रोवती ॥
- ८— साधपणो नही सहल, जाया । जामण कहे, रे जाया ।
तू नानदियो बाल परीपह किम सहे ॥
- ९— त्रिविधे त्रिविधे करी, पच महाग्रत पालना, रे जाया ।
नाहा मोटा दोय, अहोनिश टालना ॥
- १०— दोष बेमालित टाल करणी रे जाया । गोचरी रे ।
अमणो भवरा जेम, चित्त मोने लोष री ॥
- ११— वनष बचोला छोड, सेणी रे यच्छ बाछनी, रे जाया ।
जावजीव मगे घाट, तहीं जोवणी पाछनी ॥
- १२— हावे घोवे नाहि, मुगे रागे मुगपति, जाया ।
मेला पेहरे वेश, जिबे जेन रा जती ॥

- १३— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे कह्यो, री माई ।
सूरा ने छे सहल, कुवर उत्तर दियो ॥
- १४— जनम मरण री बात, सहु जिणवर कही, री माई ।
दो अनुमत आदेश, दीक्षा लेसू सही ॥
- १५— पलटे रग पतग, जामण ! जाणो इसो, री माई ।
तिण ऊपर विश्वास, जामण ! करणो कितो ॥

बोहा

- १— माता मुख सू इम कहे, बात सुणो मुज पूत ।
कोड घणो परणावियो, काई भाजे घर-सूत ॥
- २— रमण्या सामो जोइये, ए माता ना बेण ।
मोह शब्द बोले घणा, भुरे भर भर नेण ॥
- ३— धन जोवन राण्या तणो, लाहो लीजे एह ।
दिन पाछा पडिया पछे, कीजो मन-चितेह ॥
- ४— वचन सुणी माता तणा, बोले मेघ-कुमार ।
अधिर सुख ससार ना, विणसता नही बार ॥

ढाल ६

राग— धन धन सती वदनवाला

- १— बले माता ने कहे एमो,
मोने धम तणो आगे प्रेमो ।
अब तो जेज नही कीजे,
मोने आज आजा जननी दीजे ॥
- २— समय दुख रो स्यू कहेणो,
छेदन भेदन वदन सहेणो ।
नरक तिर्यञ्च दुस सहा खोजे ॥मोने०॥
- ३— हूँ तो जामण ! मरण थकी डरियो,
वीरवचन छे रस थी भरियो ।
तन धन जीवन आऊ छीजे ॥मोने०॥

- ३— हरसी न दीघो हालरोजी,
वह नही पाडी रे पाय ।
एक ही पुत्र न जनमियोजी,
हूँस रही मन माय-रे जाया ॥तो विन० ।
- ४— आत्र-लुहण तू माहरेजी,
कालेजा नी कोर ।
तु वच्छ आधा-लाकडीजी,
किम हुवे कठिन कठोर ॥रे जा० तो०॥
- ५— चढती तुम मुख जोइवाजी,
दोहाडा मे दश वार ।
ते पिण भूय भारी हूसथोजी,
कुण चढसी चउ वार ॥रे जा० तो०॥
- ६— जो बालापणो सभारस्येजी,
सीयाला नी रे रात ।
तो जामण ने छाडवाजी,
सहीय न काढे बात ॥रे जा० तो०॥
- ७— बूढापे सुखणी हुस्यूजी,
होती मोटी रे आस ।
घर सूनो करि जाय छे रे,
माता मूकी नीरास ॥रे जा० तो०॥
- ८— दीसे आज दयामणोजी,
ए ताहरो परिवार ।
सेवक ने सामी पखेजी,
अवर कवण आघार ॥रे जा० तो०॥
- ९— महल कवण रखवालस्येजी,
कवण करसी सार ।
एकण जाया बाहिरोजी,
सूनो सह ससार ॥रे जा० तो०॥
- १०— वच्छ । तू भोजन ने समे रे
हिवडे वेसे सी आय ।

ढाल ८

राग—राजेश्वर रावण हो बोलोनी

- १— सुंदर आठे मुलकती, ऊमी महला रे माह ।
इण उणिहारे लोयणा, निरखो नवला नाह ॥
रहो रहो बालहा विछडो क्यू इण बार ॥
- २— दूजा तो सगला रह्या, मुख बोलो भीठा बोल ।
काई ठेलो पगसू परी, बात कहो मन खोल ॥रहो०॥
- ३— सुंदर मंदिर मालिया, मुलकती नेह विलुद्ध ।
पूरे हाथे पूजियो, परमेश्वर मन-शुद्ध ॥रहो०॥
- ४— आगोत्तर सुग कारणे, छत्ती रिध छोडो आवास ।
हाथ छोडो कुण करे, पेट माहिली आस ॥रहो०॥
- ५— पदमणी-परिमल पाम ने, भोगो अमर नाह ।
सुख विलसो मोसु बालहा । लीजं जोवन-लाह ॥रहो०॥
- ६— कुंवर कहं श्री वीर नी, बाणी सुणी कान ।
तन घन चंचल आउखो, जैसो पीपल-पान ॥
रहो रहो कामणी अर्मे लेस्या सयम-भार ॥
- ७— अलप सुख ससार ना कुण बाछे काम-भोग ।
कडवा फल किपाक सा, बहुला रोग ने सोग ॥रहो०॥
- ८— पोखे प्रेम स्वारथ लगे, अथिर अवला नो सग ।
प्यार दिहाडा उहड है, जम कसू भा नो रग ॥रहो०॥

दोहा

- १— ए जुग जाणी कारमो, लेस्या सयम भार ।
वचन सुणी भीतम तरणा, बले बोले आठे नार ॥

ढाल ९

राग—भाग्य प्रबल नृप चदनो रे

- १— सुंदर आठ वीनवे रे,
कोई अवगुण मो मे दीठ रे ।
कहीने देखावो कता । मो भणी रे,
बोलो बाणी भीठ रे ॥

- ३— दीक्षा महोच्छ्व हर्ष सू, करे श्रेणिक महाराय ।
आठ राण्या रो लाडलो, धन धन मेघकुमार ॥
- ४— दीक्षा ने तयारी हुवो मन मे हर्ष अपार ।
हियो कायर रो थरहरे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल, १०

राग—वे वे तो मुनिवर बहरण पागुरिया रे

- १— मोटी वणार्ई इक शीविका रे,
माहे बेठो छे मेघ-कुमार रे ।
माता रो हिवडो फाटे अति घरणो रे,
विल विल कर रही आठे नार रे ॥
जोयजो कायर रो हीयो थर हरे रे ॥
- २— समय लेवा घर सू नीसयों रे,
जिम रण माहे निकसे सूर वीर रे ।
वाजित्र वाजे शब्द सुहावणा रे,
कायर इण वेला होवे दलगीर रे ॥जो०॥
- ३— कोईक कामण मुख सू इम कहे रे,
दीसे नान्हडियो सुकमाल रे ।
कुटुब कवीलो किण विघ छोडियो रे,
किण विघ तोडयो माया जाल रे ॥जो०॥
- ४— एक कहे बारी जाऊं एहनी रे,
इण वैरागे छोडयो घर-सूत रे ।
जोवन वय मे सुन्दर परहरी रे,
राजा 'श्रेणिक-धारिणी' के रो पूत रे
जोइजो समकितनो रस परगम्यो रे ॥
- ५— पडदायत नारी मदिर मालिये रे,
जोवे जाल्या मे मूडो घाल रे ।
सुदर कमला री केल री काव ज्यू,
देखो पापी मूके छे आठे बाल रे ॥जो०॥
- ६— घरम रा घेखी घेटा इम कहे रे,
बोले मूडे सू खोटी वाण रे ।

- ५— आठ नारी ने मायडी,
बाप बाघव ने परिवारो रे ।
सह आख्या नीकरणा नाखता,
पाछा आया घर मझारो रे ॥ वेंरागी० ॥

दोहा

- १— धारिणी घर मे आय ने, भुरे भाठे ही नार ।
मेहला मे कुवर दोसे नही, रोवे बारम्बार ॥

ठाल १२

राग—सयम की बुध

- १— मेघ-कुवर सयम लियो, छोड्यो माया जाल-मुनीसर ।
साधा री रीत हुती जिका, साचवे कालो-काल मुनीसर ॥
जोयजी गति कर्मा तणी ॥
- २— सयारो कियो साभरो, 'मेघ' रिखि तिणवार-मुनीसर ।
साध घणा प्रभुजी कने, तिण स आयो छेहलो सयार ॥ मु० जो० ॥
- ३— विनय मार्ग जिनघम छे, राव रक रो कारण नही कोई-मुनी० ।
आप स पहला नीकल्या, ते मुनिवर बडा होई ॥ मुनी० जो० ॥
- ४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित अणगार-मुनीसर ।
उण दिनरो थो नीकल्यो, तिण स चित्त चले सयम बार ॥ मु० जो० ॥

दोहा

- १— सिख हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव ।
कर्मा रे वश साधुजी, हवे करे पिछताव ॥

ठाल १३

राग—मान न कीजे रे मानवी

- १— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मायजी ।
किण री ठोकर सागय,
काई ऊपर पही जायजी ॥
मेघ रिमी मन चितवे ॥

ढाल ११

राग—सहेल्या ए आंबो मोरियो

- १— कु वरजी गहणा उतारिया,
माता खोला माहे लीघा रे ।
सर्प बिच्छ अलगा करे,
जिम कु वर परा नाख दीघा रे ।
वरागी हो सयम आदरे ॥
- २— माता देखे बेटा भणी,
जिम जागे मोह अपारो रे ।
ठलक ठलक आसू पडे,
जाणे तूट्यो मोत्या रो हारो रे ॥वैरागी०॥
- ३— प्रभुजी सू करे वीनती,
जोडी दोन् हाथो जी ।
माहरो कु वर वीहनो ससार थो,
थाने सूपू कृपानाथो जी ॥वैरागी०॥
- ४— मोने इष्ट ने कात बालो हुतो,
हूँ देखी ने पामती साता रे ।
पिण माहरो राख्यो ना रहे,
इण विघ बोले माता रे ॥वैरागी०॥
- ५— एहनी सार सभार कीजो घणी,
मायडी इण पर दाखे रे ।
कु वर आगे हिवे आयने,
देखो किण विघ माता भाखे रे ॥वैरागी०॥
- ६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणहीज पाले रे ।
सयम चोखो पालने,
दोनू कुल उजवाले रे ॥वैरागी०॥
- ७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे ।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
काई दूजी म रोवाये मायो रे ॥वैरागी०॥

रिघ सपदा रमणी पाभी अति घणी रे,
पिण परमेसर नही देवे खाण रे ॥जो०॥

७— वाई कोई परणी जावे सासरे रे,
मझनो गावे ससार नो माग रे ।
ज्यू काचे हिये रा मानव भूरे घणा रे,
नही घर्म उपर तेहनो राग रे ॥जो०॥

८— एक एक बोले इण परे रे,
घन घन इण कुवरसणो अवतार रे ।
मूकी इण काया माया कारमी रे,
आप तिरसी ने ओरा ने तार रे ॥जो०॥

९— इण राणी इद्राणी सम छोड दी रे,
बले भाई सजन मायने बाप रे,
नरक दुखा सू इण वीहते रे
जिम काचली छोडे साप रे ॥जो०॥

१०— कोइक भुरखी नाखी इम कहे रे,
बोले ज्यू मनरी आवे दाय रे ।
जानी तो जाणें गेला सारखा रे,
ए छूत भाखी ज्यू खेल माय रे ॥जो०॥

११— धारण भाट बोले विरुदावली रे,
जय जय बोले शब्द कर घोष रे ।
कर्म घाठे ही बेरी जीतने रे,
वगी ये लीजो अविचल मोख रे ॥जो०॥

बोहा

१— नगर बीच हो नीबल्या, गया बीर जिणद रे पारा ।
बदला बरी बर जोड ने, बहे तारो भयजल तास ॥

२— मूठे सोसी चढ़ रही, जाणें बरत्या भगस-भाल ।
गहणा उतारे छीन घी, हुनो यराम ने ताम ॥

ढाल ११

राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो

- १— कुवरजी गहणा उतारिया,
माता सोला माहे लीघा रे ।
सर्प विच्छ भलगा करे,
जिम कुवर परा नाख दीघा रे ।
वैरागी हो समय आदरे ॥
- २— माता देखे बेटा भरी,
जिम जागे मोह अपारो रे ।
ठलक ठलक आसू पडे,
जाणो तूट्यो मोत्या रो हारो रे ॥वैरागी०॥
- ३— प्रभुजी सू करे वीनती,
जोडी दोन् हाथो जी ।
माहरो कुवर वीहनो ससार थी,
थाने सूपू कृपानाथो जी ॥वैरागी०॥
- ४— मोने इष्ट ने कात बालो हुतो,
हू देखी ने पामती साता रे ।
पिण माहरो राख्यो ना रहे,
इण विध बोले माता रे ॥वैरागी०॥
- ५— एहती सार सभार कीजो घणी,
मायडी इण पर दाखे रे ।
कुवर आगे हिवे आयने,
देखो किण विध माता भाखे रे ॥वैरागी०॥
- ६— बेटा सूरपणे अत आदरे,
तो सूरपणहीज पाले रे ।
सयम चोखो पालने,
दोन् कुल उजवाले रे ॥वैरागी०॥
- ७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे ।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
काई दूजी म रोवाये मायो रे ॥वैरागी०॥

- ५— आठ नारी ने मायडी,
बाप बाधव ने परिवारो रे ।
सहू आख्या नीकरणा नाखता,
पाछा आया घर मम्मारो रे ॥ वैरागी ॥

दोहा

- १— धारिणी घर मे आय ने, भुरे आठे ही नार ।
मेहला मे कुवर दोसे नही, रोवे बारम्बार ॥

ठाल १२

राग—सयम की बुध

- १— मेघ-कुवर सयम लियो, छोड़्यो माया जाल-मुनीसर ।
साधा री रीत हुतो जिका, साचवे कालो-काल मुनीसर ॥
जोयजो गति कमा तणी ॥
- २— सपारो कियो साभरो, 'मेघ' रिखि तिएवार-मुनीसर ।
साध घणा प्रभुजी कने, तिए स मायो छेहलो सपार ॥ मु० जो० ॥
- ३— विनय मार्गं जिनधर्म छे राव रक रो कारण नही कोई-मुनी०
भाप स पहला नीकल्या, ते मुनिवर बडा होई ॥ मुनी० जो० ॥
- ४— तैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित भणगार मुनीसर ।
उण दिनरो मो नीकल्यो, तिए स चित्त चले सयम धार ॥ मु० जो० ॥

दोहा

- १— तिस हुवो थी वीर नो, आणी वैराग भाव ।
कमा रे वण साधुजी, हवे धरे पिछताव ॥

ठाल १३

राग—मान न कीजे रे मानवी

- १— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मायजी ।
बिण री टोवर सागव,
कोई ठगर पटी जायजी ॥
मेघ रिगी मा चितवे ॥

- २— कोई लेवा जावेजी वाचणी,
पग तले आगुली आयजी ।
पगनी रज पडे साथ रे,
अरति आई मन मायजी ॥मेघ०॥
- ३— कठे प्रीत साधा तणी,
कठे राण्या रो हेजजी ।
अठे घरती सोवणो,
कठे सुवाली सेजजी ॥मेघ०॥
- ४— अठे काठ पातरा,
कठे सोना रा थालजी ।
अठे माग ने खावणो,
कठे घर रा चावल दालजी ॥मेघ०॥
- ५— जदि हूँ घर मे हुँतो,
म्हारे माथे हुती पागजी ।
एहिज साधु बुलावता,
घरता मोसू रागजी ॥मेघ०॥
- ६— आगे साधुजी और था,
अवे हो गया और जी ।
मैं तो माथो मुडायने,
बडो पसायो जोरजी ॥मेघ०॥
- ७— हूँ राजा श्रेणिक रो दीकरो,
म्हारे कुमी नही थी कायजी ।
पिए यातो माथो मूढ ने,
घाल्यो खोगी री भरती मायजी ॥मेघ०॥
- ८— रात हुई पट मासनी,
चितवे मनरे माय जी ।
दुख रा दाधा माणसा,
यम-धारो किम जायजी ॥मेघ०॥
- ९— आवण जावण ऊठणो,
साधा भाढी ठेलम ठेलजी ।

आखी राती में नही सकयो,
आख्या दोनू मेल जी ॥मेघ०॥

ढाल १४

राग—काशी कलियाँ

१— कोई चापे सायरो रे हा, कोई सघटे अणगार ।

मेघ मुनीसरू ॥

कोइक छाटे रेणुका रे हा, चितवे मेघ कुमार—मेघ० ॥

२— कोइक ढाले मातरो रे हा कोइक अग ठपग—मेघ० ।
खेद पाये तिरा भवसरे हा, चारित्र सू मन भग—मेघ० ॥

३— राज ने रिघ रमणी तजी रे हा, स्वरूप बहुला दाम—मेघ० ।
परवश पडियो आयने रे हा, किम सुघरसी काम—मेघ० ॥

४— कुटुम्ब न्यातिला माहरा रे हा, घरता मोसू प्रीत—मेघ० ।
खमा खमा करता सदा रे हा, ते पाछे रही रीत—मेघ० ॥

५— किहा प्रमदानी प्रीतडी रे हा, किहा साधु नी रीत—मेघ० ।
किहा मंदिर ने मालिया रे हा, किहा सुन्दर ना गीत—मेघ० ॥

६— किहा फूल किहा काकरा रे हा, किहा चदन किहां लोच—मेघ० ।
पूरव भोग समार तो रे हा, मेघ करे मन सोच—मेघ० ॥

७— मेघ मुनि कोपे चढघोरे हाँ, चितवे मन मे एम—मेघ० ।
लट पट करी दीसा दीयी रे हा, अवे करे छे केम—मेघ० ॥

८— परीसा चीतारे घणा रे हा, आया कायर भाव—मेघ० ।
जोग भागो समय धवी रे हा, सीदावे मन माय—मेघ० ॥

९— अजे काई विगडयो नही रे हा, पहली रात बिचार—मेघ० ।
मन गान्यो बरू माहरो रे हा, एतो छे व्यवहार—मेघ० ॥

१०— मैं बाई न सीधो बीर नो रे हाँ, मैं नवि साधो आहार—मेघ० ।
भीली पातरा सू पने रे हाँ, जासू राज मभार—मेघ० ॥

बोहा

१— पारित्र यी पित्त पत गयो, मा मे धयो सताप ।
घरे जावण रो मा ह्वो, इसो उगटियो पाप ॥

- २— चदन अगर ने गधवती, लेप लगाऊँ अगर ।
 फ्रीडा कहूँ ससार मे, नाटक नव नव रग ॥
- ३— लोक-व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय ।
 पूछण री विरिया हुई, तरे राज आई मन माय ॥

ढाल १५

राग—कोयल पर्वत धू धतो रे

- १— प्रभात समे उतावलो रे,
 मेघ आयो वीर जिएदजी रे पास हो—मुनीसर ।
 पडि-कमणो पिए नवि कियो रे,
 मेघ ऊभो चित्त उदास हो—मुनीसर ।
 वीर जिएद बुलावियो रे मेघ ।
- २— श्रेणिक नो तू दीकरो रे, मेघ ।
 धारिणी माता थाय हो—मुनीसर ।
 सयम थी मन ऊत्यों रे, मेघ ।
 धारे कास्यू आई दिल माय हा—मुनीसर ॥वीर०॥
- ३— सयम-दुखा सू बीहतो रे, मेघ ।
 ते आप्यो कायर-भाव हो—मुनीसर ।
 मन मे सिदायो अति घणो रे, मेघ ।
 ते लाधो नही तिणरो साव हो—मुनीसर ॥वीर०॥
- ४— छोडी ये माया काया कारमी रे मेघ ।
 बले पाछो मती निहाल हो—मुनीसर ।
 ओ तो दुख तू स्यू गणे रे मेघ ।
 पूरव भव सभाल हो—मुनीसर । ॥वीर०॥
- ५— तिहा थी मरने ऊपनो रे मेघ ।
 श्रेणिक घर अवतार हो—मुनीसर ।
 पहिले भव हाथी हुतो रे मेघ ।
 हयणिया रो भरतार हो—मुनीसर ॥वीर०॥
- ६— नरक तिर्यंच मे तू भम्यो रे मेघ ।
 सह्या दुख अधोर हो—मुनीसर ।
 सगली जायगा ऊपनो रे मेघ ।
 खाली न रही कोई ठोर हो—मुनीसर ॥वीर०॥

७— भव अनता भमता थका रे मेघ ।

लाघो नर अवतार हो—मुनीसर ।

नर-भव चितामणि सारिखो रे मेघ ।

एले जनम मति हार हो—मुनीसर ॥वीर०॥

८— एतो दुख जाणो मती रे मेघ ।

रहे तू मन सू सधीर हो—मुनीसर ।

ससार समुद्र तीरे पामियो रे मेघ ।

जेज म करि बैठो तीर हो—मुनीसर ॥वीर०॥

९— [सातमो सुख चक्रवर्ती तणो रे मेघ ।

आठमो देव-विमाण हो—मुनीसर ।

नवमो सुख साधा तणो रे मेघ ।

दशमो सुख निर्वाण हो—मुनीसर ॥वीर०॥

१०— पूर्व भव दुख साभल्यो रे मेघ ।

हाथी रो भव जाण हो—मुनीसर ।

पूरव-भव सभारतो रे मेघ ।

उपनो जाति-स्मरण ज्ञान हो—मुनी० । वीर०॥

११— याद आयो भव पाछलो रे मेघ ।

धमक्यो चित्त मझार हो—मुनीसर ।

जनम मरण सू घर ह्यो रे मेघ ।

पाछो हुवो सुरति सभार हो—मुनीसर ॥वीर०॥

दोहा

१— मागो थो पिण वायडघो, वीर तियो समझाय ।

ज्यू सुरड री राधी वाजरी, मेह हुवा बूटो बघाय ॥

२— पावे छेत रा मानयो, वरे घणा जतन ।

ज्यू 'मेघ' मुति समतणा, वरे बोट जता ॥

३— समय अमोलक ते बह्यो, माजे भव भव रा दुख ।

शिय रमणी बेगी वरे, जावे सगला दुग ॥

४— बारमा गेठ गमार गा, निण पिष जावे भूष ।

मेह तणो बगर रहे, तो ऊभा जावे सूष ॥

५— पढतो थो जिम टापरो, दीघी थूणी लगाय ।
तिम 'मेघ' सयम थी डिग्यो, पिण वीर दिघो सहाय ॥

ढाल १६

राग—पत्तनी

१— 'मेघ' ने वीर समझायो,
तरे घरम अमोलक पायो ।
वले शका न राखी कायो,
ए परमार्थ साचो पायो ॥

२— इण रे मन मे इसडी आई,
पिण वीर हुवा रे सहाई ।
इण रा परिणाम हुवा था खोटा,
पिण वाहरू मिलिया मोटा ॥

३— परिणामो मे पडियो फेर,
पिण वीरजी लीघो घेर ।
वले दीक्षा लीघी तिण वार,
मन मे हर्ष हुवो अपार ॥

४— मन ठिकाणे दियो आण,
भगवन्त बोले बाण ।
दोय नेणा री करसी सार,
ओर डील साधा ने त्यार ॥

५— घणा काल सयम पाली,
तिण आत्म ने उजवाली ।
मन वैराग तिहा वाली,
तप कण देही गाली ॥

६— चढथो पर्वत ऊपर सार,
कियो पादोपगमन सथार ।
तिहा थी कीनो मुनि काल,
पहोतो विजय विमाण रसाल ॥

- ७— देव नीं धित पूरी करसी,
महाविदेह मे अवतरसी ।
तिहा भरिया घणा भडार,
माय बाप कुटुम्ब परिवार ॥
- ८— जठे घरम ज्ञानी रो पासी,
वठे आठे ही करम खपासी ।
जठे केवल ज्ञान उपासी,
एतो भुगति नगर मे जासी ॥
- ९— जनम मरण रो करसी अत,
लेसी सासता सुख अनन्त ।
सूत्र ज्ञाता तणे अनुसार,
रिख 'जयमलजी' कह्यो विस्तार ॥



४

स्कंदक ऋषि

दोहा

- १— मोह तण वश मानवी, हासो कितोल कराय ।
कर्म कठण वाघे जीवढो, तीनू वय रे माय ॥
- २— वैर पुराणो नहि हुवे, जोवो हिये विचार ।
काचर ने 'खदक' तणो, भविक सुणो विस्तार ॥
- ३— क्षमा किया मुख ऊपजे, काध किया दुख होय ।
क्षमा करी खदक ऋषि, भुगति गयो शुद्ध होय ॥

ढाल १

राग—मुनीसर जै जै गुण भटार

- १— नमू वीर शासन घणीजी, गणधर गोतम साम ।
कथा अनुसारे गावसू जी, 'खदक' ना गुण-ग्राम ॥
- २— क्षभावत जोय भगवत नो जी ज्ञान ।
अत क्षमा अधिकी कही जी, रह्य धर्म ने ध्यान ॥क्षमा०॥
- ३— त्वचा उतारी देहनी जी, राख्य समताजी भाव ।
जिन-धर्म कीघो दीपतो जी मोटा अटलक राव ॥क्षमा०॥
- ४— 'सावत्यी' नगरी शोभती जी, कनक-केतु जिहा भूप ।
राणी 'मलयासुन्दरी' जी, 'खदक' कु वर अनूप ॥क्षमा०॥
- ५— सगला अगज सुदरु जी, इन्द्रिय नही कोई हीण ।
प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ॥क्षमा०॥
- ६— विजयसेन' गुरु पागुर्या जी, साधा रे परिवार ।
ज्ञान गुणै कर आगला जी, तपसी पार न पार ॥क्षमा०॥

- ७— नर नारी ने हुवो घणो जी, साध-वादण रो जी कोड ।
कोई पाला केई पालखी जी, चाल्या होडाहोड ॥क्षमा०॥
- ८— खदक कु वर पिण आवियो जी, बैठो परिषदा माय ।
मुनिवर दीधी देशना जी, सगला ने चित्त लाय ॥क्षमा०॥
- ९— आगार ने अणगारनो जी, धर्म तरणा दोय भेद ।
समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति—उम्मेद ॥क्षमा०॥
- १०—डाभ अणी-जल-विन्दवो जी, पाको पीपल-पान ।
अधिर तन धन भाउखो जी, तजो कपट ने मान ॥क्षमा ॥
- ११—पेहडे सुत ने बधवा जी, पेहडे स्वजन परिवार ।
धन ने कुटुम्ब पेहडे सहू जी, न पेहडे धर्म सार ॥क्षमा०॥
- १२—आयो छे जीव एकलो जी, जासी एकाजी एक ।
भोले को मतो भूलजो जी, कुटुम्ब कबोलो देख ॥क्षमा०॥
- १३—पुन जोगे नर-भव सहो जी, सदगुरु नो सजोग ।
पाछ हिवे राखो मतो जी, तजो जहर जिम भोग ॥क्षमा०॥
- १४—मोछा जीवित कारणे जी, स्यू दो ऊँडी ये राग ।
भव भव माहे काढिया जी, नटवे-वाला साग ॥क्षमा०॥
- १५—आर गति ससार मा जी, लग रही खाचा जी ताण ।
अधिर वस्तु सगली कही जी, निश्चल छे निर्वाण ॥क्षमा०॥
- १६—अधिर मुख ससार ना जी, काय भलूजो जी जाल ।
वचन सुणो सत गुरु तरणा जी, चेतो सुरती सभाल ॥क्षमा०॥

दोहा

- १— मुनिवर परिषदा आगले, दाखे धर्म मुजाण ।
गजा कुवरजी आद दे, निमुले सतगुरु-वाण ॥
- २— आदि घनादि जीयरो, समियो सक गति माय ।
धर्म बिता ए जीय बी, गरज सरी नहीं पाय ॥
- ३— धर्म करो भवि-प्राप्तिया । दे सतगुरु उपदेश ।
गामु-आयव-ग्रन आदरो, रागो दया भी रेग ॥

ढाल २

राग—जी हो मियिता पुरी नो राजियो

१— जीहो काया माया कारमी,
जीहो जेसो सुपनो रेण ।
जीहो-विणसता देर लागे नही,
जीहो मानो सतगुरु—वेण ॥

२— चतुर नर चेतो,
अवसर एह ।
जीहो दान शील तप भावना,
जीहो राचो रुडे नेह ॥चतुर०॥

३— जीहो धन धान घर हाटनी,
जीहो म करो ममता कोय ।
जीहो काचा सुखा रे कारणे,
जीहो हीरा-जनम मति खोय । चतुर०॥

४— जीहो पाच महाव्रत आदरो,
जीहो श्रावक ना व्रत वार ।
जीहो कष्ट पड्या सेंठा रहो,
जीहो ज्यू हुवे खेवो पार ॥चतुर०॥

५— जीहो सगपण सह ममार ना,
जीहो स्वारथ ना छे एह ।
जीहो जो स्वारथ पूगे नही,
जीहो तडके तोडे नेह ॥चतुर० ।

६— जीहो सगपण इण ससार ना,
जीहो थया अनती वार ।
जीहो मिल मिल ने बले वीछडे,
जीहो कर्म लगावे लार ॥चतुर०॥

७— जीहो नरक निगोद मा ऊपनो,
जीहो छेदन भेदन मार ।
जीहो तो विण धेठा जीव ने,
जीहो नही आवे नाज लिगार ॥चतुर०॥

- ८— जीहो वेदना नरक मे सासती
जीहो जरा तापसी खेद ।
जीहो वेदना दश प्रकार नी,
जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ॥चतुर०॥
- ९— जीहो मारा पल सागर तणी,
जीहो सुणता थरहरे काय ।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो धर्म न आवे दाय ॥चतुर०॥
- १०— जीहो छा बाजी माहं पणी,
जीहो चाडो चुगली खाय ।
जीहो कर्म उदय आया थका,
जीहो पछे पछतावे मन माय ॥चतुर०॥
- ११— जीहो ऐसा दुखा सु डरपने,
जीहो चेतो चतुर मुजाण ।
जीहो ज्ञानादिक आराध ने,
जीहो लेवो पद निर्वाण ॥चतुर०॥
- १२— जीहो दिल मे दया विचार ने,
जीहो छोडो खाचा—ताण ।
जीहो ज्ञान सहित तप आदरो,
जीहो ए जीता रा हाण ॥चतुर०॥
- १३— जीहो उपशम मन मा आण ने,
जीहो चेतो बहती बार ।
जीहो रिरा 'जयमलजी' हम बहे
जीहो उत्तर्या बाहो पार ॥चतुर०॥

बोहा

- १— परिपदा सुण राजी धर्द सममित देख-अती पाय ।
निज सगती ने सम बरो, भाया जिण दिन जाय ॥
- २— बाणी गुण मंगुण सणी, कुमर जोह्या दोहू हाय ।
नवः गुहारा सन्दगा, रस बना कुपाय ॥

- ३— मात पिता ने पूछ ने, लेसू सजम—भार ।
बलि ते मुनिवर इम कहे, म करो ढील लिगार ॥
- ४— चरण कमल प्रणमी करी, खदक नामे कुमार ।
सजम लेवा ऊमह्यो, बीहनो भव-भ्रमण ससार ॥

ढाल ३

राग—मरणो दोरो ससार मां

- १— कुवर कहे माता सुणो, दीजे मुज आदेश ।
सजम ले होसू सुखी, काटण करम—कलेश ॥
- २— अनुमति दीजे मोरी मातजी, ए ससार असार ।
जनम मरण दुख भेटवा, चारित्र लेऊ इण वार ॥अनु०॥
- ३— वचन सुनी सुत ना इसा, घरणी ढली छे माय ।
सावचेत थई इम कहे, एसी मती काढो वाय ॥अनु०॥
- ४— भुलक भुलक माता रोवती, कुवर सामो रही जोय ।
ए सुरती जाया ! ताहरी, ऊवर फूल ज्यू होय ॥अनु०॥
- ५— सजम छे वछ । दोहिलो, जैसी खाडा नी धार ।
पाय उवहाणो चालणो, लेवो शुद्धज आहार ॥अनु०॥
वछ । दूकर व्रत पालना ।
- ६— हिंसा न करणी जीवरी, तजवो मृषा-वाद ।
अणदीधी वस्तु लेवी नही, तजणा सरस सवाद ॥वछ०॥
- ७— घोर ब्रह्मचर्य पालवो, तजवो नारी नो सग ।
मन वचन काया करी, व्रत पालणा इक रग ॥वछ०॥
- ८— परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि-विधे त्रि-करण त्याग ।
रयणी-भोजन परिहरे, ते साचो वैराग ॥वछ०॥
- ९— मेला लूगडा राखवा, करवो नही सिनान ।
बाबीस परीसा जीतणा, रहणो रूडे ध्यान ॥वछ०॥
- १०— सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-भार ।
राज कवर सुकुमाल छे करवी न देह री सार ॥वछ०॥
- ११— केई कहे पूज पधारिया, देवे आदर मान ।
केई कहे मोडा ! क्यू आवियो, बोले कडवी वारण ॥वछ०॥

१२- ए परोसा सहणा दोहिला, कहू छू बारबार ।
सुख भोगव ससार ना, पछे लीजो सजम-भार ॥वख०॥

दोहा

- १— कुंवर कहे माता सुणो, तुम्हे कहाँ ते सत्त ।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त ॥
- २— अघिर ससार नी साहिवी, जाता न लागे बार ।
ग्राजा दे राजी थई, होसू शुद्ध अणगार ॥
- ३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप वेटा ने माय ।
सूत्र माहे विष्णार छे, दीजो चतुर लगाय ॥
- ४— माना मन मा जाणियो, राख्यो न रहे कुमार ।
दीक्षा न लेसी सही, इण मा फेर न फार ॥

ढाल ४

राग — सहेत्तयौ ए आंधो मोरियो

- [illegible]

- ८— तव कुंवर कहे प्रणामी करी, तारो मोने कृपालो जी ।
तव गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी ॥अनु०॥
- ९— सूरत देख कुंवर तणी, ऊठो मोह नी झालो जी ।
प्रेम तणो वश मायडी, विलवे सा असरालो जी ॥अनु०॥
- १०— ठलक ठलक आसू पडे, जाणें तूट्यो मोत्या रो हारो जी ।
कुंवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी ॥अनु०॥
- ११— सिंह नी परे व्रत आदरी, पालो सिंहज जेमो रे ।
करणी कीजे रे जाया निमंली, लीजे शिवपुर खेमो रे ॥अनु०॥

बोहा

- १— इम सिखावण देई करी, आया जिण दिश जाय ।
कुंवर खदक दीक्षा ग्रही, मन मा हृषित थाय ॥

ढाल ५

राग—मुनीसर जै जै गुणमठार

- १— खदक सयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार ।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥
- २— मुनीसर घन घन तुम अणगार ।
नाम लिया पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥
- ३— पांचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कपाय ।
पाच समिति तीन गुप्तिने जी, राखे रूढी ऋषि-राय ॥मुनी०॥
- ४— सयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीघा घार ।
जिनकल्पी पणो आदर्यो जी, एकल-पण अणगार ॥मुनी०॥
- ५— मलिया सुदरी कहे रायने जी, ए नानडियो जी बाल ।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥
- ६— पाच से जोघ बुलायने जी, दिया कुंवर ने जी लार ।
साधु ने खबर काई नही जी, माथे वहे सिरदार ॥मुनी०॥
- ७— सावत्थी नगरी सू चालिया जी, कुती नगरी जी जाय ।
नगरी बहनोई तणी जी, शक न राखी काय ॥मुनी०॥

- १२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छू बारबार ।
सुख भोगव ससार ना, पछे लीजो सजम-भार ॥वख०॥

दोहा

- १— कुवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त ।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त ॥
- २— अथिर ससार नी साहिबी, जाता न लागे बार ।
आजा दे राजी थई, होसू शुद्ध अणगार ॥
- ३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप बेटा ने माय ।
सूत्र माहे विस्तार छे, दीजो चतुर लगाय ॥
- ४— माता मन मा जाणियो, राख्यो न रहे कुमार ।
दीक्षा ए लेसी सही, इण मा फेर न फार ॥

ढाल ४

राग—सहेल्याँ ए आबो मोरियो

- १— अनुमति देवे माय रोवती, तुज ने थावो कल्याणो रे ।
सफल थावो तुम आसडी, सजम चढज्यो परिणामी रे ॥
- २— महोच्छव जमाली नी परे, करि मोटे मढाणो रे ।
शीविका मा बेसाण ने, दाखे जे जे वाणो रे ॥अनु०॥
- ३— हिबै कुवर तणा वाछित फल्या, हरख्यो चित्त ममारो रे ।
आव्या जिहा मुनिवर अच्छे, साथे बहु परिवारो रे ॥अनु०॥
- ४— इष्ट ने कात बाल्हो हुँतो, सामी । माहरो पूनो जी ।
ठरियो जनम मरण सू, करसी करणो करतूतो जी ॥अनु०॥
- ५— मलयासुन्दरी' कहे मुनि भणी अरज करू कर जोढो जी ।
जालवजो रूढी परे सूपी कलेजा नी कोरो जी ॥अनु०॥
- ६— तप करता ने वार जो, भूला नी करजो सारो जी ।
दुम जमवारे जाण्यो नही, सतगुरु ने अवतारो जी ॥अनु०॥
- ७— माहरे भायी पोथो हुँती, दीधी तमारे हाथो जी ।
जिम जाणो तिम राख जो, ग्हाली माहरो भायो जी ॥अनु०॥

- ८— तव कुंवर कहे प्रणमी करी, तारो मोने कृपालो जी ।
तव गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी ॥अनु०॥
- ९— सूरत देख कुंवर तणी, ऊठो मोह नी भालो जी ।
प्रेम तणे वश मायडी, विलवे सा असरालो जी ॥अनु०॥
- १०— ठलक ठलक आसू पडे, जाणो तूट्यो मोत्या रो हारो जी ।
कुंवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी ॥अनु०॥
- ११— सिंह नी परे व्रत आदरी, पालो सिंहज जेमो रे ।
करणी कीजे रे जाया निर्मेली, लीजे शिवपुर खेमो रे ॥अनु०॥

बोहा

- १— इम सिखावण देई करी, आया जिण दिश जाय ।
कुंवर खदक दीक्षा ग्रही, मन मा हर्षित थाय ॥

ढाल ५

राग—मुनीसर जं जं गुणभटार

- १— खदक सयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार ।
निज आत्म ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥
- २— मुनीसर धन धन तुम अणगार ।
नाम लिया पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥
- ३— पाचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कपाय ।
पाच समिति तीन गुप्तिने जी राखे रुडी ऋपि-राय ॥मुनी०॥
- ४— सयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीघा धार ।
जिनकल्पी पणो आदर्यो जी, एकल-पण अणगार ॥मुनी०॥
- ५— मलिया सुदरी कहे रायने जी, ए नानडियो जी वाल ।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥
- ६— पाच से जोध बुलायने जी, दिया कुंवर ने जी लार ।
साधु ने खबर काई नही जी, माथे वहे सिरदार ॥मुनी०॥
- ७— सावत्यी नगरी सू चालिया जी, कुती नगरी जी जाय ।
नगरी बहनोई तणी जी, शक न राखी काय ॥मुनी०॥

- ८— पाचमी ढाल मां एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम ।
भागे निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ॥मनी॥

बोहा

- १— पाचसे ही इण भवसरे, लाग्या खावा पीवा काज ।
बलो बलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज ।
२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम ।
एक मना धई सोभलो, भडिग रह्या ऋषि जेम ॥

ढाल ६

राग—भावाङ्गभूत अन्तार

- १— तिण भवसर मुनिराय,
कुत्ती मगरी के मांय, सुकोमल साध ।
बिरहण विरिया पागुर्या ए ॥
२— बाभे सुहा - जास,
दाभे पग सुकुमात, सुकोमल साध ।
तीजा पोहरनी गोचरी ए ॥
३— भोली पातरा हाय,
पक्षीये भीनो गात, सुकोमल साध ॥
दो पहरो रे तावडे ए ॥
४— निरमोही निरमाय,
ईया जोरता जात, सुकोमल साध ।
यत्न तली परे गोचरी ए ॥
५— सुसाता रतावत नाहि,
भीरण धरे मत माहि सुकोमल साध ।
यद्वर नी परे माततो ए ॥
६— राम राणी तिल बार,
रोज पासा सार, स
रुतो लते मुं

- ७— पडिया राणी री फेट,
सदक महर्ला हेट, सुकोमल साध ।
एसो हुतो मुज वधवो ए ॥
- ८— चीता आय गयो पीर,
नेणा मे छूटो नीर, सुकोमल साध ।
विरह व्याप्यो ने चिता थई ए ॥
- ९— राजा साहमो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध ।
सुख माहि दुख किम हुवो ए ॥
- १०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो घेख, सुकोमल साध ।
एह कर्म मोडे किया ए ॥
- ११— राणी हुंती सुख माय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध ।
खबर हमे मोडा तणी ए ॥
- १२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे वेगा घाय, सुकोमल साध ।
इण मोडाने पकडो जायने ए ॥
- १३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वीर, सुकोमल साध ।
पाछलो भव काचर तणो ए ।
- १४— माठी विचारी मन माय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारो देहनी ए ॥
- १५— मति करजो काई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध ।
सगली खाल उतारजो ए ॥
- १६— नफर सुणी इम वाण,
कय लीघी प्रमाण, सुकोमल साध ।
अजाण थका जायने ए ॥

- ८— पाचमी ढाल मा एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम ।
भागे निरखो साभलो जी, सहे परीसो केम ॥ मनी ॥

दोहा

- १— पाचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज ।
वलो बलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज ।
२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम ।
एक मना थई साभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम ॥

ढाल ६

राग—भावाङ्गमूल अन्तार

- १— तिए अवसर मुनिराय,
कु तो नगरी के भाय, सुकोमल साध ।
बिरहण बिरिया पागुर्या ए ॥
२— बाजे लूहा - जाल,
दामे पग सुकुमाल, सुकोमल साध ।
तीजा पोहर नी गोचरी ए ॥
३— भोली पातरा हाथ,
पसीने भीनी गात, सुकोमल साध ॥
दो पहरा रे तावडे ए ॥
४— निरमोही निरमाय,
ईया जोवता जाय, सुकोमल साध ।
गऊ तणी परे गोचरी ए ॥
५— गुप्तता उतावस नाहि,
धीरज धरे मन माहि, सुकोमल साध ।
गयवर नी परे मालतो ए ॥
६— राय राणी तिए बार,
रमेज पास सार, सुकोमल माय ।
महनां तमे मुनि भाविया ॥

- ७— पडिया राणी री फेट,
सदक महलां हेट, सुकोमल साध ।
एसो हुतो मुज बधवो ए ॥
- ८— चीता आय गयो पीर,
नेणा मे छूटो नीर, सुकोमल साध ।
विरह व्याप्यो ने चिता थई ए ॥
- ९— राजा साहमो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध ।
सुख माहे दुख किम हुवो ए ॥
- १०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो घेख, सुकोमल साध ।
एह कर्म मोडे किया ए ॥
- ११— राणी हुंती सुख माय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध ।
खबर हमे मोडा तणी ए ॥
- १२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे बेगा घाय, सुकोमल साध ।
इण मोडाने पकडो जायने ए ॥
- १३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वर, सुकोमल साध ।
पाछलो भव काचर तणो ए ।
- १४— माठी विचारी मन माय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारो देहनी ए ॥
- १५— मति करजो काई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध ।
सगली खाल उतारजो ए ॥
- १६— नफर सुणी इम बाण,
कर लीघी प्रमाण, सुकोमल साध ।
अजाण थका जायने ए ॥

- ८— पाचमी ढाल मा एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम ।
आगे निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ॥मनी०॥

दोहा

- १— पाचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज ।
बलो बलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज ।
- २— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम ।
एक मना थई साभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम ॥

ढाल ६

राग—बावाइभूत धक्कार

- १— तिण अवसर मुनिराय,
कुती नगरी के माय, सुकोमल साध ।
बिरहण बिरिया पागुर्या ए ॥
- २— बाजे लूहा - जाल,
दाभे पग सुकुमल, सुकोमल साध ।
तीजा पोहरनी गोचरी ए ॥
- ३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध ॥
दो पहरा रे तावडे ए ॥
- ४— निरमोही निरमाय,
ईया जोवता जाय, सुकोमल साध ।
गऊ तणी परे गोचरी ए ॥
- ५— सुसता उतावल नाहि,
धीरज धरे मन माहि, सुकोमल साध ।
गयवर नी परे माततो ए ॥
- ६— राय राणी तिण वार,
रमेज पासा सार, सुकोमल साध ।
महना तने मुनि दाविया ए ॥

२७— सह्यो परीसो थोही वार,
कर्मा रो वियो अपहार सुकोमल साध ।
अविचल सुख मा भिन रह्या ए ॥

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणमू ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध ।
सासता सुख पाया भुगति गया ए ॥

दोहा

- १— कुती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार ।
देखो राय मरावियो, विना गुने अणगार ॥
- २— लोग हुवा बहु आकुला, पिए जोर न चाले कोय ।
मुनि ने भुगति सिधावणो, बैर पुराणो न होय ॥
- ३— किम बूझे पाच से सुभट, बले राणी ने राय ।
बैराग पामे किए विधे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल ७

राग— पुण्य सदा फले

- १— अजेय साध आयो नही रे,
जोवे पाच से बाट ।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिए खिए करे उचाटो रे ॥
- २— घन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे ।
मन - वद्धित फले
सीमें सगला कामो रे ॥घन०॥
- ३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध ।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे
तव परमारथ लाघो रे ॥घन०॥

- १७— पकड़चा मुनि ना हाथ,
थाने मसाए भोम ले जात, सुकोमल साध ।
नफर कहे कर जोड़ने ए ।
- १८— कहे मोने तो खबर न काय,
फुरमायो महाराय, सुकोमल साध ।
खाल उतारो देहनी ए ॥
- १९— तिणसू माहरो नही दोष,
मुनि । मति करजो रोष, सुकोमल साध ।
डरप्या, रखे बाल भस्मी करे ए ॥
- २०— कठण आण वण्यो काम,
तोही न कह्यो आपणो नाम, सुकोमल साध ।
सगपण कोई दाख्यो नही ए ॥
- २१— मसाए भोमका ने माय,
काया दीवी वोसिराय, सुकोमल साध ।
आहार च्यारू त्यागन किया ए ॥
- २२— राख्या समता—भाव,
सयम ऊपर चाव, सुकोमल साध ।
मन-कर ने चलिया नही ए ॥
- २३— तीखी पाछणा नी धार,
मस्तक ऊपर फार, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारी देहनी ए ॥
- २४— पर्गा सुधी खाल,
तोही रखा सयम मा लाल, सुकोमल साध ।
नाकेई सल पाल्यो नही ए ॥
- २५— रखा रुढे ध्यान,
पाम्या बेवस ज्ञान, सुकोमल साध ।
बर्म सपाय मुगते गया ए ॥
- २६— बेवस महिमा होय,
धन धन करे सठ गीय, सुकोमल साध ।
जिनभारण कियो दीपनी ए ॥

२७— सह्यो परीसो थोड़ी वार,
कर्म रो कियो अपहार, सुकोमल साध ।
अविचल सुख मा भिल रह्या ए ॥

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणमू ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध ।
सासता सुख पाया भुगति गया ए ॥

बोहा

- १— कुती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार ।
देखो राय मरावियो, बिना गुने अणगार ॥
- २— लोग हुवा बहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय ।
मुनि ने भुगति सिधावणो, वर पुराणो न होय ॥
- ३— किम बूझे पाच से सुभट, बले राणी ने राय ।
वैराग पामे किरण विधे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल ७

राग— पुण्य सदा फले

- १— अजेय साध आयो नही रे,
जोवे पाच से बाट ।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिरण खिरण करे उचाटो रे ॥
- २— घन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे ।
मन — वल्लित फले
सीभे सगला कामो रे ॥घन०॥
- ३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध ।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे,
तव परमारथ लाघो रे ॥घन०॥

- ११— जिम जिम भाई सामरे रे,
आणो राय पर घेत ।
वीरा वेगो ! आवजे रे,
हूँ लेऊ निजरा देखो रे ॥धन०॥
- १२— कृण वीरो कृण वहनडी रे,
जोयजो मोहरी बात ।
इण भव मुगति सिधावसो रे,
एम करे विलापातो रे ॥धन०॥
- १३— इम जाणी ने मानवी रे,
मोह म करजो कोय ।
मोह थकी दुख ऊपजे रे,
कर्म वधे इम होयो रे ॥धन०॥
- १४— सालो सगो नही जाणियो रे,
तपसी मोटो जी साध ।
'पुरुष-सिंह' राजा झुरे रे,
बहुत लागो अपराधो रे ॥धन०॥
- १५— पाच सो जोध इम चितवे रे,
मार्यो गयो मुनिराय ।
'कनककेतु' राजा कने रे,
कासु कहिसा जायो रे ॥धन०॥
- १६— चारित्र लेसू चूपसू रे,
किसो श्वास-विश्वास ।
काल किताइक जीवणो रे,
राखा मुगति नी आसो रे ॥धन०॥
- १७— मतो करी सयम लियो रे,
पाच से सिरदार ।
चोखो पाली सुरगति लही रे,
करसो खेवो पारो रे ॥धन०॥

दीहा

- १— राजा मन मे चितवे, एहवो खून न कोय ।
साध-भरण मन ऊपनो, ए सासो छे मोय ॥
- २— एम विचारी वादण गयो, साध भणी कहे एम ।
विना गुन्हे मोटो मुनि, भ्हे मार्यो कहो केम ॥

ढाल ८

राग—वीर सुणो मोरी मौनती

- १— साध कहे राय साभलो,
तू तो हुँतो रे काचर तणो जीव ।
ए खदक हुतो मानवी,
धतुराई रे हुती भतीव ॥
- २— कर्म न छोडे केह ने,
विण भुगत्या रे छूटको नही होय ।
इम जाणी उत्तम नरा,
तमे बाधो रे कर्म मति कोय ॥कर्म०॥
- ३— कुण साह ने कुण चोरटो,
भिर्यारी हो कुण राणो ने राव ।
कुण धर्मो पापी तिके रे,
भला भूडा रे भू-ये सहू भाव ॥कर्म०॥
- ४— कितेरेक भव इण सदके,
उतारी हो काचर तणी खोल ।
विचलो गिर बाढी लियो,
सरायो हो पणी करी बिलोल ॥कर्म०॥
- ५— पछे ही पिछनाघो नहीं,
अप पटियो हो तिए रे तिए टाय ।
तिए बर्म बरि साप री,
त गाल हो उतारी राय ॥बर्म०॥
- ६— यचन मुणो राजा हरणिमो,
बरमा री हो पणी बिरामी मात ।

राय राणी दोनू कहे
घर माहे हो घडी अफली जान ॥कर्म०॥

७— पुरुषसिंह राजा तिहा,
सुनवा हो राणी सुविनीत ।
राज छोडी चरित्र लियो,
भाराधी हो दोनू रुडी रीत ॥कर्म०॥

८— कम खपाई भुगते गया,
बधारी हो जुग धर्म री सोय ।
अजर अमर सुख सासता,
ऐसी करणी हो की जो सहू कोय ॥कर्म०॥

९— घठारे सो इग्यारोतडे,
धैत मासे हो सुद सातम जोय ।
'लाडणू' रिख 'जयमलजी' कहे,
विपरीत रो मिच्छामि दुक्कड मोय ॥



५— रोही तो डडाकार ।
धणी भगी ने भार ।
सुणो ऋषभजी,
मिनख रो मुख दीसे नही ए ।

६— दोनु ही मुनिराय,
बैठा तरुवर छाया ।
सुणो ऋषभजी,
चिन्ता कर रह्या साधुजी ए,

बोहा

१— इतरे आया गवालिया, मुनिवर बैठा देख ।
आई ने ऊभा रह्या, पूछे बात विशेष ॥
२— बलता मुनिवर इम कहे, काचो न लेवा नीर ।
विध बताई आपणी, मोटा साहस घीर ॥

ढाल २

राग—साथ सवा इसडा

१— बलता बोले गवालिया,
सामी सुणो अरदास हो ।
मुनिवर,
खारो पाणी म्हारे गावरो ।
माहे भेली छास हो,
घन करणी मुनिराज री ।

२— मुनिवर माड्यो पातरो,
पाणी ले पीघो तिण वार हो ।
मुनिवर,
साधुजी साता पामिया
तिरखा दीधि निवार हो ॥घन०॥

३— ऋषभजी दीधी घर्म देसना,
भिन्न भिन्न बहु विस्तार हो ।
मुनिवर,

सुणने छहुँ गोवालिया,
लीधो सजम भार हो ॥घन०॥

- ४— चोखो चारित्र पालने,
पहुता देव विमाण हो ।
मुनिवर,
तिहा स्रु खवने उपजे,
ज्यारो सणो वखाण हो ॥घन०॥

दोहा

- १— 'इपुकार' नगर ने विपे, 'इपुकार' हुवो राय ।
दूजी देवी कमलावती, चालि सुतर के माय ॥
- २— 'भृगु' पुरोहित तेहने, 'जसा' पुरोहितानी जाण ।
च्यार जीव तो ए थया, दोय रह्या देव विमाण ॥
- ३— अवधिज्ञान प्रयू जियो, देण भुगतरा सूत ।
मापे खव किहा ऊपजा, यासा 'भृगु' रा पूत ॥
- ४— दोय देवता देवलोक मे, जाण्यो खवण विचार । -
पहिला माया प्रतियोधवा 'भृगु' पुरोहित परिवार ॥

छाल ३

राग—भारी तो नेह निवारणो

- १— ए तो साधू नो रूप बणावियो,
दोनू देवता तिण वार रे साला ।
भृगु रे घरे भाविया,
परवा शुद्ध करार रे साला ॥
घा करणी मुनिराज री ॥
- २— मुसठे यिराजे मुसपति,
मुनिवर यासे बेस रे साला ।
घोषो विराजे वारा मे,
माये मोच्या बेग रे सामा ॥

- ३— भोली पातरा हाथ मे,
चाले इर्या मार्ग सोघ रे लाला ।
अमा पिया पट् कायना,
घणा जीवा ने प्रतिबोध रे लाला ॥
- ४— मुलकता दोनु जणा,
भृगु आवता दीठ रे लाला ॥
ऊठी ने बाघो दपती,
तन मन मे लागा मीठ रे लाला ॥
- ५— अमी समाणि वाणी वागरि,
शुद्ध दियो उपदेश रे लाला ।
ए ससार असार छै,
राखो दयाधर्म रेस रे लाला ॥
- ६— वाणी सुण मुनिराज री,
भृगु आदरिया व्रत बारे रे लाला ।
पुत्र तणी तृष्णा घणी,
पूछे दपति तिण बार रे लाला ॥
- ७— ऋषिजी कहे पुत्र दो ए हुसी,
पिण ये मानो एक बात रे लाला ।
व्रत लेसी वाला पणै,
जो नवि करो व्याघात रे लाला ॥
- ८— आदरसी तो आदरे,
पिण कोई न कहसि अऊत रे लाला ।
काम सरचा दुख बीसरे,
ते सुणज्यो विरतत रे लाला ॥

बोहा

- १— सुरलोक थी चवकरि, 'जसा' उदर लियो अवतार ।
सवा नव मास पूरा हुआ, जनम्या दोनु कुमार ॥
- २— पुन्यवन्त पूरा रूप मे, नदन नौका बाल ।
भृगु मन मे चितवे, बाधू पाणी पेली पाल ॥

- ३— बालक घर मासू निकले, भूगु लावे घेर ।
नगरी मे महिमा घणी, साधा रो पग फेर ॥
- ४— साधा री सगत हुवा, पछे कारि न लागे काय ।
दीक्षा थी डरतो थको, भूगु करे उपाय ॥

ढाल ४

राग—मकर

- १— परिहयों नगर बीहतेरे
वास कियो कुल गाम ।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया सग म जायज्यो रे ।
- २— आहु बेर छँ ब्राह्मण व्रतिया रे
मूस मजारी जेम ।
बले मगपण साकडो रे,
दूध रुद्र मेल सेम—के ॥जाया॥
- ३— झोलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पास ।
वेगा घर आवजो दोढने रे,
रखे करी, बेसास—के ॥जाया॥
- ४— उत्तम छँ ओ प्राणियो रे,
घणा जिवारी सेण ।
मोह रो घाल्यो भुग रहे रे,
बोले रोटा घेण—वे ॥जाया॥
- ५— रग रगीसा पातरा रे,
हाथ मे चितरण सोट ।
भूठे शरो मुहपती रे,
मन मे घणी छे सोट—वे ॥जाया॥
- ६— उतापसा भासे नहीं रे,
हयसे मेसे पाय ।
जता करे पटकाय ता रे,
दया म्ही दिा गोय—रे ॥जाया॥

- ७— धरती सामो जौयने रे,
चाले चित लगाय ।
ग्रोधो राखे साख मे रे,
जिए तिए सू लजाय के ॥जाया०॥
- ८— भेला पहरे कापडा रे,
रेवे पर घर बाट ।
जो देखो ये ग्रावता रे,
तो छोड दीजो ऊभा बाट के ॥जाया०॥
- ९— दीसता दीसे एहवारे,
मुनिवर केरे वेस ।
बालक पराया भोलवी रे,
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥
- १०— धर्म कथा धुन सू कहे रे,
विध सू करे वखाण ।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥जाया०॥
- ११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोडया केडे जाय ।
ए करे सू गया थका रे,
मोह गेहलडा थाय के ॥जाया०॥
- १२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरा केरे माय ।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥जाया०॥
- १३— विहार करता ग्राविया रे,
साधू तिए हिज गाम ।
भूला चूका पुन जोग सू रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥जाया०॥
- १४— एक समय रमता थका रे,
वारे चाल्या बाल ।

- ३— बालक घर मासू निकले, भूगु लावे घेर ।
नगरी मे महिमा घणी, साधा रो पग फेर ॥
- ४— साधा री सगत हुवा, पछे कारि न लागे काय ।
दीक्षा थी ढरतो थको, भूगु करे उपाय ॥

ढाल ४

राग—माल

- १— परिह्यो नगर वीहतेरे
वास कियो कुल गाम ।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया सग म जायज्यो रे ।
- २— आहु वेर छं ब्राह्मण व्रतिया रे
भूस मजारी जेम ।
बले मगपण साकडो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥
- ३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पास ।
वेगा घर आवजो दोडने रे,
रखे करी, बेसास—के ॥जाया०॥
- ४— उत्तम छं ओ प्राणियो रे,
घणा जिवारो सेण ।
मोह रो घाल्यो भूगु कहे रे,
घोले खोटा वेण—के ॥जाया०॥
- ५— रग रगीला पातरा रे,
हाथ मे चितरण लोट ।
मूढे राखे मुहपती रे,
मन मे घणी छं खोट—के ॥जाया०॥
- ६— उतावला धाले नही रे,
हवले मेले पाय ।
जतन करे पटकाय ना रे,
दया घणी दित गांय—के ॥जाया०॥

- ७— घरती सामो जोयने रे,
चाले चित लगाय ।
ओघो राखे साख मे रे,
जिए तिए सू लजाय के ॥जाया०॥
- ८— मेला पहरे कापडा रे,
रेवे पर घर वाट ।
जो देखो ये आवता रे,
तो छोड दीजो रुभा वाट के ॥जाया०॥
- ९— दीसता दीसे एह्वारे,
मुनिवर केरे वेस ।
बालक पराया भोलवी रे,
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥
- १०— धर्म कथा घुन सू कहे रे,
विघ सू करे वखाण ।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥जाया०॥
- ११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोडया केडे जाय ।
ए करे सू गया थका रे,
मोह गेहलडा थाय के ॥जाया०॥
- १२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरा केरे माय ।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥जाया०॥
- १३— विहार करता आविया रे,
साधू तिए हिज गाम ।
भूला चूका पुन जोग सू रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥जाया०॥
- १४— एक समय रमता थका रे,
वारे चाल्या बाल ।

मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊठ्या सुरत सभाल के ॥जाया०॥

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे,
डर्या दोनू बाल ।

सात कह्या जिके आविया रे,
अब नेहो आयो छे काल के,
बधविया ए कुण आयारे ।

१६— दोह चह्या तरु ऊपरे रे,
हिवडे न मावे सास ।
केडे आपा के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ॥बधविया०॥

१७— घड घड लागा धूजवा रे,
कण लागी देह ।
साकडे आपे आविया रे,
किणविघ जासा गेह के ॥बधविया०॥

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवा रा जतन करत ।
दयावत दीसे खरा रे,
मन मे एम घरत के ॥बधविया०॥

१९— कोठी ने दूहवे नही रे,
वालक मारे केम ।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म स्रु प्रेम के ॥बधविया०॥

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले माई दोन वान ।
उतरता इम चितवे रे,
रखे पढ नीसो पान के ॥बधविया०॥

२१— बधव ए मल आविया रे,
सरिया बाँझि वाम ।

जाति-समरण ज्ञान थी रे,
आयो बेराग बेरु ताम के ॥बघविया०॥

२२— हलवे हलवे ऊतर्या रे,
वाद्या मुनि ना पाय ।
मात पिता ने पूछने रे,
म्हे लेसा सजम सुखदाय के ॥बघविया०॥

२३— जिम सुख हुवे तिम करो रे,
खिण खिण छीजे भाव ।
घोडा मे नफो घणो रे,
तमे उत्तम देखो भाव के ॥बघविया॥

ढाल ५

राग—वीरजिणद समोसर्पा ए

१— आय कहे माय बाप ने रे,
मैं दीठो अधिर ससार ।
बीहना जनम मरण सू रे,
मैं लेसा सजम भार ॥
पिताजी अनुमति दीज आज ॥

२— व्रत बिना एको घडी रे,
खिण लाखीणी जाय ।
सबल पडे छे आतरो रे,
ये अनुमत दो हित लाय ॥पिताजी०॥

३— पुरोहित बेटा ने इम कहे रे,
वेद मे इसो रे विचार ।
पुत्र बिना गति नही हुवे रे,
तमे सुख विलसो ससार ॥
जाया तुज विन घडी रे छ मास ॥

४— भडसूरी सद्गति लहे रे,
करणी निरुफल ना जाय ।
'शुकदेव' प्रमुख सिद्ध हुवा रे,
वेद ई वरता थाय रे ॥जाया०॥

- मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊठ्या सुरत सभाल के ॥जाया०॥
- १५— दूर थकी मुनिवर देखने रे,
डर्या दोनू बाल ।
तात कहा जिके आविया रे,
अब नेछो आयो छे काल के,
बधविया ए कुण आयारे ।
- १६— दोड चढ़्या तरु ऊपरे रे,
हिवडे न भावे सास ।
केडे आपा के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ॥बधविया०॥
- १७— घड घड लागा धूजवा रे,
कण लागी देह ।
साकडे आपे आविया रे,
किणविध जासा गेह के ॥बधविया०॥
- १८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवा रा जतन करत ।
दयावत दीसे खरा रे,
मन मे एम घरत के ॥बधविया०॥
- १९— कीडी ने दूहवे नही रे,
वालक मारे केम ।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म स प्रेम के ॥बधविया०॥
- २०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोन वान ।
उतरता हम चितवे रे,
रखे पड नीलो पान के ॥बधविया०॥
- २१— बधव ए भल आविया रे,
सरिया बाछित काम ।

दोहा

- १— च्यारे सजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार ।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेचो पार ॥
- २— ऊमा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण ।
सामल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण ॥
- ३— पेला दान दियो सहु हाथ सू, बलि देखो धनसू हेज ।
ताकीदी सू मगावियो, नहि करि काई जेज ॥
- ४— खबर हुई राणी भणी, जरे कियो मन कहर ।
भूपत ने हू पालसू, चटियो पोरस सूर ॥

ढाल ६

राग—रग महल ने हो घोष छेले

- १— मेहला मे बैठी हो राणी कमलावती,
भीणी तो ऊडे मारग खेह ।
जो वे तमासो हो 'इपुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमे एह ।
सामल हे दासी आज नगर मे
हलचल किम घणी ? ॥
- २— के तो परधान हे दासी डड लीयो
के राजाजी लूटयो गाम ।
के किणी रो हे गाडयो धन नीसर्यो,
गाडा रि हेडज ठामो ठाम ॥सा०॥
- ३— ना तो परधान हो राणीजी डड लीयो
न काई राजाजी लूटयो गाम ।
भृगु पुरोहित रिघ तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥सा॥
- ४— सामल हो राणी, हुकम करो तो,
गाडो लाऊ घेरने ।
इहा तो कुमो नही काय,
इतरी सामल ने हो राणी,
मायो धूणीयो ।
राजा ने धन रो लागी फाय ॥सा०॥

- ५— लाला ! लिछमी-सुख भोगवो रे,
 पूरव पुण्य पसाय ।
 जोवन वय पाछी पड़्या रे,
 थे उत्तम चारित्रिवा थाय रे ॥जाया॥
- ६— सगत हुवे न्हासण तणी रे,
 जेहने मित्र हुवे काल ।
 जे जाणो मरसू नही जी,
 ते बाघे आगली पाल ॥जाया॥
- ७— पुणेहित प्रतिबोध पामियो रे,
 दीक्षा आईजी दाय ।
 विघ्न करे ते ब्राह्मणी रे,
 ते सुणज्यो चित्त लाय ॥जाया॥
- ८— बालक ए व्रत आदरे रे,
 आपे रे वा किस आस ।
 उत्तम चारित्र आदराजी,
 करा मुगत मे वास ॥
 गोरीजी मैं लेस्या सजम भार ॥
- ९— बेटा जावे तो जाण दो जी,
 आपा भोगवा लिछमी भडार ।
 जूने हस जिम दोहिलो जी,
 तिरणो भव जस पार ॥पतिजी मत॥
- १०— घोरी जिम धर्म धुरधराजी,
 जु तिया आगेवाण ।
 ज्यारे केडे जावसा जी,
 मत करो संचाताण ॥गोरी०॥
- ११— प्रीतम पुत्र तिन रिघ तजी जी,
 मुझने किसो घरवास ।
 दीक्षा से व्रत आदर जी,
 हूँ जासू साधविया के पास ॥
 पतिजी मत ल्यो सजम भार ॥

बोहा

- १— च्यारे सजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार ।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेवो पार ॥
- २— ऊमा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण ।
सामल नृप हुकम दियो, धन लावो सह ताण ॥
- ३— पेला दान दियो महु हाय सू, बलि देसो धनसू हेज ।
ताकीदी सू मगावियो, नहि करि काई जेज ॥
- ४— खबर हुई राणी भणी, जरे कियो मन करूर ।
भूपत ने हू पालमू, चटियो पोरस सूर ॥

ढाल ६

गग—रग महल मे हो घोपठ खेले

- १— मेहला मे बंठी हो राणी कमलावती,
मीणी तो ऊडे मारग खेह ।
जो वे तमासो हो 'इपुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमे एह ।
सामल हे दासी आज नगर मे
हलचल किम घणी ? ॥
- २— के तो परधान हे दासी डढ लीयो
के राजाजी लूटयो गाम ।
के किणी रो हे गाढयो धन नीसर्यो,
गाढा रि हेडज ठामो ठाम ॥सा०॥
- ३— ना तो परधान हो राणीजी डढ लीयो
न काई राजाजी लूटयो गाम ।
भृगु पुरोहित रिघ तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥सा॥
- ४— सामल हा राणी, हुकम करो तो
गाढो लाऊ घेरने ।
इहा तो कुमी नही काय,
इतरी सामल ने हो राणी,
माथो घूणीयो ।
राजा ने धन रो लागी फाय ॥सा०॥

- ५— साभल हे दासी राजा ने,
एहवी वाता जुगती नही ।
मेहला सू उतरी हो,
राणी कमलावती ॥
आई छे छंट हजूर,
वचन कहे छे हो, राजाजी आकारा ।
जाणो पोरस चढियो सूर ॥सा०॥
- ६— साभल महाराजा ब्राह्मण छाडी हो,
रिष मती आदरो ।
राजा का मोटा भाग,
वर्मिया आहार की हो,
वाघा कुरा करे ?
करे छे, कूतरो ने काग ॥सा०॥
- ७— काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो, नही प्रससव वा जोग ।
भगु पुरोहित ऋष तज नीसर्यो
ये जाणो आसी म्हारे भाग ॥सा०॥
- ८— सकल्प कियो पाछो किम लीजिये,
सांभलजो महाराज ।
दान दियो ये पेता हाथ सू,
पाछो लेता नही आवे साज ॥सा०॥
- ९— जग सगला रो हो भेलो करी,
घाले थारा राज रे माय ।
तो पण तृप्णा हो राजाजी पापणी,
कदे तृप्ति नही पाय ॥सा०॥
- १०— एक दिन मरणो हो राजाजी यदातदा,
छोडो नी काम विशेष ।
बीजो तो तारण जग मे को नही,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥सा०॥

- ११— इस साभलने हो इखुकार बोलियो,
तू भासे नी वचन सभाल ।
के तो राणी हे तो ने भोलो वाजियो,
के थे कीधी मतवाल ॥ सा० ॥
- १२— साभल ? हे राणी राजा ने करडा न बोलिये,
निसङ्क हुई जै नाय ।
इसी बेरागण अजे तू दीसे नही,
तू बैठी छे राज के माय ॥ सा ॥
- १३— ना तो महाराजा भोलो वाजियो,
ना कोई कीनी मतवाल ।
भृगु पुरोहित ऋघ तज नीसयों,
हूँ वरजण आई भूपाल ॥ सा ॥
- १४— ऊतरने वाली तो दीसे नही,
इसडी आई छै मतवाल ।
हूँ पण घर छोडी ने नीसरु,
तमे चेतो हो भूपाल ॥ सा० ॥
- १५— रत्न जडित हो राजाजी पिजरो,
सुवो तो जाणो छे फद ।
इसडी पण हूँ थारा राज मे,
रति न पाऊ आणद ॥ सा० ॥
- १६— स्नेह रूपिया ताता तोडने,
ओर बघन सू रहसू दूर ।
विरक्त थईने सजम में ग्रह,
थे भी पण होय जाओ सूर ॥ सा० ॥
- १७— दव तो लागो छे राजाजी वन मघे,
हिरण ससादिक बले माय ।
ऊला माला रो हो पखी देखने,
मन माहे हर्षित थाय ॥ सा० ॥
- १८— इण दृष्टान्ते थे मूरख थका,
मुरझ रह्या भोग मझार

पहिला दुख देखे पर चेत नही,
राज त्यागी नो सजम भार ॥ सा० ॥

१६— भोगव्या काम भोग छोडने,
वेहू भव हलका थाय ।
वेउ मगीखा पखीया नी परे
विचरसा इच्छा आपणी दाय ॥ सा० ॥

२०— मेहल पिलगादिक अथिय छे,
सो तो आया आपणे हाथ ।
आपे भोग माहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ सा० ॥

२१— माम री बोटी हो पखीया नी परे,
मोह वस पखी पडे आय ।
ज्यू आपे कामभोग छोड ने,
चारित्र लेसा चित लाय ॥ सा० ॥

२२— गढ पखी जिम इण जीव ने,
काम बघारे ससार ।
साप जिम मोर यकी डरतो रहे,
जिम पाप सू सको इणवार ॥ सा० ॥

२३— हम्ती जिम बघन तोडने,
आपण वन मे सुखे जाय ।
ज्यू कम बघन तोडी सजम गहा,
होम्या ज्यू सुखी मुगत माय ॥ सा० ॥

२४— इम माभल ने इवुकार राजा चेतियो
छाडयो छे मोटो राज ।
जायर न ए रिघ नजगी दाहिली,
जिपय छाडो मारु निज काज ॥ सा० ॥

२५— सनह सहित परिग्रहा छोडने
माचा एक थमज जाए ।
नपम्या मोटो मगना आदरी
धोगी जिम पगप्रम प्राण ॥ सा० ॥

- २६— छऊही अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
साचा घर्म मे तप जप तत ।
जनम-मरण रा भय थकी डरपिया,
दुसारो कियो ठे अत ॥ सा० ॥
- २७— मोह निवार्यो जिन शासन मघे,
पूरव सुभ कर्म भाय ।
छउ ही जणा थोडा काल मे,
मुगत गया दुख मुकाय ॥ सा० ॥
- २८— साभल ने प्राणी सजम लियो,
सुख लेसी सासता सार ।
राजा सहित राणी कमलावती,
भृगु पुरोहित ज सार ॥ सा० ॥
- २९— ब्राह्मण रा दोनु ही बालका,
सगला पाम्या भव जल पार ।
घन घन प्राणी छती रिघ छिटकाय ने,
शिवपुर का सुख लिया सार ॥ सा० ॥
- ३०— सक्षेप माफक भाव ए कहा,
सूत्र अनुसारे जोय ।
अधिको ओछो रिख 'जयमलजी' कहे,
मिच्छामि दुक्कड मोय ॥ सा० ॥
- ३१— हम जाणी ने हो उत्तम मानवी,
छोडो काम ने भोग ।
तप, जप, क्रिया निर्मल आदरो,
ज्यू मिटे भव भव रोग ॥ सा० ॥
घन घन प्राणी हो गुरु सेवा करे ॥



- ११— प्रभु गाम नगर पुर विचरिया, भव्य जीवा रे भाग जी ।
मार्ग बतायो मोक्ष को, कियो उपकार अथाग जी ॥थे०॥
- १२— साढा बारह बरसा लगे, ऊपर आघो मास जी ।
छद्मस्य रह्या प्रभु एटला, पछे केवल ज्ञान प्रकाश जी ॥थे०॥
- १३— वर्ष बयालीस पालीयो, सयम साहस घोर जी ।
तीस वष घर मा रह्या, मोक्षदायक महावीर जी ॥थे०॥
- १४— पावापुरी मे पधारिया नर नारी हुआ हुल्लास जी ।
"ऋषि रायचंद" इम विनवे, हू आयो प्रभुजी ने पास जी ॥थे०॥
हू थारा चरण रो दास जी ॥
- १५— सबत् अठारे गुण चालीस मे, नागौर शहर चौमास जी ।
पुज्य जैमल जी के प्रसाद थी, मैं ए करी अरदास जी ॥थे०॥

ढाल २

राग—काधो कलियाँ

- १— शासन नायक वीर जिनद, तीरथनाथ जाणो पुनमचंद ।
चरणों लागे ज्यारे चौंसठ इन्द्र, सेवा करे ज्यारी सुरनर वृन्द ॥
थें अवको चौमासो स्वामी जी अठे करो जी, अठे करो ३ जी ।
चरम चौमासो स्वामी जी अठे करो जी ॥टेर॥
- २— हस्तिपाल राजा विनवे कर जोड,
पूरो प्रभुजी म्हारा मनढारी कोड ।
शोश नमाय ऊभो जोडी जी हाथ,
करुणा सागर वाजो कृपा जी नाथ ॥
- ३— राय नी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोगे मिल्यो सेवानो सजोग ।
मन वाछित सहू मिलियाजी काज ॥
थें मया करी सामु जोवो जिनराज ॥
- ४— श्रावक श्राविका कई नरनार,
मिली विनती करे बारम्बार ।
पावापुरी मे पधार्या वीतराग,
प्रगटी पुण्याई म्हारा मोटाजी भाग ॥थे०॥

“ऋषि रायचंद” विनवे जोड़ी हाथ,

थें करुणा सागर वाजी कृपाजी नाथ ॥थें०॥

१३— नागौर शहर मे कियो जी चौमास,

दिज्यो प्रभुजी माने मुक्ति नो वास,

हैं सेवक तुम साहिव स्वाम ।

अवर देवासु म्हारें नही कोई काम ॥थें॥

ढाल ३

१— शासन नायक श्री महावीर,

तीरथ नाथ त्रिभुवन घणी ।

पावापुरी मे कियो चरम चौमास,

हुई मोक्षदायक री महिमा घणी ॥गी०॥

गौतम ने मेल दियो महावीर, देवशर्मा प्रतिबोधवा ॥टे१॥

२—

उत्तराध्ययन रा अध्ययन धत्तोस,

कार्तिक वदी अमावस्ये कहा ।

एक सौ ने बली दश अध्ययन,

सूत्र विपाक तणा लह्या ॥गी०॥

३—

पोसा कीधा श्री वीर जी रे पास,

देश अठाराना राजीया ।

नव मल्ली ने नवलच्छी जी राय,

वीर ना भगता जी वाजीया ॥गी०॥

४—

प्रभु शासन ना सिरदार,

सर्व सघ ने सतोष मे ।

सोले प्रहर लग देशना दीघ,

पछे वीर विराज्या मोक्ष मे ॥गी०॥

५—

तीन वष ने साढा आठ मास,

चोथा आरा ना वाकी रह्या ।

दिन दोय तणो सथार,

मौन रही मुगते गया ॥गी०॥

ढाल ४

राग—चढो चढो ताढा वार म सावो

गुराजी थें मने गोडे न राख्यो, मुगति जावण रो नाम न दाख्यो ॥टेर

१— श्री महावीर पहोच्या निर्वाणी ।

गीतम स्वामी ए वात ज जाणी ॥गु०॥

२— हू सगला पहेला हुवो थारो चेलो ।

इण अवसर आघो किम मेल्यो ॥गु०॥

३— प्रभु तुम चरणे म्हारो चित्त लागो ।

आप पट्टता निर्वाण मने मेल दियो आगो ॥गु०॥

४— मने आपरा दर्शन लागतो प्यारो ।

आप पहोत्या निर्वाण मने मेल दियो न्यारो ॥गु०॥

५— आप तो मुक्त म अन्नर राख्यो ।

पिण में म्हारा मन रो दर्द न दाख्यो ॥गु०॥

६— हू आद्यो माढी नही भालतो पल्लो ।

पण शावास काम कियो तुम भल्लो ॥गु०॥

७— हू तुमने अन्तराय न देतो ।

मुगती में जागा व्हेंची नही लेतो ॥गु०॥

८— हू सकडाई न करतो काई ।

आप साथे हूं माक्ष में आई ॥गु०॥

९— अब हू पूछा करसु किण आगे ।

प्रभु म्हारो मन एक थासु ही लागे ॥गु०॥

१०— म्हारो सासो कहो कुण टाले ।

आप दिना पासण्डी ना मद कुण गाले ॥गु०॥

११— हुता चीदे पूरव ने चीनाणी ।

पिण मोहनीय कर्म लपेट्यो आणी ॥गु०॥

१२— ऐसो गीतम स्वामी कियो विलापात ।

ए मोहनी कर्म नी अचरज वात ॥गु०॥

१३— हवे मोहनीय कर्म दूरे टानी ।

गीतम स्वामी ए सूरती ममाली ॥गु०॥

वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ॥टेर॥

१४— वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ।

म्हारा चित्त मा आई गई चिता ॥वी०॥

१५— तिए बेला निर्मल ध्यान ज ध्यायो ।

केवल ज्ञान गौतम स्वामी पायो ॥वी०॥

१६— वारा वर्ष रह्या केवल ज्ञानी ।

बात ज्यासु काई नही रही छानी ॥वी०॥

१७— गौतम पण कियो मुक्ति मे वासो ।

ससार नो सर्व देखे तमासो ॥वी०॥

१८— जणी राते मुक्ति गया वर्द्धमान ।

इन्द्रभूति ने उपन्यो केवल ज्ञान ॥वी०॥

१९— तिए दिन थो ए बाजी दिवाली ।

म्होटी दिन ए मगलमाली ॥वी०॥

२०— रात दिवाली नो शियल थें पालो ।

वली रात्रि भोजन नो कर वो टालो ॥वी०॥

२१— “ऋषि रायचंद” कहे सुणो हो सुजानी ।

दया रूप दिवाली थें लेज्यो मानी ॥वी०॥

कलश

१— श्री शासन नायक, मुक्ति दायक,
दया मार्ग भ्रजुवालियो ।

श्री गौतम स्वामी, मुक्ति गामी,
कियो चित्त वल्लभ चौढालियो ॥

२— सवत् अठारे, गुणचालीसे,
नागौर चौमासो निर्मल भो ।

पूज्य जेमल जी प्रसादे,
पूर्ण कियो दिवाली रे दिने ॥

रहनेमि--अणगार

- अरिहत सिद्ध ने आयरिया, 'उवजभाया अणगार ।
पाच पदा ने ह नमू अष्टोत्तर सो वार ॥
- मोक्ष गामी दोनो हुआ राजमती रहनेम ।
चरित्र कहू रलियामणो, साभल जो घर प्रेम ॥

१

राग—खट खण्ड भोगवे राज०

- सुख कारी सोरठ देश, राजा श्री कृष्ण नरेश ॥मन मोह्यालाल॥
दीपती नगरी द्वारिकाए ॥
- समुद्र विजय तिहा भूप, शिवा देवी राणी रुढे रूप ॥मन०॥
महाराणी मानीजती ए ॥
- जनम्या है अरिहत देव, इन्द्र चौसठ सारे जारी सेव ॥मन०॥
बाल ब्रह्मचारी वावीसमा ए ॥
- अन्त समे राजुल नार, तजी तेल चढी निरधार ॥मन०॥
सतिया मे सिर सेहरो ए ॥
- ५— ते समय राजुल नार, लीनो मजम भार ॥ ॥मन०॥
सहस्राभवन उद्यान मे ए ॥
- ६— समुद्रविजय जीरा नद, रहनेमीरो सुण जो सबध ॥मन०॥
लघु भाई श्री नेमिनाए ॥
- ७— रहनेमी विराजे रुढे रूप भर जीवन घर चू ५ ॥मन०॥
मन वाहित लीला करे ए ॥

- भीज्या कपडा अलगा मेट्या, साध्वी चतुर सुजाणो जी ॥
- ७—आर्याजी उघाडी उभी, कचनवर्णी काया जी ।
उजवाला मे उभो दीठो, परप रूप री माया जी ॥
- ८—कपण लागी सघली काया, शील सोच मे बंठी जी ।
अगज मारो कोई नही देखे, साध्वी हेठो बंठी जी ॥
- ९—रूप देख रहनेमो डिगिया, सजम जोग गया भागी जी ।
कामी अघा कछु नही देखे, विषय सेवन लो लागी जी ॥
- १०—डरती देख सती ने बोले, रहनेमो कहे एमो जी ।
हूँ समुद्र विजय राजा जी रो बेटो, तू सोच करे छे केमो जी ॥
- ११—छोड जोग ने आदर भोग, साभल सोहन वरणी जी ।
सुख विलसी ने मजम लेसा, पछे करसा करणी जी ॥
- १२—राजमति तो हिये विमासे, जातिवत छे एहो जी ।
म्हारो शील कदीयन भजे, हूँ समभाऊँ धरी नेहो जी ॥
- १३—दूजी ढाल तो हो गई पूरी, राजमति कहे आगे जी ।
“ऋषि रायचंद” कहे मोक्ष गामी ने, सीख सोयली लागे जी ॥

दोहा

- १— आला पहर्या लूगडा ढाकियो सगलो शरीर ।
बोले सेणी साध्वी, साभल मोरा वीर ॥

ढाल ३

राग— शानी गुरु रे घोष सूत्र सामलो

मुनिवर डिगजे नही, थें माठी धिचारी मन माय ॥मुनि०॥
थारे शील रूपीयो धन ॥मुनि०॥
काई तरस थारों तन ॥मुनि०॥
थारे मोक्षजावणरो मन ॥मुनि०॥टेर॥

- १— आर्या ने थे एहवा, वचन कहो छो केम ।
इए भव म्हारे आखडी, काई जावजीव लग नेम ॥मुनि०॥
- २— तू गाव नगर पुर विचरती, जहाँ जहाँ देखसी नार ।
हडनामा वक्त नी परे, थे धणो उठायो भार ॥मुनि०॥

- ८— परण्या कन्या पञ्चास, भोगवे लील विलास
सदा काल सुख भोगवे ए ॥
- ९— पढे नाटिक ना भरणकार, रमण्या रूप रसाल
सुख विलसे ससारनाए ॥
- १०— प्रतिबोध्या रहनेम, लागो धर्म सु प्रेम
वाणी सुणी श्री नेमनीए ॥
- ११— जाण्यो हे अस्थिर ससार, लीघो हे सजम भार
रमणी पचासो ने परहरी ए ॥
- १२— छत्ता छोड्या भोग, आदर्यो मारग जोग ॥मन०॥
कठिन क्रिया मुनि आदरी ए ॥
- १३— एक गुफा मे आप, जपता जिनवर जाप ॥मन०॥
काउस्सग कर उभा रह्या ए ॥
- १४— या थई पेली ढाल, "ऋषि रायचद" भणो रे रसाल ॥मन०॥
आगे निर्णय सामलो ए ॥

ढाल २

राग—इण सर्वायसिद्ध रे चदर

- श्री नेम जिनन्द वदन को चाली, राजुल गढ गिर नारो जी ॥टे०॥
- १—राजमती तो सेणी साध्वी, सजम मारग पाले जी ।
घणी आरजिया री हो गई गुरुणी, दया मार्ग उजवाले जी ॥
- २—सात सो सहेलीयाँ साथे, लीनो समय भारो जी ।
दशन केरो लग्यो उमावो, चाली आरजिया तिए वारो जी ॥
- ३—उजाड मे तो उठी बावल मच गयो घोर अघारो जी ।
वर्षा हो गई मार्ग बीच मे, अटवी दण्डाकारो जी ॥
- ४—भीज गई साध्वियाँ सघली, अघारो नही सुभे जी ।
बिछुड गई आरजिया इण पर किए ने मारग बुभे जी ॥
- ५—राजमती अकेली चाली, हो गई घणी ही ज काई जी ।
भीज गया कपडा ने साडी, सती गुफा मे आई जी ॥
- ६—राजमती रहनेमी को, मिल्यो, एक गुफा मे टाणो जी ।

भीज्या कपडा अलगा भेल्या, साध्वी चतुर मुजाणो जी ॥

७—आर्याजी उघाडी उभी, कचनवर्णी काया जी ।

उजवाला मे उभो दीठो, परप रूप री भाया जी ॥

८—कपण लागी सघली काया, शील सोच मे बैठी जी ।

अगज सारी कोई नही देखे, साध्वो हेठो बैठी जी ॥

९—रूप देख रहनेमो डिगिया, सजम जोग गया भागी जी ।

कामी अघा कछु नही देखे, विषय सेवन नो लागी जी ॥

१०—डरती देख सती ने बोले, रहनेमो कहे एमो जी ।

हूँ समुद्र विजय राजा जी रो बेटो, तू सोच करे छे केमो जी ॥

११—छोड जोग ने आदर भोग, साभल सोहन वरणी जी ।

सुख विलसी ने मजम लेसा, पछे करसा करणी जी ॥

१२—राजमति तो हिये विमाने, जातिवत्त छे एहो जी ।

म्हारो शील कदीयन भजे, हूँ समझाऊँ धरी नेहो जी ॥

१३—हूँजी ठाल तो हो गई पूरी, राजमति कहे भागे जी ।

“कृषि रायचंद” कहे मोक्ष गामो ने, सीख भोयली रागे जी ॥

बोहा

१—आला पहर्या लूगडा ढाकियो सगलो शरीर ।

बोले सेणो साध्वी, साभल मोरा पीर ॥

ढाल ३

राग—गाली गुप रे धोध धूत्र साभलो

मुनिवर डिगजे नही, थें माठी विचारो गन माय ॥मृनि०॥

थारे शील रूपीया मर ॥मृनि०॥

काई तरस थारों मर ॥मृनि०॥

थारे मोक्ष जावणगे मर ॥मृनि०॥२॥

१—आर्या ने थे एहवा, वचन पश्या आ केम ।

दण भव म्हारे आखडी, काई भासनीय मर ॥मृनि०॥

२—तू गाव नगर पुर विचरती, तूनी मरी कछु मर ।

हडनामा वस नो परे, थे ॥ ३॥ ३॥ ३॥ ३॥

- ३— हडबूझ हेठो पड़े, वायु तरो प्रकार ।
अस्थिर होती थारी आतमा, तू रूल सी घणो ससार ॥मुनि०॥
- ४— वमिया की वछा करे, धिग्-धिग् थारो जमार ।
मगणी श्रेय छे तो भणी, यें लोना महाव्रत चार ॥मुनि०॥
- ५— गघनबुल ज्यु किम होने, वघव सामो जोय ।
चारिअ रत्न चिन्तामणी तु कादा में मत छोय ॥मुनि०॥
- ६— वमियो विप वछे नहो, अगघन कुल नो सपं ।
भस्म होवे जिम अग्नि में, पण राखे कुलनो शर्म ॥मुनि०॥
- ७— तु अघकविष्णु जीरो पोतरो समुद्र विजय जीरो पूत ।
कुल सामो देखे नहो तु मन दे काचा सूत ॥मुनि०॥
- ८— ह भोजकविष्णु जी री पोतरी, उग्रसेन म्हारा तात ॥
दोनो रा कुल दीपता, या किम विगडेली बात ॥मुनि०॥
- ९— चन्द्र अगन वरसे नही, समुद्र न लोवे कार ।
पश्चिम सूरज ऊगे नही, ज्यु कुलवत नो आचार ॥मुनि०॥
- १०— जो तु होवे वैश्रमण देवता नन कुवेर उणिहार ।
जो तु होवे इन्द्र सारिखो, मैं बछू नही लिगार ॥मुनि०॥
- ११— गाया रो घणी गवालियो तु मत जाणो कोय ।
सयम रो घणी तू नही, काई हृदय विमासी जोय ॥मुनि०॥
- १२— बाले चन्दन बावनो, किधी चावे राख ।
चौथासु चूक्या पछे, थारे कुल ने लागे चाक ॥मुनि॥
- १३— रतन जतन कर राख जो, खण्डिया लागे खोड ।
जीवन में ओखो घणो, काई कीजे जतन करेड ॥मुनि०॥
- १४— काचा सुखा रे कारणें, काई बगाडे बात ।
पछे घणो पछतावसी, थारे काइयन आसी हाथ ॥मुनि०॥
- १५— मधुबिम्बु रे कारणो, मूडो दीवो माण्ड ।
अल्प सुखा रे कारणो, तू होसी जग में माण्ड ॥
- १६— वचन सतीरा साभली, आयो ठिकारो रहनेम ।
शील सयम दोनो तरणा, काई रह्या कुशल ने खेम ॥मुनि०॥

- १७— हाथी ज्यु रहनेमि जी, महावत राजुल नार ।
वचन रूपी अकुश करी, काई आण्यो ठिकाणे तिएवार ।मुनि०॥
- १८— तोजी ढाल पूरो यई, “ऋषि रायचंद” कहे एम ।
राजमति सती तणा, कहा जावे केम ।मुनि०॥

ढाल ४

राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

- १— भला वचन थें भाखिया रे लाल,
इम बोले रहनेम ॥सुनो साध्वी ए॥
महासती तू भूलगी रे लाल,
तू तिरण तारण की जहाज ॥सु०॥
हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल ॥टेर॥
- २— हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल
थे राखी म्हाारी लाज ॥सु०॥
तें उपकार मोटो कियो रे लाल,
जाणे नक ने दीघो राज ॥सु०॥
- ३— ससार समुद्र मे वूडतो रे लाल,
थें लीघो माने भेल ॥सु०॥
हू रूप कूप देखो पड्यो रे लाल,
थे शील द्वीपा मे दियो मेल ॥सु०॥
- ४— विषय रा वचन म्हाारा निसर्या रे लाल,
कुमति कु बोल्हो बोल ॥सु०॥
मोहनी कर्म लपेटियो रे लाल,
थें राख्यो म्हारो तोल ॥सु०॥
- ५— मतिहीणो हु मानवी रे लाल,
कुशीलियो कगाल ॥सु०॥
हु पापी पान्तर गयो रे लाल,
पिण थें राख्यो म्हारो माल ॥सु०॥
- ६— तु परमेश्वर सारखी रे लाल,
तु भगवत वीतराग ॥सु०॥

तु सतिया रो गिर सेहरो रे लाल,
थारो शोल बढोरे वंराग ॥सु०॥

७— भुण्डो मुण्डो माहरो रे लाल,
भुण्डा निकल्या म्हारा वंण ॥सु०॥
काया मे कन्दर्प व्यापीयो र लाल,
निरसता ढिगीया म्हारा नंण ॥सु०॥

८— मै नारी परिपह नही सहो रे लाल,
म्हारा मनमाहे प्रगट्यो पाप ॥सु०॥
मोटी सती ने मै दियो रे लाल,
मेरु जे तो सताप ॥सु०॥

९— पुरुषो मे उत्तम हुआ रे लाल,
रहनेमी अणगार ॥सु०॥
चलिया चित्त ने दृढ कियो रे लाल,
ते विरला ससार ॥सु०॥

१०— चौथी ढाल पूरी थई रे लाल,
अतो ने नही लागी खोड ॥सु०॥
रहनेमी जीती आतमा रे लाल,
'श्रुपि रामचद' करी जोड ॥सु०॥

बोहा

विनय भर्या वचना सुणी, रेहनेमि ना ग्राम ।
राजीमती हणित थई, प्रशसा करे ताम ॥

ढाल ५

१— तारा मोह पडल अलगा टल्या, तारेघट मे प्रगट्यो ज्ञान हो ॥२०॥
विषय जाण्यो विष सारखो, म्हारा वचन लियो थें मान हो ॥२०॥
थे स्थिर कर राखी थारी आतमा ॥टेर॥
२— थे स्थिर कर राखी थारी आतमा,
थारा चित्त आई गयो ठाम हो ॥२०॥

शील री नीव सेंठी रही,
पापयी पाप्या विराम ॥हो र०॥

३— थें तो मुगति रे सामा मण्डिया,
शीलागरय पर वंठ रे ॥ २० ॥

पथ लियो थे पाघरो,
तू तो शिव नगरी मे जासी ठेठ हो ॥२०॥

४— जो मन मेले मोकलो,
ते तो होवे फजीत हो ॥ २० ॥
मन जोते जे मानवी,
ते तो जावे जमारो जीत हो ॥२०॥

५— थारो मन जाई लागो मुगत सु,
थारें गुरु ज्ञानी से प्रीत हो ॥२०॥
यश फेल्यो थारो जगत मे,
थें तो राखी है रुडी रीत हो ॥२०॥

६— थें तो क्षमा वंराग्य वधारियो,
तोने मित्र मिलीयो सतोष हो ॥२०॥
शील देसी सुख शासता,
थारे टलसी सगला दोष हो ॥२०॥

७— थारे तेज घणो तपस्या तणो,
थें तो पीधो समता रस पूर हो ॥२०॥
क्षमा खड्ग थें कर गह्यो,
थारा अशुभ कर्म जासी दूर हो ॥२०॥

८— थें जीत्यो स्वाद जिह्वा तणो,
स्थिर मन राख्यो क्षोभ हो ॥२०॥
त्रोव मान माया नही,
थारे नही लालच लोभ हो ॥२०॥

९— काम दहन किरिया भली,
जिनसे मिटे मिथ्यात्वरी जाल हो ॥२०॥
राग द्वेष अकुरा ऊगे नही,
कर्म बीज दिया बाल हो ॥२०॥

रहनेमि-अणगार

शील री नीव सँठी रही,
पापयो पाम्या विराम ॥हो २०॥

३— थें तो मुगति रे सामा मण्डिया,
शीलागरथ पर बँठ रे ॥ २० ॥

पथ लियो थें पाघरो,
तू तो शिव नगरी मे जासी ठेठ हो ॥२०॥

४— जो मन मेले मोकलो,
ते तो होवें फजीत हो ॥ २० ॥

मन जीते जे मानवी,
ते तो जावे जमारो जीत हो ॥२०॥

५— थारो मन जाई लागो मुगत सु,
थारें गुरु ज्ञानी से प्रीत हो ॥२०॥

यश फेल्यो थारो जगत मे,
थें तो राखी है रुडी रीत हो ॥२०॥

६— थें तो क्षमा वेंराग्य वधारियो,
तोने मित्र मिलीयो सतोष हो ॥२०॥

शील देसी सुख शासता,
थारे टलसी सगला दोष हो ॥२०॥

७— थारे तेज घणो तपस्या तरणो,
थें तो पीघो समता रस पूर हो ॥२०॥

क्षमा खड्ग थें कर गह्यो,
थारा अशुभ कर्म जासी दूर हो ॥२०॥

८— थें जीत्यो स्वाद जिह्वा तरणो,
स्थिर मन राख्यो क्षोभ हो ॥२०॥

क्रोध मान माया नही,
थारे नही लालच लोभ हो ॥२०॥

९— काम दहन किरीया भली,
जिनसे मिटे मिथ्यात्वरी जाल हो ॥२०॥

राग द्वेष अकुरा ऊगे नही,
कर्म बीज दिया बाल हा ॥२०॥

- १०— यें तो दयामागं उजवालियो,
कर्मा मु माण्ड्यो जग हो ॥२०॥
यें चलिया चित्त ने घेरीयो,
अविचल छोड्यो रग ॥२०॥
- ११— राजमति रहनेमी जी,
दोनो ही केवल पाम हो ॥२०॥
मुक्ति गया दोनो जणा,
पाम्या है अविचल ठाम हो ॥२०॥
- १२— पाचमी ढाल सुहावणी,
उत्तराध्ययन अनुसार हो ॥२०॥
वली दशवैकालिक में लिख्यो,
विशेष कियो विस्तार हो ॥२०॥
- १३— शील ऊपर पच ढालियो,
कियो दोय सूत्र मे निचोड हो ॥२०॥
तिण अनुसार ए कीनी,
"ऋषि रायवद" जोड हो ॥२०॥
- १४— सवत् अठारे पचानवे,
जयवत नगर जोषाण हो ॥२०॥
ये चरित्र रच्यो चौमास मे,
मास आसोज शुभ जाण हो ॥२०॥
- १५— ओछो अधिको जे कह्यो,
ते मिच्छामि दुक्कड मोय हो ॥२०॥
ओताजन जे सामले,
तस घर मङ्गल होय हो ॥२०॥



बोहा

- १— थावरचा भोगी भ्रमर, बठो महल मझार ।
 ऋद्धि वृद्धि सुख सपदा, भोगे सुख श्रीकार ॥
- २— पाडोसी तिण रे हत्तो, पुत्र रहित घनवत ।
 पुत्र भयो तिण अवसरे, गोरिया गीत गावत ॥

ढाल १

राग—जतन की

- १—महला मे बंठो सुणो रागी, थावरच्या पुत्र वंरागी ।
 महला सु उतर्यो हुवो राजी, कर जोड कहे सुणो माजी ॥
- २—ए तो इसडा गीत गावे, म्हारे काना मे घणा सुहावे ।
 बलती इम बोले माया, साभलरे म्हारा जाया ॥
- ३—पाडोसन बेटो जायो, तिण रो हर्ष वधावो आयो ।
 थाल भरो गुड व्हेचे, जाणे पुत्र हुवो मारे जीसे ॥
- ४—बाजा बाजे थाल कसाला, गोरिया गावे गीत रसाला ।
 गोरी हिलमिल गीत ज गावे, बालक री मा ने घणा सुहावे ॥
- ५—गुड दे ने गीत गवावे, गोरिया राजी हो जावे ।
 सब कुटुम्ब तरणे मन भावे, काना मे शब्द सुहावे ॥
- ६—गीत गायन गोरिया ऊठी, देवे सोनया भर भर मुठी ।
 माता इतनी बात सुणार्ई, थावरचा रे मन भाई ॥
- ७—माता ने बेटो बहु प्यारो, नित भाणें परोसे आहारो ।
 माता कने बंठ जिमावे, भाणा री माखो उडावे ॥
- ८—इतरा मे कूको पडियो, थावरचा काने सुणियो ।
 साभल ए मात माहरी, ये किम रोवे नर नारी ॥

- ६—इए पर तो बोली माया, सामन रे म्हारा जाया ।
वेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो ॥
- १०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो वेराजी ।
मा बाप अरडाटे रोवे, बानक ना मुख सामो जोव ॥
- ११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे ।
जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुक्त ने हुवो ॥

दोहा

- १— उग्यो सूरज आयमे, फूले सो कुमलाय ।
जन्मे सो मरसी सही, चिंता इणमे ब्यु थाय ॥
- २— इए ससार मे आ बडो, जन्म मरण रो जोड ।
जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड ॥
- ३— हाथ रो कवां हाथ मे, और मुह रो है मुह माय ।
माताजी हू मरू नही, इसडी ठौर बताय ॥
- ४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द ।
जन्म मरण ने भेटसी, यादव नेम जिनद ॥

ढाल २

राग—जतन री

- १— माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सजम भारो ।
ससार नी माया भूठी, ओ तो एक दिन जाणो उठी ॥
- २—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड ।
किण रा मायने किणरा बापो जीव बाधे छे बहुला पापो ॥
- ३—थावरचा लीघो घार, कीघो नेम जी त्या थी विहार ।
स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया ॥

ढाल ३

राग—शांति जिनेश्वर सोलमा रे लाल

- १—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे ।
जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे ॥भक्तिजन॥
- २—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्रात्र नामे बाग रे ।
तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जीवा रे भाग रे ॥भ०॥

- ३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे ।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे ॥भ०॥
- ४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे ।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ॥भ०॥
- ५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी र, बोईयक चर्चा बोल रे ।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे ॥भ०॥
- ६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे ।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे ॥भ०॥
- ७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे ।
तेमना दरसन कीधा बिना रे लाल, क्षण लाखीणो जाय रे ॥भ०॥
- ८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनमा बखाण रे ।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे ॥भ०॥
- ९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे ।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनैया साढी बारा फोड रे ॥भ०॥
- १०—केई बंठा हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे ।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे ॥भ०॥
- ११—चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे ।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे ॥भ०॥
- १२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे ।
नप तिहा पर आविया रे लाल, वादिया श्री जिनराज रे ॥भ०॥

दोहा

- १— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार ।
नेम जिनद समोसर्पा, सहस्र वन मभार ॥
- २— थावरचा तिण अवसरे, बंठो महल मभार ।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार ॥

ढाल ४

राग— बुढ़ाने बाल पणारी

- १—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे ।
वह सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥

- ६—इए पर तो बोली माया, सामल रे म्हाारा जाया ।
 वेढो जायो सो भुवो, तिण कारण रुदन हुवो ॥
- १०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो बेराजी ।
 मा वाप अरडाटे रोवे, दानक ना मुख सामो जोव ॥
- ११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे ।
 जन्म ने पुत्र किम भुवो, अचरज भुक्त ने हुवो ॥

दोहा

- १— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय ।
 जन्मे सो मरसी सही, चिता इणमे ब्य थाय ॥
- २— इए ससार मे आ बडो, जन्म मरण रो जोड ।
 जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड ॥
- ३— हाथ रो कवा हाथ मे, और मुह रो है मुह माय ।
 माताजी हू मरू नही, इसडी ठीर वताय ॥
- ४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द ।
 जन्म मरण ने भेटसी, यादव नेम जिनद ॥

ढाल २

राम—जतन री

- १— माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सज्जम भारो ।
 ससार नी माया भूठी, ओ तो एक दिन जाणो उठी ॥
- २—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड ।
 किण रा मायने किणरा वापो, जीव बाधे छे बहुला पापो ॥
- ३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्या थी विहार ।
 स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया ॥

ढाल ३

राम—शांति जिनेश्वर सोलमा रे लाल

- १—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मभार रे ।
 जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे ॥भक्तिकजन॥
- २—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्रात्र नामे बाग रे ।
 तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जीवा रे भाग रे ॥भ०॥

- ३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे ।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे ॥भ०॥
- ४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे ।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ॥भ०॥
- ५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी रे, कोईयक चर्चा बोल रे ।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे ॥भ०॥
- ६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे ।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे ॥भ०॥
- ७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे ।
तेमना दरसन कीधा बिना रे लाल, क्षण लाखोणो जाय रे ॥भ०॥
- ८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनमा बख्ताण रे ।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे ॥भ०॥
- ९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे ।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनया साढी बारा कोड रे ॥भ०॥
- १०—केई बैठो हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे ।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे ॥भ०॥
- ११—चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे ।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे ॥भ०॥
- १२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे ।
नप तिहा पर आविया रे लाल, बादिया श्री जिनराज रे ॥भ०॥

दोहा

- १— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार ।
नेम जिनद समोसर्या, सहस्र वन मभार ॥
- २— यावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मभार ।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार ॥

ढाल ४

राग—बुढाने बाल पणारी

- १—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे ।
वह सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥

- ६—इण पर तो बोली माया, साभल रे म्हारा जाया ।
 बेटो जायो सो भुवो, तिण कारण रुदन हुवो ॥
- १०—इम या बात सुणार्ई माजी, थावरचा हुवो बेराजी ।
 मा बाप अरडाटे रोवे, बालक ना मुख सामो जोव ॥
- ११—मा ये क्रूर शब्द अरडावे, मा सु सुन्यो नही जावे ।
 जन्म ने पुत्र किम भुवो, अचरज मुझ ने हुवो ॥

दोहा

- १— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय ।
 जन्मे सो मरसी सही, चित्ता इणमे क्य थाय ॥
- २— इण ससार मे आ बडो, जन्म मरण रो जोड ।
 जन्ममरण ज्याछे नही, इसडी नही कोई ठोड ॥
- ३— हाथ रो कवा हाथ मे, और मुह रो है मुह माय ।
 माताजी हू मरू नही, इसडी ठौर बताय ॥
- ४— सुख भोगो ससार नो और करो आनन्द ।
 जन्म मरण ने भेटसी, यादव नेम जिनद ॥

ढाल २

राग—जतन री

- १— माता ओ ससार असारो, मैं तो लेसू सजम भारो ।
 ससार नी माया झूठी, ओ तो एक दिन जाणो उठी ॥
- २—ससार मे मोटी खोड, जन्म मरण रो अठे जोड ।
 किए रा मायने किएरा बापो जीव बाधे छे बहुला पापो ॥
- ३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्या थी विहार ।
 स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया ॥

ढाल ३

राग—शांति जिनेश्वर सोलमां रे लाल

- १—नेम जिनद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे ।
 जा पुरुषा ने वादता रे लाल, भव भव नो निस्तार रे ॥भधिकजन॥
- २—प्रभु जी तिहा पधारिया रे लाल, सहस्राम्र नामे बाग रे ।
 तरण तारण जग प्रगटियारे लाल, भव्य जोवा रे भाग रे ॥भ०॥

- ३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे ।
ज्या मे आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे ॥भ०॥
- ४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे ।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे ॥भ०॥
- ५—कोई लेवे मुनिवर वाचणी र, कोईयक चर्चा वोल रे ।
समभावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे ॥भ०॥
- ६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल मोरिया किम गह काय रे ।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे ॥भ०॥
- ७—उठो रे लोका सतावसू रे लाल, रखे अवेला थाय रे ।
तेमना दरसन कीधा बिना रे लाल, क्षण लाखोणो जाय रे ॥भ०॥
- ८—कोई कहे प्रश्न पूछसा रे लाल, कोई कहे सुनमा वखाण रे ।
कोई कहे सेवा करसा रे लाल, करसा जन्म प्रमाण रे ॥भ०॥
- ९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड रे ।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनया साढी यारा क्रोड रे ॥भ०॥
- १०—केई बंठा हयवरा रे लाल, केई चढिया गजराज रे ।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे ॥भ०॥
- ११—चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे ।
बोलन्ता विरदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे ॥भ०॥
- १२—छत्र चवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे ।
नृप तिहा पर आविया रे लाल, वादिया श्री जिनराज रे ॥भ०॥

बोहा

- १— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे वहार ।
नेम जिनद समोसर्या, सहस्र वन मभार ॥
- २— थावरचा तिण अवसरे, बंठो महल मभार ।
लोक घणा ने देखने मन मे करे विचार ॥

ढाल ४

राग—बुढाने बाल पणारी

- १—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे ।
कहे सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥

- २—बात नेम आगमन री ताजी, सुण थावरचा हुवो राजी ।
पुण्य जोगे प्रभु अठ आया, वदी सफल करू म्हारी काया ॥
- ३—म्हारा मनरा मनोरथ फलिया, म्हारा भव २ रा दु ख टलिया ।
इम हरपे घरि शीर पागे, और पेरिया नव रंग गगे ॥
- ४—उत्तरासन भीणै सुतरा, मेल्या कलगी तुरा ।
कडा हाथ कानो मे मोती, जाणै लागी जगामग ज्योति ॥
- ५—दसो अणुलिया मु दडी गले डोरो मन मे नेम वदन रो कोडो ।
देख चवर छत्र घर प्रेम, आण ने वादिया छे श्री नेम ॥
- ६—भवि जीवा रो, काटन क्लेश, दीधो स्वामी इसो उपदेश ।
दुख जन्म मरण रा भारी, बाधे कर्म तो आगे त्यारी ॥
- ७—हंस-हंस ने वांघि झूठे, तिका रोणा सु नही छूटे ।
आवे काल झपेटा ले तो, बले बब नगारा देतो ॥
- ८—सुणी इक चित्त प्रभु नो वाणी, होती मन मे विछुडी जाणी ।
कर जोड ने कहे सुणो स्वामी, दीक्षा लेसु अन्तर्जामी ॥

दोहा

- १— जिम सुख थावे तिम करो, इम बोले श्री नेम ।
ढील लगार करो मती, जो चाहो कुशल ने क्षेम ॥
- २— प्रभु ने वदन कर चालिया, कीधो महल प्रवेश ।
माता पासे जायने, मागे इम आदेश ॥

ठाल ५

राग—तू मुक्त प्यारो रे

- १—आज्ञा दो मुक्त माता जी अम्मा, ओ ससार असार ।
काल आण घेरिया थका हो अम्मा, कोई न राखण हार ॥
म्हारी अम्मा, आज्ञा दीजे वेग ॥टेर॥
- २—वाणी अपूर्व सामली हो अम्मा, पडी मुर्छागत खाय ।
सावधान बैठी करी हो अम्मा घाली शीतल वाय ॥म्हारी॥
- ३—तू एकाकी म्हायरे रे जाया, तू कालजारी कोर ।
तू मुक्त आघा लाकडी रे बेटा, तुम्ह सम म्हारे कुण ओर ॥
मोरा जाया यू मत बोले वैन ॥टेर॥

- ४—त मुझ जीवन की जडी रे जाया, तू मुझ प्राण आधार ।
जीवू थने होज देखने रे जाया, मान थावरचा कुमार ॥
- ५—रमणी वत्तोसे यायरी रे जाया, अप्सर ने अनुहार ।
विलविनती छांड ने र जाया, मति ले सजम भार ॥
- ६—रमणी भुर रग महल मे रे जाया, मात भुरे मन माय ।
वैरागी भुरे मोक्ष ने रे माता, मनडो रह्यो उमाय ॥
- ७—साधु पणो अति दोहिलो रे जाया, त्रिविध महाव्रत चार ।
दोप बयालीस टाल ने र जाया, लेणो निर्दोषण आहार ॥
- ८—कनक कचोला छांड ने रे जाया, जीमणो काष्ठ के पात्र ।
ए सुख सेज्या छोडने रे जाया, भेलो राखणो गात्र ॥
- ९—कायर ने ए दोहिलो ए माता, आप कही जे बात ।
सूरा सब सोहिलो माता, दुर्लभ नही तिल मात ॥

दोहा

- १— वचन सुणी बेटा तणा, माता थई निरास ।
बेटो आज घरे नही, भद्रा थई उदास ॥
- २— रतन अमोलक भेंटना, ले दास्या ने लार ।
मध्य बाजारे निकली, गई, कृष्ण तणो दरबार ॥

ढाल ६

राग—भविजन कम समो नहीं कोष

- १—माता तो ऊठ कृष्ण घर चाली, कहे साभल जो नर नाथो ।
एका एकी म्हारो कुँवर थावरचा, काढी दीक्षा री बातो ॥
जायो म्हारो, लेसी सजम भारो ॥
भात-भात घणो समजायो, पिण माने नही लिगार ॥टेर ।
- २—अन्न घन्न तुम प्रसाद घणो ही तिणारी नही मार चावो ।
पुत्र वैरागी तिणारे महोत्सव काजे, छत्र चवर दिरावो ॥
- ३—बलता कृष्ण जी इण पर बोले थारो बेटो होसी घर्म देवो ।
हूँस हमारी पूरण काजे, मोछव करसा स्वयमेवो ॥
- ४—चतुरगी सेना सज कीधी, आप हुआ असवारो ।
नाटक ना भणकार होवता, आया थावरचा घर वागो ॥

ढाल ७

राग—चन्द्रगुप्त राजा सुणो

- १—थावरचा ने कहे कृष्ण जी, तू दीक्षा मत ले भाया रे ।
सुख भोगवो ससार नो, म्हारी छे छत्रछाया रे ॥
थावरचा ने कहे कृष्ण जी ॥टेर॥
- २—वलतो कुँवर इसडी कहे, म्हारो जीवतो जद सुख पावेरे ।
आप कहो तिमि ही करूँ, जो जन्ममरण मिट जावे रे ॥
- ३—वलता कृष्ण जी इम कहे, बात कही थें भारी रे ।
जन्ममरण भेटण तणी, आ तो पोच नही छे म्हारी रे ॥
- ४—हाथी पर बेसाय ने, गलिया गलिया मझारो रे ।
कण्ण करावे उद्घोषणा, द्वारिका नगर मझारो रे ॥
- ५—जगत मे कोई केहनो नही स्वार्थियो ससारो रे ।
माधव गल सो इम कहे, मति करो ढील लगारो रे ॥
- ६—दीक्षा लो निश्चित पण, पाणी पेली पालो रे ।
पाछला सब परिवार नी, हूँ कर लेसूँ साल सभालो रे ॥
- ७—खाणो खरची पूर सू, बोले कृष्ण मुरारो रे ।
थावरचा साथ बेरागिया उठीया पुरुष हजारो रे ॥
- ८—सेविका सेंस त्यार हुई, आवे अति आनन्दे रे ।
छत्र चवर देखी करी पाला हुई ने प्रभु वदे रे ॥
- ९—पच मृष्टि लोच हाथे कियो, सजम लियो प्रभु पासे रे ।
कुँवर थावरचा ज्यो करे, तिण ने छे स्यावासो रे ॥



दोहा

- १— दशनं परिपह वावीसमो, काठो तिण री काम ।
पाच दोष ने परिहरो, रत्तो पाका परिणाम ॥
- २— उत्तराध्ययन क्या माहे, चाल्यो आषाढाभूत ।
पेहला परिणाम पोचा पड्या, पाछे मेंठा दीना सूत ॥

ढाल १

राग—आन्ध्रलाल

- १—आषाढ भूति अणगार, बहुशिष्यो रे परिवार ।
मनमोहन स्वामो ! आचारज चढती कलाए ॥
- २—जाणो आगम अर्थ अपार, हेतु दृष्टान्त बहुसार ।
मनमोहन स्वामी ! चेला भणायो घणा चूँप सुए ॥
- ३—एक शिष्य कियो रे सयार, गुरु बोल्या तिण वार ।
सुण चेला म्हारा ! जो थू थावे देवता ए ॥
- ४—जो तू कहिजे आय, जेजम करजे काय ।
सुण चेला म्हारा ! गुरु सम जग मे को नही ए ॥
- ५—दो तीन चेला कियो काल पण किनी किणी न सभान ।
सुण चेला म्हारा, पाछो आय कह्यो नही ए ॥
- ६—थू तो चेलो चौथो होय तो सम वालो नही कोय ।
सुण चेला म्हारा ! मैं थने साज दियो घणो ए ॥
- ७—थू शिष्य म्हारो मुविनीत, थारे म्हारे पूगी प्रीत ।
सुण चेला म्हारा, अन्तर भक्त छे थू म्हायरो ए ॥
- ८—थू मत जाजे भूल केणो म्हारो कर कबूल ।
सुण चेला म्हारा थू तो वेगो आवजे ए ॥

६—चेला ने छोड़या प्राण, उपन्यो देव विमान ।
मन मोहन स्वामी, रिद्ध सिद्ध पाई घणी ए ॥

१०—जगमग महलो री ज्योत, जारों सूर्य उद्योत ।
आच्छे लाल, जाली ऋरोखा भील रह्या ए ॥

११—थावा पे पुतलिया सार, महलो माहि अपार ।
आच्छे लाल, रतन जडित छे आगणाए ॥

१२—पिलिग रतनमय होय, ईस सोना रा जोय ।
आच्छे लाल, रतना रो वाण पच रग नो ए ॥

१३—लुबा कसिया सेज, दीठा ही उपजे हेज ।
आच्छे लाल, सुहालो भाखण सारखो ए ॥

१४—जोवा चन्दन चम्पेल, महके सुगन्धो तेल ।
आच्छे लाल, चम्पा चमेली गुलाब रा ए ॥

१५—महलो रे दोलो बाग, बलि छत्तीस ही राग ।
आच्छे लाल, नाटक बत्तीस प्रकार रा ए ॥

१६—कपडा महीन गलतान, गहणो रो नही कोई ज्ञान ।
आच्छे लाल, देखता लोचन ठरे ए ॥

१७—दीपे देवागना री देह, लागो नवलो नेह ।
आच्छे लाल, देविमा सु मोह्यो देवता ए ॥

१८—एक नाटक रे भणकार, वर्ष जाये दोय हजार ।
आच्छे लाल, गुरु कह्यो याद आवे कठे ए ॥

१९—सुखा रो लाग रह्यो ठाठ, गुरु जोवे चेला री वाट ।
आच्छे लाल, देवता बणियो आयो नही ए ॥

२०—चेलो भील रह्यो जेह, गुरु ने पडियो सन्देह ।
आच्छे लाल, समकित मे शका पडो ए ॥

२१—ये थई पेहली ढाल, 'रायचन्द' भाखी रसाल ।
आच्छे लाल, आगलो निर्णय सामलो ॥ ॥

दोहा

- १— आपाठ भूति इम चिन्तवे, नही स्वग नही मोक्ख ।
निश्चय नही छे नारकी, सगली वाता फोक ॥
- २— चित्त बल्लभ चेलो हुतो, म्हारो पूरो प्रेम ।
सूत्र वचन साचा हुवे तो, पाछो न आवे केम ॥

ढाल २

राग—सहेतिया ए आम्हो मोरियो०

- १—आपाठ भूति इम चिन्तवे, पाछो जाऊँ हो म्हारे घर वास के ।
सुन्दर सु सुख भोगवू, हूँ विससु हो वली लीला विलास के ॥
चारित्र सु चित्त चल गयो ॥टेर॥
- २— चारित्र सु चित्त चल गयो,
घरे चाल्या हो हुवा श्रद्धा भ्रष्ट के ।
अरिहन्त वचन उयापिया,
हुवा खाली हो गमाई समदृष्ट के ॥
- ३— तिण समय सिंहासन कम्पियो,
देव दीघो हो तब अवधिज्ञान के ।
गुरु ने दीठा घर आवता,
मार्ग मे माड्यो हो नाटक प्रधान के ॥
- ४— छ महीना नाटक निरखियो,
आचारज हो हुआ हुल्लास के ।
पूरो हुवो नाटक पागरघा,
विहार करता हो आया वनवास के ॥
- ५— दया री परीक्षा क२ वा भणो,
देव वणायो हो छ नाना बाल के ।
गेहणा बहु पेराविया,
रिमझिम करता हो चाल्या सुखमाल के ॥
- ६— छहु बालक वोल्या तिण समे,
पाये लागा हो जोडी दोउ हाथ के ।
साता छे पूज्य आप रे,
खमाव हो छह काया रा नाथ के ॥

- ७— पृथ्वी अप् तेउ वायरो,
वनस्पति हो छट्ठी त्रस स्वाम के ।
छहै म्हा नान्हा छोकरा,
म्हारा दीघा हो माविता नाम के ॥
- ८— दया पाली घणी छ काय री,
दीठी नही हो दया मे भली वार के ।
पुण्य पाप रो फल पायो नही,
हु तो लेसु हो छउ ना गेणा उतार के ॥
- ९— बालका ने कने बुलाय ने,
गहणा गाठा हो उरालिया खोल के ।
छउ ना गला मसोसिया,
बालुडा हो मुण्डे नही सवया बोल के ॥
- १०— गृहस्थी रे धन बिना नही सरे,
पाने पडियो हो म्हारे मोकलो माल के ।
मन माहे हर्ष मावे नही,
मलकन्ता हो चाल्या मन सुशाल के ॥
- ११— दया परा दिल सु गई,
देव दीठो हो गुरा किया अकाज के ।
अजु तो भारग आण सु,
जो एनेहो होसी आख्या लाज के ॥
- १२— दूजी ढाल पूरी हुई,
ऋष "रायचन्द" हो कहे छे एम के ।
चतुराई देखो देवता तणी,
गुरा ने हो ज्ञान मे घाले छे केम के ॥

दोहा

- १— देव रूप फेरी करी, कियो साध्वी रो रूप ।
गेणा गांठा भारी पेरिया, कपडा भीणा बहु चूप ॥
- २— बाया बाजुबन्ध बेरसा, गले नवसरियो हार ।
ललाट टीकी भूल रह्यो, पग नेवर भणकार ॥

- ३— सोवन चुडलो हाथ मे, काकण रतन जडाव ।
 आगुली वीटी भलहले, भीणी चाने पाव ॥
- ४— मारग जाता साधू ने, मिली साध्वी एम ।
 लज्जा होण थे पापणी, भेख लजायो केम ॥

अथाग्रे प्रक्षिप्त दोहे—मुनिकथन

- ५— साग कियो साधू तणो, पेट भरी गुण हीन ।
 भेख लजावे लोक मे, धिक तुझ ने मति हीन ॥
- ६— महाग्रतणी वाजे जगत्, लाजे नही लगार ।
 धर्म लजावा कारणे, थे छोडघो ससार ॥

ढाल प्रक्षिप्त

राग—चौकरी

- गुण महासती, या लखणा सु जैन धर्म अति लाजे ।
 गुण नही रती, लोका माहे निगन्थणी यू वाजे ॥टेर॥
- १—थू चाले छे चाला करती, शुद्ध ईयां समिति नही धरती ।
 लोक लाज सु नही डरती, थू लावे गोचरी झर झरती ॥
- २—एक लडो थू फरती दीस, दोय ने वरजी जगदीसे ।
 शुद्ध सीख दीया दात ज पीसे, थ नही छोडी तिल भर रीसे ॥
- ३—तु मेले खेले देखण जावे, व्याव ओसर सु बंधरो लावे ।
 रवि उगा विन पाणी जाव, थू क्यु मारग ने लजावे ॥
- ४—थारे घेन दार पेरण साडी, रंगी चगी छे देह थारी ।
 तप करणी भु थू हारी, थू टूट पडी खावण लारी ॥
- ५—थू भीणो पट ओढण राखे, अग अग सारा भाके ।
 लोक लज्जा पण नही राखे थे भेख लियो टो हक नाके ॥
- ६—परालब्धी वाल खिलावे छे, माहो माहे जग मचावे छे ।
 गृहस्थी आय छुडावे छे जिन मारग पूरो लजावे छे ॥
- ७—जग माहे वाजे तू गुरणी, विगड गई थारी करणी ।
 लपट नर ना चित्त हरणी, तू लाजे नही उदर भरणी ॥
- ८—केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम घोवण लावे ।
 शुद्ध दण ते नही पावे ते पिण शिवपुर नही जावे ॥

- ६—कचन चूड़ो खलके है, लिलवर बिदली झलके है ।
मजन सु देही झलके है वीजली ज्यू तुज तन पलके है ॥
- १०—एक भागा सब ही भागे थारी वन्दना दाय नही लागे ।
हू आपाढाचाय मुनि सागे, मतो उभी रहे तू मुख आगे ॥
- ११—रामवन्द कहे सुण लोजो, सुण ने सतिया मत खोजो ।
जो खोजो तो तप कीजो, शुद्ध सजम री ये ख प कीजो ॥

दोहा

- १—आरजिया कहे सुण साधु तु, एहवा बोल न बोल ।
पात्र माहेला सब मूक दो लज्जा सगली खोल ॥
- २—अल्प दोष छो माहरो, काई प्रकाशो साध ।
दोष तुम्हारो देखलो, ये की बालक नी घात ॥

साध्वी का उत्तर

राग—चौक की

- सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोष, विचाशी बोलो ।
गुणो जिनवरजी, तन उज्ज्वल मन कपट हिया खोलो ॥टेर॥
- १—परोपदेशी घणा जग मे, पर ओगुण देखे पग पग मे ।
अरु आप तो झूल रह्या अध मे ॥सुणो०॥
- २—पू ज पू ज पग देवो छे, इण रीते विहार मे देवो छे ।
किम लम्बा तडाका देवो छे ॥सुणो०॥
- ३—मलिन धोवण चौडे घर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो ।
निन्दा करी गृही कान भर दो ॥सुणो०॥
- ४—पडिले हण विधि नही जाणो छो, शुद्ध अद्धा न पिछाणो छो ।
उत्सूत्र प्ररूपी रूढ ताणो छो ॥सुणो०॥
- ५—कपट क्रिया से नही तरिया, बाज आचारी पेट भरिया ।
इसा साग तो बहु करिया ॥सुणो०॥
- ६—उजड वस्ति मे सम रणो, कंणो जिए रीते वै रणो ।
घर ओगुण देख पर गुण लेणो ॥सुणो०॥

- ७—महिमा कारण करि माया, भोला नर ने भरमाया ।
 स्यू कपट घरम प्रभु फरमाया ॥सुणो०॥
- ८—आप सासरे नही जाव, पर ने सीख शुद्ध फरमावे ।
 ज्यारी प्रतीत किम आवे ॥सुणो०॥
- ९—हाथ थकी फेरे माला, भरघा पेट मे कुदाला ।
 ऐसे मुनि का मुख करो काला ॥सुणो०॥
- १०—आप पोते निर्गन्ध बाजो, थोथा चिणा ज्यू मत गाजो ।
 घर जाता मन मे नही लाजो ॥सुणो०॥
- ११—मनुष्य मार ने घन लावो, अवे पेला ने समझावो ।
 भोली पातरा दिखलावो ॥सुणो०॥
- १२—बात सुणी अचरज पाया, या किम जाणें म्हारी माया ।
 राम तत्क्षण दौड आगे आया ॥सुणो०॥

दोहा

- १— इम सुण साधु आगे चाल्या, आ किम जाणे दोख ।
 रूप मेली श्रावक हुआ, आडम्बर बहु थोक ॥

ढाल ३

राग - धम आराधिये

- १—सथवाडो कियो घणी वनिय ए, किया नर नारिया का ठाट के ।
 सभ वाला ने घोडा घणा ए, चाल्या घणी गहघाट के ॥
 पूज्य पधारिया ए ॥टेर॥
- २—जुना श्रावक जाणे समझणा ए मुण्डे मुहपत्ति बान्ध के ।
 गुरु ने प्रदक्षिणा देय ने ए, भलो तरे पग बान्द के ॥
- ३—म्हे आप ने बान्दण आवता ए, म्हारे पूरा धर्म सु राग के ।
 आप ही सामा मिल गया ए, भला जाग्या म्हारा भाग के ॥
- ४—म्हा दर्शन दीठो राज नो ए म्हारे दूधा धुठा मेह के ।
 मन वाछित फल मिल गया ए, आज पावन हुई म्हारी देह के ॥
- ५—इए दर्शन रे कारणे ए, म्हा वारी वार हजार के ।
 म्हा पर कृपा कीजिए लीजिए सूज्झतो आहार के ॥

- ६—गुरु कहे श्रावक माभलो ए, थारे भलो घर्म सु बाग के ।
पिण आहार लेवा तणो ए हिवडा नही म्हारे लाग के ॥
- ७—म्हारे वेरण रा भाव को नही ए, म करो खीचा ताण के ।
हठ जरा नही कीजिये ए, थे छो भवसर तण जाण के ॥
- ८—तब बलता श्रावक इम कहे ए, जोडी दोनो हाथ के ।
हठीला स्वामी थे घणाए, किम खीवो एसी बात के ॥
- ९—दोय पोहर तो ढल गया ए थारे हुवो भिक्षा रो काल के ।
खीचडी ने बडियाँ भली ए, ऊना रोटा घृत दाल के ॥
- १०—ओ दाखा रो घोवण देखलो ए, आपुरी भरी परात के ।
मन होवे तो मिठाई लीजिए, पोओ ओला मिश्री नवात के ॥
- ११—गुरु ने बहराया बिना ए, म्हाने जीमण रो छे नेम के ।
वेगा काढो पातरा ए, थे भोली नही खीलो केम के ॥
- १२—थे भोली ने क्यों भोली रह्या ए, म्हारे निश्चय नही पण्णाम के ।
थे किम कर बहरावो सो ए, कोई नही जोरावरी रो काम के ॥
- १३—थे तो श्रावक मिलिया सामठा ए थे लीधो म्हाने घेर के ।
आगे किम जावण दो नही ए, हू तो होगयो मण को सेर के ॥
- १४—म्हे श्रावक घणा ही देखिया ए पिण ओ हठ ने या भोड के ।
कठे ही पण नही देखिया ए, ओ दीठो इया ही ज ठोड के ॥
- १५—पूज्य सुणो थे पादरा ए माण्डो पात्रा म करो जेम् के ।
म्है छा ओ समगति आपरा ए, हुलस्यो म्हारो हेज के ।
- १६—इतरा चरित्र चेला ने किया ए, तीजी ढाल मझार के ,
ऋषि रायचन्दजी कहे ए, आगे सुणो अधिकार क ॥

ढाल ४

राग—नणदत्त ए०

- १—आमी सामी खीचता भोली सुली नीठा नीठ, गुराजीओ ।
पातरा माहे सु गहणा पड्या, चवड लोका लिया दीठ (गु०)
थे गेहणा कठा सु लाविया । टेरा ॥
- २—गेहणा वठा सु लाविया, व्हो थारा चित्त री बात, गुरा जी ।
थे भेल लजाया लोक म, कहा कठा लग जात, गुरा जी ॥

- ३—इतरे वारु आविया, वले आया वाप ने माय, गुरा जी ।
गेहणा तो गया आगला, म्हारा बेटा देवो बताय, गुरा जी ॥
- ४—तात मात कहे रोवता, सुत विन गेहणा रो शाल, गुरा जी ।
कुरले म्हारो कालजो, ज्या लग निरखा नहो बाल, गुरा जी ॥
- ५—वेगा म्हाने बताय दो, जेम्न करो मत काय, गुरा जी ।
थे टावर कठे छिपाविया, म्हारो जीव निकलियो जाय, गुरा जी ॥
- ६—जीवता होवे तो म्हैं जोयला, मुआ होवे तो देवां त्याग, गुरा जी ।
गुरु आख्या मोच अवोला रह्या, आवी लाज अथाग, गुरा जी ॥
- ७—जो घरती फाटे परी, हू पेस जाउ पाताल गुरा जी ।
मोटो अकारज मैं कियो मैं मारघा नाना बाल, गुरा जी ॥
- ८—अरिहन्त सिद्ध साधु धर्म रो, चित्त घरघा शरणाचार, गुरा जी ।
अबकि इण विरिया विपै, म्हने शरणा रो आघार, गुरा जी ॥
- ९—ये देवता चरित्र देखाविया, पिण एक रही गुरा मे लाज, गुरा जी ।
लाज रही तो मारग अ वसी, लाज स सुधरे काज, गुरा जी ॥
- १०—गुरु समझावण कारण, चौथी मे चरित्र अनेक, गुरा जी ।
रिख रायचन्द कहे साभलो, आगे चेला रो विवेक, गुरा जी ॥

दोहा

- १— वारु लागा बाध ज्यू, गर हुवा घणा भय अन्त ।
देवता ज्ञान मे देखिया आण मिल्यो अव तन्त ॥
- २— माया सर्व समेटने, साधु रूप वणाय ।
मत्थेण वन्दना मुख सु कहे उभो आगे आय ॥
- ३— आप आवन्ता कठ अटकिया बाई दीठो माग माय ।
एउ पलक नाटक टखियो, तव चेलो बोल्यो वाय ॥
- ४— पलक कहो किण कारणे, नाटक निरख्यो छ मास ।
देखो सूरज माण्डलो, जोवो हिये विमास ॥

ढाल ५

राग—चार प्रहरो दिन हुवे रे लाल

- १— रूप कियो देवता तणो रे लाल,
रिद्धि तणो कर विस्तार, गुरा जी ओ ।

चित्त बल्लभ चेलो पूज्य रो रे लाल,
उपनो स्वर्ग मझार, गुरा जी ओ ॥
राखो अरिहन्त वचना री आसता रे लाल ॥टे॥

२— राखो अरिहन्त वचनो री आसता रे लाल,
टालो समकित ना दोख ॥गुरा॥
स्वर्ग नरक निश्चय जाण जो रे लाल,
कम खपाया मिले मोख ॥गुरा॥

३— हूँ सजम पाली हुवो देवता रे लाल,
रतन जडत रो विमान ॥गु॥
दो हजार वर्ष पूरा हुवा रे लाल,
एक नाटक से प्रमाण ॥गुरा॥

४— ज्यू थे नाटक मे मोहिया रे लाल,
त्यु म्हे मोही रह्यो एम, ॥गुरा॥
थाने मैं विसरी गयो रे लाल,
लागो नवचो प्रेम, ॥गुरा॥

५— समकित माहे सेठा किया रे लाल,
काट दियो मिथ्यात ॥गुरा॥
वन्दना किधी गुरा भणी रे लाल
जोडी दानो हाथ ॥गुरा॥

६— देवता प्रतिबोधी गयो रे लाल,
गुरु लियो सज्जम भार ॥गुरा॥
पछे चारित्र पाल्यो निर्मलो रे लाल,
बलि ओरा रा कियो उपगार ॥गुरा॥

७— आपाढभूति भली तरे रे लाल
जिन मारग दोपाय ॥गुरा॥
अन्त समय अनशन करी रे लाल,
मोक्ष गया कर्म खपाय ॥गुरा॥

८— जिम आपाढभूति दृढ हुमा रे लाल,
जिम रहिजो चतुर सुजाण ॥गुरा॥

दर्शन परिपह जीत जो रे लाल,
ज्यू पहुँचो निर्वाण । गु०॥

६— उत्तराध्येन अध्येन दूसरे रे लाल,
कथा माहे अधिकार ॥गुरा०॥
तिण अनुसारे में कियो रे लाल,
रिख रायचन्द पर उपगार ॥गुरा०॥

१०— समकित दृढ पच ढालियो रे लाल,
कह्यो कथा माहे जोय ॥गुरा०॥
जो कोई विपरीत में कह्यो रे लाल,
ते मिच्छामि दुक्कड मोय ॥गुरा०॥

११— पूज्य जयमल जी रे प्रसाद सु रे लाल,
नागोर शहर चौमास ॥गुरा०॥
पच ढालियो जोड्यो जुगत सु रे लाल,
समकित ज्योत प्रकाश ॥गुरा०॥

१२— सवत् अठारे छत्तीस मे रे लाल,
आसोज विद दशमी दिन ॥गुरा०॥
राखो समकित निर्मली रे लाल,
वाजो जग माहे घन ॥गुरा०॥



दोहा

- १— परिपह कह्यो इक्कीसमो, नामे तेह अनारण ।
ज्ञानावरणीय ने उदे, ज्ञान न चढे प्रमाण ॥
- २— जघन्य नवतत्त्व ओलखे, प्रवचन माता आठ ।
भेद भिन्न उत्कृष्ट थी, नही आवे सूत्र ना पाठ ॥

ढाल १

राग—सामल रे मोरा बीरा

- १— खपकरे भणवारो आकरी, माण्डे गोखा गोखोरे ।
गुरु सिखावे वली वली, पिण नही बेसे अक्षर चोखो ॥
- २— अध्ययन सूत्र आवे नाही, प्रश्न नो उत्तर नावे ।
परिपदा आवी रे उमाई, व्याख्यान कियो नही जावे ॥
- ३— सूक्ष्म वादर जीवना भेदो, गुणठाणा ने वली जोगो ।
उपयोग लेसा प्रमुख घणा, पूछा न करे सोगो ॥
- ४— जाणै निश्चय मैं पूरवे, कीघा कम अनारण ।
जिण रीते भेद न जाणु पाप धर्म ने कल्याण ॥
- ५— अथ मैं जो समकित लही, ज्ञान पामशु आगे ।
इम मन ने मुनि धीरपै, जिण वली कम न लागे ॥
- ६— तप उपधान जो आदर, पडिमा वही जेम ।
यू विचरत छद्मस्थ थी, न निर्वतु केम ॥
- ७— यव मुनि नो परे जाणो, जीता परीपा अज्ञान ।
केवल लेई मुगत गया, धरो निमल ध्यान ॥

दोहा

- १— अज्ञान परिपह आकरो, करडो तिण रो काम ।
सहता पिण नही सोहलो, दोहलो जाणो जाम ॥
- २— ज्ञान हेतु गुरु खप करे, सिखावे सिद्धान्त ।
चेला मूढ इम चितवै, गुरु ले छे मुझ अन्त ॥
- ३— जातिवत जो शिष्य हुवे, तो आलोचे उण्डो ।
गुप उपकारी माहारा, कदीय न करे भूण्डो ॥
- ४— विनय भक्ति तपस्या घणी, उज्ज्वल वलो आचार ॥
गुरु शिक्षा दे ज्ञान रो, जद जाणं वज्र प्रहार ।
- ५— जिसो तिसो पिण सोखीया निरर्थक नही थाय ।
आडो आवे कदेक ते जिम बीति यव मुनि माय ।

ढाल २

राग—घोषहनी

- १—सुप्रतिष्ठ नगर यव राजान, अलकापुरी धनेन्द्र समान ।
राणी प्रियदर्शना ना नन्द गुणवान्, गर्दभिल्ल नामे बुद्धि निधान ॥
- २—लाडली ने लौडी वहन गुणवत, अणुल्लिका कुवरी रूपवत ।
दीर्घपृष्ठ मुथो करे राजकाज, दुश्मन सहु नाठा है लाज ॥
- ३—एक दिन थेवर पधार्या जेत, परिपदा आवी वदन धर हेत ।
अति आढम्बर करी यव राज, हप धरी वाद्या मुनिराज ॥
- ४—अपूर्व धर्म कथा कही जाण, मुनिवर मुखनी अमृत वाण ।
सुण वरागी थयो यवराज, हूँ दीक्षा लेमु मुनिराय ॥
- ५—जिम सुख हो तिम करो यवराज, कलकरता कीजिए आज ।
गर्दभसेण कुँवर पट्ट थाप, मुनिपद लीनो यव नृप आप ॥
- ६—गुरु साथे मुनि करे विहार विनय वैयावच्च तप करे अपार ।
क्षमा दया ने बहु गुणवत, पिण नही पढे गुरु पास सिद्धान्त ॥
- ७—लज्जा विना मेलवे केई गाहा,
हरि विना मन्त्रा रो किम होवे उमाह ।
गुरु कहे सीखो मुनि ज्ञान वैरो नही मरे कोरे म्यान ॥

दोहा

- १— गुरु प्रेरे अहो यव मुनि, थोडो घणो सिद्धान्त ।
मालम्बन ए धर्म नो, परमव सुख अनन्त ॥
- २— विद्या नरनो रूप है विद्या घन प्रच्छन्न ।
विद्या घन यश सुखकरी, विद्या बन्धव जन ॥
- ३— विद्या ए गुरु निगुरु, विद्या ए पूजे राज ।
विद्यावत नर देवता, सिद्ध करे सब काज ॥
- ४— विद्या अगुरु लघु गण, भार न देश प्रदेश ।
उदक अग्नि ने चोर नो, भय पिण नही लव लेश ॥
- ५— विद्यावत प्रसिद्ध जग विद्यावत प्रवीण ।
सिग पूछे बिना मनुष्य ते डोर न विद्याहीण ॥

ढाल ३

गग—किण से कडवा मत बोलना जी

- १— प्रथम ज्ञान ने क्रिया पछे छे, प्रभु आगम मे भाखी ।
ज्ञान बिना नही सगति भुगति बेहूँ, बहु आगम तासु साखी ॥
यवमुनी भणीये, हो भणीये, भणीये भणीये, यव ॥टेर॥
भव भव सचित पाप निकाचित हणीये यव ।
- २— बावनो चदन लदयो गधेडो, भारवाहक बिरा ने ।
ग्राम नगर मे सध चतुर विध ज्ञानी बिना कुण माने ॥
- ३— बार बार इम कहे आचारज, पण जव मुनि नही माने ।
गुरु कहे है जव भणे नही, पिण मुश्किल पडसी थाने ॥
- ४— नृप ययो साधु जाण ने परीपदा, ग्राम नगर बहु आसी ।
पुछ्या जवाब कह्यो नही जासी, पछे घणो पछतासी ॥
- ५— जव मुनि कर जाडी कहे गुरु ने स्वामी हूँ गरडो डोसो ।
पाव हाँड चढ न बानो शू बीजे अफसोसो ॥
- ६— श्री जो माहिय था खादे नबीतो, धर्म ध्यान हू ध्याऊँ ।
श्रीर चिन्ता मगनी छाण्डी श्री पुज चिरजीवाऊँ ॥

दोहा

- १— जव थेवर इम चितवे, एने चितानाथ ।
भणवो आयडमी जदी, पडसी माथे आय ॥
- २— एम विचारी आपणा, शिष्य ने कहे बुलाय ।
मीसावण इण विध कहे, जव ने भणावण उपाय ॥
- ३— जव मुनि ने हूँ, एक दा, भूकू किरण इक गाम ।
थे साथे मत जाव जो, हूँ कहुँ तो पिरण ताम ॥
- ४— नट जो भापा समिति थी, सिखावी विध एम ।
जोई जो उपकारी गुरु, शिष्य भणावे केम ॥

ढाल ४

राग—चढ़ो चढ़ो लाडा वार म लावी

- १—एक दिन जव मुनि ने तेडी, बात कहे गुण होवे जेवी ।
ससार्या ने वदावण जावो, प्रतिवोध देई ने पाछा आवो ॥
हो यव मुनि कह्यो करीजे ॥टर॥
- २—तव जव मुनि कहे शिर नागी तेहत वचन तुम चो स्वामी ।
पिरण सोहसु केम अकेलो, तिरण एक सिंघाडो साथे मेलो हो । यव ।
- ३—बडा चेला ने कह्यो तू जेसी, ते कहे विनय किरण विध थासी ।
छोटा चेला ने हुकम ज दीघो, तिरण भीठो जवाव इम दीघो ॥यव॥
- ४—मैं दोनो सरीखा हिण्डोला, हूठोठी जव मुनि भोला ।
स्वामी उपदेश कहो कुण देसी, इण वाता दोनारी हासी होसी । यव ॥
- ५—तव गुरु कहे अकेला ही जावो, ससार्या ने वदाई आवो ।
लाभ घरणो थाने थासी, म मेलाछा हिवडे विमासी ॥यव ।
- ६—जातवत नी चाल एही, कु जातनी कहो गत के ही ।
विनयवत ने भद्रिक भोला, आज्ञा गुण हिये ताला ॥यव ।
- ७—मोटा होवे तो मोटी सोचे, उण्डी मन माहे आलोचे ।
चात्या हुकम ले वादया गुरु पाया, घन घन श्रीजवमुनि राया ॥

दोहा

- १— जव मुनि ने माग विषे, थई चिता मन माय ।
नृपति हूँ सावु थयो, पिरण हूँ भणीयो ताय ॥

- २— लोग वादवा आवसी, कहसी दो उपदेश ।
शू कहशू तव लोक ने, ए विखवाद विशेष ॥
- ३— हा ! हूँ बडो अभागीयो, पापी हूँ पुण्यहीण ।
हूँ मूरख मति वावलो एम थायो मुख दीन ॥

ढाल ५

राग—आवक धर्म करो सुखदाई

- १—इम पछतावतो कितरेक काले निजपुर सीम मे आयो हो ।
जव नो खेत तिहा एक हरीयो, शोभनीक डह डायो रे ॥
- २—देखो आचारज अकल उठाई, गरु उपकारी सदाही रे ।
गुरु री सीख अवे याद आई, आण पड्या भव काई रे ॥
देखो आचारज अकल उठाई । टेरा ॥
- ३—एक गधो तिहां चरवा पेठो, हरीया जव ते खावे रे ।
खेत घणी थी डरतो खिण खिण, ऊँचो नीचोजोवतो जावे रे ॥
- ४—खेत घणी तिहा अलगो उभो, देख गधो गाथा बोली रे ।
जव मुनिवर सुण मन मे हररयो, बात हिये इम तोली रे ॥

गाहा

- १— आधावसि पधावसि ममवावि निरिबखसि ।
लखिअो ते अभिप्पाओ, जव पत्थेसि गद्दा ॥

बोहा

- १ - इत उत देखे गदभा, जाण्यां मन का भाव ।
जव को चाहे विणसवो, थारी हिम्मत हो तो आव ॥

ढाल पूर्व की

- ५— ए गाथा रूडी हूँ सीसु आढी आसी मारे आजे हो ।
ससारी मुक्त वदन आसी, तिण ने सुणावा काज हा ॥
- ६— खेत घणी बार बार गाथा, भाखी ते ऋषि घारी रे ।
रान जता करतो जिम चाने, बार बार रभारी रे ॥

दोहा

- १— नगरपोल ने ठूकडा, आया जव मुनि राय ।
तिरणपुर ना वालक तीहा, खेले गिल्ली आय ॥
- २— एक उछाली गिल्लिका, गयो दूसरो लेण ।
ऊँची नीची देखता, कठे न आई नेण ॥
- ३— अणलाधा गाया भणी, सुण रिखी चित्ते ग्राम ।
दोय दिन री खरची भई, उपदेश ने काम ॥

गाहा

इओ गया, इओ गया मग्गिज्जति न दीसई ।
अहमेय वियाणामि, अगडे छूटा अणल्लिया ॥

दोहा

वो गई वो गई गुल्लिका, पढी भूअरा माय ।
हम देखी सो कहत है, तुमको दीसत नाय ॥

ढाल ६

राग—पयिडा धात कहो धुर छेह थी ।

- १— गाथा कहो खंतरे घणी, दोय तीन चार वार ।
जवरिख रे, जवरिख, मन मे घारी आयो चालीयो रे ॥
आयो नगर मे दिन थोडो सो देख रे ।
जव रिख रे जवरिख मन मे एम विचारीयो रे ॥टेर॥
- २— प्रगट हूं सहु ससार्या मे जाय रे,
राते रे, राते लोग घणा वन्दन ।आवसे रे ।
उमाया मुझ दर्शन केरे काज रे, ॥जव०॥
- ३— हिंसा रे हिंसा खट काय तरणी बहु थावसी रे ।
तिरण कारण एकात थान के जाय रे ॥
रात्रे रे, रात्रे रही प्रभाते जाय वदावसुरे ।
इम जाण एक थान कुभार पे याच रे ॥
- ४— रात्रि रे रात्रि रह्या जवमुनि उज्ज्वल भावसु रे ।
इण प्रस्तावे वाम विपे के एक रे ॥

चाकर रे, चाकर हृगपिण्ड मुथा रो आवियो ।
 तिए देख्यो जव मुनि नो उणीहार रे मन मे रे ।
 मन मे रे मनमे अचरज चाकर अधिको पावियो ।

- ५— दौड कही मुनि नो मुथा ने बात रे, जवरिख रे ।
 जवरिख अमुक कुभकार की छान मे रे ॥
 इम सुण मुथो चमकियो, निज कृत्य जाण रे ।
 जाण्यो रे जाण्यो, रख मुक्त करतव मु ज्ञान सुर ॥

दोहा

- १— गदभिल्लने मूथा थकी, वचनादि कियो विरोध ।
 तब प्रपच भूथे रच्यो, करने बहुलो क्रोध ॥
 २— गर्दभसेन ने मारने, अणल्लिका तस बेन ।
 परणावु मारा पुन ने, करूँ राज सुख चैन ॥
 ३ - इम कर कुँवर भोलवी, गाली निज भोयरा माय ।
 राजा मुलक शोधावियो, पिए सुध लाधी नाय ॥

ढाल ७

राग—धौ राम जी नार गमाई हो

- १—सोच पड्यो नृप लोक सहु कोने, खोज हाथे नहीं आवे ।
 खान पान निद्रा सब भूला, भारत ध्यान जा घ्यावे
 उपाय अनेक उठावे ॥
 कम गत मेटी कीम ही न जावे हो ॥टेर॥
 २ चाकरे साध आगमनी बात भुयो सणी दख पाव हो ।
 नप ने जणावण आयो भट चाली रख जव बात जणाव हो ।
 तो घर मारो लूट जावे हो ॥कर्म॥
 ३ तो तिम करीये ज्यु वाप बेटा बेहु, मिलवो ही नही थावे ।
 हूरहू अलगो मुनि ने पर वारो परभव मे पहुचावे ।
 पापो इसी कुबुधि उठावे ॥कर्म॥
 ४ इम जाणी मुहतो आयो, नृप पासे विधोकर बात सुणाये ।
 यव नृप बद्ध थई व्रत लीधा, हवे तेह पाल्या न जावे ।
 तेमाटे पाछा धान ॥कर्म॥

- ५—छाने छिप्या है कुमार रा घर मे, उमाव छाने बुलावे ।
मिल सगलाई राज तुम्हागे, रखे जमी सु उठावे ॥
जीव थी रहित करावे ॥कर्म॥

दोहा

- १—इम साभल राजा तिहा, अति रलियायत याय ।
मुहता जीए तो रुजे घरणो, जो पिता राज ले प्राय ॥
२—राज करो महाराज जी, हुकमी हमे हजूर ।
खिदमत करसा ख्व हमे, दम इक न रहा दूर ॥

ढाल ८

- १—मुह तो भाखे हो, सुणो नी यें महाराजवी,
नहीछे आप लायक ये बात ॥
लोगा मे हांसी होसी अति घणी जी, जोवो हृदय विमास ॥
हठ तज देखो हो नरेश्वर अतरगत थकी ॥टेर॥
२—अरि थी नाठा हो, योग लेई भागता जी,
सत्य थी जो नाठा ऊठ ।
जिण रो मुण्डो हो देखा ही खोटो फल,
होवे जो देखणी भली नही पूठ ॥
३—चोर ने थानक हो, भोजन दे वरी भणी,
जार ने सोपणी निज नार ।
अन्धा सिधनी हो बैद्य आख्या खोलता,
तुरत लहे जम द्वार ॥
४—देश मे राख्या हो इता ने भलपण छे नही,
घर मे घाल्या थी मोटी हाण ।
पछे ही वंसो हो पेला क्यु नही बह्यो जी,
बोली ऐसी मुया जी बाण ॥
५—सब नृप भाखे हो मुया जी किसो कीजिएजी,
रुहो लोई दाय उपाय ।

सो ही करूँ हो मुथा जी थारा केण थी,

विघ्न म्हारा टल जाय ॥

६—दुष्टी मुथो हो कहे सोपो पडचा,

पीछे खड्ग ले जाय ।

मुनि ने मारो हो, जो विघ्न दूरा टले जी,

जन अपवाद न थाय ॥

दोहा

१— इम सुण खड्ग ले निसर्यो, रात पडचा नृप आप ।

केलवणी मूथे करे, पिएण प्रगट सी पाप ॥

२— इण अवसर मुनिराज ने शीत लागतो जाए ।

दे कुम्भार दया करी, आडी टाटी आण ॥

३— सज्जाय करे दो गाहनी, माय बैठा मुनिराज ।

तीजी गाथा किम लहे, ते सुण जो तज काज ॥

ढाल ९

राग—मोटी हो जन मे मोहणी

१—कुभारे जब चाक थी, उतार्या हो तिएण काचा भाण्ड ।

रात्रे भागण भयथकी, ते सुतो हो ऊपर माचो माण्ड ॥

जोई जो जी हिवे सू होवे ॥

२—तिहा तणे एक ज उन्दरी, ते करती हो चक्कर मुख शोभ ।

जाति स्वभाव ने कारणे, तं जावे हो नित भाण्डा कोर ॥

३— तव कुम्भार गाथा भणो,

ते सुण ने हो धारी जब ऋषिराय ।

अण दिवसनी खरची थई,

चोथे दिन जाई हो भेंट सु गुरु पाय ॥

गाहा

सुकुमालग । भदनया । रत्तिहिटणसीलया ।

भय ते एतिय म मूला दीहपिट्ठामो ते भय ।'

दोहा

- १— "रे मूषक भद्रिक तुम, कहूँ वात सच मान ।
भय आण दीर्घपिण्ठ को मुझ से भय मत जाण ॥

ढाल पूर्व की

- ४—तू सुकुमाल सुहावणी, फिरे राते हो, रहे दिन विलमाय ।
भय तो ने दीर्घपिण्ठ थी, हम थी हो तुझने भय नाय ॥हठ॥
- ५—ए अण गाथा स्मरण करे, फूलता हो जिम कमल रो फूल ।
चित्तारे एक ध्यान थी, विन गुणिया हो रखे जासु भूल ॥हठ॥
- ६—इतरे तो नृप आवियो, पिण जागता हो न घलावे घाव ।
देखा मुनिवर शू गिणे नृप देख हो मुनि मारण दाव ॥हठ॥

दोहा

- १— अघावसी पघावसी, गाथा फेरी मुनिराय ।
गदंभिल्ल बाहिर खडो, सुणी चित्त लगाय ॥
- २— चित्त मे राजा चमकियो साभल ने ये गाथ ।
ज्ञान करी मुझ जाणीयो, धन हो स्वामी नाथ ॥
- ३— दुर्बुद्धि धिक्कारता, मन सु उतर्यो क्रोध ।
जानु ज्ञानी बाई तणी, जो ये बतावे शोध ॥
- ४— इत मुनि गाथा दूसरी बोली फेरण काज ।
अर्थ समझ राजा कहे धन-धन ये मुनिराज ॥
- ५— कुरा बैरी भुआरा मे रखी, मुयेखतरो कह्योकेण ।
जो ये दाखे मुनिवरूँ तो समझु साचा सेण ॥
- ६— रखे गाथा विसरूँ कही सोची ने मन माय ।
सहज भाव से उच्चरी गाथा तीजी चित्त लाय ॥
- ७— रे मूसक भद्रिक तुम, कहूँ वात सचमान ।
भय आन दीर्घपिण्ठ को, मुझ से भय मत मान ॥

ढाल १०

राग—ह्याल की

- १—सुघो अर्थ विचारी समज्यो, मुहजे तो तुझने मार ।
 राज लेसी तिण वहिन छिपाई, इण मे फेर न सार ॥
 हे पर उपकारी जाऊ बलिहारो श्री गुरुदेव की ॥
- २—डर पाम्यो भट पट तव उठी, टाटी परी उतार ।
 यवमुनि ने चरणों जाई पडियो, दे आतम ने धिक्कार ॥
- ३—खमो अपराध हमारो स्वामी, तुमने किया उपकार ।
 खमवा योग्य थे क्षमा का सागर, तम गुण अनन्त अपार ॥
- ४—तुम ब्रह्मज्ञानी सकल द्रव्य जाता, हू मूरख सरदार ।
 हराम खोर गुरु देव को घाती, मैं मूल न कियो विचार ॥
- ५— तुम प्रसाद बात महु जाणी, नही नर कर तो सहार ॥
 धम रुप जन्म दियो दूजो, मरतालियो उबार जी ।
- ६— छोरे कुछोरे आज थयो थो, पिण तुम लियो सुधार ॥
 बात मुथारी मानी मैं मूरख कहो सकल विचार जी ।

बोहा

- १— नृप अपराध खमायने, आयो निज दरबार ।
 चकितभूत मुनिवर भये, ये शू थयो अवार ।
- २— खड्ग ग्रही आयो हतो, मारण की मन धार ।
 उपदेशादि साज बिन, सुघर्यो केम विचार ।
- ३— धन्य शिक्षा मुझ गुरु तणी, धन्य ज्ञान दातार ।
 धन्य आज्ञा गुरुराज नी बडो कियो उपकार ।

ढाल ११

राग—धीर जी वर्यानी हो मुनिश्वर करणी आपरी ।

- १— हिवे दिन उगा हो राजा निज सामत तेडने,
 मुहता नो घर लियो घर ।
 जीवतो भाल्यो हो सकल परिवार सु जी,
 फिर गया सुभट चौफेर ।
 धन्य गुरु ज्ञानी जी दाता जीवन तणा जी ॥टेर ।

- २— घर लूट लीघो हो, काढी मूअरा माय थी जी,
पूछथो सब वीरतत ॥
देई दिलासा हो वाई ने राखी रोवती जी,
वात मिली महु तन ॥टेरा॥
- ३— धन्य उपकारी हो, गुरु जी आपरा ज्ञान से जी,
सिद्ध हुआ सहू काज ।
देश मे निकाल्यो हो, मुथा परिवार ने जी,
राज सभाल्यो जी राज । टेरा॥
- ४— नप प्रभात हो, आडम्बर अति करी जी,
वादधा श्री जव मुनि राज ।
नरक पडन्तो हो, गरयो गुरु मुझ भणी जी,
प्राण बचाया म्हारा आज ॥टेरा॥
- ५— लोक नगर ना हो, आया सहू वदवा जी,
राय मुय सुणो गुण ग्राम ।
मुनि मुख वाणी हो जाणी सूत्र सारसी जी,
मुण राखी चित्त ठाम ॥टेरा॥
- ६— वात फैलाणी हो, पाणी ज्यू आखा शहर मे जी,
घन्य घन्य करे नर नार ।
धर्म तणी श्रद्धा हुआ हो, घणी सू स ने आखडी जी,
अतुल हुआ उपकार ।
- ७— तीन दिन राख्या हो मुनि ने आग्रह करी जी
बली हठ किया कहे एम ।
मुझ ने गुरुनी हो आज्ञा छे आवका एटली जी,
ते कहो लोपाये केम । टेरा॥
- ८— इम समजावी हो यव मुनि आया गुरु कने जी,
वादधा श्री गुरु जी ना पाय ।
हाथ जोडी ने हो गुरासु गर्जो ऐसी करे जी,
मुझ ने भणावा महाराय ॥टेरा॥
- ९— स्वामी तव बोल्या हो, तुम तो इम कहता हता,
माने भणवो आवे जी नाय ।

हिने थे कहो छो, भणो वो स्वामी मुझ भणी,
कासु आई दिल माय ॥टेर॥

१०— जब मुनि भाख्यो हो, वृत्तान्त सहू माँडने,
पडे भण्या ग्यारह अग ।

कम खपाई हो, केवल ले मुगति गया,
तिम दूजा हो करजो उमङ्ग ।

११— उत्तराध्ययन दूजे हो, परिपह इकवीसमो,
कथा माहे अधिकार ।

तिण अनुसारो हो, कवि जन इम कहे,
इण परे कीजो निस्तार ॥टेर॥



दोहा

- १— शासनघणी सानीघ करो, वचन सुधारस जाण ।
कर्म तोड केवल लही, तेहना कर वखाण ॥
- २— भक्तपूत चारित सुद्ध, भाव सहित प्रमाण ।
ते श्री वीर जिनेश्वर, प्रणम्या हो कल्याण ॥

ढाल १

राग—नर माया काय जु जोडी

- १—दक्षिण भरत मगध माह सोहे, राजग्रही सुखकारी रे ।
श्रेणिक राजा ने चेलणा राणी, दोई दूढ समकित धारी रे ॥
सेवो भविक शुद्ध अणगारी रे ॥टेरा॥
- २ - जिण साधु वदण चाव सदाई, धर्मघोष आया त्रिणवारी रे ।
दर्शन कु लोग उमग भया है मिल-मिल जात हजारी रे ॥से०॥
- ३—वाणी सुणवा कु जुडी परिपदा, साधु केवल बैण उचारी रे ।
भविक जीव सुण मगन होत है वाणी सुधासम प्यारी रे ॥से०॥
- ४—सूत्र व्रत पच्चवखाण बहु विध, शक्ति मुजव लिया धारी रे ।
वाणी सुण लोक आया ठिकाणे, आगे सुणा अधिकारी रे ॥से०॥

दोहा

- १— छठ खमण ने पारणे, मुनि अपाढो तह ।
सज्भाय ध्यान कर गुरु कने आज्ञा भागी घर नेह ॥

ढाल २

राग—जुहारमल जाट का गढ जेपुर बकारे ।

- १—तीजा पोहर नी गोचरी रे, नगरी मे कियो प्रवेश ।
लाघ धारी भणीया घणा रे, जोवन तरुणी वेश ॥
मन मोहन साधुरी छवि लागे प्यारी रे ॥टेरा॥

- २—ऊँच नीच मध्यम कुले रे, फिरता आया नटवा गेह ।
हम घर आया साधु जी रे, मोदक बहरावे घर नेह ॥म०॥
- ३—मोदक ले पाछो वल्यो रे, चितवे चित्त मम्मार ।
ए लेसी गुरु माहरा रे, पावै न पडसी लगार ॥म०॥
- ४—रूप फेर अन्दर गयो रे, आय वहर्यो दुजी बार ।
इरा मे मुझ ने ना मिलेरे, लेसी विद्या भणायणाहार ॥म०॥
- ५—तीजो रूप डोसा तणो रे, हाथ मे डागडी भाल ।
डिगमिग तो पगला भरे रे, मन पडिया नाक ने गाल ॥म०॥
- ६—आयो नटवा आगणो रे, नटवी करुणा कीध ।
झीण शरीरज देखने, एक मोदक मुनि ने दीध ॥म०॥
- ७—ओ मोदक लघु शिष्य लेवसी रे, चौथो रूप धर्यो कर चूप ।
हाल चाल रलियामणी रे बले दीसे वालक रूप ॥म०॥
- ८—इसडो रूप घारी करी रे, फेर मोदक लीया ऋषि राज ।
ए ज्येष्ठ गुरु भाई लेवसी रे, नटवो देखे सर्व साज ॥म०॥
- ९—पाचमो रूप खोडा तणो रे, जीमणी बठी आख ।
मोदक जाचण आवीमो रे, कुवडो कडीया मे वाक ॥म०॥
- १०—रूप नवा नवा देखने रे नाटकियो अचरज चाय ।
महिला सु हेठो उतर्यो रे, हर्ष शु वाद्या ऋषि राय ॥म०॥
- ११—हाव भाव करे अति धणा रे, लागी घर मे राखण री चूप ।
कन्या दीय नटवा तणो रे, ज्यानें सारोही कह्यो स्वरूप ॥म०॥
- १२—चितामणी सुर तरु समो रे, मुनि माह विद्या अथाग ।
हेत जुगत करी ने रीभायजो रे, तुम घर कर बहूलो राग ॥

दोहा

- १— “जय सुन्दरी” भवन सुन्दरी, सज सोला शृङ्गार ।
मुनि आगल हाजर खडी, अप्सर ने अनुहार ॥
- २— चन्द्र वदन मृग लोचनी, हस सरीसी चाल ।
लुल-लुल ने लटका धरे, बोले वचन रसाल ॥

ढाल ३

राग—महावीर जी री पालखडी

१—हा रे मुनिवर ! आप पवारो रग गहल मे ॥हा०॥ सूरत नो वलि०॥
ए सुख सेज्या ने सायधी ॥हा॥ सुख विलसो ससार॥

महागज, भोरी विनतडी अवधार ज्यो ॥टेर॥

२—हा, आज्ञापालक आपरी, हा, जोड खटो रेंसा हाथ ॥
हा, रहे छा थारो कामण्या, हा थे छो म्हारा नाथ ॥म०॥

३—हा, घर घर फिरणो गोचरी हा, अरस-विरस लेणो नाज ।
हा, ए नायक तुम छो नही, हा, अज मानो महाराज ॥म०॥

४—हाँ, माथे लाच करावणो, हाँ, पालो करणो बिहार ।
हाँ, मला कपडा पहरणा, हाँ, दोरो सजम भार ॥म०॥

५—हाँ, शीत ताप दुख का सहो, हाँ, तुमछो राजकुमार ।
हाँ, जीवन बय मे काया का दमो, हा, एकशणी दुष्कर कार ॥म०॥

६—हाँ, फूलो मे वास रमो रही, हाँ, जिम थासु लागो प्रेम ।
हाँ, भोग कर्म उदे हुआ, हाँ, ते छुटी जे केम ॥म०॥

७—हाँ, नाटकणी थो मोही रह्यो, हाँ, भूला तप जप जोग ।
हाँ, कामण चित्त मे बस रही, हाँ, कर वा सु मन भोग ॥म०॥

८—हाँ, नेह नजर निरखे रह्यो, हाँ, सुन्दर इम बोले ऋषिराय ।
हाँ, सुन्दर आसा तुम घर आगणो, हाँ गुरु ने पुछ सु जाय । म०॥

दोहा

१— वाट जोवे चेला तणो, सत गुरु नेण निहाल ।
हिवे अपाढ मुनिसर, तिहा आवै तत्काल ॥

२— शिष्य मोडा किम आविया, किहा रह्या विलमाय ।
तडक भडक चलो कहे, ए मासु न खमाय ॥

३ - शिर तपे पग तले बले, फिरवो घर-घर माय ।
ए लो ओघा पातरा, करमूँ जे मुक्त दाय ॥

ढाल ४

राग—गरम्भो राजवी

- १—वचन सुणी निज शिष्य तरणारे चेला जी काई गुरु बोल्या तदवाण ।
सीख शुद्ध मानो रे सतगुरु की ॥टेर॥
- २—चूक वचन किम बोलिए रे ॥चे०॥ तू तो चतुर सुजाण ॥सी०॥
- ३—कीसो ठिकाणो विचारीयो र चेला जी, थारे किए सु लागो प्रेम ।
- ४—नाटकणी मुझ मन बसी हो ॥ सतगुरुजी ॥ मोह्यो राधा माधव जेम ।
- ५—नीठ-नीठ नर भव लह्यो रे ॥चे०॥ मिलीयो सतगुरु साथ ॥सी०॥
- ६—खप करी ज्ञान भणायोयोरे ॥चे०॥ थारे लागो चित्तमणी हाथ ।
- ७—सेठ सेनापति राजवी र । चे०॥ बल इन्द्र सुरारा नाथ ॥सी०॥
- ८—तु जगरो पुजणीकछे रे ॥चे०॥ थारे कने जोड सह हाथ ॥सी०॥
- ९—ए सुख पदवी छोडने रे ॥चे०॥ तु रह्यो मन्दर मुरीज ॥सी०॥
- १०—विवाध वचन कहा घणारे । चे०॥ तब चेलो बोल घर खीज ॥सी०॥
- ११—था रो राख्यो नही रहु हो ॥सतगुरुजी॥ जो होवे लाख प्रकार ।
साख नही मानु हो गुरुवर जी ॥टेर॥
- १२—वचन दियो सुन्दर भणी हो । म ॥ जाय सुख विलसु ससार ॥सी०॥

दोहा

- १— गुरा रो राख्यो नही रह्यो, तो ही गुरा रो जीव ।
मद्य मास लीजे मती, मेंठी राखजे ममकित नीव ॥
- २— मद्य मास लेउ नही थारो वचन कबूल ।
इम कही उठी चालीयो, रह्यो काम भोग रस भूल ॥

ढाल ५

राग—मुनि मन नाबा मे बस रह्यो ॥

- १— कामण सु मोही रह्यो, सुख विलसे चित्त लाय रे ।
वारे वरस बीता पछे ते राजा पे जाय रे ॥
कामण सु मोही रह्यो ॥टेर॥

प्रक्षिप्त दोहा

- १— राज भवन मे रगसु, कलासार के साथ ।
प्रायो कुँवर उद्याह मू, करे राय सु वात ॥

प्रक्षिप्त ढाल

राग—अस्सी रूपये लो कलदार

एतो अचरज बात अपार, सांभल जो सगला नर नार ॥टेर॥

१—कुँवर आयो नृप सुख पायो, मन मे भयो कयो विचार ।

२—कुँवर वाले कुण, मुभ तोले, जीतु एहने छिनक मभार ।

३—बात कर्ता नभ जोवतो दीठो दल सेन्या अणवार ।

४—राय विमासे केम आकाशे, युद्ध माण्ड्यो छै कहो इणवार ।

५—कुँवर भासे वचन प्रकाशे, चन्द्र सूर्य आपस थयो खार ।

६—तुम आज्ञा पाउ अव मैं जाऊँ, तुरत मिटाऊँ न लाउँवार ।

७—पिण मुभ सग दो नार रूपारी, सुपु कहने कहो विचार ।

८—महेल रखावो तुमे सिधावो, राड मिटावो गगन मभार ।

९—तुमछो राजा गरीव नवाजा, मेटो मर्जादा न दो मुभ नार ।

प्रक्षिप्त ढाल

राग—बनारसी

अचरज सुण जोए आगे । सुणता सब वल्लभ लागे जी ॥टेर॥

१—नृप कहे कुँवर से वाणी, ए किम करी बात अयाणी जी ।

२—पर नारी दोसन भारी, आ भव-भव करे खरारी जी ।

३—पर नारी फन्द मे पटके, बैरण अधारी भटके जी ।

४—सब लोका केरी साखे, दो नारी ने नृप राखे जी ।

५—मुभ हाथो हाथ मुपी जो, दुजा ने एह मत दीजो जी ।

६—पग अगुष्टे काचे तारे, लवाव्यो गगन मभारे जी ।

७—छिन भर म अवर जावे, नही कियारे दृष्टज आवे जी ।

प्रक्षिप्त ढाल

राग—तमासारी

इण राज सभा मे, अचरज आयो रे सगला साथ ने ॥टेर॥

१—क्षण अतर वे पाँव पडीया जद, राज सभा मे आय ।

थोडी देर से घड सर पाणी पडिया, अचरज पाय ॥इ०॥

- २—नृप विचारे किम अब कीजे, ए स्यू थयो भकाज ।
कुँवर काम रण माहे आयो, कुण जीते नट आज ॥६०॥
- ३—सुणी बात ए सुन्दर बेहु, कहे राय सु एम ।
खिण भर मैं रेवा नही राजा, म्हारे पति सु प्रेम जी ॥६०॥
- ४—इण मग साम म्हे सत लेंसा, ढोल न करो लगार ।
बहु विघ कर राजा समभाव, नही माने तव नार जी ॥६०॥
- ५—तुरत जली पिव के मग जाई देखे दुनिया सारी ।
थोडी देर से बारि वरसी, जमी सुखाई जीवारी जी ॥६०॥
- ६—थोडी देर से कुँवर उतर्यो नृप पे कयो विचार ।
राड मिटाई शीघ्रे आयो, अब सूपो मुक्त नार हो ॥६०॥
- ७—अग उपाग अबर से पडिया, सन्दर बे सत लीधा ।
सभा समक्ष तुमे पूछलो समभास सभी तम कीधारे ॥६०॥

प्रक्षिप्त ढाल

राग चिडी धनें चावलिया भावे

- राजेश्वर बात सुणी म्हारी, राजेश्वर बात सुणी म्हारी ।
किम ये बदलो नीत हरगिज मैं, छोडु नही नारी ॥देर॥
- १—ए सब नौकर तुम का साहिव, साख मेरे सारी ।
मानू नही मैं बात महाराजा करु कपट जहारो ॥गरीबन॥
- २—मेल मायने मेरी पदमण, नही भुभ से छानी ।
बहो तो लेउ बुलाय सभा मे, नही भूठी जानी ॥ग०॥
- ३—नृप बहे किम नार बुलावे, मैं पिण लेसा देख ।
भूवा सो जीवित नही होवे जिनमत का ए लेख ॥कुँवर जी॥
- ४—भावो प्यारी प्यार दिखावो, जरा न लावो जेज ।
वोली महल माय ने वाला, होवड धरती हज ॥अब तो ज०॥
- ५—विण विघ कर आया तुम पासे राजा राखी रोव ।
राय सुणी विस्मय थयोस बाई, जाई जेवें गोय ॥सायव जी०॥
- ६—दोनो उत्तरी महल थी सरे, भाई प्रीतम पास ।
राय साया ने भूठा बोधा लोव बट् शावाण गदेस लो भा०॥

७—प्रदेशी नट विस्मय पायी, सधला नमीया आय ।
रीझ्यो राजा अति घणो सरे कीघो कुँवर पसाय ॥कुव०॥

ढाल ५

राग—मूलशी

- १— राज दुवारे जायने, जीतो नाटकीयो तिवार रे ।
प्रमदा छाक पीघी तदा, मद मस्त थव विकार रे ॥
- २— घर आय देखी नार ने, लार मद्य मास ना आहार रे ।
अपाठभूति विरक्त थयो जीतो वीपे विकार रे ॥
घन घन रे अपाठ मुनिसर ॥टेर॥
- ३— कामण चूकी निजवचन थी, अब घर रह वाना त्याग रे ।
सयम मारग आदर, मन घरिये वराग रे ॥

दोहा

- १— कामण ने इण पर कहे, हू लेसु सजम भार ।
तद कामण बलती कहे, नैणो जल नी धार ॥

ढाल ६

राग — काइक लोजी

- १— सूणी वचन निज कता केरा, हाथ जोड इम भाखे ।
माफ करो तकसीर हमारी, खाविद रोष न राखे ॥
उभारोजी, रोजी-३ अपाठा ठाकुर उभारो जी । तेर ॥
- २— आज पछे सुण पियुडा म्हासा, न करा ए काजो ।
दीन वचन कहे पलो भालने, आप गरीब निवाजो ॥उ०॥
- ३— इम करताइ प्रीतम म्होरा, जो तम्हे छेह दीखासो,
मुझ अबलानो जोर नही छे पिए सुख कदेई न पासो ।
- ४— हाव भाव करवा मे सुन्दर मूल न राखी बाकी ।
पिए गुरु वचन निभावण काजे, वात न मानी बाकी ॥उ०॥
- ५— पलो भाल उभी रही, दोय सुन्दर तिण वारोरे ।
तुम मुकी ने जावसो जरे, हमने कोण आघारो रे ॥
- ६— विविध वचन कहा घणा, अपाठो चतुर सुजाणो रे ।
कह नाटक देखावसु, न बरो खाचा ताणो रे ॥

कलश

- १—सवेग मन धर, राय पे हरख कर भरत नाटिक माडीयो ।
हाथी घोडा रथ अन्तेवरी, कीघी परदा दोडीयो ॥
- २—अग आभूषण खूब छाजे, आप विराजे भूपए ।
लब्धि तणा परताप सुए, कीघा नवा-नवा रूप ए ॥
- ३—आरिसा भवन आए सुख पाए घ्याए निर्मल ध्यान ए ।
अनित्य भावना सुद्ध जोगे, पाम्या केवल ज्ञान ए ॥
- ४—शासन देवा कीयो उद्यव, दुदुमी रही गाज ए ।
भक्त "विमल" कर जोड भाखे, घन अपाढो मुनिराज ए ॥



दोहा

- १— खराखरी रो खेल है पालणो शील उदार ।
पर बस पडिया जे सहे घन तेनो अवतार ॥
- २— ज्ञाञ्जरीया रिखराय जी, पडी सकट आय ।
तो ही न डिगीया मुनि तदा, ते सुण जो चित्तलाय ॥

ढाल १

राग—श्री जिन अजीत नमु जयकारी

- १—सरस्वती चरणे शीश नमावी, प्रणमु सत्गुरु पाया रे ।
भाजरिया रिख ना गुण गाता उलटे अग सवाया रे ॥
भविजन, बंदो मुनि भाजरिया ॥ढेर॥
- २—भविजन बंदो मुनि भाजरिया, ससार समुद्र तरिया रे ।
सबल सहा परिसह मन शुद्ध शीयल रयण कर भरिया रे ॥
- ३—पद्मठाणपुर मकरध्वज राजा, मदनसेना तसु धरणी रे ।
तस सुत मदन ब्रह्म बालूडो, कीरती है तसु वरणी रे ॥
- ४—वत्तीस नारी सुकोमल परणी, भर जोवन रस लोनो रे ।
इन्द्रमहोत्सव उद्याने पहुतो मुनि देखी मन भोनो रे ॥
- ५—चरण कमल प्रणमी साधना, विनय करी ने बैठो रे ।
देशना धर्म री देवे रे मुनिवर, वैराग्ये मन पैठो रे ॥
- ६—पिता तणी अनुमत मागी ने ससारी सुख छाडी रे ।
सयममार्ग सीधो लीधो मिथ्यामत सब छाडी रे ।
- ७—एकलडो वसुधा तले विचरे, तप तेजे कर दीपे रे ।
जीवन बय चोगीश्वर बलियो, कम बटरने नीपे रे ॥

- ८—शील सन्नाह पह्यों तसु सबलो, समिति गुप्ति चित्त घरता रे ।
 आ१ तिरे ने परने तारे, दोष ने दूरे हरतो रे ॥
- ९—तावावती नगरी मुनि पहुँतो, उग्र विहार करन्तो रे ।
 मध्य समये गोचरी सचरियो, नगरी मे फिरतो रे ॥

दोहा

- १— घर-घर फिरता गोचरी, मदन ब्रह्म मुनिराय ।
 तावडीये थाक्या थका, ऊभा देखी छाय ।

ढाल २

राग—औ जिन मोहनगारो छे के जीवन

विरहणीमदन चढायो राज, जिए तिए जीत न जइये जी ॥टेरा॥

- १—इए अवसर विरहिनी एक तरुणी गोरडी गोखा बैठी ।
 निजपति चाल्यो छे परदेशा, विषय समुद्र मे पैठी ॥
- २—सोले शृ गार सजी सा सुन्दर, भर जीवन मदमाती ।
 चपल नैए चौदशी फेरे विषय रस रगराती ॥
- ३—चौवटे चौदशी जोता आवन्तो मुनि दीठो ।
 मलपन्तो ने मोहनगारो, लागो मन मे मीठो ॥
- ४—राजकुमार कोइक छे रुडो, रूप अनुपम दोसे ।
 जीवन वय मलपतो ओगीसर, ते देखी चित्त विकसे ॥
- ५—तव दासी खासी तेडाई, लावोये बुलाई ।
 ठुकरानी ना वचन सुनि ने दासी त्यायी धाई ॥
- ६—हम घर आवोनी साधुजी, बेहरण काजे पेला ।
 भोले भावे मुनीवर आवे, शु जाने मन मेला ॥
- ७—थाल भरी ने मोदक मेवा, मुनिवर ने कहे बेरो ।
 ये मला बपहा गरा उतारी, आछा वागा पेरो ॥
- ८—ये मन्दिर ये मालिया मोटा, सुन्दर सेज बिछाई ।
 चतुर नार हाजर मुक्त सरसी, सुग विलसो लिवलाई ॥
- ९—विरह भगन से मे दाम्नी हूँ, प्रेम सुधा से सोचा ।
 म्हारा वचन सुनो ने मुनियर, यात भागी मत रोचो ॥

- १०—विषय वचन मणी वनीता ना, मुनि ममता रम बोले ।
चन्दन थी पण शीतल वाणी, मुनि अन्तर से खोले ॥
- ११—तू अगला दीसे छे भोली, बोलन्ती नवी लाजें ।
उत्तम कुलना जेह उपना, तेने ये नवी छाजे ॥
- १२—ए आचार नही अम कुलमा, कुल दोषण केम दीजे ।
निज कुल आचारे चाली जे, तो जग मा यश लीज ॥
- १३—बात अछे जग मे दो मोटी, चोरी ने फिर जारी ।
इए भव दुख बहुलो पामे, पर भव नरक अघोरी ॥
- १४—शीलचितामणी मरीखो छोडी, विषया रस कुण रीजे ।
वर्षाकाले मन्दिर पामो, कीन उघाड भीजे ॥
- १५—मन, वचन अर, बाया, करने, लियो व्रत नही खडू ।
ध्रुव तणी पर अविचल जाणें, में धर वास न मण्डू ॥

राग—घोछियानी

ढाल ३

रे लाला, मुनि पाय भाजर रण जणें ॥टेरा॥

- १—रे लाल, सीख साधु नी अवगुणी,
जाने वह गई परनालरे ।
र लाला, काम वशे थई आधली,
देवे साधु तणें शिर आल रे ॥

- २—रे मुनि पाये भाजर रण जणें,
आय अपुठी मुनि ने पाय रे लाला ।
बेल तणी परे सुन्दरी
या तो बलगी साधु नी काय रे ॥

- ३—रे लाला, जोर करी जोरावरी,
तीहाँ थी निकलिया मुनिराय रे ।
तव पुकार पूठे करे धावो,
ऐणें किधो अन्याय रे लाला ॥

- ४—हारे लाला, मलपन्त मुनि चालियो,
पाय भाजर रो अणकार रे ।

लोक सहू निन्दा करे, जोवो,
एँ तो माठो छे आचार रे ।

५—रे लाला, बेठी चोबारे राजवो,
नजरे, जोयो यह अवदात रे ॥
दीनो देशवटो नार ने,
मुनि ने जस तणी थई वात रे ॥

६—रे लाला, तीहाँ थी मुनिवर चालीयो,
आयो, कञ्चनपुर के माय रे लाला ।
राजा ने राणी प्रेम सु,
बंठा गोखा तणी छाय रे लाला ॥

७—राणी मुनिवर ने देख ने,
छूटी आँसुहारी धार ने लाला ।
राय देखी मन कोपियो,
यो दीसे छे एनो जार रे लाला ॥

८—रे लाला राजश्वर बिन सोचियो,
तेड़ाया रिख ने ताय रे ।
खाड खणी ऊडी घणी,
बेसाहियो रिख ने माय रे लाला ॥

ठाल ४

राग—देवतणी ऋद्धि भोगवी भाष्यो

१—अणतण खामण, कर मुनि तिहाँ, समता सायर मा भीले ।
चौरासी लख जीव खमावो, पार कम ने पीले रे ॥
मुनिवर ते म्हारे मन बसिया ॥टेरा॥

मुनिवर ये म्हारे मन बसिया, हृदय कमल हुलसिया ॥मु॥

२—उदय आमा निज कम आलोई, ध्यान जिनेश्वर नो ध्यावे ।
सडक हणन्ता केवल पामी अवचल स्थाने जावे रे ॥मु॥

३—शरीर साधु नु बसीए हण्पाथी, हाहाकार त्यों पडियो ।
मोथो ने वस्त्र सोई रगाना भति अन्याय राय करियो रे ॥मु॥

- ४—सवली ओघो ले उडन्ती, राणी आगल आय पडियो ।
वधव केरो ओघो देखी, ने हृदय कमल थर हरियो रे ॥
- ५—अति अन्याय जाणी ने राणी, अणसन पोते लीघु रे ।
परमार्थ तव जाणी ने राजा, हा हा ये सु कीघु रे ॥
- ६—रिख हत्या नो पातिक लाग्यु, ते किम छट्यु जावे ।
आखें आसडा नाखतो राजा, मुनि कलेवर ने खमावे ॥
- ७—गद् गद् स्वरे रोवतो राजा, मुनिवर आगल वंठो ।
मान मेली ने खमावे रे भूपति, समता सायर मां पठो ॥मु०॥
- ८—फिरी-फिरी उठी पाये लागे आसुडे पाय पर वाले ।
भूपति उग्र भावना भावता, कर्म पडल सवे टाले रे ॥मु०॥
- ९—केवलज्ञान लियो राजेश्वर, भवोभवो वर खमावे ।
भार्जरिया रिखी ना गुण गाता पाप कर्म ने खपावे रे ॥मु०॥
- १०—सवत् सत्तरा छपने केरा, अपाठ सुदी वीज सोहे ।
सोमवार सज्भाय ए कीनो साभलता मन मोह ॥मु०॥
- ११—श्री पुनमिया गच्छराज विराजे, महिमाप्रभसूरिन्दा ।
'भावरत्न' सुशिष्य एम भणो, साभलता आनदा ॥मु०॥



दोहा

- १— श्री आदिनाथ प्रणमु सदा, धम धुरा किरतार ।
जुगत्या धर्म निवारणा, शामन रा सिरदार ॥
- २— चार कथा विकथा कहो धर्म कथा तत सार ।
तिरीया ने तिरसी घणा, पामे भवनो पार ॥
- ३— बुध वखाणीजे जेहनी, पडवा न दे खोट ।
काम पड्या कायम रहे, जिन मारग री ओट ॥
- ४— नदीसूत्र कथा मध्ये, रोहा नो विस्तार ।
तुरत फुरत बुध उपजे, साभल जो नर नार ॥

ढाल १

राग—भूलो मन भवरा बाई मने०

- १— मालव देश सुहावणो कदई न पड दुकाल ।
निवाण तो भरिया रहे, सुखी बाल गोपाल ॥
- मालव देश सुहावणो ॥टेरा॥
- २— नगर उज्जनी दीपती, गट मठ पोल पागार ।
चोरासी बले चोहटा, पत्ता गगामी सार ॥मा०॥
- ३— सप्त पणी ऊँचा पणा, मेल मेलायत मोल ।
भोगी जा सुख मानता, पूरे मन री जोल ॥मा०॥
- ४— स्थानक चौंसठ जोगणी, देव छे वावन धीर ।
सीप्परा नदी तिहा बहे, मोठो तिण रो नीर ॥मा०॥
- ५— रिपुमर्दन राजा तिहा, धारणी राणी गुजा ।
सुप्ते राज पामे सदा, धूजे बरी ता गणा ॥मा०॥

- ६— तिणपुर पामे वसे भलो, नट नामे गाम ।
लोका मे मेढी समो, भरत पटवारी नाम ॥मा०॥
- ७— पारासरी तिण रे भारजा, ते तो कर गई काल ।
पडियो विछुवो नार नो, रह्यो नानो बाल ॥मा०॥
- ८— रोहो बालक जाणने, दूजी परण्यो नार ।
पूरन बर्म जोग थी, कजीया खोर अपार ॥मा०॥
- ९— रात दिवस भगडा करे, खीण खीण बोले माल ।
दया दित मे को नही, उभी पटके बाल ॥मा०॥
- १०— साल मभाल नही बालरी कुण करावे स्नान ।
खारणा मे बसर न पड, जाण पशु ममान ॥मा०॥
- ११— बाल पण माता मरे, वृद्ध पणा मे नार ।
बहुधा हाथे भोजन होवे परहस्ते व्यापार ॥मा०॥
- १२— पापण तो पर भव गई, रोहो जीवे केम ।
मूर्ख ने देवे गालीयां विण्ठी बोले एम ॥मा०॥

दोहा

- १— इम करता मोटो हूवो, रोहो चिते मन माय ।
नितरी देवे गालीयां, रोजी ना कुण खाय ॥
- २— माता नही ये माहरी माहे दीस अधेर ।
आद अनादि जाण जो सोका हदो वर ॥

ढाल २

राग—गजरा की

- १— रोहो चाखो दे कर ताली मारा लीज वचन सभारी ।
तू सायत सायत म्हासु लडती बले बाले घर का करती ॥
- २— तू देख लीजे मारी बात, तोने फल चखाउ सारयात ।
भूण्डी घणी तू चाले मोसु, पिण अवे न चूकू तोसू ॥
- ३— म्हाणे अडता आल तू भाखे वली खावण मे अन्तर राखे ।
तू बणी रही रावरी धीग इण बाता मे घाल द हीग ॥

- ४— नेमतू पराई जाई मारा वाप रे लारे तू आई ।
बैठी घर मे हुई घणीयाणी मैं तो थने मोनज आणी ॥
- ५— रोहे साचा जाव पकड़ाया, पिण इणरे मन नही भाया ।
तू काई करसी रे छोरा, मारा ये हीज रेसी जोरा ॥
- ६— भला इण वयणा मे रहीजे, बोल्या बोल माहे वहीजे ।
करता सू तो कीज, आपरो दाव ज लीजे ॥
- ७— एक दिन वाप ने जगावे, आयाणा घर सू ए कूण जावे ।
बोले वचन ज मोठो, मैं उजल वण्णो दोठो ॥
- ८— डावा डोल कर वा लागा, इणरो नारी सू मन भागो ।
नार ने नही वतलावे, जद तद घर मे आवे ॥
- ९— एक रोहा सू माण्डे वात, खाटी नारी रो जात ।
अव मन मे ते विलखाणी, नैणातो नाखे पाणी ॥
- १०— ए घणी मासू केम रुठो, जाणे तारो अकाले दूटो ।
रोहा सु करे नरमाई, सुण नानडिया वित्त लगाई ॥
- ११— गरज वडी जग माई, कहे गधा ने मारा भाई ।
रोहो बोले तिण वार, थारा करतव ले तू चितार ॥

बोहा

- १— माई पलो पात री, कहे नारी धोखी जात ।
पुष्ट सदा ही निर्मला, सो वाता एक वात ॥
- २— वचन लीधो माई भणी, रोहो चतुर सुजाण ।
उठो तात उतावला, धो कुण जावे अजाण ॥
- ३— छाया बताई आपरी, ताते जाण्यो वात ।
नारी सू मन मेलीयो, उत्तर गयो सब धाल ॥
- ४— पिण नित्य भोजन रोहो करे, तात सघाते ग्रास ।
माई मात रो मूल थी, न करे बन्दी विषयास ॥
- ५— सोदो लेवाकारण, हू जाऊँ छ उज्जीण ।
हट वर रोहो साये चलो, चतुर महा प्रयोण ॥

- ६— सीदो ले पाछा वत्था, एक वस्तु गया भूल ।
न गहीजे नदी तटे, पाछो आऊ कबूल ॥

ढाल ३

राग—प्यारो मोहन गारो राज

मण्डप सूब वण्यो छेजी क, मण्डप अवल रच्यो छे ॥टर॥

- १— रोहो नदी तटे बैठो, आप गयो शहर मझारी ।
उजैणी रो रचना देखी ते मण्डप माण्डे सारी ॥
- २— मेल मेलायत चौब चौवटा, चोतरीया विव न्यारी ।
सुन्दर मन्दिर कोट वणाया, दरवाजा छवी न्यारी ॥
- ३— चौवारा ने विचे कोरणी, हाट हवेली बीच गलीयाँ ।
सुणा तिसुणा ने चौखूणा, देखत पामे रलीया ॥
- ४— घोडा खेलावता तिहा राजा रिपुमर्दन गयो आई ।
मत पेस जो इण शहर मे, थाने राय तणी दुवाई ॥
- ५— तस्त्रिण घोडो ऊभो राखी, राखी राजा मण्डप देखे ।
चतुराई ने बुद्ध विज्ञानी कला घणी विशेषे ॥
- ६— कुण ग्राम नो छे तू वासी, कुण पितारो ठाम ।
नट ग्राम ने भरत रो बेटो, रोहो मारो नाम ॥
- ७— रे बालूडा इण शहर मे, बार केटली आयो ।
एक बार हू आयो स्वामी, बोत्यो शीप नभाया ॥
- ८— राजा सुण ने हृष्य भराणो पहुतो नगर मझारी ।
बाप ने बेटो मिन घरे आया, आग सुणो अधिकारी ॥

दोहा

- १— बालक सुधवत जाणने, राजा करे विचार ।
तुरन्त भेत्यो आदमी, नट ग्राम मझार ॥
- २— लोका ने भेला किया, कह हुकम दियो राय ।
शीला मती हिलावजो दीजो मंदिर कराय ॥
- ३— चिंतातुर सगला थया, बठा मजलस ठान ।
मनसोबो विचारता, थाल न वैसे ज्ञान ॥

- ४— इतरे रोहो आवियो, भोजन जीमा तात ।
भूखडली लागी मुझे, ऊभो कूटे गात ॥
- ५— लोग हाती कहे कुँवर जी उभा रहो इण ठाम ।
घणा दिन खादी रोटीया, पिण आज वण्यो छे काम ॥

ढाल ४

राग—लेखो भीर्जेलो

- १—सामो पुतर ने जोय ने कहे तोने खबर न काय हो ॥
सिला मति हलावजो, दीजो मंदिर वणाय हो ॥ राजा हट लागो ॥
- २—निए कारण अम्हे करा, मनसोवो विचार हो ।
रोहो कहे ए सोहिलो, मत करो सोच लिगार हो ॥
- ३—जिम ने वेला आवजो, दसु विध बताय हो ।
बिता फिकर करो मति, राजी हीसो महाराय हो ।
- ४—भोजन करी सब आविया, रोहा केरे पास हो ।
मोटी सिला गिडदा जोसी, फिर जोई तास हो ॥
- ५—चारो कानी थाबा रोप ने, बीच मे कोरणी सार हो ।
मन्दिर करायो चूप सू राय ने दिया समाचार हो ॥
- ६—राय कहे बुध केहनी, एक बालक रोहो नाम हो ।
नरपति सुणने चितवे चतुराई अभिराम हो ॥
- ७—बीजे दिन भीण्डो मेली यो, तोली ने लीजो झेल हो ।
घटवा बघवा दीजो मती, पय छेडे दीजो मेल हो ॥
- ८—हिर्वे लोक कहे रोहा भणी, इण री का सु थाग हो ।
ते कहे सबावो जुगत मु, कने रासो बाध हो ॥
- ९ पय छेडे रे आन्तरे मेल कहा ममाचार हो ।
आ अकल वाला तणी राय लीनो विचार हो ॥
- १०—कुपर तिन बीजे लडावजो राजा यही बाध हो ।
रोहो कहे ए मोहिलो कने रागो बाध हो ॥
- ११—विधमणी महिपति चितवे मन मे आप हो ।
निनारा गढा मोह्या, ऊधे लीजो समेदीजो माप हो ॥

- १२—रोहे मगाई आरसी, ऊँघा लीदा समा दीघा सार हो ।
 राय देखीने हरखीयो, बुध पारमपार हो ॥
- १३—बले कहायो गाम ने, विण अगीरा खोर हो ।
 वेगी माने मोकलो, नही तो यामी तरुसीर हो ॥
- १४—चनादिक भटी परे, रोहे करी ततकाल हो ।
 ताती ताती मोकली देख हरखी भूपाल हो ॥

दोहा

- १— बेलूनी रमी कगी, दोजो मत्ताव सु मेन ।
 नाग जिम पठो महिपति नही तर करमू हेल ॥
- २— लोक महू भेला यया, पाम्या मन मै भ्रन्त ।
 अवली गत है रायनी, लेवा माण्ड्यो भ्रन्त ॥
- ३— रोहो कहे डग्गो मती, मती छोडो थे गाम ।
 हू समझाउ गय ने, ए थोडो सो काम ॥

ढाल-५

राग—रगे रमतो राजीयो ए

- १— रोहें कहायो राय ने ए, सामल जो महीराण ॥ नरेश्वर सा० ॥
 जमीयो राज सच्यो घणा ए जूना वताग्रो सहीनाण ॥
- २— तिण अनुसारे माप के जी, वण ता जेज न काय ॥
 नरपति सुण आनन्दियो ऐ इण दिनी गलारे माय ॥
- ३— राजा जीर्ण गज मेलीयो ऐ, सडत पडत है काय ॥
 मूआ रो कही जो मतिरे मूआ पछे जेज न काय ॥
- ४— आयो न मरण पामीयो रे लाऊ पूछे राहा ने तेह ॥
 प्राण रहित कुजर थयो रे, उत्तर किण पर देह ॥
- ५— जाग्रो राजा जी रे आगले रे, कही जो वचन निरास ॥
 हाथी चाले हाले नही रे मूल न लेवे सांस ॥
- ६— राय कहेंमी मरगयोरे तो जोड ज दोनो हाथ ॥
 म तो मूआ गो कहाँ नही रे, आप कहो पृथ्वीनाथ ॥

- ७— नीर हलवो मिष्ट देखने रे, एक कूप दीजो पहुचाय ॥
गाव रा कूआ भडकणा रे, सेर रा आधा देसा मे लाय ॥
- ८— सुण नरपति चिन्तवे रे इण री अकल अथाग ॥
गाव की जो पूरव दिशे रे, पश्चिम कर जो वाग ॥
- ९— लोका रोहाने पूछियोरे, ए किम होसी काम ॥
ते कह सारा फेरा झूपडा रे, पूरव होसी गाम ॥
- १०— सर्वविघ साचवी रे, दिया राय ने समाचार ॥
राजा मन मे जाणीयो रे, नही ठगावण हार ॥

श्लोक

- १— विद्वत्त्व च नृपत्व च, नैव तुल्य कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सबत्र पूज्यते ॥

दोहा

- १— पान पदारथ सुगुण नर, अणतोल्या ही विकाय ॥
ज्यु-ज्यु पग्देश सचरे त्यू त्यू मूगा थाय ॥

ढाल ६

राग—कौतुक करतो नहीं रे

- १— नरपति इण परेचितवे भला दिया जवाव रे ।
अठे हिवे वालावणो, वघारु इणरो आव रो ॥
रोहा हिवे बुलावे महीपति ।टेर ॥
- २— हिवे बुलावे महिपति जजम करे काय रे ।
तुरतज मोवल्या आदमी, नट गाव रे माय रे ॥
- ३— पिण इतरा वोला मे आवजें फरमायो महागय रे ।
आदमी आणी व्ह्यो, लोक भेला थया घरणाय रे ॥
- ४— मोने भेट म सावजे, मत आव जे गाली हाथ रे ।
दिवस मे मत आवज, मत आय जे रात रे ॥
- ५— माग मत तू आवजे मत वह जे उजाट र ।
ऊचा पिण चढ़ जे मत्तो, विण बिया असवार रे ॥

- ६— वद सुद मे मत आवजे विना किया स्नान रे ।
सिनान पिण करणी मही, इम भारुओ राजान रे ॥
- ७— विन तारा मत आवजे, तारा ऊंगा सोय रे ।
इतग योरु कर आवजे, वेगो मिल जे मोय रे ॥
- ८— लोका मन मे जाणीयो, एही ज टलीयो जजाल रे ।
भरत पटवारी हगसीयो, देख नीको बाल रे ॥

दोहा

- १— रोहो कहे डरजो मति, देखो परानम पूर ।
सुखे रहीजो ये सदा हू जाऊ हजूर ॥

ढाल ७

राग—देखो दवदती रे महिमा शीलनी रे

- १— रोहो बुद्धि आगलो रे, मीडे हुवो असवार रे ।
माथे घर लीनी चालनी रे, लोक साथे अपार रे ॥
रोहो चाल्यो दरवार मे रे ॥टेर॥
- २— रोहो चाल्यो दरवार मे रे, पामी मन हुनाम रे ।
रूप माहे रलीयावणो, देखे बहु तमास रे ॥
- ३— स्नान पिण ना करी रे, हाथ पग धोयादोय रे ॥
उजड मारग छोड ने रे, चीलो लीघो जोय रे ॥
- ४— देशपति ने भेटणो रे, माटी पिण्ड लीघो हाथ रे ।
सध्या समय मे आवियोरे, नाको दिवस ने रात रे ॥
- ५— महिपति दीठो आवतो रे, आदर मान दियो ठीक रे ।
मुजरो कर उभोरह्यो रे, लोक ने दीनो सीख रे ॥
- ६— नृपत कुशल पूछियो रे, रोहा ने घर प्रेम रे ।
सभा सुहावत भाखीयो रे, सहु को पाम्या खेम रे ॥
- ७— रात समे राजा मेलमे रे, मूतो रोहो राख्यो पास रे ।
निद आई के जाग तो रे, कह जागू करू विमास रे ॥
- ८— कहो अजा उदरे मीगणी रे, कुण कने गोल महाराय रे ।
राय कह जाणू रही रे, घडे मण्डलीक वाय रे ॥

- ६— बीजा पोहर मे पूछीयो रे, जागु छु राजान रे ।
समा बिपम किम छे रे, बतावो पीपल पान रे ॥
- १०— राय कहे जाए नही रे, तुम हीज भुभ बताय रे ।
विरट पान सारखो रे, समझ लो महाराय रे ॥
- ११— तीजा पोर मे पूछीयो रे चितउ नर नाथ रे ।
खसकली जीवतणी रे पूछ मोटी के गात रे ॥
- १२— राजा कहे समझ नापडी रे, तू हीज कर प्रकास रे ।
धड पूछ सारखी रे, रोहो कह्यो तास रे ॥
- १३— चौथे पोर न बोलीयो रे ताजणी वायो ताम रे ।
हड हड हसीयो घणो रे, कहे हसवा नो स्यू काम रे ॥

दोहा

- १— रोहो कह्यो राय ने, हसवा नो मत करो खाच ।
विचार मोटो उपनो, तात तुमारे पाच ॥
- २— राय सुण ने हरसीयो का सु इणरो भेद ।
रोहो कहे बतावसू, मत पामजो खेद ॥

ढाल ८

राग— जम्बूद्वीप मत्तार

- १— साभल पृथ्वीनाथ, बात ज म्हायरी ए ।
साची करी ने मानिए ॥
हाथी घोडा नी जोड बेल रथ ने पालखोए ।
पायदल धणु जानिए ॥
- २— वैश्रम देव जेम, रिद्धि दीसे दीपतो ए ।
बमी नही किए बात रो ए ॥
दूजो बाप चण्डाल, तन मे फूटरो ।
पण त्रोध वहे जिम फातरी ए ॥
- ३— ये रुठा भूपाल, किए इय उपरे ।
तब नही परगो फातरी ए ॥

भलो भूण्डो न देखो कोय,
 बात करो सारखी ए ।
 ताग जिम तोलो ताकरी ए ॥
 तीजो रजक धोय, कपडा पछाडतो ए ।
 महीन मोटो देखे नही ए ॥
 तिम तुम्ह रजक समान,
 चाबुक लगावियो ए ।
 छोटो मोटो गिणियो नही ए ॥
 चोथो विच्छ डक वाप, ऊँच नीच नही गिणो ए ।
 वालक जवान डोकरो ए ॥
 जिम थे भूपाल, वायो मुझ ताजणो ए ।
 नही गिण्यो नानो छोकरो ए ॥
 पाचमो वड भूपाल ते वाप जाण जोए ।
 जग मे नही इण सारखो ए ॥
 चार समान थे जाण, भूपत साभलो ए ।
 पर तस भोही ज पारखो ए ॥
 माजी सती जाण, चूक च्यारुं सु नही ए ।
 पिण मनसा वय गई ए ॥
 पूछो माता ने जाय,
 जथारथ अरथ में लीयो ए ।
 जिम हुई तिम ही ज कही ए ॥
 रोहाने बुधवत जाण,
 चार से नन्याणु ऊपरे ।
 राज्य घुरन्वर थापोयो ए ॥
 दीयो वडो सीर पाव, गय रोहा भणोए ।
 प्रधान पद आपोयो ए ॥
 घणा वरस लग तेह, सुख भोगवी करी ।
 पछे आतम कारण साखिया ए ॥
 बुध वडी ससार, गुण चतुराई आगला ए
 बुधवत भण ते कहे ए ॥

बुधवत, पामे वैराग, कारज सारे आपणो ए ॥
तिण सु गरज वेगी सरे ए ।

१०— नदी सूतर नी साख, कथा मे आणीयो ए ।
बुध बखाणी रोहा तणी ए ॥
बुधवत पर देशो राय चित ना सग सु ए ।
चर्चा किधी गुरु भणी ए ॥

११— जिन धर्म जाणो सार, समता आदरी ए ।
सुर सुरीयाभे उपनो ए ॥
बुधवत अभय कुमार, राजा श्रेणिक घरे ए ।
अत ले देव लोके उपनो ए ॥

१२— इम अनन्ता जीव, समकित ले करी ए ।
कर्म खपाय मुगती गया ए ॥
दान शील तप भाव, भवीयण आदरी ए ।
गन वाछित फल ले लह्यो ए ॥

१३— कथा अनुसारे जोय, सबध ए कह्यो ए ।
विपरीत रो मिछामिदुवकड ए ॥
पूज्य "सबल दास जी" कहे एम,
गुरुपरसाद थी ए ।
कविधण कहे जिम करु ए ॥

१४— संवत अठारे असीये साल,
सोजत सेखा काल मे, ए ।
जोड्यो ए अठळालियो ए ॥
साचो जिण धम सार, जोय अनन्ता उगर्था ।
आतम दोषण टालीयो ए ॥



दोहा

- १— नेमीनाय बावीसमा प्रणमू वारम्बार ।
यादव कुल नेम उपन्या, तीथ थाप्या चार ॥
- २— श्रावक ने वली श्राविका, श्रमणी ने अणगार ।
आत्म काय सारने, पाया भव नो पार ॥
- ३— उत्कृष्ट धर्म साधुनो, तिण सम अवर न कोय ।
अपर धर्म आगार नो, शिवपुरी मारग दोय ॥
- ४— वरदत्त गणधर आगले, भारयो नेम जिनन्द ।
एकाग्र चित्त कर साभलो, जुठल नो सम्बन्ध ॥

ढाल १

राग—बाधो मति कम चिकणा

- १—श्री जम्बूद्वीपे भरत जाणी ये,
भदिलपुर शुभठाम ॥हो जिनेश्वर॥
रयत सुखी दुख समझे नही,
जीतशत्रु नृप नाम ॥हो जिने०॥
नेम पधार्या श्री वन बाग मे ॥टेग ।
- २—श्री वन बाग नन्दन जेहवो,
सुर नर ने आवे भोग ॥हो जिने०॥
अम्ब कदम्ब तरु छाइयो,
छेवो देखवा योग ॥हो० जिने०॥
- ३—जुठल सेठ वसे तिहा,
अढतालीस वसु कोट ॥हो जिने०॥

रोहिणी प्रमुख वत्तीस भारजा,
पोडश गोकुल जोड ॥हो जिने०॥

४—श्री जिन वन्दे नृप आडम्बरे,
जोडो बैठो हाथ ॥हो जिने०॥

जुठल सुनी इम वारता,
समोसर्या जगनाथ ॥हो जिने०॥

५—नाय घोय वलीकर्म करी,
जिम कोष्टक तिम जाय ॥हो जिने०॥

पच अभिगम साचवी,
वदे शीप नमाय ॥हो जिने०॥

६—महिधर जुठल आदि सहु,
बैठा सुर नर वृन्द ॥हो जिने०॥

अमृत वाणी प्राणी साभले,
भाखे श्री नेमि जिनद ॥हो जिने०॥

७—उपदेश सुणी जिन वन्दने,
आयो जिण दिशि जाय ॥हो जिने०॥

जुठल अपूर्व धर्म साभली
मन मे हपित थाय ॥हो जिने०॥

८—गयो मिध्यात्व धर्म पाभियो,
खुलिया अन्तर नैन ॥हो जिने०॥

अद्या प्रतिति रुचि थई,
पिण समर्थ नही सजम लेण ॥हो जिने०॥

९—आवक अत घराय दो,
महासुह वट नेम ॥हो जिने०॥

द्वादशशत कोष्टक नोपरे
नवर वहे वलि एम ॥हो जिने०॥

दोहा
१—वत्तीस भारजा माहरे, मैपुन सर्व परित्याग ।
घन मटनालीम नोड है, पोडश गोकुल भाग ॥

२—चउ दिशी चार-चार गाउ, ऊँचा नीचा भवन प्रमाण ।
इम चतु पच पट व्रत मे, मोने जिम पञ्चवख्साण ॥

ढाल २ राग—श्री जिन मोहन गारो छेके जीवन प्राण हमारो छे

१—उलणीया विहि दतणविहि, फल अट्ठभरण जाणो ।
उवटण विहि अरु मजण विहि का, जावजीव पञ्चवख्साणो ॥
तारो पार उतारो राज, हुँ चाकर चरणारो ।टेर ॥

२—मोजा पहरण कल्पे मोने, बहुमोले वस्न एक ।
आभरण विहि एक मुद्रिका, और त्याग अवशेष ॥

३—धूप पेज भवखण विहि नथी, ओदण विहि एक शाल ।
सूप विहि एक दाल चणा की और त्याग सब दाल ॥

४—विगय साग महुर विहि नथी, जिमण विहि तीन द्रव ।
सचितपाणी ना त्याग जावजीव, शाल दाल धोवण सर्व ॥

५—आज पछे छे सातम आठम, करणो मोने बेलो ।
धारणो पारणो आमिल करणो, तेरस चवदस तेलो ॥

६—पचम पक्षे निवी कल्पे, इम लीधा व्रत वार ।
श्रावक जन्म हुआ कहे जावर, आगे सुणो विस्तार ॥

बोहा

१— नेम जिनन्द ने वदने आया निज आगार ।
जीवादिक सहू ओलरया, भगवत कीधो विहार ॥

२— विचरे आतम भावता, करना तप अतिधीर ।
सुखे लुखे निमसे, देरया नाही शरीर ॥

३— सोक सहूमिल एकठी आवे प्रीतम पास ।
स्वाम थया किम दूबला, करे एम अरदास ॥

४— पीछे घन किरण अरथ रो, किजे शरीर उपाय ।
बिना दोष विन कारणे, क्यो मोने दी छिटकाय ॥

ढाल ३

राग—बाबा किसन की पुरी

तुम साच कहो-कहो किए कारण दिलगीर रहो ॥टेर॥

१—शरीर तखो नही करो उपाय ।

या कोई थारे छे मन माय ॥

खावो पीवो करो भोग विलास ।

मानो अर्ज करा अरदास ॥

२—जुठल श्रावक बोले एम ।

रोग बिना रोग कहो कहू केम ॥

मैं तो सान कहो-कहो मारा पिण्ड में रोग नही ॥टेर॥

३—जिए दिन रोग हुवो आयो नेम ।

मैं पिए जाणा छा, कहो केम ॥

४—जाई पराई छिटकाया रो पाप ।

म तो देसा मिलने शराप ॥तुम०॥

५—इम सुणी सेठ करी रह्यो मोन ।

नारी जाती सु बोले कौन ॥म तो०॥

६—हाव भाव बिभ्रम किया विपेक ।

नारी चरित्र दिखाया अनेक ॥तुम०॥

७—खोला माहि बैठी जाय ।

तो पिए रोम न सकी चलाय ॥तुम०॥

८—सता सता परितता होय ।

गई परी महलो में आपो खोय ॥तुम०॥

९—जुठल श्रावक करे विचार ।

मैं तो देख लोवी है नार ॥मैं तो॥

१०—श्रावक पहिमा कहो जे ग्यार ।

पेठो तिए में उए ही वार ॥तुम०॥

११—दस प्रतिमा प्रति पूरण हाय ।

ग्यारमी पहिमा बहेतो सोय ॥में०॥

१२—घोसर देगी बियो सयार ।

जाव जीव पचपया घाव ग्राह्य ॥तुम०॥

- १३—अष्टादस दिन हुआ व्यतीत ।
घर्म ध्यान ध्यावे एकरा चित ॥तुम०॥
- १४—दिन उगणीस मे उज्वल ध्यान ।
जुठल पाय्या अधि ज्ञान ॥तुम०॥
- १५—कोष्टक श्रावक नी परे मर्व ।
देखी तो पिए नही करे गर्व ॥तुम०॥

दोहा

- १— एक दिन अवधि मे देखियो, उपसर्ग महा विकराल ।
अर्ध जाम माहे होसी, अग्नि प्रयोगे काल ॥
- २— वत्तीस त्रिया मिल एकठी, देसी आग लगाय ।
माने माहे वालसी, पोपधशाला माय ॥

ढाल ४

राग—हारे लाला बिछीयो, मारो बाजणो

- १— हा रे लाला, नार वत्तीसी मिल करी,
ये तो चिते मन रे माय रे लाला ॥
खून कियो बिना कारणे,
किम सहू ने दी छिटकाय रे ॥
तुमे जोइ जो रे स्वार्थना सगा ॥टेर ॥
- २— हा ये बाई, अग्नि विष शास्त्र मत्र सु,
अबे सेठ ने देणो मार रे बाई ॥
पीछे आपा सहु मिलीकरी,
रेहसा स्वेच्छाचार रे ॥
- ३— हा रे लाला, सहुमिल निश्चय धारीयो,
यो तो भलो विचार्यो काम रे लाला ॥
इए मोल्या ने मारने,
पछे करसा सहू आशाम रे ॥
- ४— हा रे लाला, अवसर देखी कामनी,
सहु भेली थई तत्काल रे लाला ॥
ये तो काट अग्नि मधु घृत गही,
चल आई पोपधशाल रे ॥

दोहा

- १— नारी नागण नारडी, नदी नृप निवेड ।
नग्न पुरुष ये सात नना, भलो भनुप्य मत छेड ॥
- २— नेह पक्ष करुणा रहित, सहु मिल दियो कपाट ।
सात धमूका मारने, चट्टु दिशी चणियो काठ ॥

ढाल ५

राग—पहिलो तो पासो रायवर डालीयो

- १—जुठल दीठो हो बैठो ध्यान मे कोधो छे अगनी उत्पात ।
नही एविचार्यो खामिद माहरो, देखो लुगाई री जात ॥
साभल भव्य प्राणी, नारी विश्वास भूल न कीजिये ॥टेर॥
- २—पाछी तो नाठी हो लाय लगाय ने, बल रही जुठल काय ।
उत्कृष्टी वेदना उज्ज्वल उपनी, ते तो जाणो जिनराय ॥
- ३—साढा तीन कोटी रोम न कपियो, दृढ़ राख्या मन बच काय ।
ऐसी खम्मा सु केवल उपजे, जो कदी करे मुनिदाय ॥
- ४—तीस सक्छर थावक घत रह्यो, दो मास तरणी सघार ।
शत पच वर्ष ही आयु भोगवी, पाम्यो है भवोदधिपार ॥
- ५—काल मासे हो काल करीथयो, ईशाने ने सुर महधिक ।
द्वादश पत्योपम आउखे, जुठल देवत ते तीख ॥
- ६—जम्बूद्वीपे हो क्षेत्र विदेह मे, लेही मानव भवतार ।
कम खपावी मुगत सिधावसी, सुणो वरदत्त अणगार ॥
- ७—सेव भते ' हो प्रभुजी सेव भते, थयो जे वीजो अध्येन ।
थावक ऐसा हो आतम तारणा, वली तारक धर्म जेन ॥
- ८—सवत उगणी से द्वादस वर्ष मे, जोषपुर मे चोमास ।
गुरु प्रसादे हो "रामचन्द" कहें, करो कण्णी जो पूरे भास ॥
- ९—सूत्र अनुसारे हो जोडी जुगत सु, नही विघो है विस्तार ।
हीनापिब विपरीत जो होवे, मिच्छामिदुबकड बारम्बार ॥

दोहा

- १— प्रणमू परमात्म प्रभु शासन पति वर्धमान ।
तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आनन्द आनन्द मान ॥
- २— नाम ठाम शुभ है अति, कीना व्रत अगीकार ।
सातवे अग मे वर्णव्या ते सुनजो विस्तार ॥

ढाल १

राग—निहाल दे

- १—तिण काले तिण अवसरे जी,
काइ वाणिया गाव मभार ॥
राय जितशत्रु जाणिये जी,
हाजी कांड प्रजा भणी हितकार ॥
सुणो अधिकार सुहावणो जी ॥टेर॥
- २—सुणो अधिकार सुहावणो जी,
हांजी काई सूत्र तणे अनुसार ॥
समकित व्रत होवे निर्मलो जी,
होजी काई होवे ज्यु भव निस्तार ॥
- ३—तिण पुर आनन्द नाम थी जी,
हांजी काई, गाथापति धन वान ॥
बारे करोड सोनेया तणो जी
हाँ जी काई कह्यो तस घन परिमाण ॥
- ४—दस सहस्र गाया तणो जी,
हांजी कोई होवे एक गोकुल इम चार ॥

धेनु वर्ग वखाणिये जी,
हा जी काई, शिवा नन्दा तस नार ॥

५—पच विषय सुख भोगवे जी,
हा जी काई, माने बहु जन वाय ॥

इम करता बहु दिन गया जी,
काई, कोई (तिण) अवसर रे माय ॥

६—छूतिपलास नामे भलो जी,
काई चंत्य मनोहर जाण ॥

समोसर्या जग गुरु तिहा जी,
हा जी काई जगनायक जग भाण ॥

७—भूप सुणी वदन गया जी,
आनन्दधावक ताम ॥

पाद विहारे सचरिया जी,
हा जी काई, भेदया त्रिभुवन स्वाम ॥

८—प्रभु जी दी उपदेसना जी,
काई, यो ससार असार ॥

तन धन जोवन कारमो जी,
हा जी काई, कारमो सहु परिवार ॥

९—ए जीव आयो एकलो,
जी काई, परमव एकलो जाय ॥

धमग्ल सग्रह करो जी
हा जी काई, जो शिवसुख की चाय ॥

१०—इत्यादिक उपदेशना
जी, “प्रथमा ढाल” मझार ॥
तिलोवगिग” कहे आगले जी,
हा जी काई मुण जो श्रेय अधिकार ॥

दोहा

१— आनन्द सुनी देसना, बोले वचन विचार ।
सत्य बचन प्रभु आपरो, य मसार मसार ॥

- २— घन्य जे राजा राजेश्वर, तेवे मजम भार ।
मुक्त शक्ति एहवी नही पिरा आदरसु व्रत वार ॥
- ३— जिम सुख होवे तिम करो, जेज न करो लिगार ।
व्रत करण विध साभलो, सून तणे अनुसार ॥

ढाल २

राग—म्हारी रस सेतडी

- १—प्रथम व्रत मे धारीयो जी काई, अस प्राणी जग माय ।
जाणी प्रीच्छी निरअपराधी सो मुक्त हणवा नाय हो ॥
जगतारक पासें, श्रावक आनन्द जी व्रत आदरे ॥टेर॥
- २—दूजो व्रत स्थूल मृषावाद को, भू कन्या पशु काज ।
भूठ न धोलू रसु न थापन, नही लोभे लू व्याज हो ॥
- ३—तीजे स्थूल अदत्त निवारु, खातर खनी गाठ छोड ।
पड नुची मे न कम् चोरी, त्यागू विरुध जे खोड हो ॥
- ४—चौथे स्थूल मेहुणव्रत मे, शिवा नन्दा निज नार ।
वरजी ने त्यागी सकल सरे, ममता दोनी मार हो ॥
- ५—व्रत पचम इच्छा परिमाणें, चार करोड भू माय ।
चार करोड घर बिम्बरी राखी, इतो हो याज के माय हो ॥
- ६—गोकुल चार धेनु का राख्या, सेनू वत्सू इम जाण ।
पाच सो हन की सख्या घरणी शकट सहस्र परमाण हो ॥
- ७—चार मोटी चार छोटी जहाजा, राख्या वाहन आठ ।
उपभोग परिभोग व्रत की विधी, कहू जिम सून पाठ हो ॥
- ८—स्नान रिया पीछे अग लूवण रातो वस्त्र जाण ।
दातरा कारण जेठी मद अर, अवर आमल फल ठार हो ॥
- ९—शतपाक हजार ओपध का, तेल मर्दन के काज ।
सुगन्ध सहित गेहूँ की पीठी, ए उवटणा का साज हो ॥
- १०—आठ लोठी प्रमाण घडो एक, स्नान कारण ने नीर ।
क्षेत्र युगल कपास को निपज्यो, रारयो ओढण चीर हो ॥

- ११—अगर ककुम वावना चदन, विलेपन मर्याद ।
घोलो कमल मालती कुसुम, सुघणो हित स्वाद हो ॥
- १२—कुण्डल युगल और नाममुद्रिका, रख्या आभरण दोय ।
अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय ॥
- १३—घृत तैल तलिया तदुल पत्रमा, दूध की खडो जाए ।
पेय विधि रिमाण कह्या ए, उपरत का पचवखाण ॥
- १४—घृत पुरित धेवर मनगमता, खाण्ड खाजा आगार ।
कमल साल तदुल उपरात सब, ओदन का परिहार हो ॥
- १५—मूग उडद मसुर ए तीनो, उपरात त्यागी दाल ।
शरत् ऋत को निपज्यो घृत प्रात समय को काल ॥
- १६—तिण बेला को घृत जिण राख्यो, उपरत का किया त्याग ।
अगतियो स्वस्तिक राय डोडी, और न खाणो साग ॥
- १७—आम रस युत्त पालख सालणो, अवर तणो सब त्याग ।
मूग दाल का बडा कचोरी, उपरत नही अनुराग हो ॥
- १८—टकी को मुक्के नीर ज पीणो भेलीयो जेह आकाश ।
ककोल जाय फल लौग एलायची, कपूर पच मुगवास हो ॥
- १९—चारो अनर्थदण्ड का सोगन, इम अष्टम व्रत धार ।
शक्ति मुजब शिक्षाव्रत चार, हरि हर देव परिहार हो ॥
- २०—ज्ञान का चौदह पाच समकित का पच्योत्तर व्रत बार ।
पाच सलेहणा यह सब टालु, निन्याणु अतिचार ॥
- २१—पार्श्वस्थ सतानिया गोशालक मे, जिमते मिलीया जाय ।
तिम अन्यतीर्थी ग्रहिया साधु, तिण ने हू बहु नाय ॥
- २२—वतलाठ नही पहेला उनको धर्म बुद्धि सुविचार ।
चार आहार नही देठ तिणने, छद्म दो आगार हो ॥
- २३—अमण निग्रय ने देठ सुन सो, चौदह प्रकार नो दान ।
इम व्रतधारी प्रभु ने वदो, आया ते निज स्थान ॥
- २४—निज पत्नि से वहे प्रभु पासे, मै धार्या व्रत बार ।
तुम पिण जाई करो प्रभु वदा, सफम करो अवतार ॥

- २५ - कत वचन सुणी रथ मे बैठी, वदचा श्री जगदीश ।
 आविका ब्रत ते पिण घायी, पूरी मन जगीश हो ॥
- २६—छ छ पोषध करे मास मे, नवतत्व का जाण ।
 तिलोकगिस्स कहे ढाल दूमरी, आनक करणी वग गग हो ॥

दोहा

- १— बारह ब्रत पाले निमला, चउदह नियम विचार ।
 तीन मनोरथ चितवे, धारे शरणा चार ॥
- २— निबचल समकित दृढ धर्मी, इक्कीस गुण का धार ।
 चौदह वर्ष इम बीतीया, कग्ता धम उदार ॥
- ३— पन्द्रवें वर्ष मे वर्तता, एक दिन आधीरात ।
 जागरणा करे धर्म की, ते सुण जो विख्यात ॥
- ४— आनन्द सथारा को कथन, सुन विस्मित अपार ।
 गौतम सुण ने आविया, देखण ते सथार ॥

ढाल ३

राग आज भलो दिन उगो जी

- १— आनन्दजी विचारो हो, सुखकारी क्रिया धर्म नी,
 काई भवजल तारण हार ।
 बाणिज्य गाव के माही हो, समरथाई नाही माहरो ॥
 आनन्दजी विचारो हो सुखकारी क्रिया धर्म नी ॥ टर ॥
 जब थावे दिन उगाई हो, निपजाई चारो आहार ने ।
 काई बुलाई निज परिवार ।
- २— सयण मज्जन, जीमाई हो, सभलाई कामज घर तरा ।
 काई धारणी पडिमा ग्यार ॥
 थई दिनकर उगाई हो, कराई महुविध चितवी ।
 काई ज्येष्ठ पुत्र घर भार ॥
- ३— सौपी सीधा आया हो, कोलाग नाम सन्निवेश मे ।
 काई बाणिजपुर ने बार ॥
 कोलाग सन्निवेश के माई हो, निज मित्र घणा कुल घर घणा ।
 काई रहे पोषध शाला ममार ।

- ४— तिण साला ने प्रतिलेख्यो हो, काई देखी परठण भूमिका ।
 वली कीनो डाभ सथार ॥
 केवली भाख्यो धर्मज हो, ते पाले परम आनन्द सु ।
 काई टालै सहु अतिचार ॥
- ५— निर्ग्रन्थ गुरु ने टाली हो नही वदे कोई अन्य भणी ।
 काई छे छण्डी परिहार ॥
 दूजी पडिमा माई हो, अधिकारी बारा व्रतनी ।
 काई पाले निरतिचार ॥
- ६— तीजी मे शुद्ध सामायिक हो, चित्त लाई पाल शुद्ध पण ।
 काई बत्तीस दोष निवार ॥
 चौथी पडिमा माई हो, चवदस ने आठम पूर्णिमा ।
 काई अमावस्या तिथि धार ॥
- ७— मास मास पट् पोसा हो, धारे ते शुद्ध निश्चल पण ।
 काई वरजत दोष अठार ॥
 पाचमी पडिमा पाले हो, ते टाले स्नान शोभा वली ।
 काई दिवसे अब्रह्म निवार ॥
- ८— जे भाणे भोजन आवे हो नही खावे आप मगायने ।
 करे काउसग पोसा मभार ।
 छठी पडिमा लेवे हो, नही सेवे ते कुशील ने ।
 काई नारीकया निवार ॥
- ९— सातमी पडिमा जाणो हो प्रासुव ते साणो मोकलो ।
 काई नही करे सचित्त आहार ॥
 आठमी मे आरभ छण्ड हो, ते माण्डे प्रीत छ वाय सु ।
 काई तेवीस के भागे विचार ॥
- १०— नवमी मे इम भाखे हो नही राखे दासी दास ने ।
 काई पोते वाम विचार ॥
 दसमी दुष्कर कारी हो निज घरये भोजन जे कयों ।
 काई ते वरजे निरधार ॥
- ११— गिर पर मुण्ड करावे हो, पयपे भापा दो यनी ।
 काई गरय अने व्यवहार ॥

ग्यारवी पडिमा लेवे हो, नही सेवे आश्रव द्वार ने ।
काई वरते जिम अणुगार ॥

१२— मस्तक लोच करावे हो, फरमावे हु साधु नही ।
काई भेष मुनि नो धार ॥
पहले मास एकान्तर हो, काई दुजी पडिमा दो मास नी ।
काई छठ छठ तपस्या धार ॥

१३— तीजी तीन मास लग तेला हो, चौथी ते चार ज मासनी ।
काई चीले चीले आहार ॥
एक एक मास वधावे हो, बढावे नप एम एम ही ।
काई इम पडिमा ग्यार ॥

१४— करता सुखे भुक्खे हो, सुखो अग पडियो तदा ।
काई तन थयो पिजराकार ॥
श्रावक सो विचारे हो, नही चाले म्हारी देहडी ।
काई शक्ति नही लगार ॥

१५— आलोवी निदी आतम हो, नि शल्य थया शूरापणो ।
काई प्रणमी जगसिरदार ॥
पाप अठारा त्यागे हो, काई वली जाग्या मोह निंद से ।
काई थावे सवर द्वार ॥

१६— धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो, काई त्यागे चारो आहार ने ।
काई जावज्जीव सु विचार ॥
इम नि शल्य मन थापी हो, तिए कापी ममता जाल ने ।

१७— काई धार्यो अनसन सार, “तिलोक रिख” कहे साचा हो ।
नही काचा जाचा भाव मे, काई सफल कियो अवतार ।

दोहा

१— तिए अवसर आनन्द जी, विशुद्ध लेश्या शुभ ध्यान ।
ज्ञानावरणीय क्षयोपशमे, उपनो अवधिज्ञान ।

२— पूर्व लवण समुद्र मे, पाच सो योजन जान ।
एतो ही दक्षिण पश्चिमे, उत्तर चूलहिमवान ॥

३—जाने देखे ऊपरे, प्रथम स्वर्ग विचार ।
नीचे जानी रत्नप्रभा, स्थिति चौरासी हजार ॥

ढाल ४

राम—कीधारे कर्म न छूटिये

- १—न्याय मारग जिन राज नो, भवदुख भजन हार ।
रिपु गजण हग अजणो, शिवपद ना दातार ॥लाल रे॥
न्याय मारग जिन राज नो ॥टर॥
- २—तिण काले ने तिण समे समोसर्या जगदीश ।
गौतम छठ तप पारणो, प्रभु ने नमाया शीप ॥लाल रे॥
- ३—कहे मुझे छठम पारणो, जो तुम आज्ञा थाय ।
वाणिज्य गामने विपे गोचरी जाऊँ चलाय ॥लाल रे॥
- ४—अहा मृह प्रभु जी कह्यो, गौतमजी तिण वार ।
आज्ञा लेई ने सचर्या, जोवता इर्या विहार ॥लाल रे॥
- ५—गोचरी करता साभल्यो, आनन्द अनशन लीध ।
चितवे हू देखू जई, इम निश्चय मन कीध ॥लाल रे॥
- ६—पौषधशाल तिहा आविया, देखी आनन्द सोय ।
रोम रोम हणित थया, बोले अवसर जोय ॥लाल रे॥
- ७—शक्ति नही प्रभु माहरी, आवण री तुम पास ।
उरा पधारो नाथ जी मानो मुझ अरदास ॥लाल रे॥
- ८—चरण पै शीश नमाय ने, प्रणम्या तीन ज वार ।
पूछ्यो उपजे के नही, अवधि गृहवाम मभार ॥लाल रे॥
- ९—गौतम सुन हमी भरी, तय सो कहे मुविचार ।
मुझ पिण अवधि उपयो, कह्यो छ दिशि निम्तार ॥लाल रे॥
- १०—इम सुणी गौतम कहे ओही उपजे गृहवाम ।
पिण उतो दीर्घ ७ उपजे, एही छे वात निमाग ॥लाल रे॥
- ११—ए म्यानव तुमँ आनोवो, प्रायश्चित्त करो अगोवार ।
आनन्दवनना इम बट प्रभु मांभला मुझ गमातार ॥लाल रे॥
- १२—सत्य छना यथाभाय ते, कहता न दोष लीगार ।
ए म्यानवे तुम आलोवो गुन शका पटी तिण वार ॥लाल रे॥

- १३—आप पूछे प्रभु शु तदा, आनन्द कह्यो ते विचार ।
वीर कहे साची कही, थें लो प्रायश्चित्त तप मार ॥लाल रे॥
- १४—जाय समावो तिण प्रत्ये, इम साभली गीतम वाय ।
प्रायश्चित्त लोनो प्रभु रुने, गमावा ने गया उमाय ॥लाल रे॥
- १५—घोस उर्प श्रावक पणो, वारी पडिमा ग्यार ।
एक मास अनशन कह्यो, सोधम कल्प मभार ॥लाल रे॥
- १६—सोधमवितसक विमान थो, कोण ईशान माय ।
अरुण विमान मे उपना, चार पत्योपम आय ॥लाल रे॥
- १७—सुख भोगवी त्यायी चवो, महाविदेह क्षत्र मभार ।
सयम ले करणी करी, कम करी सहू छार ॥लाल रे॥
- १८—केवलज्ञान लेई करी, जासो मोक्ष रे माय ।
अत्र अमर सुख सासता, लेसी सुख सवाय ॥लाल रे॥
- १९—सवत् उगणी से चालीसे, पोष कृष्ण बुधवार ।
तीज तीथी दिन स्यडो दक्षिण देश विचार ॥लाल रे॥
- २०—शहर सातारा प्रसिद्ध छे पेठ भवानी वखार ।
जोड्यो चोढाल्यो चूप सू, सातमा अग प्रमाण ॥लाल रे॥
- २१—ओछो अधिको जे जोडियो ते भिच्छामि दुक्कट मोय ।
“तिलोक रिख” कहे मुणो धारसी तस शिव सपत्त होय ॥लाल रे॥



ढाल १

व्रत करावो श्रावक तणा ॥टेरा॥

- १—अन्न की जात अनेक छे, न्यारा-यारा भेदो जी ।
ये तो प्रभु जी मुमने मोकला, चावल तणो परेवो जी ॥व्रत०॥
- २—मूग कलादिक दालिया, घोल वडा जेम जाणो जी ।
ये तो प्रभु जी मुमने मोकला, उपरान्तरा पच्चक्खाणो जी ॥व्रत०॥
- ३—रायडाडी ने अकतीसो, धीर वतुवारी भाजी जी ।
ये तो प्रभु जी मुमने मोकला, उपरान्तरा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥
- ४—खाण्डरा खाजा मोकला, ऊपर घेवर ताजा जी ।
दोय सु खडी मुमने मोकली, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥
- ५—शरद ऋतु नो नीपग्यो, घृत पण मुमने खाणो जी ।
परपटी भाया पछे, उपरात रा पच्चक्खाणो जी ॥व्रत०॥
- ६—फल री जात अनेक छे, न्यारा-न्यारा वखाणो जी ॥
एक प्रभु जी मुमने मोकलो, खरबूजो फल खाणो जी ॥व्रत०॥
- ७—रुग्गफल जात अनेक छे, न्यारा न्यारा भेदो जी ।
एक प्रभु जी मुमने मोकलो, धीर आम्ल फल खाणो जी ॥व्रत०॥
- ८—कुप्पा तलाव ने बावडी, ज्यारो जल मे ठेल्यो जी ।
एक प्रभु जी मुमने मोकलो, घघर भायास को झेल्यो जी ॥व्रत०॥
- ९—मूग मटर उरुद तणो, दाल री तीनो जातो जी ।
ये तो प्रभु जी मुमने मोकली, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥

- १०—दातण जेठ मधुतणो, बीजा दातण रो नेमो जी ।
पीठी गवादिक धान री, उवटण वली जाणो जी ॥व्रत०॥
- ११—अगर चदन रो धूपणो, विलेपन दोई भातो जी ।
तैल ज दोई जात रो, शतपाक सेंस पाक जाणो जी ॥व्रत०॥
- १२—स्नान करवारी विघकरी, कलशा आठ भरावो जी ।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥
- १३—अग पूछण री विघ करी, अगोद्यो वली साडी जी ।
पूछण कारण राखीयो, उपरात रा त्याग करावा जी ॥व्रत०॥
- १४—कपडा री जात अनेक छे, न्यारा न्यारा भेदो जी ।
एक प्रभुजी मुझ ने मोकलो, क्षेम युगल सफेदो जी ॥व्रत०॥
- १५—गेणारी जात अनेक छ, न्यारा न्यारा भेदोजी ।
नामकृतका मूँदडी काना मे कुण्टल दोई जी ॥व्रत०॥
- १६—पद्म कमल ने मालती, फूल री तीनो जातो जी ।
सु घण कारण राखीयो, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥
- १७—मुखवास मुझने मोकलो पाच भात तम्बोलो जी ।
लोग डोडा ने इलायची, जाईफल ने ककेरोजी ॥व्रत०॥
- १८—अगर चदन रो कुपलो, केशर कुकुम घोर जी ।
तिलक कारण राखीयो, उपरात रा पञ्चक्खाणो जी ॥व्रत०॥
- १९—चार करोड घन घरती मे, चार करोड व्याज बधे जी ।
चार करोड घर बिखरी मे, उपरात रा त्याग करावो जी ॥व्रत०॥
- २०—चार गोकुल गाथा तणा गाथा चालीस हजार जी ।
शिवानन्द नारी मुझने मोकली, उपरातरा पञ्चक्खाणोजी ॥व्रत०॥
- २१—चार जहाज मुझने मोकली वली डूडा चारो जी ।
जो जाऊँ परदेश मे, माल किराणा लेई आऊँ जी ॥व्रत०॥
- २२—पाच से हलवा मझने मोकला गाडा एक हजारो जी ।
धुर बोरा खेती करू, फसल काट घर लाऊँ जी ॥व्रत०॥
- २३—पहली ढाल सम्पूर्ण थई, व्रत तणी मर्यादा जी ।
आगे भवियण साभलो, समकित को विस्तारो जी ॥व्रत०॥

ढाल २

राग—कर पडिक्कमणो भाव सु रे ताल

१—आज पछी अन्य तीर्थी रे लाल,
सन्यासीनी सेव ॥सुविचारी रे॥

ज्याने तो मैं बन्दू नही रे लाल,
नही नमाऊँ म्हारो शीश ॥सु०॥

आनन्द धावक अत उच्चरे रे लाल ॥टेर॥

२—भगवत ना साधु साध्वी रे लात,
आचार मे ढीला थाय ॥सु० ।

ज्याने तो मैं बन्दू नही रे लाल,
नही नमाऊँ म्हारी काय ॥सु०॥

३—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
निकल निदक थाय ॥सु०॥

ज्याने तो मैं बन्दू नही रे लाल,
नही साधु ज्यारी सेव ॥सु०॥

४—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,
पड्या जमाली रे जाय ॥सु०॥

ज्याने तो मैं बन्दू नही रे लाल,
नही रे नमाऊँ पाचो अग ॥सु०॥

५—पहले हू बतलाऊँ नही रे लाल,
एकए सु दूजी बार ॥सु०॥

नही रे बहराऊँ म्हारा हाथ सु रे लाल,
अशनादिक चारो आहार ॥सु०॥

६—ज्या लगे हूँ घर मे रहूँ रे लाल,
छ छडी रो आगार ॥सु०॥

राजा जो हुक्म फरमावियो रे लाल,
अथवा न्याति परिवार ॥सु०॥

७—जो कीर्द मेघ ज राच परे रे लाल,
घटयो मे पट जाये माता ॥सु०॥

ज्याने तो देणो मुझने मोकलो रे लाल

चावल चून रसाल ॥सु०॥

८—जो कोई देव पितर होवे रे लाल

अथवा कोई मोटका थाय ॥मु०॥

जो कोई दुर्जन आय भिडे रे लाल

अथवा कोई नागो अड जाय ॥सु०॥

९—भगवत रा साधु साध्वी रे लाल,

चाले सून के न्याय । सु०॥

ज्याने तो मैं बहू सही रे लाल,

पाचो ही अग नमाय ॥सु०॥

१०—भगवत ना साधु साध्वी रे लाल,

चाले सून के न्याय ॥सु०॥

ज्याने बहराऊ म्हारा हाथ सु रे लाज,

अशनादिक चारो आहार ॥सु०॥

११—चार गोकुल गाया तणा रे लाल,

याया चालीस हजार ॥सु०॥

शीवानदा नारी मुझने मोकली रे लाल,

दूजी नारी रा पंचवखाण ॥सु०॥

१२—चार जहाजा मुझने मोकली रे लाल,

बली डूडा चार ॥सु०॥

पाच से हलवा मुझने मोकला रे लाल,

गाढा एक हजार ॥सु०॥

१३—सू सलिया म तो मोटका रे लाल,

गेर गेर ने गेर ॥सु०॥

पाप न राख्यो राई जीतो रे लाल,

पंचवखाण मेरुसमान ॥सु०॥

१४—भगवत सरीखा गुरु मित्या रे लाल,

म्हारे कमीय न काय । सु०॥

दुर्गति पडता ने भेलिया रे लाल,
 म्हारे लागी मुगत सु उमेद ॥५०॥

१५—दुजी ढाल पूरो हुई रे लाल,
 समकित को विस्तार ॥सु०॥
 तीजी ढाल हिवे सामलो रे लाल,
 सथारा रो अधिहार ॥सु०॥

दीहा

१—आनन्द जी सथारो कियो, कोत्लाग पाडा माय ।
 गौतम उठ्या गोचरी, थे सुण जो चित्त लाय ॥

ढाल ३

स्वामी अर्ज करु थासु विनती ॥टेरा॥

१—स्वामी हाथ जोडो आनन्द कहे,
 विनय करी बारम्बारो जी ॥
 हो स्वामी उठन की शक्ति नही,
 नेडा चरण करावो हो ॥स्वा०॥

२—गौतम चरण नेडा किया,
 वदया मन हुलास हो ।
 स्वामी धन्य रे दीहाडो धन्य घडी,
 सफन हुई म्हारी आस हो ॥स्वा०॥

३—आनन्द कहे स्वामी सुणो,
 गृहस्थी ने उपजे अवधिज्ञान हो ।
 गौतम कहे उपजे सही,
 सु थाने उपज्यो सुजाण हो ॥स्वा०॥

४—तीन दिशी योजन पाच से
 चौथी चुल्लहेम जाणो हो ।
 उधो वसोव पहनो दीसे,
 नीचे सोनुची नरक यास हो ॥ग्वा०॥

- ५—आनन्द प्रश्न पूछियो,
गौतम दियो रे निषेध ओ ।
आनन्द प्रायश्चित्त लेवो इए बात रो,
राखो भुगत सु उमेद हो ॥स्वा०॥
- ६—साचा ने तो को नही,
भूठा ने लागे छे पाप हो ।
स्वामी में तो देरयो जिसो ही भाखियो,
प्रायश्चित्त किम लेऊ कृपानाथ हो ॥स्वा०॥
- ७—इतनो सुण शका पढी,
आया श्री वीर जी के पास हो ।
स्वामी में आज्ञा लेई ने उठ्यो,
गोचरी, बात दीवी प्रकाश हो ॥स्वा०॥
- ८—वलता वीर इसडी कहे,
थें गया वचना में चूकी हो ।
गौतम आनन्द जाय खमावजो,
पाछा मेल्या तत्काल हो ॥स्वा०॥
- ९—पारणो तो पोछे कियो,
आया श्री आनन्द जी रे पास हो ।
गौतम आनन्द आय खमाविया,
ज्यारी सूत्र में साख हो ॥स्वा०॥
- १०—थे श्रावक सेणा घणा,
गुणा करी ने गम्भीर हो ॥स्वा०॥
आनन्द समकित मे सेंठा घणा,
थारा गुण किया महावीर हो ॥स्वा०॥
- ११—शिवानन्दा नारी भली,
पतिव्रता मुकुमाल हो ।
वा पिण स्याणी श्राविका,
जिन मारगरी जाण हो ॥स्वा०॥

१२—ऋषि रायचन्द्र इस कहें
या थई तीसरी ढाल हो ।
आगे भवियण साभलो,
श्रावका रो अधिकार हो ॥स्वा०॥

ढाल ४ राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१—घनानन्द जी रे शिवानदा रे लाल,
दोनो रो दीपती जोड हो ॥भक्ति जन॥
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनया बारा करोड हो ॥भ०॥
श्रावक श्री महावीर का रे लाल ॥टेरा॥

२—श्रावक श्री वधमान का रे लाल,
पूरा एकज लाख हो ॥भ०॥
उण सठ हजार ऊपर कहा रे लाल,
सुनियो चित्त ठिकाण राख हो ॥भ०॥

३—कामदेवजी रे भद्रा भार्या रे लाल,
सेणी घणी सुकुमाल हो ॥भ०॥
गोकुल छ गाया तणा रे लाल,
सोनया त्रोट अठार हो ॥भ०॥

४—चूलणी पियारे सोमा भार्या रे लाल,
करे कदी नही रीस हो ॥भ०॥
आठ गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनया त्रोट चौबीस हो ॥भ०॥

५—सुरादेवजी रे धन्ना शोभती रे लाल,
शोभे जुगती जोड हो ॥भ०॥
छ गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनया बारह वरोड हो ॥भ०॥

६—चूलणी शतक रे बहुला भार्या रे लाल,
दीठा ही आवे दाय हो ॥भ०॥
भचन अठारा ना घणी रे लाल,
गाया साठ हजार हो ॥भ०॥

- ७—सेणा श्रावक कुण्डलीलिया रे लाल,
ज्या के पूसा नार हो ॥भ०॥
कचन अठारा ना घणी रे लाल,
गाया साठ हजार हो ॥भ०॥
- ८—सकडाल जी के अग्निमित्रा रे लाल,
घम रुच्यो मन माय हो ॥भ०॥
एक गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनैया तीन करोड हो ॥भ०॥
- ९—महाशतक जी श्रावक हुवा भाटका रे लाल,
ज्या के तेरा नार हो ॥भ०॥
कोड चौबीस रो परिग्रहो रे लाल,
गाया अस्सी हजार हो ॥भ०॥
- १०—नदनि पिताजी रे अश्विनी रे लाल,
धर्म रुच्यो मन माय हो ॥भ०॥
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
कचन बारह कोड हो ॥भ०॥
- ११—सालिहि पिताजी रे फाल्गुणी रे लाल,
धर्म दीपावन जोग हो ॥भ०॥
चार गोकुल गाया तणा रे लाल,
सोनैया बारा कोड हो ॥भ०॥
- १२—दौलतवता दस हुआ रे लाल,
समकित ऊपर दूड हो ॥भ०॥
स्फटिक रत्न हियो ऊजलो रे लाल,
ज्ञान दियो घट मे घाल हो ॥भ०॥
- १३—पहला ने बली आठमा रे लाल,
दोना ने अवधिज्ञान हो ॥भ०॥
साता ने उपसर्ग उपनो रे लाल,
श्रद्धा है सर्व प्रधान हो ॥भ०॥
- १४—दिन-दिन चढता वैराग्य मे रे लाल,
मुरा ने सुविनीत हो ॥भ०॥

बल्लम सागे साधने रे लाल,
पडिमा सर्व ग्यार हो ॥भ०॥

१५—महाविदेह क्षेत्र मे सिम्हसी रे लाल,
कह्यो सातमे अग हो ॥भ०॥

फाटे पण पलटे नही रे लाल,
चोल मजीठ रो रग हो ॥भ०॥

१६—सवत् अठारे चौसठ साल मे रे लाल,
नागौर शहर चौमास हो ॥भ०॥

पूज्य जयमल जी रा प्रसाद से रे लाल,
“ऋषि रायचन्द्र” भणो रे हुल्सास हो ॥भ०॥



बोहा

- १— अरिहत सिद्ध आचार्य जी, उपाध्याय मुनिराज ।
प्रणमु सद्गुरु देव को, पूरो वञ्छित काज ॥
- २— सातवे अगे जाणीये, द्वितीय अध्ययन मझार ।
कामदेव श्रावक तणो, दारयो बहु विस्तार ॥
- ३— सूत्रानुसारे वर्णवु, किंचित् तास समास ।
सुनो श्रोता शुद्ध भावसु, समकित रत्न उजास ॥

ढाल १

राग—घोडा देश कम्बोज का

- १—तिण काले तिण अवसरे, चम्पा नगर मझारो जी ।
जितशत्रु तिहा राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी ॥
धन्य श्रावक जे शुभ मति ॥टेर॥
- २—धन्य श्रावक जे शुभमति, कामदेव गाथापात जाणो जी ।
छ कोडी द्रव्य धरणी वीपे छ कोडी व्याज बलाणा जी ॥
- ३—छ कोडी घर विखरी, छ गाबुल वग छे तासो जी ।
भद्रा धरणी जाणीये, भोगवे भोग उलासो जी ॥
- ४—अपर रिद्धि आनन्द परे, दाखी छे सूत्र के माई जी ।
तिण काले तिण अवसरे, जगगुरु जगसुख दाई जी ॥
- ५—ग्राम नगर पुर विचरतां, चम्पा नगरा मझारो जी ।
वीर जिनन्द समासर्या, करवा परउपकारो जी ॥
- ६—राजादिक गया वदवा, कामदेव पाद विहारो जी ।
वदी बैठा प्रभु आगले, मन मे हृष अपारो जी ॥

- ७—प्रभु जी दी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ।
जो अराध भाव सु, उत्तरे भवजल पारो जी ॥
- ८—कामदेव सुनी हृषिया, कहे सत्य वेण छे थारो जी ।
सयम की शक्ति नही, धरावो व्रत मुझे वारो जी ॥
- ९—ज्ञानन्द नी परे जाणीयें, धन उपरात पचवखाणो जी ।
त्याग कर्या शुद्ध भाव सु वारा व्रत परिमाणो जी ॥
- १०—शिवानन्दा तिम ही लिया, भद्रा व्रत रसालो जी ।
'तिलोक रिख' कहे सुणो आगले, ये थर्द प्रथमा ढालो जी ॥

दोहा

- १— कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार ।
चौदह वर्ष इम वीतिया, पनरवें का अधिकार ॥
- २— जागरणा आनन्द जिम ज्येष्ठ पुत्र घर भार ।
देई ने धारी तदा, पडिमा शुद्ध इग्यार ॥
- ३— एक दिन पीपघशाल मे, पीपघ लीनो भाव ।
धर्म ध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥
- ४— शकेन्द्र सौधमपति, बैठा सभा मभार ।
अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥
- ५— मुख जयणा करी बोलीया, भरत क्षत्र के माय ।
धर्मो पुरुष निश्चल मति, कामदेव अधिकाय ॥

ढाल २

राग—गुरा जी थे मने गोरे नहीं राख्यो

- १— निश्चय थढ़ा समवित्त व्रत माई ।
इण अवसर कामदेव अधिकाई ॥
- २— देव दानव असुर मुर जाई ।
तिण न कोई ७ सके चलवाई ॥
निश्चय थढ़ा समवित्त व्रत माई । देर ॥
- ३— ममहृष्टि सुर दियो घ याराग ।
धन्य तिण ७र नो सपस जमारो ॥

- ४— महामिथ्यादृष्टि सुर तिण वारे ।
सुन कर सो मन माहे विचारे ॥
- ५— अन्न को कीडो जीवे अन्न खाई ।
तिण ने एक दिन मे देऊ चनाई ॥
- ६— ऐसो विचार कियो मन माई ।
शीघ्र पण तिहा आयो चलाई ॥
- ७— महापिशाच को रूप बणायो ।
महाविद्रुप भयकर कायो ॥
- ८— टोपला सरिखो शीश बणायो ।
सूकर सरीखा केश जमायो ॥
- ९— कढाला सरीखो कियो कपालो ।
टाली की पूछ ज्यु भूआ विकगलो ॥
- १०— बाहिर छटवया नेत्र का डोला ।
सुपडा सरीखा कान कुडोला ॥
- ११— गाडर जिम चिपटी तस नासा ।
फालीया सरीखा दत सत्रासा ॥
- १२— लटके ऊँट सा होट कुरगी ।
जिह्वा कतरणी जेम विभगी ॥
- १३— खद कर्या मृदग आकारो ।
पुरपोल किवाड ज्यो हियो भयकारो ॥
- १४— भजा विभत्म शिल्लासी हथेली ।
खलवतासी अगुली कुमेली ॥
- १५— सीपपुटसा तस नख विस्तारो ।
नाई पेटी सम थण सय भारो ॥
- १६— ढीलो छे सधी बद सरीरो ।
देखता कायर होत अधीरो ॥
- १७— कुकडा उन्दरा की तनमाला ।
कुण्डल नोल का अति विकराला ।

- १८ - उत्तरासण भुजग को अग घरतो ।
अट्टहास गजरिख करतो ॥
- १९ - अतितिक्षण खाण्डो कर सायो ।
पौषधशाला तिहा चल आयो ॥
- २० - बोले वचन जिम कोपियो कालो ।
'तिलोकरिख' कहें दूमरी ढालो ॥

दोहा

- १ - ह भो कामदेव ! श्रावक तु मृत्यु नो वछण हार ।
खोटा लक्षण ताहरा ह्री श्री वरजण हार ॥
- २ - धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्ष नो तू छे वछण हार ।
कल्पे नही तुझ खण्डवा शोलादिक व्रत बार ॥
- ३ - पिरा है आज भजावमु पौषधादिक व्रत जेह ।
नहीं तो इण ही खड्ग सु, खण्ड खण्ड करसु देह ॥
- ४ - आर्त्तरीद्र ध्यानवश भरसी आज जरूर ।
एक दो तीन बार तो, बोल्हो वचन कहर ॥
- ५ - वयन सुनी इम तेहना डरिया नाही लिगार ।
धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिरा बार ॥

ढाल ३

राग—सूरिजन, साभस जो सबकोय

भविष्य जन, धन धन माहस घोर ॥टेरा॥

- १ - त्रौघातुर मिस मिस धवो काई, त्रिशुल लिलाड चढ़ाय ।
तीक्ष्ण पाछणा धार सो काई, गड्गसु गण्डे काय ॥
- २ - उज्जस वेदना उपनी काई कहता न धावे पार ।
बे ता जाए आतमा काई, के जाए बिरतार ॥
- ३ - त्राम नही एव रोम मे काई, राम्या सम परिणाम ।
कामदेव सोन तदा काई, मिथ्यातवी गुर-काम ॥
- ४ - ए राण्डे मृग काय ते काई, मृग समक्षित व्रत बार ।
गण्डया समर्थ छे तही काई जो धाव देव एजार ॥

- ५— थाक्यो देव तिग्न अवसरे काई, जोर न चाल्यो लिगार ।
पौपघशाला थी निकली काई, पिशाच को रूप निवार ॥
- ६— सप्त अग लागे धरणी मु काई, धर्यो तिणे गजरूप ।
अजनगिरी नी उपमा काई, दोसे महा विद्वरूप ॥
- ७— पौपघशाला मे आय ने काई, तीन बार वनी जेह ।
बोल्थो वचन पहली परे काई, रच डर्यो नही तेह ॥
- ८— ओघातुर ग्रह्या सुण्ड मे काई, पौपघशाला के वहार ।
उछाल्या आकाश मे काई, तीक्ष्ण दत मभार ॥
- ९— भाली ने डाल्यो पग तले काई, लोलत्र्या तीन ज बार ।
महावेदना तिणे अनुभवी काई, चलिया नही लगार ॥
- १०— हस्ती रूप छोडी करी काई, सर्प वण्यो भयकार ।
लाल नेत्र मसीपुज सो काई, करतो फू फू कार ॥
- ११— पूर्व नी परे वचन कह्या काई, अण बोल्या रह्या भोय ।
निश्चल पणु जाणी करी काई, ओघातुर अति होय ॥
- १२— तीन बीटा दिया कठ मे काई, विष सहित हिया माय ।
डख दियो अति जोर सु काई, तो पिण चलीयो नाय ॥
- १३— थाको ते वेदनी देवता काई, जाण्यो दृढ परिणाम ।
'तिनोक रिख' कहे तीजी ढाल मे काई, सुर किधा काम निकाम ।

बोहा

- १— सर्प रूप छोडी करी, निज रूप दिव्य ने धार ।
काने कुण्डल जगमगे, सोवे गला मे हार ॥
- २— दस दिश प्रभा करतो थको, कटि घूघर घमकार ।
हाथ जोडी ने विनवे, लुल लुल बारम्बार ॥
- ३— घय पुण्य कृत लक्षणा, मफल तुम्ह अवतार ।
इन्द्रे करी तव प्रशसा, सौधर्म सभा मजार ॥
- ४— मैं भिथ्यात्व तणे वशे सत्य न मानी वाय ।
धर्म थी डिगावण कारणे, दिया पण्णिह आय ॥

- ५— खमजो मृद अणराध ते, नही करू दूजी वार ।
इम लघुता करी देव ते, सचर्यो स्वर्ग मझार ॥

ढाल ४

राग—मोने वालो लागे बिछीयो

- १— हा रे लाला, तिए काले तिए अवसरे,
समोसर्या वीर जिनद रे लाला ॥
कामदेव सुन धारियो,
पारणो करसु प्रभु पेनी दद रे लाला ॥
कामदेव थावक मिरे ।।टेर
- २— कामदेव थावक सिरे,
जिए पहेरीया सहु शिणगार, रे लाला ॥
प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावसु,
हिवडे हर्ष अपार रे लाला ॥
- ३— प्रभु दीनी देशना,
द्वादश परिपदा मझार ॥रे लाला॥
कहे कामदेव यकी तदा,
आजे आधी रात मझार ॥रे लाला॥
- ४— तीन उपसग दवे दिया
ते सभ्या सम परिणाम ॥रे लाला॥
ए अर्थ समय छे वे नही,
सो दासि हता छ स्वाम ॥रे लाला॥
- ५— गीतमादिक साधु साध्वी,
आमन्त्री ने वहे जिनराय ॥रे लाला॥
गृहम्याश्रमे परिमह सहा,
तुमे तो यया मुनिराय ॥रे लाला॥
- ६— द्वादश अग भणिया तुमे,
पण्णह सहवा जोग ॥रे लाला॥
तहन वचन करीया सह,
अमणादिक गगती उपपाग ॥रे लाला॥

- ७— प्रश्न उत्तर करी भगवन्त ने ,
 पूछी सहु गया निज गेह ॥रे लाला॥
 आनन्द जिम पडिमा वही ,
 अन्ते ठायो अनशन तेह ॥रे लाला॥
- ८— एक माम सलेखणा ,
 प्रथम स्वग मभार ॥रे लाला ॥
 अरुणाभ विमाने उपना ,
 थिति दाखी पल्योपम चार ॥रे लाला॥
- ९— चनी ने विदेह मे जावसी,
 तिहा लेसी नर अवतार ॥रे लाला॥
 सजम ले करणी करी ,
 ते जासी मोक्ष मभार ॥रे लाला॥
- १०— सवत उगुणीसे गुणचालीस मे ,
 पोष वदि चौथ तिथी जाण । रे लाला ॥
 देश दक्षिण कोकन विषे
 शहर सतारो वखाण ॥रे लाला॥
- ११— "तिलोक रिख" कहे सूत्र न्याय सु ।
 चौढाल्यो रच्यो सुखकार ॥रे लाला ॥
 भणसी गुणसी शुद्ध श्रद्धसी ।
 तस होवसी खेवो पार ॥रे लाला ॥



दोहा

- १— श्री सिद्धार्थनंदन नमु, उत्तमगुण गम्भीर ।
मेढी गाँव समोसर्या, विचरता महावीर ॥
- २— गोशाले उपसर्ग दियो, हुग्रो लोही ठाण ।
छमास लग पीडा रहो, न सवया करी बखाण ॥

ढाल १

राग—भावर जीव क्षमा गुण भावर

मोह कम जग माहे मोटो ॥टेर॥

- ६—तिण धवसर ने सिंहो मुनिवर, भक्ता जिनवर शोश जो ।
ध्यान धरी बठो तिण वन मे, देख रह्या जगदीश जो ॥
- २—मोह कर्म जग माहे मोटो, जालिम मोटो जोषजी ।
कायर पी जीतो नही जावे, ज्ञानी नाख्यो जड सोद जो ॥
- ३—कोई कहे गोशालो मरसी, कोई कहे महावीर जी ।
सोह मुनि सुणीयो ध्यान मे हुमा घणा दितगीरजी ॥
- ४—साधुसधाते तेढाव्या माया, सनमुख धोरहजूर जी ।
उपन्यो तं प्रभु बात सुणावे, सहस्र करे करजोड जी ॥
- ५—धोर वट गोशालो झूठो, मरसी सात दिन माय जी ।
साढो पट्टह वष लग सुख मे, विचरसु शक न याय जी ॥
- ६—पिण तु जा रेवती ने मंदिर पाक बोला से लाम जी ।
बिजोरा पाव छे प्रायाकर्मि, भेत्यो माहरो भाव जी ।
- ७—०म मृणी मोहो घति हप्यो, घम घम दीनदयास जी ।
अपि चोपमस बह सोच मिटायो पह्यो तो ये यई ढाल जी ॥

ढाल २

राग—तिण अवसर मुनिराय

- १—सामल श्रीमुख वाण, सीह कयों प्रमाण ॥जिनेश्वर लाल॥
रोम रोम मन हुनस्यो रे ॥
- २—जिम तृष्या ने नीर, भूखा ने जिम भोजन खोर ॥जिने०॥
जिम रोगी ने श्रीपध मित्यो रे ।
- ३—कामण ने जिम कन निर्धन थयो धनवत ॥जिने०॥
आघा ने कीयो जिम सुभक्तो रे ।
- ४—भोली मे पातरा डाल चाले गन्धहस्ति नी चाल ॥जिने०॥
बहरण ने मुनि पागर्या र ।
- ५—मेढी गाव रे माय, ईर्या जोवता जाय ॥जिने०॥
रेवती घर आवीया रे ।
- ६—देख सीहो अणगार, हर्षित थई अपार ॥जिने०॥
सात आठ पग साहमी गई रे ।
- ७—धन्य दिहाडो आज, भेंटया सीह मुनिराज ॥जिने०॥
मन माग्या पासा डल्या रे ।
- ८—भला पधार्या गह, दूधा बूठा मेह ॥जिने०॥
मन रा मनोरथ,सहु फल्या ए ।
- ९—आणी 'अधिको कोड, पूछे बेकर जोड ॥जिने०॥
किसडे काम पधारीया ए ।
- १०—कहे सीहो अणगार, हू आयो लेवण आहार ॥जिने०॥
दूजो प्रयोजन को नही रे ।
- “ऋषि धीयमल कहे एम, बहरावे बहु प्रेम ॥जिने०॥
गाथापत्ति रेवती रे ।

ढाल ३

राग—धीर अठाणी राणी चेतना

- १—रसोईशाला भाहे जायने जी काढीयो वीजोरा पाक जी ।
रेवती कहे स्वामी लीजीये जी, मीठो हे जाणो गटाक जी ॥
सीह सुनि भला ही पधारीया जी ॥टेग

- २—तब बलता मुनिवर कहे जी, तू बहरावे अधिक उद्याह जी ।
पिण लेवो कल्पे नही जी, भेल्या भगवतरा भाव जी ॥
- ३—ए तो हम लेवाको नही जी, पिण दूजो कोला पाक नाय जी ।
ते शुद्ध साधने दीजीये जी, ते कियो भर तणे काम जी ॥
- ४—हाथ जोडी कहे रेवती जी, आश्चय पामी अथाग जी ।
मैं किण ने न प्रकाशियो जी, देख जो माहरा भाग जी ॥
- ५—गुण जानो तपसी इसो जी, जिन रहस्य छानी कही दात जी ।
मुनि कहे सकल देखो रह्या जी, प्रभुरे नही छानी तिलमातजी ॥
- ६—सीहो कहे सुण आविका ए उपन्यो है केवल ज्ञान जी ।
धम आचारज प्रसिद्ध छे ए, भगवत श्री वर्धमान जी ॥
- ७—ज्या सु छानी नही वारताए, तीनो ही लोकरे माय जो ।
प्रतिबोध देवे घणा जीवने जी, अपूर्व धर्म सुणाय जी ॥
- ८—बीतराग अरिहतना ए, बेटलाव गुण कह्या जाय जी ।
“रिख चौयमल” कहे रेवती जी, गुण गुण रही फुनाय जी ॥

ढाल ४

राग—नवकार मन्त्रतो ध्यान धरो

- १—बहरावे रेवती भावे चढी, तोडी जिन कर्मारी कोड लडी ।
मनुष्य जन्म ने सफल कियो, रेवती शुद्ध मनसु दान दियो ॥
- २—चित्त वित्त पातर मिलीया,
पीर ग्राण्ड माहे जिम धृत दुलीया ।
धय धन्य रेवती रो जन्म जीयो ॥
- ३—दान दिमो हुई रग रली,
मन चितित आशा सर्व फली ।
सीय कर गोत्र बांध सीयो ॥
- ४—चार जाति रा देवता तूठा,
पाष द्वय जिण रे घर बूठा ।
सुर नर सगला रो हृष्यो जीयो ॥
- ५—पाव बहरायो रेवती सती,
आण दियो इण मोह जती ।
प्रभु जो भाव धारोग नीया ॥

- ६— सुर नर सकल हुआ 'राजी,
कीर्तिदान री वाघी जाभी ।
वारे पर्पदा री हर्षा हीयो ॥
- ७— पट् भास नो लोहीठाण गयो,
चारो ही सघ मे हप थयो ।
वन्य घन्य रैवती भलो लाभ लीयो ॥
- ८— रोग टल्यो हुई गई साता,
देवे किया वखाण गगने जाता ।
सुणता सुणता ज्यारो ठरे हीयो ॥
- ९— तीर्थ कर नो पद ते पासी,
एक भव करने मृगत जासी ।
सूत्र भगवती री साख कीयो ॥
- १०— सुण नर नार घणा हर्षे
सवत् अठारे वावन वर्षे ।
'ऋषि चौथमल' चौडाल कीयो ॥



ਫਾਲ ੧ ਰਾਗ - ਹਾਰੇ ਮਹਾਰਾ ਨੇਮ ਬਮਨਾ ਸਾਭਾ ਪਛਵੀਲ ਬੇਸ਼ ਜੋ ।

੧—ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਵਾਸੁਪੂਜਯ ਨੋ ਨਦਨ ਮਧਵਾ ਨਾਮ ਜੋ ।
 ਰੋਹਿਣੀ ਤੇਹਨੋ ਕਮਲਾ ਪਕਜਲੋਧਣੀ ਰੇ ਲੋ ॥
 ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਆਠ ਪੁਤ੍ਰ ਨੇ ਊਪਰ ਪੁਤ੍ਰੀ ਏਕ ਜੋ ।
 ਮਾਤ ਪਿਤਾ ਨੇ ਭਾਲੀ ਨਾਮੇ ਰੋਹਿਣੀ ਰੇ ਲੋ ॥

੨—ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਦੇਖੀ ਜੋਵਨ ਵੇਸ਼ੋ ਨਿਜ ਪੁਤ੍ਰੀ ਨੇ ਭੂਪ ਯਯੋ ।
 ਸਵਯਵਰਮਙਡਪ ਮਾਹੀ ਨ੍ਰਪ ਤੇਡਾਬਿਆ ਰੇ ਲੋ ॥
 ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਭਗ ਬਾਨੇ ਮਰੁਧਰ ਕੇਰਾ ਰਾਯ ਜੋ ।
 ਚਤੁਰਾਨੀ ਫੀਜਾ ਥੀ ਬੰਧਾ ਆਬਿਆ ਰ ਲੋ ॥

੩—ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਪੂਰਵ ਭਵ ਨਾ ਰਾਗੇ ਰੋਹਿਣੀ ਤਾਮ ਜੋ ।
 ਭੂਪ ਅਸ਼ੋਕ ਨੇ ਕਠੇ ਵਰਮਾਲਾ ਧਰੇ ਰੇ ਲੋ ॥
 ਹਾ ਰ ਮਹਾਰੇ, ਗਜ ਰਧ ਧੀਡਾ ਦਾਨ ਅਨੇ ਬਹੁਮਾਨ ਜੋ ।
 ਦੇਵ ਮੋਕਲਾਵੀ ਬੇਟੀ ਬਹੁ ਆਡਮ੍ਪਰੇ ਰੇ ਲੋ ॥

੪—ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਰੋਹਿਣੀ ਰਾਣੀ ਮੋਗਵਤੀ ਸੁਖਮੋਗ ਜੋ ।
 ਆਠ ਪੁਤ੍ਰ ਨੇ ਪੁਤ੍ਰੀ ਚਾਰ ਸੁਹਾਮਣੀ ਰੇ ਲੋ ॥
 ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਆਠ ਮਾ ਪੁਤ੍ਰ ਨੂ ਨਾਮ ਦੇ ਸੋਭਪਾਲ ਜੋ ।
 ਤੇ ਲੋਲੇ ਲੇਵ ਨੇ ਬੰਠੀ ਗੋਲੇ ਮਾਮਣੀ ਰੇ ਲੋ ॥

੫—ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ ਏਵੇ ਕੋਇਕ ਾਗਰਯਾਣਿਕ ਨੋ ਪੁਤ੍ਰ ਜੋ ।
 ਆਠਥੇ ਥੀ ਬਾਲਕ ਮਰਯਾ ਦਸਾ ਸਹੇ ਰੇ ਲੋ ॥
 ਹਾ ਰੇ ਮਹਾਰੇ, ਮਾਤ ਪਿਤਾਦਿਕ ਸਹੁ ਤੇਨੋ ਪਰਿਵਾਰ ਜੋ ।
 ਰਝਤੀ ਪਛਤੀ ਮੋਗ ਤਲੇ ਧਰੇ ਨੇ ਧਰੇ ਰੇ ਲੋ ॥

- ६—हा रे म्हारे, ते देखी अति हर्षि रोहिणी ताम जो ।
पीऊ ने भाखे ए नाटक कुण भाति नो रे लो ।
हा रे म्हारे “दीप” कहे पूर्व पुण्य सकेत जो ॥
जन्म थकी नवि दीठू, दुख कोई जात नो रे लो ।

ढाल २

राग—आगा आम पधारो पुज्य

- बोला बोल विचारो राज, एम केम कीजे हासी ॥टे॥
१—पिऊ कहे जीवन मदमाती, सबने सरखी आशा ।
ए बालक ना दुख थी रोवे, तुझने होवे तमाशा ॥बोलो॥
२—तब राजा जी रोम करी ने, खोले थी पुत्र ने खोसी लीधो ।
रोहिणी राणी नजरे जोवता, गोख थकी नाखी दीधो ॥
३—ते देखी सब अन्तेउर मे, सभी फिकर ते कीधो ।
रोहिणी एम जाणो जे बालक, कोईक रमवा लीधो ॥
४—नगर तणो रख वाले देवे, अघर गृह्यो तिहा आवी ।
सोना ने सिंहासने थाप्यो, आभूषण पहरावी ॥
५—नगर लोग सब भाग बखाणो, राजा विस्मय थावे ।
“दीप” कहे जस पुण्य सखाई, तिहा सहु नवनिधि थावे ॥

ढाल ३

राग—रूढो माल बसत,

रोहिणी तप फल जग जयवन ॥टे॥

- १—एक दिन वासु पूज्य जिनवर ना, अन्तेवासी मुनिराज ।
रूप कुभ ने सुवर्ण कुभ जी, सहु ज्ञानी भव जहाज ॥वाला रोहिणी०॥
२—पधार्या प्रभु जी नगर समीपे, हृष्यो रोहिणी नो कत ।
सहु परिवार सु पद जुग वदे, निमुणियो धर्म एकत ॥वाला०॥
३—कर जोडी नृप पूछे गुरु ने, रोहिणी पुण्य प्रवध ।
शू कीधू प्रभु सुकृत एने, भाखो ते सयला सबध ॥वाला०॥
४—गुरु कहे पूर्वभव मे कीधु रोहिणी तप गुण खान ।
ते थी जन्म थकी नही दीठू, सुख दुख जान अजान ॥वाला०॥
५—भाखे गुरु हिये पूर्वभवनो रोहिणी नो अधिकार ।
“दीप” कहे सुण जो एक चित्ते, कम प्रपच विचार ॥वाला०॥

ढाल ४

राग—पनजी मुंडं बो

राजन सृणजो रे, काई पूर्व भव अधिकार ।

दिल मे घर जोरे ॥टेर॥

१—गुरु कहे जम्नू भरत क्षेत्र मे, सिद्धपुर नगर मझारो रे ।
पृथ्वीपाल नरेसर राजा, सिद्धमति तस नारो रे ॥२—एक दिन आय चद्र उद्याने, राणी ने राजानो रे ।
खेले क्रीडा नव नव भाते, जोइजो कर्म निधानो रे ॥३—एवे कोईक मुनिवर तिहा आया, गुणमागर तस नामो रे ।
राजा ते मुनिवर ने देखी, राणी ने कहे तामो रे ॥४—उठो ए मुनिवर ने बेराओ, जे होय सुभक्तो आहारो रे ।
नीसुणो राणी ने मुनि ऊपर, उपनो क्रोध अपारो रे ॥५—विषय थकी अन्तराय थये ते, मन मे बहु दुख लावे रे ।
रीसे चलती बडवू तुवू, ते मुनि ने बहरावे रे ॥६—मुनि ने आहार थकी विष व्याप्यो, कालधर्म तिहा कीधो रे ।
राजा ए राणीने तत्क्षण, देश निकालो दीधो रे ।७—सातमे दिन मुनिहत्या ते, पापे गलत कोढ़ थयो अगे रे ।
काल करी ने छठी नरके, उपनी पापप्रसगे रे ॥८—नारकी ने तिर्यंच तरा भव, भटकी काल अनन्तो रे ॥
"दीप" बह हिचे धमजोगनो, रं सू सरस विरतन्तो रे ॥

ढाल ५

राग—ठु वुस आगल शु कठु कहैया

१—ते राणी मुनि पापथी बेसरीया लाल, फरती भव चक्कर फेर रे ।
तारा तगर मे ऊपनो केस, बनमित्र सेठ ने घेर रे ॥के०॥

जुवो जुवो बर्मविटम्बना केसरिया लाल ॥टेर॥

२—पनवती बूसे उपनो, दुगधा तम नाम रे ।
मगरवलिबना पुत्र ने, परणायो बहुमान रे ॥बेग० जुवो०॥३—मुलसेजानी ऊपरे भावि बहनी पासरे ।
यह दग्धना उद्यमी स्वामी पाप्मो त्रास रे ॥बे० जुवो०॥

- ४—मुकी परदेसे गयो, जुवो जुवो कर्म स्वभात्र रे ।
एक दिन कन्या नो पिता, जानी ने पूछे भाव रे ॥के० जुवो०॥
- ५—जानी पूर्व भव कह्यो, भारयो सब अवदात रे ।
फरी पूछे गुररायने, केम होय सुख सात रे ॥के० जुवो०॥
- ६—गुरु कहे रोहिणी तप करो, सात वरस सात मास रे ।
रोहिणी नक्षत्र ने दिने, चौविहार करो उपवास रे ॥के० जुवो०॥
- ७—वासुपूज्य भगवत नो, आप करो शुभ भाव रे ।
एम ए तप आराधता, प्रगटे शुद्ध स्वभाव रे ॥के० जुवो०॥
- ८—करजो तप पूरण थया, उजमण भलिभात रे ।
तेहती एक भव आतरे, लेसो ज्योति महत रे ॥के० जुवो०॥
- ९—इम मुनिमुख थो साभली, आराधी ते मार रे ।
ए थारी राणी थई, रोहिणी नामे नार रे ॥के० जुवो०॥
- १०—एम निमुणी हरण्या सहू, रोहिणी ने वले राय रे ।
'दीप' कहे मुनि कु भने, प्रणमी स्थानक जाय रे ॥के० जुवो०॥

ढाल ६

राग—पूज्य पधारियाए ॥

- १— एक दिवस वासुपूज्य जी ए ।
समोसर्पा जिनराज ॥नमो जिनराज ने ए ॥
- २— राय ने राणी हराखिया रे,
सीधा सगला काज ॥
नमो जिनराज ने ए ॥टेर॥
- ३— बहु परिवार सु आविया रे, वदे प्रभु ना पाय ।
श्री मुख ही वाणी मुनी ए, आनन्द अग न माय ॥नमो०॥
- ४— राय ने राणी बेहु जणाए, लीधो सयम खास ।
घन्य घन्य सजम घर मुनि ए मुर नर जेहना दास ॥नमो०॥
- ५— तपतपो केवल लहि ए, तारिया बहु नर नार ।
शिवपद अविचल पद लह्या ए पाम्या भवनो पार ॥नमो०॥
- ६— एम जो रोहिणी तप कर रे, रोहिणी नो परे तेह ।
मंगलमाल ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥नमो०॥

- ७— धन्य वासुपूज्य ना तीर्थ ने, धन्य रोहिणी नार ।
 ए तप जे भावे करे ए, पामै ते जय जय कार ॥नमो०॥
- ८— सवत् अठारे उगनसाठनो ए, उज्ज्वल भादव मास ।
 'दीप विजय' तसगाइयो ए, रही खभात चौमास ॥नमो०॥

कलश

- १— वासुपूज्य जगनाथ साहब, तास तीरथ ए थया ।
 चार पुत्री ने आठ पुत्र थी, दपती मुगते गया ॥
- २— तपगच्छ विजयानन्द पट्टधर, विजय देवेन्द्र सूरिस्वरू ।
 तास राज स्तवन कीधो, सकल सघ सोह करू ॥
- ३— सकल पण्डित प्रवच भूपण, प्रेम रतन गुरु ध्याईया ।
 कवि "दीपविजय" पुण्यहेते, रोहिणी ना गुण गाईया ॥



बोहा

- १— आदिनाथ आदिश्वर, सकल विदारण कम ।
उपकारी भवि तारवा, कह्यो चार प्रकारे घम ॥
- २— दान शील तप भावना, इण बिना मोक्ष न होय ।
तो पिण सब घत दख ता, शील समो नही कोय ॥
- ३— शील भाग्या भागे सहू, हम कह्यो श्री जिनचन्द्र ।
शीलघत जे पुरुष ने, सेवे सुर नर वृन्द ॥
- ४— जश कीर्ति फेले इला, जे ब्रह्मव्रत मे लील ।
जो सुख चाहो जीवनो, पालो शुद्ध मन शील ॥
- ५— विजय कुँवर विजयावती, शील पात्यो खड्ग धार ।
तेह तणा गुण वणवू, लिखित कथा अनुसार ।
- ६— सुणी करो सारो सभा, पर नारी पञ्चक्खण ।
पञ्च पर्व दिन आखडी करो यथा शक्ति प्रमाण ॥
- ७— जोवन वय छती जोग मे, नारी रहे जिण पास ।
बाल ब्रह्मचारी तिहु योग मे, दुष्कर दुष्कर प्रकाश ॥

ढाल १

राग— शील सुरतच सेविणे

शील तणी महिमा सुणो ॥टेर॥

- १—जम्बुद्वीपना भरत मे, दक्षिण कच्छदेशो जी ।
नगर कौशम्बी तेह मे, अमरापुरी सम कहे सो जी ॥शील॥
- २—घनाबो सेठ तिहा वसे, तिणरे विजय कुमारो जी ।
रूप कला गुण आगला, जावन वय हुशियारो जी ॥शील॥

- ३—तिण अचसर मुनि पागुरिया, समिति गुप्ति प्रतिपन्नो जी ।
आप तीरे परने तारता, लोग कहे धन्य धन्यो जी ॥शील॥
- ४—लोक आया मुनि वदवा, तिमही विजय कुमारो जी ।
धर्मकथा मुनिवर कहे, यो सभार असारो जी ॥शील॥
- ५—जम जरा दुख मरण रो, कहता न आवे पारो जी ।
नर भव पामणो दोहलो चेतो सहु नर नारो जी ॥शील॥
- ६—उत्कृष्ट्यो वन्ध कर्म नो, विषयविष विकारो जी ।
नव साख सनी मनुष्य नो श्री जिन कह्यो सहारो जी ॥शील॥
- ७—दुख अनेक अणो जोग सु, पर रमणो दुख को खानो जी ।
फल किपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवानो जी ॥शील॥
- ८—इम मुणो सहु परहर्या, विजय कुंवर जोद्धा हाथो जी ।
अहो मुनि समय लेवा ने, समय नही कृपानाथो जी ॥शील॥
- ९—जावज्जीव परनार रा, माने मुनि पचवख्खारो जी ।
स्वदारा पिण जावज्जीव नी, कृण पक्ष ना जारो जी ॥शील॥
- १०—दुष्कर काम कुंवर कियो, मुनिवर कीनो विहारो जी ।
'रामचन्द्र' कहे शील ने, धन्य पाले नर नारो जी ॥शील॥

दोहा

- १— तिण नगरी माहे वसे, अपर सेठ धनसार ।
गिजया घुमरी तेहने, अद्भुत रूप उदार ॥
- २— एकदा विजया सुन्दरी गई महासतीया के पास ।
शुक्ल पक्ष अत आदर्या, मन मे धरी उल्हास ॥
- ३— सयानी चतुरा बहु लज्जा, सोसठ बला भण्डार ।
भर यौवन मे आई तदा, शादी विजय कुमार ॥
- ४— आरण्य आरण्य महि किया, विवाह किया तिणवार ।
जेहयो विजया रंगी, तेहरो विजय कुमार ॥

हाल २

राज—मोटी जन मे मोहिनी

सुणजो जा शील सुतामणो ॥टेरा॥

- १—गोने शृंगार ममी भामा, कोई आई हो रंग महल मभार ।

नए रंग प्रिय माहरी, आई उमी हो जिहा विजय कुमार ॥गु॥

- २—कय कहे भल आविया, दिन तीन ज हो नही आवण काज ।
शु कारण कहे सुंदरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥सु०॥
- ३—कृष्ण पक्ष व्रत में लिया, इम सुण ने हो सा यई उदास ।
शुक्लपक्ष व्रत मे लिया, दुजी परणी हो माण्टो घरवास ॥सु०॥
- ४—विजय कुँवर कहे हैं प्यारी, सहजे टलियो हो अनर्थ को मूल ।
जावज्जीव व्रत पालसा नर मूरग हो रह्या छे भूल ॥सु०॥
- ५—काम भोग यहू भोगिया, काई भोग्या हो अनन्नी वार ।
तृप्त नही हुओ जीवडो, इम बोले हो तिहा विजय कुमार ॥सु०॥
- ६—कहे प्यारी प्रीतम मुनो, किम रेसी हो या छानी बात ।
प्रकट हुआ भयम लेसा, काई लडसा हो कर्मा रे साथ ॥सु०॥
- ७—करे सामायिक पोपा भेला, काई सोवे हो एक सेज मभार ।
जोवे भगनी भ्रात ज्यु, शील पाले हो खाडारी धार ॥सु०॥
- ८—मन वचन काया करी, नही व्यापे हो कभी काम विकार ।
सार घमं जाणो जिन तणो, काई दूजो हो सहू जाणो असार ॥सु०॥
- ९—नही रुची पुद्गल ऊपरे, धन्य लेखे हो जेहनो अवतार ।
“राम” कहे ढाल दूसरी, व्रत पाले हो धन्य जे नर नार ॥सु०॥

दोहा

- १— घमं ध्यान करता थका, द्वादश वर्ष जो थाय ।
किण विघ बात प्रकट हुवे, ते सुण जो चित्त लाय ॥
- २— लक्ष्मी भाग्य ने रागता, दाता सूर सुवास ।
एता छाना किम रहे, विद्वत् काव प्रकाश ॥

ढाल ३

राग—जल्हानी

- १— तिण अवसरे तिण काले दक्षिण देशे हो,
सुखकारी मुनिराज, उपकारी जिनराज ॥टेरा॥

- १—विमल केवली नामे मुनि शुभ वैसे हो जिनन्द ।
२—चम्पा परी का बाग मे आई उतर्या हो ॥सु० उ०॥
वहु नर नारी मुनिवदन परवरिया हो जिनन्द ।
३—यह ससार असार मुनि दिखलावे हो । सु० उ०॥

तन धन जीवन जाता वार न लावे हो जिनन्द ।

४—मात पिता सुत भामिनी सग न आवे हो ॥सु० उ०॥

सहु सध छोडी ने चेतन परभव जावे हो जिनन्द ।

५—विषय विकार प्रमादे नरभव हारे हो ॥सु० उ०॥

मूरख चेतन रत्न अमोलक डारे हो जिनन्द ।

६—इत्यादिक मुनि धर्मदेशना दीधी हो ॥सु० उ० ॥

सुण कर आवक अमृत रस कर पीधी हो जिनन्द ।

७—जिनदास आवक विनवे शोष नमायो हो ॥सु० उ०॥

ग्रहा प्रभजी मुझे रयणो स्वप्नो आयो हो जिनन्द ।

८—सहस्र चौरासी मासखमण मुनिराज हो ॥सु० उ० ॥

मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभु आज हा जिनन्द ।

९—तेनो यू फल दाखो कृपा करने हो ॥सु० उ०॥

मासे मुनिवर सेठ मुणो चित्त धरने हो जिनन्द ।

१०—नगर कौशम्बी विजय कुंवर गुणधारो हो ॥सु० उ०॥

त्रिकरण योगे दम्पति बानग्रहाचारो हो जिनन्द ।

११—“मुनिराम” बहे शुद्ध शील पाने नर नारो हो ॥सु० उ०॥

धन्य-धन्य जे नर तेनो ह बलिहारी हो जिनन्द ।

बोहा

१—एक सेज्या सोवे बेहु, शुद्ध पाले ग्रहाचार ।

ढादश वयं ज निसर्ग, धन्य तेनो अवतार ॥

२—चरम शरीरो महा उत्तम-विद्या ज्ञानी गुण ग्राम ।

सूणने सह विस्मय यया सह कोई कियो प्रणाम ॥

३—जिनदास मन में चितवे, जाय करू दर्शन ।

सुभ मिमीया समय लेयगो मुनिवर तियो प्रसन्न ॥

छात ४ राग—अनोया भँवरजी हो साहिबा, जालो देव घर बाघ

१—जिनदास मुनिवर बदीन हो, भविष्य नगर कौशम्बी जाय ।

यह परिवारे परगरोया हो, भविष्य दशा को मा माय ॥

धन धन तेहने हो भविष्य जे पाले ग्रहाचार ॥टेर॥

- १—नगर वीशम्बी का बाग मे हो भवियण, सेठ जी डेरो करेह ।
विजय कुँवर ना तात से हो, भवियण मिलिया हर्ष धरेह ॥ध०॥
- २—श कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुझने आज ।
घम भगपण आविया हो, मेठजी, तुम सुत दर्शन काज ॥ध०॥
- ३—विमल केवली गुण वियो हो, सेठजी, बाल ब्रह्मचारी तेह ।
मुझ दशन की मन मे लगी हो, सेठजी, ज्यो चातक वो मेह ॥ध०॥
- ४—सेठ सुनी अचरज थया हो, भ० लिया कुँवर बुलाय ।
किए भात सोगन किया हो, भ० कुँवरजी, सु थारा मनमाय ॥ध०॥
- ५—कर जोडी कुँवर कहे, हो तातजी लियो अभिग्रह धार ।
आज्ञा दीजे मुझ भणी हो तातजी, ले सू सजम भार ॥ध०॥
- ६—तात कहे नन्दन सुनो हो कुँवर जी, कठिन मुनि आचार ।
कर अग्रे कहो किम रेवे हो कुँवरजी, मेरु जितनो भार ॥ध०॥
- ७—लाख प्रकारे नही रेसु हो तात जी, ले सु सजम भार ।
वैरागी कहो किम रेवे हो कुँवरजी, लीनो सजम भार ॥ध०॥
- ८—विजया कुँवरी पण लियो हो, भवियण पाले शुद्ध आचार ।
तपजप बहु करणी करी हो, भवियण पाम्या दोई केवलज्ञान ॥ध०॥
- ९—कम खपाई मुक्ति गया, हो, भवियण प्रथम तीर्थ कर बार ।
बालब्रह्मचारी विरला ऐसा हो, भ० सुणजो सहु नर-नार ॥ध०॥
- १०—सवत् उगणीसे दशे भासमे हो, भवियण नागोर सेखे काल ।
फागण सुद पुनम दिने हो, भवियण जुगत सु जोडी ढाल ॥ध०॥
- ११—स्वामी वृद्धिचंदजी के प्रसाद सु हो भ० रामचन्द्र करी जोय ।
ओछो अधिको जे कहो हो, भ० मिच्छामि दुक्कड मोय ॥ध०॥

“कलश”

- १—शीलवत प्रभुनी शादी, श्रीमुख जिनवर भाखियो ।
शील व्रतमम अवर जग मे, नही पदारथ दाखियो ॥
- २—चौसठ सेस वर्ष मुर आयु पामे, लोक लज्जा व्रत राखियो ।
दुधर व्रत जे सधर राखे, धन धन जे रस चाखियो ॥

- ३—विजय सेठ सेठानी विजया, जैसा विरला जगत् मे ।
 धन्य धन्य मनुष्य जन्म पायो जाय विराज्या मुगत मे ॥
- ४—तेह तरणा गुण मुख—गाता, जन्म सफलो होय है ।
 गुणवत ना गुण स्रणत काने, भव भव पातक खोय है ॥
- ५—सुणवा नो गुण एहिज कहीये, कष्टुक हिरदे धारीये ।
 लीधा व्रत पे कायम रहीये नरभव अफल न हारीये ॥
- ६—ज्ञानवत ना चरण पकड़ो, अगाध भवोदधि तारीये ।
 "रामचन्द्र" आनन्द घर ने ज्ञानादिक विचारीये ॥



दोहा

- १— देव नमू अरिहत ने, सिद्ध सकल भगवन्त ।
आचारज उवज्भाय ने, प्रणमू सन्त महन्त ॥
- २— सुमत कुमत दौय स्त्री, प्रीतम चेतन राय ।
माहो माहने भगडतो, समकित साख भराय ॥

ढाल १

राग—कोयल घोली जी हजारी ढोला बाग मे

- १— सुमति घट मे आवे, या भात भात परचावे ।
पिण मूल दाय नही आवे जीवने ॥
समझावो जी म्हारा चेतन राजा जीवने ।
घर लावो जी मनमोहन स्वामो जीवने ॥टेरा॥
- २— सुमत सीख नही लागे, यो उठ उठ ने भागे ।
या कुमति प्यारी लागे जीवने ॥सम०॥
- ३— आठ पहर रग भीनो ना जाणु काई कीनो ।
या भव भव मे दुख दीनो जीवने ॥सम०॥
- ४— छाने छाने आवे या चेतन ने भरमावे ।
आ नरक निगोद ले जावे जीवने ॥सम०॥
- ५— पुण्य खजानो खाती, या पुद्गल करने राती ।
या उल्टी चाल चलाती जीवने ॥सम०॥
- ६— या छे कामनगारी, केई ठगिया नर ससारी ।
सिखावण दे दे हारी जीवने ॥सम०॥

- ७— घोको दे विलमावे, मोह मद का प्याख। पावे ।
 आ बन्दर जेम नचावे जीवने ॥सम०॥
- ८— कुमत्त लपेटा लेती, मुक्ति सु घाले छेती ।
 मैं देऊ सिखावण केती जीवने ॥सम०॥
- ९— कुमत्त कपटरी कुण्डी, या पटके दुरगत ऊ डी ।
 या अकल सिखावे भुण्डी जीवने ॥सम०॥
- १०— जडाव जयपुर मे गावे, निज चेतन ने समझावे ।
 जित आतम राम रमावे जीवने ॥सम०॥

बोहा

- १— तडक भडक कुमति कहे, करने आस्या लाल ।
 आ कुण भाई पापणी, तू बढो घर मे घाल ॥
- २— छाछ मागती आयने, बण बैठी पटनार ।
 निकल मारा घर थकी, नही तर कर सु खुवार ॥
- ३— परण पियुडो लावियो, पाँच पचारी सात ।
 जाणू कर्त्तव्य धायरा, किम बोले ऊँचे नाक ॥
- ४— मुख मोठी हृदय बटण, नही पारी प्रतीत ।
 बाप भाई छोड नही, फीट फीट हुई फजीत ॥
- ५— चेतन कहे सुमति सुणो, काई सिखाऊ होय ।
 मत छोडो पत जायसी, समेसु शोभा होय ॥

हाल-२

राग—घोड़ी तो भाई पारा वेश मे भाव जी

- कुमति रो राग छोड दो चेतन जी ॥टेर ।
- १— भाई ए घरज करया भणी, चेतन जी ।
 भाप ही चतुर गुजा हो, गुणवत्ता ॥
 ऐसा काम न कीजिए, महाराजा ।
 सोच हाँसी घर हाण हो, गुणवत्ता ॥कृमति०॥
- २— परणी परणी छोड़ो, चेतन जी ।
 कुमति गु कर रह्या बेस हो, गुणवत्ता ॥

चित्त चोरी मन खेंचियो, महाराजा ।

इण मु मन रया मेल हो गुणवता ॥कुमति०॥

३— या मु धी गुल पुरसियो, महाराजा ।

मैं स्यू पुरसियो तेल हो, बुधवता ॥

दोष न दीजे श्रीर ने, प्रीतम जी ।

परालवदगे खेल हो, महाराजा ॥कुमति०॥

४— कुमति रा भरमावीया, चेतन जी ।

ब्यू छिटकाई मोय हो, महाराजा ॥

बिन भवगुण पोया परहरो, चेतन जी ।

भला नहीं कैसी लोक हो, बुधवता ॥कुमति०॥

५— जोडे जन्मी आपरे चेतन जी ।

वातो बहिन कहवाय हो, गुणवता ॥

परी परणावो एहने, चेतन जी ।

आगी सासरे जाय हा, बुधवता ॥कुमति०॥

६— फिर परणाऊ दूसरी, चेतन जी ।

समकित छोटी बहन हो, महाराजा ॥

हिल मिल रहस्या दोय जणी, चेतन जी ।

आप उडावो चैन हो बुधवता ॥कुमति०॥

७— कुमति रो सग छोड दो, प्रीतम जी ।

आवो हमारे महल हो, गुणवन्ता ॥

स्वर्गा मे शका नहीं, चेतन जी ।

करो मुगतरी सहलहो गुणवता ॥कुमति०॥

८— जो थारा घर मे पदमणी, प्रीतम जी ।

तो किम परणीया मोय हो, गुणवता ॥

विना विचार्यो जो करो, चेतन जी ।

लोक हासी घर हाण हो, बुधवता ॥कुमति०॥

९— जडाव कहे जग जे बडा, चेतन जी ।

माने गुरु की सीख हो, गुणवता ॥

तिरिया ने तिरसी घणा प्रीतम जी ।

वरसी मुक्ति नजीक हो, बुधवता ॥कुमति०॥

दोहा

- १— मोह राजा री डीकरी, कुमति एहनो नाम ।
आप थकी लारे पड़ी, छेड़्या होवें कुनाम ॥
- २— बाप भाई ने भाएजा, काका बाबा भूठ ।
जाई जाय पुकारसी, तो लेसी खजानो लूट ॥
- ३— मत्ती सत्ताबो नाथ जी, तुम घर रहो नि शक ।
धर्म राजा कोपसी, तो काडे इगरी बक ॥

ढाल ३

राग—सौख शुद्ध मानो रे सतगुरु की

- १— विलस बदन कमति कहे हो चेतन जी ।
म्हारा भव भव रा भरतार, सार अब कीजे हो प्रीतमजी ॥
- २— पहली लाड लडाविया हो चेतन जी ।
भव बसू तोडो तार, समझ सुख दीजे हो प्रीतमजी ॥
- ३— कहे हमारे चालता हो चेतन जी ।
यँ कदीय न लोपी कार, लार ले चालो हो प्रीतमजी ॥
- ४— प्यारी लगती आपने हो चेतन जी ।
काई ए सुमति रा नाम नाथ नहीं लेवो हो प्रीतमजी ॥
- ५— मोठा भोजन जीमता हो चेतन जी ।
यँ करता सतरे साग, भाग मत सायो हो प्रीतमजी ॥
- ६— लूग सुपारी एलची हो चेतन जी ।
घारे दपेंल रसती हाथ, साय नहीं छोड़ू हो चेतनजी ॥
- ७— रग महल में पोडता हो चेतन जी ।
य करता मन री जोग, शोर तसू साया हो प्रीतमजी ॥
- ८— घोपट पासा गेतता हो चेतन जी,
मैं जाती तुमसू जीत, प्रीत नहीं छोड़ू हो प्रीतमजी ॥
- ९— भरोस भावता हो चेतन जी ।
त रगो मदा हजूर, दूर नहीं जार हो प्रीतमजी ॥

- १०— ग्राहक था सो ऊठ गया हो कुमती जी ।
खाली पड़ी दुकान, बथा मत कुको हो कुमतीजी ॥
- ११— इतना दिन नहीं जाणीयो हो कुमती जी ।
तू बैनड मे वीर, सीर थारो चुको हो प्रीतमजी ॥
- १२— गुरमुख जाण जडाव जी हो चेतन जी ।
आ करसी रग विरग, सग मत कीज हो चेतन जी ॥
- १३— सुमति सुपात्र स्त्री हो चेतन जी ।
राखो जिणसु रग, ज्ञान रस पीजे हो चेतन जी ॥

ढाल ४

राग—गोपीचंद लडका

- १— कर हुँसीयारी चेतन भारी, कीयो शील श्रृ गारी ।
कर केशरिया उरदिया जब, कुमति जाय पुकारी जी ॥
सुण बाप हमारा सुमति भरमायो प्रीतम माहरो ।
नही केवणवारा, डर नहीं राख्यो है कोई थायरो, सुण० ॥टेर॥
- २— मोह मछराल दुष्ट इम बोले, करके आख्या राती ।
देख हवाल करू चेतन का, धुजावे किम छाती जी ॥
सुण सुता हमारी, मान मोडू रे चेतन राय को ।
सुण पुत्री हमारी, गर्व गालू रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥
- ३— सात कर्म सु सल्ला विचारी, राखी जो हुँसीयारी ।
देखो अब तुम हाथ हमारा, कंसी करा खूवारी जी ॥
सुण भाई हमारा, मान मोडू रे चेतन राय को ।
सुण भ्रात हमारा, मान मोडू रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥
- ४— क्रोध मान का दिया मोरचा, तृष्णा तोष धराई ।
पाप अठारा दारगोला, तोषा दीवी भराई जी ॥सुण०॥
- ५— रागद्वेष सेना का नायक, लोभ मुसाय पलारी ।
कपट वकील तुरत भिजवायो, करो बात सब जहारी रे । सुण०
- ६— पुत्री हमारी कम विसारी, दुजी परणीया नारी ।
मन्मुख आवो चूक बतावो, देवो सावूती सारी रे ॥
सण चेतन राजा, पुत्री प्यारो रे म्हारा जीवस ॥टेर॥

- ७— खुशी हमारी परण्या नारी, करमु मन को जाण्यो ।
हुस होवे तो चढ कर आवो, चूक ला नही टाणो जो ॥
मुण दूत भतडा, जाजे सीधोरे कही जे स्वामी ने ॥टरा॥
- ८— ज्ञान का घोडा चित्तका चावुक, विनय लगाम लगाई ।
तप तलवार भाव का भाला क्षमा ढाल बधाई रे ।
सुण नाथ हमारा, हुई रे चढाई चेतनराय की ॥टेरा॥
- ९— सम्य मयम का दिया मोरचा किरिया तार चढाई ।
सज्जाय पच का दारु शीशा, तोषा दोनी चलाई रे ॥सुण॥
- १०— राम नाम का रथ सिएगार्या, दान दया को फौजा ।
हर्ष भाव से हाथी होदे, बैठा पावे भोजा जो ॥सुण॥
- ११— साच सिपाही पायक पाला, सवर की रखवाल ।
धर्म राजा का हुकम हुआ, जब फौजा आगी चाली जो ॥
- १२— धर्म राजा तो आगेवाणी, पीछे चेतन राजा ।
मोहराजा को फौजा हटाई बाजे जश का बाजा जो ॥
- १३— जो कायर था सो कम्पण लाग़ा, सठा सूर्य धीर ।
गुमति गुमलाई हम बोले, मरीया आप ने बीर हो ॥
मुण नाथ हमारी, आशा टटो नि श्वासा नाखती ॥टरा॥
- १४— तीय चारु तीर चलाया, सणण सणण सणणाट ।
मर्यो मादलीयो गोठ बीररी, बरताया सुख ठाठ जो ॥
सुण नाथ हमारा जीत हुई रे चेतन राय की ॥टरा॥
- १५— पहला हणियो मोह पिता ने, पीछे सातो भाई ।
धीरप दोनी गय ने सरे, फेरो सर्वा दुहाई जो ॥
- १६— बर्म हणो ने बेचन पाया, मुक्ति गया तराव ।
जडाव बट गुमनि चेतारे, बरण्या मगनावार जो ॥
ये गुणो भवि जीवा, गुमनि धराधो गुपति गोपवा ॥टरा॥

कलश

- १—कुमत सुमत नही वाद कीनो नही खिजायो पीवने ।
असत्य कल्पना सम्बन्ध कीनो, समझायो निज जीवने ॥
- २—छासठ साल चौढाल जोडी, जयपुर शहर मझार ए ।
द्वितीया थावण सुदि पक्ष नी, तेरस ने रविवार ए ॥
- ३—अक्षर पद कोई ढाल गाथा, बिना विचार्यो कोय ए ।
आयो वेतो श्रीकरण जोगे, मिच्छामिदुक्कड मोय ए ॥



दोहा

- १—दोष वयालीस जिनवर कह्या, चतुर लीजो विचार ।
साभल हिरदे धार जो, दोषण दीजो टार।।
- २—साधु नाम धरावे घणा, पिण गरज न सरे लिंगार ।
सून साख हिरदे घर, तो सुघरे जमवार।।

ढाल १

राग—माजी ने उरा बुलावोरे

- १—घाघाकमी रो दोषण मोटा रे, सेव्या सु पडसी टोटो रे ।
उद्देसिक पिण भारी रे, साभल ने कीजो विचारी रे ॥
- २—पुई कम दोषण लीजो रे, इण रो सग कोई मत कीजो रे ।
मिअ कम साधा ने भेलीजेरे, थापिलो केम सेवो जे रे ॥
- ३—पामणा करे घागा पाछारे, ऊजवालो बर देवे रासा रे ।
मोलरी वस्तु बहरावे रे जो सु साधु ने दोषण थावे रे ॥
- ४—ऊधारो माई ने देवे रे जिए मे भगटा घणोरा होवे रे ।
समटा पलटा करावे रे, जिए मे अजयणा घणो थावे रे ॥
- ५—सामो घाणी ने देवे रे जामे जीव जयणा कुण जोये रे ।
सादा उपाओ ने देवे रे तिण म फिर धारम्भ होवे रे ॥
- ६—मासोटून कम मेवे रे हामे तो दूषण केवे रे ।
गोरो देवे वगड मे बोने रे, ऐसा दोषण हिरदा मे तावे रे ॥
- ७—दोष पागो दार एगा रे, देवे तो काटि केवा रे ।
माधु घारा घपियो धारे रे, दोर गोतासे रटिओ कोरे रे ॥

- ८—ए दोष लगावे रागीरे, जारी भाग दशा नही जागी रे ।
ऐसो देवा मे लाभ ज जाणो रे, पण हिरदा मे ज्ञान न आणो रे ॥

दोहा

- १— साधु ढीला जो होवे, तो सेवे दोष अपार ।
पण लज्जा आवे नही, ते किण विघ उत्तरे पार ॥
- २— ऐसा साधु सेवसी, करसी वन्दना भाव ।
जारी समकित किम रहे, हिरदे करो विचार ॥

ढाल २

राग—दस दिसारो दिवलो कह्यो ए

- १—घाय नो कर्म ज आदरे, कहे आमा सामा समाचार के ।
भव जीवा साभलो रे ॥
निमित्त भाखे घणो भात सु ए, जात जणावे आप के ।
भव जीवा साभलो रे ॥
- २ मागे राक तणी परे रे, करे वेदगारी रो काम के ।
क्रोध मान माया करे ए लोभ करे घणी वार के ॥भ०॥
- ३—गुण करे दातार ना ए पेला पछे तिणवार के ।
आयो जाणो डूमडो ए लजावे साधु रो साग के ॥भ०॥
- ४— विद्या मत्र करे घणा ए चरण जोग मिलाय के ।
ए सोला दोषण कहा ए, ते सेवे ढीला साध के ॥भ०॥

दोहा

- १— दस दोष एपणा तणा टाले उत्तम साध ।
सेवे जाने ढीला कहा, उत्तगभ्ययन के माय ॥
- २— श्रावक तो डाह्या होवे, साधु होवे गुणवार ।
ते दोष लगावे नही जारा जिनवर किया वसाण ॥

ढाल ३

राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

- १— शका पडे कोई बात मे रे लाल,
तो फिर जावे मुनिराज हो भविक जन ।

हाथारी रेखा आली होवे रे लाल,
तिण कने मु नही लेवे जाएण हो ॥भ०॥

२— सचित्त ऊपर अचित्त ढाकीए रे लाल,
ये छे चौथो दोष हो ॥भ०॥
भाजन अनेरा मे घाल ने रे लाल,
इन्द्रियहीण दातार हो ॥भ०॥

३— शास्त्र पूरो परगम्यो नही रे लाल,
ते किम लेवे विचार हो ॥भ०॥
मिश्र होला उबी पुकडा रे लाल,
मक्काथी दोषण थाय हो ॥भ०॥

४— तुरत रा लिप्या आगणा रे लाल,
अजयणा घणी थाय रे ॥भ०॥
बहरता थाण टपका पडे रे लाल,
तो फिरजावे मुनिराज हा ॥भ०॥

५— दोष बयालीस मोटका रे लाल,
साभल दीजो टाल हो ॥भ०॥
सेव्यामे भोगुण घणा रे लाल,
हिरदा मे लीजो विचार हो ॥भ०॥

बोहा

१— घाहार सावे बोई सुभतो, जिणरी माटी वात ।
साया थी दोषण ऊजै, तनो गुणो अधिकार ॥

२— धर छोटी ने नीवत्या, ताण मन बेराग ।
सावा पर चित्त साय ने, गयो जमारी हार ॥

वात ४

गग—भरतेरइ तेरा तेला करे ए

१—घाहार सावे बोई सुभतो रे जिण मे मगावे दोष ।
रग इन्द्रिय वग जो होवे रे, नारी शाना नोर रे प्राणी ॥

दोषानु दीजो टाल ॥देरा॥

- २—आहार करता वखाणता रे, आरभी केव सोय ।
निरस आहार भावे नही रे, जदी वखोडा होय रे प्राणी ॥
- ३—सयोग मिलावे घणी भात सु रे, करे स्वाद रो काम ।
प्रमाण सु अधिको जीमता रे, होवे सजम रो हाण रे प्राणी ॥
- ४—क्षुधा वेदनी लागा थका रे, वैयावच्च करणी होय ।
ईर्या सोधी ने चालवा रे, सजम निभावण होय रे प्राणी ॥
- ५—कारण थी जीमे सहीरे, विन वारण नही चाय ।
कारण दोय प्रकारना रे, लेवे छण्डे मुनिराय रे प्राणी ॥
- ६—भूखा थी दया पले नही रे, जिण सु लेवे आहार ।
धर्म क्या करणी पडे रे, भूखा थी नही केवाय रे प्राणी ॥
- ७—अव आहार ने छाण्डणो रे, तेनो मुणो अधिकार ।
रोग आवे शरीर मे रे, औपघ छाडे आहार रे प्राणी ॥
- ८—उपसर्ग आवे कोई मोटको रे, देही करे उमाद ।
तिण कारण जीमे नही रे, सहज ही शांति होय रे प्राणी ॥
- ९—तप किया निर्जरा घणी रे, जिणरा वारह भेद ।
जीव दया रे कारण रे, छाण्डे आणी विदेक रे प्राणी ॥
- १०—शरीर तो होवे दुर्बलो र, जिण मे नही कोई तत ।
जदी आहार त्यागन करे रे, देव मथारो ठायर प्राणी ॥
- ११—ऐसो आचार साधु तणो रे, साभल लीजो घार ।
दोषण सगलाई परहरो रे, जिन आज्ञा विचार रे प्राणी ॥



दोहा

- १— आरीसा रा भवन में, बैठा भरत महाराय ।
वैराग किए विध पामीया, ते सुण जो चित्त लाय ॥
- २— उगी उगी नै उगीया, ठाणायग की साख ।
आऊखो मोटो हुवो, पूरव चौरासी लाख ॥

ढाल १

राग—भरतेश्वर तेरे तेला किया एम

भरतेश्वर, पुन्यतणा फल जोय ॥टेर॥

- १— सीए काले नै सीए समे जी, नगर बनीता नाम ।
लोब सह सुखीया बसे जी, मोटा राजा नो ठाम ॥
- २— राज करे तिहा भरत जी रे पट् गण्ड भुगता जोय ।
पुण्य पाप बेहु मे बीया जी, मुगत तणा फल होय ॥
- ३— भाई नयाणु जणा जी, जाण्यो है अयिर सतार ।
थी आदेश्वर जी रे आगले जी, खोखो संजम भार ॥
- ४— मोरादे जो मुगते गया जी, भाई भायना सार ।
बेयमजागी यगाणीये जी, धान मे रूम परितार ॥
- ५— मोतर माग पूरय लग जी, कुवर पदे रत्ता रोह ।
हमार गले मज्ज्यापणे जी, ह माग नदवरी जेह ॥
- ६— माट मंग दरगा बने जी, ताखो मगनी भाद ।
यग किया महु भोमीया जी, र रगो विरग रो जोम ॥

- ७— चवदे रतन नवनिध धरे जी, हय गय रथ परिवार ।
छ लाख पुरव लगे जी, घणी वरताई आण ॥
- ८— चौसठ सेंस अन्तेउरी जी, दो दो एकण लार ।
गिनती मे आई एतली जी, एकलार ने बाणु हंजार ॥
- ९— एतलारूप वेक्रे करे जी, तिणसु भोगवे भोग ।
पुण्य तणो सचो कीयो जी, तीणसु मिलीयो जोग ॥
- १०— चौसठ सेंस राजे सरु जी, सेवा करे कर जोड ।
तप वरतायो एहवो जी, किणरो न चाल्यो जोर ॥
- ११— सुर नर आण माने सहु जी, सेवा करे दिन रात ।
सात रतन छे एकेन्द्र जी, वली पचेन्द्रिय सात ॥
- १२— अडतालीस सहस्र पाटण अछे जी, ग्राम छन्यु करोड ।
वहोत्तर सेंस नगर कहा जी, दलपायक री जोड ॥
- १३— महल बयालीस भोमिया जी, चोवारा चतर साल ।
वतीस विध नाटक पडे जी, इम गमावे काल ॥

ढाल २

राग— चौपाई की

- १—सीततर लाख पुरव लग गया, जब भरतेश्वर राजा थया ।
हजार वर्ष ऊणा छ लाख, पोत्यो राज नही लागी चाखे ॥
- २—आण वरताई भरत मझार, वरस लागी छे सोठ हंजार ।
बल ज्यारो इसडो शरीर, वहोत्तर जोजन लग जावे तीर ॥
- ३—चौरासी लाख हाथी ने घोड, पैदल ज्यारे छन्यु करोड ।
चौसठ सहस्र अतेवर थइ, दीय दीय वरागणा साथे कही ॥
- ४—केस अडतालीस मे लश्कर पडे, भरीया समुद्र खाली करे ।
इसडो पडे लश्कर को जोर, तला तलावरा नाखे तोड ॥
- ५—पुरवभव इसडो दीघो दान, चवदे, रतन धरे नव निधान ।
सोना चादीरी बीस हजार, सोला सेंस रत्नारी खान ॥
- ६—पहले पोरे चे बावे धान, दूजो पहर करे निदाण ।
तीजे पोरे जावे पाक, चोथे ढगला करे अथाग ॥

७—छत्र रत्न दे लश्कर छाव, चर्म रत्न देवे नावा ठाय ।

बढई रत्न ने हुक्म ज घरे, महल बयालीस भोम करे ॥

८—अढतालीस कोस मे लाम्बी कही, बत्तीस कोस मे चौडी कही ।

इसडा इसडा आरभ पाम, तो पिण मनरा लूखा परणाम ॥

ढाल ३

राग—आजखो टूटो साघो को नहीं

१—एक जणा रे मन मे उपनी रे, भरत रे इतरो ढीसे पाप रे ।

कसीतरे मुगत सिधावसी रे, ऋषभजिनेश्वर जिणरा बाप रे ॥

जोइजोरे अन्तर जानी एहवा रे ॥टेर॥

२—भरत तिए पुरुष ने बुलायने रे, तेलरो वाटको दीघो हाथ रे ।

टवयो पडे तो इणने मारजोरे, ढोई गावढीया दीघा साथ रे ॥

३—घोरासी चोहटा मे फेर जो र, जो इण राह्या निज प्राण रे ।

राजा रा मुडा यने भायने र, तुरत वाटको दीघो मेल रे ॥

४—भाव यतावो चोहटा तणो रे, बैपारी बीसा बीसा भाज रे ।

तमासारी सखर मुझने नाही पडी रे, मै तो नीठ जीव राह्या

महाराज रे ॥

५—घोरी नजर सागी जिम वाटके रे, तँ तो टाल्या छे घातमदोष रे ॥

॥ तो घैठो छु इण भोग मे रे, पिण मारो तो नजर सागी मोबर रे ॥

ढाल ४

राग—भुहारी-(भीमूरी)

१—भरत बहे माया मणी, मारी घाण मानो कर जोट ।

घाप मरजादा जो रहो, मारा मुलक दीजो तुमे छोट हो भाई ॥

मै तो घाज पेसी बह्यो नहीं ॥

२—बसता बुंवर इसही बहे, मां ने दीयो बाये जी राज ।

मांने घाण भावतां पाँते, मुगड़े नी बाये साज हो भाई ॥

पाँरा दीयो जट रह्यो ॥

३—बसता भरत इसही बह, मांरे पुण उदय हुमा घाज ।

साण माया पिण बाये गही, ग्हारे पच रत गर माट हो भाई ॥

तिण बारण पाँत बहू ॥

- ४—अठाणु मिल एकठा नै चाल्या आदेश्वर पास ।
भरतेसर करडो घणो, मारो झगडो दीजो मेट हो बावा ॥
मैं तो हाथ जोड ने अरजी करा ॥
- ५—वलता ऋषभ जी इम कहे, यें तो सुणो हो बालूडा घात ।
कजीया ने झगडा छोडदो, यें तो करो मुगत रो साथ बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो रे बालूडा, तुमे चेतो चेतो रे बालूडा ॥
- ६—राज घणो ही ज भोगव्यो, घणी वरताई आण ॥
दीक्षा लोनी दीपती थारा, सरसी काज परमाण ॥हो बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥
- ७—आयो छे जीव एकलो, ओ तो जासी एकाएक ।
किसैं भरोसैं भूलिया तुमे आणो मन विवेको बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥
- ८—जग को कीणरो नही, यो तो स्वार्थीयो ससार ।
साधपणो शुद्ध आदरो, थारो होसी खेवो पार ॥ बालूडा ॥
तुमे बुझो बुझो ॥

बोहा

- १— अठाणु सजम लीयो, बाहुबल सेती राड ।
पांच प्रकारे युद्ध किया, चक्र रत्न की आड ॥
- २— मूठ उठाई मारवा, शकेन्द्र पकडीयो हाथ ।
बाहुबली सोचो तुमे, लोच कियो घर खात ॥

ढाल ५

राग—महासतीया जी, धन पारो अवतार

- १— बाहुबल सजम लीयो रे, साचे मन वैराग ।
भरतेसर इम विनवे हो बधव, बार बार पगे लाग । हर्षधर ॥
बधव, बोल जो हो ॥
- २— बधव बोल जो हो, थाने बावा जी री आण ।
ये तो षण्डित चतुर सुजाण, मोसु मत करो खेंचाताण ॥
रे चतुर नर, बन्धव ॥
- ३— ये जीत्या हू हारीयोरे, देवता भरसी साख ।
थारा सरीखो मारे को नही हो, बधव, मारा सरीखा थारें लाख ॥
हरप घर बधव बोल

- ४— माये सूरज आवीयो रे, पसीने भीनो गात ।
उठो नी भोजन करा ओ बधव, खारक दाख नवात ॥
हरषधर बधव
- ५— अठाणु मिलने एकठारै, मुझने लोभी जाए ।
ते पीए तज ने निसर्या ओ बधव, ज्यू वरसो ला रो छाए ॥
हरषधर बधव
- ६— खीलो नाछू तोडने रे जीएरी बघारु बेल ।
आवे नही अवधशाल में जी, तो जाओ आहूए पर ठेठ ॥
हरषधर बधव
- ७— भाभीया केरा ओलु भा रे, ते किम सहसू शरीर ।
भाता रा पग बहे नही ओ बधव, थाने मेसी बन माय ॥
हरषधर बधव
- ८— घें हों मांरी भातमारे, घेंही ज मारी बाह ।
दिशा सुनी माया बिनाहो बधव, चालोनी भावणो घरमाह ॥
हरषधर बधव
- ९— बोलपणा हीज बोलीमार, भरतेसर महाराय ।
पण हाथीदात ज निसर्या र किम पसे भुग माय ॥
हरषधर बधव
- १०— अहवार्या रो सिर सेयरी रे, भरतेसर महाराय ।
सिद्धा करम रापाय ने जी, विमल बेयली गुण गाय ॥
ध्यान घर बाधव ॥

सीरठा

- १— गच्छ गच्छ बेरो राज, भुग भरतेसर भोगये ।
हिये गुपरगो बाज, एव माता यई माभसो ॥
- २— धैठा महम मगार, पटी हापरी मूदही ।
देही सीगे अमार, अजियोप्या भरतेमगे ॥

ढाल ६

- १—आभरण अलकार सवही उतार्या, मस्तक सेती पागी ।
आपो आप थईने बैठा तो, देहो दीसे नागी ॥
भरत जी—भूपत भया र वरागी ॥टेर॥
- २—अनित्य भावना इसडी जो भाई, चार करम गया भागी ।
देवता दीघो ओघो ने महपत्ति, जिनशासन रा रागी ॥
- ३—साग देख भरतेसर केरो, राण्या हसवा लागी ।
इण हसवारी खबर पडेली, थै रहीजो मासु आगी ॥
- ४—चौरासीलाख हय वर गयवर, छिन्यु कोड छे पागी ।
लाख चौरासी रथ सगरामीक तत्खीण होय गया त्यागी ॥
- ५—तीन करोड गोकुल घर दूजे, एक करोड हल त्यागी ।
चौंसठ सेंस अन्तवर जाके, पिण सूरत, मुगतसू लागी ॥
- ६—चार करोड मण अन्न नित्य सीभे, दस लाख मण लूण लागी ।
चौंसठ सेस राजा मुख आग, तत्खीण दीघा त्यागी ॥
- ७—अडतालीस कोस मे पडे लसकर, दुश्मन जावे भागी ।
चवदे रतनज आजा माने, तत्खीण हुआ त्यागी ॥
- ८—सभामे बोल्या भरतेसर, उठ खडा होवो जागी ।
ए लोक ऊपर निजर मा आणो, निजर करो तुमे आगी ॥
- ९—वचन सुणी भरतेसर केरा, दस सेंस उठ्या जागी ।
कुटुम्ब त्रिया ने हाट हवेली, रची ससारसू त्यागी ॥
- १०—सगलाई रह्या छे झूरता, ससार दियो छे त्यागी ।
दस सेंस मुकट वद राजा, लीयो मुगतरा भागी ॥
- ११—लाख पूरव भरतेसर केरो, केवल ज्ञान अथागी ।
चौरासी लाख पूरव आयु भोगी, मुगत गया सीभागी ॥

ઢાલ ૧

- ૧—અહો અરણક જો માત પિતા સઘાતે હો સજમ લીધો,
મુનિ જ્ઞાનમણી ઇન્દ્રિય પાંચો હી યે નિજ વસ કર લીધી ॥ટ્ટેર॥
અરણક તાત ને સુસ દાઈ વલ્લભ લાગે નિજ માઈ,
હિયેહિત સુ ઘોલાવે ગુરુ માઈ ॥અહો॥
- ૨—અરણવ ગોચરીયા તો નહી જાવે, તાત સરસ આહાર વેર લાવે,
પછે અરણવ ને સવરાવે છે ॥અહો॥
- ૩—અરણવ તાજો તાજો ગાવે છે, યત્ની માતો માતો વળીયો છે,
અવ ગોરો ઘયો ઘણો ગાતો છે ॥અહો॥

વોહા

- ૧ — અરણવ પાલ્યા ગોચરી, તે મુનિવર આદેશ ।
મુગ મુમતાણી સાથ જો, તગર તિયો પ્રવેશ ॥
- ૨ — એક નાર સરણી તિહા, તિયા મહત્ત મેં યુનાય ।
ઘપન ભાગે પ્રેમગુ, તે મુન જો તિત સાય ॥

ઢાલ ૨

તાત—પૂર્વજન પેલી

અહો મુનિવર જો, જોરા જોગે તિરણ વેગ મમાયો
દુનો અવગર જો, મેર વગી ને દિગ મૂ મેત મ આના ॥ટ્ટેર॥

- १—जोवन थाको नीको छे, रूप मारो पिण तीसो छे ॥
ओ अवसर आणी ठीको छे ॥अहो मु०॥
- २—ओघा पातरा परहरिये, मुझ ऊपर मैया करीये ।
आप सेजा ऊपर पग धरीये ॥अहो मु०॥
- ३—मुण्डो परो खोली जे, लज्जा परी मुकी जे ।
अव रग रगीला खेल खेली जे ॥अहो मु०॥
- ४—वचन सुणी मुनिवर डगीया, आहार ले पाछानही वलीया ।
इत सुन्दर सेती जाई मलीया ॥अहो मु०॥

दोहा

- १—केल करे अरणक तिहा, माता जोवे वाट ।
अजु अरणक आयो नही, का सू वणीयो घाट ॥
- २—के मुनिवर कामण छल्यो, के कोई उपजी खेद ।
तिण कारण आयो नही, काइक वात में भेद ॥
- ३—बेटो जोवा कारणे निकली शहर मझार ।
गली गली फिर जोवती, जोवे शहर वजार ॥

ठाल ३

राग—तैहीज

- अहो अरणक रे, अरणक अरणक करती ओ माता फिरे ।
अहो मुनिवर रे, मुनिवर मुनिवर करती ओ माता फिरे । टेर ॥
- १—अरणक अरणक करती थी, अरणक रो ध्यान धरती थी ।
घर घर लोका ने फिरती थी ॥अहो अ० ।
 - २—छोरा छोरी चगावे छे, अरणक तोने बुलावे छे ।
आरज्या जिण तिण साथे जावे छे ॥अहो अ०॥
 - ३—अरणक माता दीठी छे, हिवडा लागी मीठी छे ।
मैं काम कियो अनीति छे ॥अहो अ०॥
 - ४—सुंदर का सुख परहरीया माता के तो पाय पडीया ।
अहो अरणक आ ते सू करीया ॥अहो अ० ।

दोहा

- १— अहो अरणक ते सू कियो, काई तू विलम्बो नार ।
थोडा सुख रे कारणे, थे मेल्यो सजम भार ॥
- २— एवी त्रात सुणता, थका, मुझने आवे, लाज ।
सजम मारग आदरो, ज्यू थारा सुधरे काज ॥
- ३— अब विगाडन नार छे, खोटी इणारी जात ।
इणरो सग तज दीजिये, इण पर दाखे मात ॥
- ४— चिरकाल सजम पालवा, पोछ नही मुझ माय ।
अनशन करु मातजी, मैं शीला ऊपर जाय ॥

ढाल ४

राग—तेही

- मुनि अनशन करी, अराध्यो सहु शीला पर धारुं ।
अरु ध्यान धरी, आतम कारज दण रीते हूँ सार ॥ढर॥
- १—अरणक अनसन करीयो छे, ताती सीला पर पढीयो छे ।
जिण आतम ध्यान धरीयो छे ॥मुनि०॥
- २—जिण निज चेतन बस पीघो, समता रस जिण पीघो छे ।
मुनि मन बछित फल सीघो छे ॥मुनि०॥
- ३—मुनि रे हुवा घुसल रोमो, तिम साधु ने बरयो एमो ।
पिण मामण रो सुग परहरवो ॥मुनि०॥



दोहा

- १— तिण काले तिण अवसरे, सुधर्मं स्वर्गं मझार ।
शकेन्द्र छे मोटका, उमराव चौरामी हजार ॥
- २— तिहा बैठा वखाणियो, चन्नी तणो स्वरूप ।
देव सहु अचरज हुआ, मानी वात अनूप ॥
- ३— एकण रे मन सशय हुआ, करु परीक्षा कोड ।
अघतणो छे कीडलो, वाईक होसी खोड ॥

'ढोल १

राग—मान न कीजे रे मानवी

- १—रूप कियो ब्राह्मण तणो, हाथ मे डागली झाली रे ।
डिगमिग वो पगल्या भरे, हथिणापुर मे आयो चाली रे ॥
देव करे रे ऐसी पारख्या ॥टेर॥
- २—नसा जाला दीसे रे जूई जुई, लिलरीया पडगई काया रे ।
वरसो मे वण गयो डोकरो, चाल्यो जावे थोडो रे ॥देव०॥
- ३—भु डा मे से लाला पडे, ज्योत शाकी दीसे थोडो रे ।
बड्या धूजत डोकरो, थर थर धूजे छाती रे ॥देव०॥
- ४—इम करतो ते डोकरो, आयो पोल श्री राजा रे ।
कहे पोलिया ने डोकरो, मने रूप वतावो महाराजा रे ॥देव०॥
- ५—नीठ नीठ हु तो आवियो, खू खू कर तो खाँसो जी ।
ढील न कीजे भाई पोलिया, निकले म्हारो सासो जी ॥देव०॥
- ६—माथे पोट जूत्या तणी, पेट पेस गयो ऊण्डो जी ।
वारा वरसा हु तो चालियो, आवतो होय गयो बूढो जी ॥देव०॥

- ७—जाय जणावो राय ने, वेग जवाव मगावो जी ।
राजा जी जो देरी कहे तो, बेठा आय चेतावो जी ॥देव॥

दोहा

- १— राय रजा दीघा थका, अन्दर आयो देव ।
कहा जैसा ही देखिया, सुर नर सारे सेव ॥
२— इम दोल्यो तीहा डोकरो, तव गर्वाणो भूप ।
स्नान करी चौरी वेसु, जद थू देखजे रूप ॥
३— बलतो डोकरो इम कहे, हा महाराजा सार ।
जीवीत रे सु तो देखसु, थें रूप करो दिल धार ॥

ढाल २

राग—देव्यो खोब डो

- १—स्नान करी ने ऊठीयो रे हा, चन्दन चरब्यो अग के ॥
गरभ्यो राजवो ॥टेर॥
२—भारी शिर पावज पेरियो रे हा, नितब सजोयो चग के ॥ग॥
३—रतन जडित सिहामने रे हा, सभा विराज्यो पाट के ॥ग॥
४—चौसठ सहस्र राजा मिल्या रे हा, लाग राखो गह घाट के ॥ग॥
५—शरद पूनम को चद्रमा रे हा, तारा बीच जिम खद के ॥ग॥
६—यू शोभे भूपति तीहा रे हा, छ गण्ड केरा नाय के ॥ग॥
७—पान धोडी मुस चावता रे हा, तजर मभा मे फेर के ॥ग॥
८—माद आयो तिहा डोकरो रे हा, हाजिर वीघो साम के ॥ग॥
९—रूप देग तिहा डोकरो रे हा, मायो दीघो धून के ॥ग॥
१०—राम पहे गुण डोररा रे हा, यो दीगे वृण के ॥ग॥
११—मने वृण दीते राम जी रे हा, अब मो पडियो गाँव के ॥ग॥
१२—गोच वीगो यो टोकरा रे हा, पार्द पटी रूप म पूर के ॥ग॥
१२—सटा पटी माना मु टा तणी रे हा, जो रा पीन म भूष के ॥ग॥

दोहा

- १— विगदयो रूप ज दगो, मा बिं गग्गाय ।
तय रिगो मे रूप ना, पायो हायो हाव ॥

- २— क्षिण मे रोग ज ऊपनो, पूर्व भवना पाप ।
घृग् घृग् ए ससार ने, मन मे चिते आप ॥
- ३— अब छिटकाऊँ राज ने, लेसु समय भार ।
ऋद्धि त्यागी छ खण्ड तणी, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल ३

राग— भगल कमला कदए

- १—चक्री चौथा नरेशर जाण ए, सूत्र ठाणाभग मे आण ए ।
घणा हुता सपत्ति साज ए, भोगवता छ खण्ड नो राज ए ॥
- २—हय गय रथ छे जु जुवा ए, लाख चौरासी गिनती मे हुवा ए ।
पैदल छन्यु करोड ए ज्याने वदे बेकर जोड ए ॥
- २—पाटण अडतालीस सहस्र ए, ज्या रे उणायत नही लेस ए ।
नगर बहोत्तर हजार ए, ज्या रे चौरासी बाजार ए ॥
- ४—सोना रूपारा उछाव ए, ज्या रे आगर बीस हजार ए ।
चवदा रतन छे मोटका ए, ज्या रे कदीयन आवे टोटका ए ॥
- ५—पेली पोहर बावे धान ए, दूजी पोहर करे निदान ए ।
तीजी पोहर पाको धान ए, चौथी पोहर ढिगला किया आण ए ॥
- ६—रसोडारो अनुमान ए, सीझे चार कोड मण धान ए ।
सेर आटो पैसा भर लूण ए, लागे दस लाख नही ऊण ए ॥
- ७—भाणे बैठणरी जोड ए, परिवार पूरो सात करोड ए ।
पखाल्या छत्तीस हजार ए, तीन सौ साठ रसोई दार ए ॥
- ८—मोटी पदवी चक्री तणी ए, सुख सपदा ऋद्धि पामी घणी ए ।
तपसा कीधी धोर ए, जिनसे किणरो नही चाले जोर ए ॥
- ९—रूप जीवन रो जोम ए, ज्यारे महल बयालीस भोम ए ।
चारु दिशा शोभे जालिया ए, चोवाराने चत्तर सालिया ए ॥
- १०—लग रह्या सुखारा ठाट ए, ज्यारे लारे घणो गहघाट ए ।
जग माहे सुरतर वेलडी ए, ज्यारे चौमठ सहस्र अतेउरीए ॥
- ११—दो दो एकण लार ए, एक लाख ने बाणु हजार ए ।
नाटक वृन्द वत्तीस ए, मोटा राय नमावे शीप ए ॥

- १२—दिन दिन अधिको जोश ए, 'फौजा पडे अडतालीस कोस ए।
बल ज्यारे इसडो शरीर ए, जावे बहोत्तर जोजन लग तीर ए॥
- १३—आण वरेंताई भिरत भिक्षार ए, वरस लागे दस हजार ए।
उत्थापे नही कोई आण ए, ज्यारा वचन करे प्रमाण ए॥
- १४—पृथ्वीरा प्रतिपाल ए, ज्यारे नही पडे वरतीमे काल ए।
न्याय करे निर्लोभ ए, ज्यारी फैली जगत माह मोभ ए॥
- १५—तेरा तैला किया अखण्ड ए, ज्या साध लिया छ खण्ड ए।
छ खण्ड मे छत्र एक ए, ज्याने सेवे सुर अनेक ए॥
- १६—चक्रवर्तीनी ऋद्धि जोड ए, जणा छिनमे दीनी-छोड ए।
रूपरो फीनो गर्व ए, देही देखता बिगडी-सर्व ए॥
- १७—काची काया रो वीसो विश्वास ए, कुण राखे उणरी आस ए।
ज्या छोडी पापारो-सीर ए, सजम सेई ने हुआ सुरवीर ए॥
- १८—ध्यायो णुबल ध्यान ए, जिनसे पाया केवलज्ञान ए।
चक्री चौथा सनत्कुमार ए, अते जासी मोक्ष ममार ए॥

बोहा

- १— सयम भार लिया पछे, राण्या हुई दिलगीर।
करे राय से विनती, दु से जिसाते पीर ॥

ठाल ४

राग—धी शांति त्रिनेश्वर भक्ता नुबल अमार ॥

- १— सांभल महाराजा, रिम छोछे निराधार।
कुण ठग धावें मिनीया, लीतो माया रो मार ॥
- २— बिा अवगुण ताम जी, क्या हमो विमारो।
बनी सात तरेगर, बेगा ओ मट्ट पपारो ॥
- ३— कुण धूर्त भग्माया, भामलु मीया भारी।
कुण रिम धोग धावें, रिम मे हमे रिमारो ॥
- ४— बनी ती गुण बंसा, कुण सीम न मारी धांगी।
कुण भुग्नी मांगी, रिम मट्टा जगदारी ॥

- ५— किटकी नही कीजे, किटी ऊपर भारी ।
कोई दोष बतावो, मत मारो एकलारी ॥
- ६— पिया पिहर सासरो, थें सव ने सुखकारी ।
गिरवा गुणवता, सूरतरी बलिहारी ॥
- ७— यह महल झरोखा, नाटकना झणकारी ।
सयम छे दोहिलो, सेहिलो छे घरवारो ॥
- ८— सुर सहस्र पञ्चीसो, छत्र चँवर शिर धारो ।
तीन ऋड गोकुल घर, एक करोड हल सारो ।
- ९— विल-विलती राण्या, फिरे मुनिरी लारो ।
इन्द्र तव आई प्रतिबोधे तिणवारो ॥
- १०— यह मोटा मुनिश्वर, छ काया रा प्रतिपालो ।
थारे काम न आवे, यू कही गया देव पालो ॥
- ११— गैद्य रूप करी ने देव आयो तिण वारो ।
इण विधी ते बोले, करण परीक्षा सारो ॥
- १२— ऋषि रोग गमाऊँ, कचन करु देह सारी ।
कर्म काट्या ही कटसी, किसी पोछ सुर थारी ॥
- १३— सातसो वर्ष चारित्र्य, पात्यो निरतिचारी ।
कर्म आठ काटने, पायो केवल भारी ॥
- १४— जिन धर्म दीपाई, पहुँचा मोक्ष भझारी ।
पीपाड चौमासो, कहे “चौथमल” अणगारी ॥



बोहा

- १— यह्रमान बीसे नमु, जयवत्ता जगदीश ।
प्रतिशयवन्त अनन्त गुण, तारक विश्वावीस ॥
- २— दान शील तप भावना, दण जुग मे धीकार ।
तिरीयाने तिरसी घणा, पामे भवोदधि पार ॥
- ३— प्रत सहृई मोटका, शील समो नहि कोय ।
जे नर नारी पालसी, मोक्ष तणा फल होय ॥
- ४— सांची तिमोकसुन्दरी, राची शील सुरग ।
तेह तणा गुण यणंबु, प्राणी अधिक उमंग ॥

ठाल १

राग—हारीशारि

- १—जम्बूद्वीपरा भरतमें, सुदणाल पुर अभिराम ॥सनेली०॥
ग्याय गुणे करि निर्मलो, अरिभदेन भूप नाम ॥स०॥
- २—शील तणी महिमा गुणो, एक भान नरनार ॥स०॥
दण भव परभव गुण सहे, वरसे जय जयवार ॥स०॥
- ३—गुणदल मेठ निहायगे सरगधी नामे मार ॥स०॥
तेहने गुन दोय दीयगा, सागरदत्त विनगार ॥ग०॥
- ४—जीवा वय प्राया पका, सागरदत्त मे निग पुरमाव ॥ग०॥
पावय सट तना गुना, "सुन्दरी" दी परगाव ॥ग०॥
- ५—वगण पुरी बिदत्त वगे 'पद्मधा' मार उदार ॥ग०॥
देटी जितोद सुन्दरी सा परगाई विनगार ॥ग०॥

- ६—सुख विलसे ससारना, भाया रे घणो प्यार ॥स०॥
मात पिता परभव गया, मुत करे घरनी सार ॥स०॥
- ७—व्योपार करे परदेश मे, वारे वर्ष नो करार ॥स०॥
एक भाई घरे रहे, एक परदेश मुझार ॥स०॥
- ८—छोटो भाई परदेश मे, ज्येष्ठ बन्धु घर बसन्त ॥स०॥
लघु भाईनी भार्या, देखी स्नान करन्त ॥स०॥
- ९—रूपे अप्सरा सारखी, देखी ने व्याप्यो काम ॥स०॥
ए नारी बिन भोगव्या, जावे जन्म निकाम ॥स०॥
- १०—वस्त्र गेणा मोकल्या, दासी साथे तेह ॥स०॥
जेठ पिता सम जाणने लीघो हर्ष घरेह ॥स०॥
- ११—अत्तर फुलेल सुखडी, करे काम उदीप ॥स०॥
दासी साथे दे करी, मोकल्या सती समीप ॥स०॥
- १२—सती देख मन चितवे, जेठ कामी अपार ॥स०॥
सर्व वस्त्र फेंकाय ने दासी ने दियो धुत्कार ॥स०॥
- १३—दासी कह्यो जाय सेठ ने, वा नही माने वयण ।स०॥
करी खुवारी मारी घणी, अरुण करीने नयण ॥स०॥

दोहा

- १—
स्वरु आई वहे, चित्त लाई घर नेह ।
मनचाही नीला करो, जीवन लाहो लेह ॥
- २—
गेलादिक मागे जिके, हाजर कर तयार ।
हु छु किकर ताहरो, तु मुझ प्राणाधार ॥
- ३—
जेठ वचन सुण सुन्दरी, कीघो कोप करूर ।
परणी वञ्छे पारकी फिट पागडो मे धूर ॥
- ४ -
सती निअ छ्यो जेठ ने, रति न मानी कुजात ।
कही जाय आरक्ष ने आत वधूनी वात ॥
- ५—
रूप प्रशसा साभली, कोटवाल तिणवार ।
सती बोलावी ने कहे, करमो सु इकवार ॥

दोहा

- १— विहरमान बीसे नमु, जयवन्ता जगदीश ।
अतिशयवन्त अनन्त गुण, तारक विश्वावीस ॥
- २— दान शील तप भावना, इण जुग मे श्रीकार ।
तिरीधाने तिरसी घणा, पामे भवोदधि पार ॥
- ३— व्रत सहई मोटका, शील समो नहि कोय ।
जे नर नारी पालसी, मोक्ष तणा फल होय ॥
- ४— साची तिलोकसुन्दरी, राची शील सुरग ।
तेह तणा गुण वणंबु, आणी अधिक उमग ॥

ढाल १

राग—हमीरीया री

- १—जम्बूद्वीपरा भरतमे, सुदर्शण पुर अभिराम ॥सनेही०॥
न्याय गुणे करि निर्मलो, अरिभर्दन नृप नाम ॥स०॥
- २—शील तणी महिमा सुणो, एक बना नरनार ॥स०॥
इण भव परभव सुख सहे, वरते जय-जयकार ॥स०॥
- ३—पुष्पदन्त सेठ तिहावसे, सत्यश्री नामे नार ॥स०॥
तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त चित्रसार ॥स०॥
- ४—जौवन वय आमा थका, सागरदत्त ने तिण पुरमाय ॥स०॥
धनवत सेठ तणी सुता, "रूप सुन्दरी" दी परणाय ॥स०॥
- ५—वसन्त पुरी जिनदत्त वसे 'घमथो' नार उदार ॥स०॥
बेटी तिलोक सुन्दरी, सा परणार्ई चित्रसार ॥स०॥

- ६—सुख विलसे ससारना, भाया रे घणो प्यार ॥स०॥
मात पिता परभव गया, मुन करे घरनी सार ॥स०॥
- ७—व्योपार करे परदेश मे, वारे वर्ष नो करार ॥स०॥
एक भाई घरे रहे, एक परदेश मुम्मार ॥स०॥
- ८—छोटो भाई परदेश मे, ज्येष्ठ वन्धु घर वसन्त ॥स०॥
लघु भाईनी भार्या, दखी स्नान करन्त ॥स०॥
- ९—रूपे अप्सरा सारखी, देखी ने व्याप्यो काम ॥स०॥
ए नारी बिन भोगव्या, जावे जन्म निकाम ॥स०॥
- १०—वस्त्र गेणा मोकल्या, दासी साथे तेह ॥स०॥
जेठ पिता सम जाणने लीघो हर्ष घरेह ॥स०॥
- ११—अत्तर फुलेल सुखडी, करे काम उदीप ॥स०॥
दासी साथे दे करी, मोकल्या सती समीप ॥स०॥
- १२—सती देख मन चितवे, जेठ कामी अपार ॥स०॥
सर्व वस्त्र फँकाय ने दासी ने दियो धुत्कार ॥स०॥
- १३—दासी कह्यो जाय सेठ ने, वा नहीं माने वयण ॥स०॥
करी खुवारी मारी घणी, अरुण करीने नयण ॥स०॥

बोहा

- १—
स्वर आई वहे, चित लाई घर नेह ।
मनचाही लीला करो, जीवन साहो लेह ॥
- २—
गेणादिक मागे जिके, हाजर कर तयार ।
हु छु किकर ताहरो, तु मुझ प्राणाधार ॥
- ३—
जेठ वचन सुण सुन्दरी, कीघो कोष करूर ।
परणी वञ्छे पारकी फिट पागडी मे धूर ॥
- ४ -
सती निभ्रँ छ्यो जेठ ने रति न मानी कुजात ।
कही जाय आरक्ष ने आत वधूनी वात ॥
- ५—
रूप प्रशसा सामली, कोटवाल तिणवार ।
सती बोलावी ने कहे, करमो स इकवार ॥

- ६ - सती निकायों तेहुने, फिटकायों सीवार ।
डाकण आल दोहु दर्ई, काडी पुर रे बार ॥

ढाल २

राग—हिंवे राणी, पद्यावती

- १— तिमिर व्याप्यो रवि आथम्यो, डरावणी रात ।
कने सहाई को नही, सिमरे जगनाथ ॥
- २— मुझ शरणी एक शीलरो, घरती मन रे माय ।
क्षुद्र जीव नो भय ना हुवो, शील तणे सुपसाय ॥
- ३— आगेई सतीया भणी, पडिया कष्ट अनेक ।
अजना, चन्दना, द्रौपदी, सीता दमयन्ती देख ॥
- ४— इण उपसग सु उबर, तो लेणो मुझ आहार ।
नही तर म्हारे आज थी, जावज्जीव परिहार ॥
- ५— बले जेठ आई कहे, सुख विलसो मुझ साय ।
तो हु ले जाऊ घर भणी, सती नही मानी बात ॥
- ६— बासी चम्पानगर नो, सेठ तो गुणपाल ।
मारग वेतो आवियो दीठी अधमरी बाल ॥
- ७— अचरज पाय जन मोकल्यो, सती पामी आस ।
वाई नाम बोलावता, हुवो चित्त हुलास ॥
- ८— वितक विवरो साम्भली, लायो आपरे गेह ।
धर्मण वाई थाप ने, राखे अधिक सनेह ॥
- ९— कोतवाल ने जेठ ते, गलतकोठी थाय ।
घरसु न्यारा कर दिया, पाप उदे हुवा आय ॥
- १०— सुखे समाधे सती तिहा, घरती धर्म नो ध्यान ।
तिण पग छेह सेठ रे, हुवो पुत्र प्रधान ॥
- ११— सेठ विशेष राजी हुवो, गोद खिलावे ले बाल ।
सती शील सरोवर झुलता, वितो कितोयक काल ॥

वोहा

- १— एक दिन मुख्य गुमासते, देखी ईण रो रूप ।
काम फन्द माहें पड़्यो, चित्त मे सागो भूष ॥

- २— हांस कितौल करे घणी, सती निर्भ्रञ्छ्यो तेह ।
हैं कहि सु वावा भणी, तो तुम देसी छेह ॥
- ३— तिलोकसुन्दरीना वचन सुणी, चमक्यो चित्त मभार ।
इण ने आन देई करी, काहु घर रे वार ॥
- ४— निर्भय सुती देखने, रुद्र हाडका लाय ।
सती आगल बिखेरने, सेठ ने बोल्यो आय ॥

ढाल ३

राग—मोतीडारो गजरो भुलीए ।

- १—तुम सुणो सेठजी सेणा, मुझ मानो कह तुम वेणा ।
ए डाकण छे घुत्तारी, में तो परखी रयण मभारी ॥
- २—ये नीठ हुबो छे पूत, एह राख्या होसी अपूत ।
हु तुमरो भलो चाहु तिणथी ए वात चेताऊ ॥
- ३—इण मे थका जाणो काई, तो चालो देऊ वताई ।
सेठ चिते मन माय, किम लागी पाणी मे लाय ॥
- ४—सेठ ने सती कने लावे, रुद्र हाड मास देखावे ।
सेठ चमक्यो चित्त माई, नारी जात री खबर न काई ॥
- ५—सेठ कर रह्यो थागा योगी, ए नार नही घर जोगी ।
रखे बाल भके आ म्हारो, तो वेगी काहु घर वारो ॥
- ६—एतले सती ऊठ जागे, रुद्र हाड मास पड्या मुख आगे ।
सती देखी ने विभासे, भाधी लेख लिख्यो जिम थासे ॥
- ७—हिवे सेठ कहे बुलाई, इण घर सु जावो बाई ।
सुण वात हुई दिलगीर, इणरे नैणा ढलवया नीर ॥
- ८—तुम सु जीर नही हो तात, थारी खुशी पणारी दात ।
सेठ री छाती मराई, राख्यारी रीत रहे नही काई ॥
- ९—सेठ सहस्र मोहरा पकडाई, सती चाल बाजार मे आई ।
'पुज्य सबल दास' कहे सुणो प्यारा, भाई पाप सु हुई जो न्यारा ।

दोहा

- १— क्षत्रीय चम्पक सेठ रे, घरणो दीनो आय ।

मागे मोहरा पाप मे नही दण ने घर आय ।

- २— लोका मिल समझावियो, पिए नही माने तेह ।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन घर नेह ॥
- ३— बाई कर राखो घरे तो, झगडो देसु मेट ।
दीनी मोहरा पाच से, ले आयो घर ठेट ॥
- ४— सुखे रहे बाई ईहा, जपे जिनेश्वर जाप ।
गुमास्तो कोढी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ॥

छाल ४

राग—लहरीपानी

- १—लखी वणजारो एकदा, आयो इणपुर माही हो ।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, बेंचे खरीदे उच्छाही हो ॥
कामी मतवालो ॥टेर॥
- २—लखी विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो ।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ॥का०॥
- ३—विणजारो पुछे सेठ ने, आयुम घर कृण छे नार हो ।
धर्म बेटी माहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ॥का०॥
- ४—आ नारी आयो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो ।
ए उपकारण माहरी, तुमने आयु बेम हो ॥का०॥
- ५—छेवट रहे नही ताहरे, क्या खोवे दाम निकाम हो ।
द्रव्य दस सहस्र आयुशु, सुण लोभ व्याप्यो चित्त ताम हो ॥का०॥
- ६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पूछे कर जोड ।
ये मोल लेवो किये कारणे, तद नायक बोले घर कोड हो ॥का०॥
- ७—बीजी वाछा नही माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो ।
रसोई कारण मोलवु, ए मुझ मनरी बात हो ॥का०॥
- ८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो घर नेह हो ।
वृत्तघनरा पाप सु, चम्पक कोढी हुवो तेर हो ॥का०॥
- ९—आयो दरिमाव जहाज बंठने, चाल्यो कितनीय दूर हो ।
विषम रसरो मोह्यो, आयो सतीरे हजूर हो ॥का०॥

- १०—मन मेल तु मुझ थकी, करो लील विलास हो ।
जीवन गमावे ब्यू वावली, हु थारो दासानुदासहो ॥का०॥
- ११—रूप लावण्य लक्षणें करी, तु अप्सर रे उणिहार हो ।
इन्द्र इन्द्राणी नी परे, भोगवा सुख श्रेयकार हो ॥का०॥
- १२—मान कह्यो तू माहरो, मत कर जेज लिगार हो ।
छेह न दाखु सर्वथा, करमो सु इकतार हो ॥का०॥

बोहा

- १— सुणी वचन सती वदे, धिगू थारो अवतार ।
मन करने बछु नही, जो होवे सुर अवतार ॥
- २— तो पिण केड भूके नही, सती गिणी नवकार ।
खाय उछाली ने पढी, वारिधि बीच तिवार ॥
- ३— मगर पीठ ऊपर पढी, ते जलघी तट जाय ।
कुशले वाहिर नीसरी, नायक कुण्ठी थाय ॥

ढाल ५

राग—झाबो सुहागण पुरो सायीयो रे

- १—रात पढी ने रवि आयम्योरे, बैठी वृक्ष तल आय रे ।
ध्यान धरें नवकारनोरे, हृदकर मन वच काय रे ॥
भाव घरी ने भवि साम्भलो रे ॥टेर॥
- २—वृक्ष चढतो पत्रग देखने रे, पक्षी शब्द कराय रे ।
सती छिछ कार्यों दया आण नेरे, नाग गयो बिल माय रे ॥भा०॥
- ३—समुद्र किनारे पक्षी जाय नेरे, जडिया लाया तीण वार रे ।
रूप परावर्तन एक करे रे, दूजो मेटे नेत्र विकार रे ॥भा०॥
- ४—कोढादि तीग्री उपसमेरे ले खग पड्या आण पायरे ।
थे उपकार कियो धणो रे, कह्यो कठा लग जायरे ॥भा०॥
- ५—तुझ भक्ती वण आवे नही रे, मुझ तिर्यञ्चनी जातरे ।
कृपा करीने ए लीजिये रे, झूठ म जाणो तिलमात रे ॥भा०॥
- ६—ए विष किम जाणो तुमे रे, थे तिर्यञ्च अज्ञान रे ।
साधु दरसण थो साम्भयों रे जातिस्मरण ज्ञान रे ॥भा०॥

७—श्रावक धर्म विराधीयोरे, तिण सु हुवा तियँञ्चरे ।

ज्ञान प्रभावे गुण एहना रे, झूठ म भाणो रच रे ॥भा०॥

८—वैनातट सुर पुर समोर, इहा थी योजन पचवीशरे ।

उहा पधारो राणी अघ छेरे, प्रजापालक कोढी अवनोसरें ॥भा०॥

९—चित्रसार पति ताहरो रे, तुमने मिल से तत्र र ।

मान वचन चाली सतीरे, करी चित्त ने एकत्र र ॥भा०॥

१०—जडी प्रभावे रूप पुरुषनो रे, कर आई पुर माय र ।

वृद्ध मालण घर उत्तरघो रे वंछनो रूप वणाय रे ॥भा०॥

बोहा

१—अनेक जन ताजा किया, सण महिमा राजान् ।

वैद्य भणी बोलायवा, नृप भेले प्रधान ॥

२—वैद्य आय नृप ने नम्यो, नृप कहे कर मुक्त काज ।

परणा सु गुण सुन्दरी, दु वली प्राधो राज ॥

३—वैद्य मान नृप नो वचन, कर उपचार विशेष ।

नृपराणी ताजा किया, हृष्या लोक अशेष ।

ढाल ६.

राग—लसकरीयानी

१—वैद्य गुणो नृप रीभीया हो, राजन् जी, दीयो रहिण ने महेल ।

हुवे नाटिक मूख आगले हो, रा०, कर मनमानी सहेल ॥भ०॥

भला ही पधार्या हो उपगारी जी ॥ढेर॥

२—करी सगाई वाई तणी हो, राज० चोखो लगन जोवाय ।

धवल मंगल गावे गोरडी हो, आणी उमग मनमाय ॥भ०॥

३—बेसरीयो वनडो वण्यो, रा० तुर्रा किलगी रसाल ।

रायजादा जानी घणा हो राजन जी, मानी बडा मछरास ॥भ०॥

४—हायी घोडा रा ठाट सु हो रा० तोरण बाद्यो आय ।

विध सहूर्द्ध सांचवी हो, रा० वनो वनी दिया परणाय ॥भ०॥

५—जामो जस सीयो व्याह नो हो, रा० अर्घराज नृप देह ।

रग महेल सुस सेजमे हो रा० भायो मनो घर नेह ॥भ०॥

- ६—हस तणी गत हालती हो, सु० गुणसुन्दर सज सिणगार ।
मदन वाण वरसावती हो० सु०, आई हेज घर नार ॥भ०॥
हरस घर आई हो मुन्दर जी ॥टेर॥
- ७—घु घट पट अलगी करी हो, सु० निरखे भर भर नैण ।
प्रेम हृदय उपजावती हो, सु० थे हम कर वोलो मैण ॥भ०॥
नजर भर जो वो हो पियु प्यारा जी ॥टेर॥
- ८—भलाई पघार्या महेल मे हो सु० करण केल उछरग ।
हसण रमण सम्भोग नो हो, सु० म्हारे हिवडा नही छे ढग ॥भ०॥
भलाही पघार्या हो सुन्दर जी ॥टेर॥
- ९—देव मनासा निज देशना हो सु० पोछे तुम सु वात ।
वचन सुणी निज कन्तना हो, सु० पीहर गई परभात ॥भ०॥
- १०—खेले जमाई राय नो हो सु० ले हय गय रथ परिवार ।
पिण नजरा नही देखीया हो, सु० प्रीतम प्राण आधार ॥भ०॥
- ११—इम करता रहता थवा हो, सु० बीतो कितौयक काल ।
हिवे दम्पती किण विध मिले हो सु० ते सुण जो बात रसाल ॥भ०॥

दोहा

- १— लघु वधव लिख भेजीयो, जेष्ठ बन्धु ने पत्र ।
मरजादा पूरण भई, आवो वेगा अत्र ॥
- २— सामाचार पाछा दिया, नहि आवण रो ढग ।
रोग उपनो सोलमो, तिण मु देह विरग ॥
- ३— दोरा सोरा ही तुमे, आवो घरी उमग ।
राय जमाई वैद्य है, ताजो करसी अग ॥
- ४— कोटवाल भाई बेहु, चाल्या है तिणवार ।
बीच मे मिलीयो गुमासनो, चीयो चम्पक सार ॥
- ५— लखी विणजारो पाचमो, धो पिणमिलीयो आय ।
वैनातट भाई जिहा, डेरो कोनो जाय ॥

ढाल ७

राग—सोपर मुगल मया करे

- १—लारे लेई गुमासताजी काई लारे० सेठ थायो हो ले कर मे भेंट ।
 राय जमाई रे आगले, कश जोडो हो आण उभो ठंट ॥
 सज्जन भलाहो पधारिया जी ॥टेरा॥
- २—प्रीतम नजरा देखिया जी काई प्री० काई हरखो हो हिवडारे माय ।
 रोम रोम तन हुलस्यो, काई आदर हा दे लाया बुलाय ॥
- ३—कर मुझरो भेंट मेलने जी, काई० कहे मोटा हो तुम गरीब निवाज ।
 थारी छत्रछाया वसा, राजराख्या हा रसो म्हारो लाज ॥
- ४—किण कारण हुवो आवणो जो, काई० काइ पूछे हो मन धरो उम्मेद ।
 शका काई राखो मति, काई० सुणता हो नही पामा खेद ॥
- ५—जे भाखो ते सही कराजी काई, तद बोल्थो हो सेठ जोडो हाय ।
 कुष्ठ रोग बड भ्रातने बले, चारे हो आया उण रे साथ ॥
- ६—करो उपचार कृपा करी जी काई० उपकारी हो तुम गुणरी खाण ।
 मरजी होवे तो याही तेडु, फरमावो हो सो करु प्रमाण ॥
- ७—नृप कहे रहो किण जायगा जी काई देवरमणहो पुरो सहेररे भायें ।
 उहा रवास छे माहरो, सेठ बोल्थो हो इम शीप नमाय ॥
- ८—आसा जद उण मारगे जी काई, आ० तद लेसा हो तुम गधव देख ।
 सोख दिघी कर खातिरी, इण वातारी नहीं जेज विशेष ॥
- ९—कर मसवारी निसर्या जी काई, दिन दूजे हो करणकु सेल ।
 वाव बगीचा जायने, पाछा धिरता हो आया इण गेल ॥

वोहा

- १— राय सुता पति आवता, देखी हरस्यो मन ।
 सेठ वहे टृपा करी, आज दिहाडो घन ॥

ढाल ८

राग—एक दिवस लका पति

- १—रथ सु हेठा उत्तरी, मन माहे उमग घरी, हरप मरी ।
 आया दुवाने सेठ ने ए ॥

- २—घणा लोका रा वृन्द मे, राय जमाई आनन्द मे ।
बैठा सिंहासण उपरे ए ॥
- ३—सेठ दोनु कर जोडने, विनय करै मन मोडने ॥मद०॥
हाजर मुख ने आगले ए ॥
- ४—बद्य कहे चित्रसार ने, खुशी हो विणज व्यापार मे ॥व्या॥
खेचल नही है राजरी ए ॥
- ५—सेठ कहे महाराय जी, खेचल नही है काय जी ॥का०॥
तुम प्रसादे सुखीया वसा ए ॥
- ६—माहो माहि वाता करे, देख्या ही नयणा ठरे ॥न०॥
प्रेम होये मावै नही ए ॥
- ७—एक अज म्हागी मानीये मुक्त बधव रोग मिटाइये ॥गमा०॥
कहो तो बोलाउ ईए जायगा हो ॥
- ८—भला बुलाओ इम कह्यो सेठ मन आनन्द भयो ।
तत्क्षिण तिहा तेडा वीया ए ॥
- ९—डोल मे राघ लोही भरे, लोक देख सुग्या घरे । आगाकरे ॥
माख्या चटका दे रही ए ॥
- १०—पेली निदान कोजिए पीछे ओपध दीजिये ॥दी०॥
पूछे उत्पत रोगनी ए ॥
- ११—सेठ बोल्यो इए गरे, रोग व्याप्यो किए तरे ॥कि०॥
विध बताओ पाछली ए ॥
- १२—गर्मी कफ वाय बतावीयो, बद्यरे मन नही भावीयो ॥भ०॥
हम पोथी में ना लीरयो ए ॥
- १३—कचपच वाता मत करो, साच होवे सो उच्चरो ॥उ०॥
हम पोथो साची सही ए ॥
- १४—मूल उत्पत बतावसो जदी रोग जावसो ॥सुख पावसो॥
नही तर हम जावा सही ए ॥
- १५—सेठ नयण अरुण करी, साच कहो थे हितघरी ॥हि०॥
इतग शम माहे क्यु पड्या ए ॥

दोहा

- १— खलक लोक मिलीया घणा, कहता आवे लाज ।
साव कछा बिन माहरो, कोई न वणो इलाज ॥
- २— सागर दत्त इम वितवी, चित्र सार ने ताम ।
कहे हु कुलखम्पन हुवो, खोई घर नी माम ॥

ढाल ९

राग—मालपुरी राणी जी मारीयो ए ।

- १—मुख पर कपडो राल ने, वचन वदे तिणवार ॥बन्धव मोरा हो ॥
तुम नारी नो रूप देखने, मुझ व्याप्यो मदन विकार ॥
बधव मोरा रे, सागर दत्त इण पर कहे रे ॥टेर॥
- २—गहिणा कपडा आदवे, वस्तु मेली रसाल ॥
उण सती वछी नही, मैं जाय कछो कोतवाल ॥ब०॥
- ३—कोतवाल पिण तिहा गयो, बोलाथी सती ने कहिवाय ॥
सुख भोगव तु मुझ थकी, सती न मानी काय ॥ब०॥
- ४—डाकण भाल दोनु दइ, अघगाडी शहर रे वार ॥
पछे हा हुय गया कोढिया, पाप तण पर कार ॥ब०॥
- ५—गुमासतो कहे तिण नारने मुझ सेठ लायो निज गेह ॥
रूप देखी ने हू रिझियो रे, धुत्कार्यो नही कियो नेह ॥ब०॥
- ६—डाकण भाल दियो तदा, सेठ चमवयो चिन्त मुझाइ ॥
सहस्रमोरा देई करी, काढी घर रे बार ॥ब० सा०॥
- ७—तिण पापे हू कोढी हुवो, चटो चम्पक बोल्यो वाय ॥
भगडो भेट्यो माहरो रे, बाई कर लायो घर माय ॥ब०॥
- ८—लखी वणजारो लोभ दे, मुझ कनासु गयो लेह ॥
हू कृतघनी कोढी हुवो, विगड गई मुझ देह ॥ब०॥
- ९—सती विणजारो बोलियो, सती वा मोटकी घाय ॥
मैं बकारी जहाज मे, तद पढी उछालो साय ॥ब०॥
- १०—पछे हुवो हू कोढीयो रे पाप बिया गुपात ॥
बैर वहे साधी बही, मुझ पोथी मे सब बात ॥२०॥

सोरठा

- १— चित्रसार सुण वैण, दु ख व्याप्यो मन मे घणो ।
वा नारी मुझ सैण, समुद्र पडी सो कब मिले ॥
- २— घसक उछालो खाय, पडियो घरणी ऊपरे ।
शीतल पवन ढोलाय, कीयो सचेतन सेठने ॥

ढाल १०

राग—इडर आम्बा आम्बली रे ॥

- १—वैद्य कहे चित्रसार ने रे, इतनो मोह करो केम ।
नारी नेह रे कारणे रे, पुरुष भूरे नही एम ॥
चतुर नर नारी सोच निवार ॥टेर॥
- २—वो गई तो जाए दोरे, फेर परणो वर नार ।
दाम होसी घर ताहरे रे, तो मिलसी नार हजार ॥
- ३—वैद्य वयण सुणी करी रे, सेठ वदे इम वाण ।
रूप लावण्य गुण आगली, उसी फेर मिले कद आण ॥
- ४—वैद्य कहे सुणो सेठ जी रे, सोच न करो काय ।
भाग्य लीखी जो ताहरे रे, तो मिलसी बोहीज आय ॥
- ५—ये कहो जिम हूँ करु रे, इण तणा रे जतन ।
सेठ कहे जावो आगडा रे, इम बोल्हो खाची मन ॥
- ६—सिद्ध वैद्य करुणा आणने रे, जडीया खोली जी नीर ।
उपचार कियो पाचु तणो रे, हुवो कचन वर्ण शरीर ॥
- ७—राय जमाई कहे सेठने रे, तुमचो देखावो गेह ।
“सबलदास” जी कहे साभलो रे, आणी अधिक सनेह ॥

दोहा

- १— महल देखवा कारणे, राय जमाई तेह ।
आयो मन उमग घरी, सेठने लारे लेह ॥
- २— सदर कमाड जडी करी, रूप पुरुष नो मेट ।
नारी निज सागे वणी, छेल महेल मे पेठ ॥

ढाल ११

राग—मोती दोनी हमारी, राजिद मोती दोनी ॥

१—तत्क्षीण दीनो पट उघाड़ो, देखी तो अमरी सम नारी हो ।

ए स्यु सपनो मुझने आवे, के कोई इन्द्र जाल देखावे हो ॥

पिउहा बलीहारी ॥टेर॥

२—पेठो मरद ने निसरी नारी, बदन देखता सहि मुझ प्यारी ।

स्यु विमासो कहे इम बाला, येँ मुझ प्रीतम प्राण रसाला ॥

३—खानाजाद हु दासी तुम्हारी, विरह पीड मोटावो हमारी हो ।

घणी घणियानी दोनो मिलिया, ज़ाणे पयमे पतासा मिलीया ॥

४—हिवडा भीतर हरप न मावे, ज्यु शशी सायर लहर चढावे हो ।

पुरुष अवस्था किए विघ पाई, घुरा पठ सु सरव बताई ॥

५—वार घणी हुई राज पघारो, इम कहे हाकम ने हुजदारो ।

सा कहे सेठ तणी हु जारी, रायपे जाय कहो समाचारी ॥

६—अचरज पाय आया रायपासे, बातनो विबरो सर्व प्रकाशे ।

राय कहे जावो उण पासे, भ्हारी बेटीनो सी गति आसे ॥

७—बात सुणी बोली इम नारी, भ्हा दोना रा एक भरतारो ।

रायपे जाय बात जणावी, सेठ बोलायकर थापो जमाई ॥

८—घणो कुर्व दोधो बघारी, शील री बात हुई प्रसिद्धे ।

तिलोकसुंदरी शीलवती बाई, कहे देव आकाश रे भाई ॥

९—राय सूता सज सिणगारो, आई पीउ तणे दरबारो ।

वही कहे भागे मालक हुँ ही, भवे आधी मालक तुही ॥

१०—सुप्त विलसे प्रीतम बेहु साथे, रगरली मे वासर जावे हो ।

ईर्ष्या खेदो करे नही कोई, सम्पत दोनारे माहो माही ॥

बोहा

१— येई वपे ईहा रह्या, अव मांगे छे सोग ।

देस अमारो जावसां दहा न लागे टीक ॥

ढाल १२

राग—इम्रू धनो घण ने परचावे ।

- १—राजन्द वयण सुणी मनचिते, आखिर परदेसी जासेरे लो ॥
वाई ने सीख देवे भली परे, जावत सासरे वासेरे लो ॥
घन घन जे निज कारज सारे ॥टेर॥
- २—पतिभक्ता गुण ग्राहक होजे, सीलवती कुल उजवाले रे लो ।
विनयवत्त सबसु नमी ने चाले, कुकर्म पाप ने टाले रे लो ॥
- ३—दान पूण्ये कर रहीजे सूरी, बुरी करे मत किएरी रे लो ।
सासरे पीहर भलो दिखावे, लोकसोभा करे जिएरी रे लो ॥
- ४—मातपिता सिखामण दीनी पिण, चालता हीयो भरीजे रे लो ।
सिर पाव गहेणा वेप बहु विष, वाइ जमाई ने दरीजे रे लो ॥
- ५—मुहुर्तलान्न शुभ देखी ने, तुरत प्रयाणो कीधो रे लो ।
राजादिक पोचाय ने धिरिया, जावतो लारे घणो दीधोरे लो ॥
- ६—कुसले खेमे निज घर आया, गुणपालरा गुण घणा जाण्यारे लो ।
कुटुम्ब कबिलो सेण सगाने, वस्त्रादिके सन्मान्यारे लो ॥
- ७—सुख भोगवता प्रितम साथे, दोनो ही बेटा जाया रे लो ।
चित्तवल्लभ ने गुणसुन्दर, कचन वरणी काया रे लो ॥
- ८—भणी गणी ने पण्डित हुआ, जीवन वैसे आया रे लो ।
परणायावाने मोटे ठिकाने, माखे मनमानी माया रे लो ॥
- ९—धर्मघोष स्थविर पधार्या, परखदा वदण आवे रे लो ।
चित्रसार सुन्दर बेहु आगे, मुनिवर धर्म सुणावे रे लो ॥
- १०—ससार असार सुपना जिम, विणसता वारन लागे रे लो ।
आयु अस्थिर जल ओस बिन्दु सम, नदी जलदाई जीवन जावे रे लो ॥
- ११—दस दृष्टाते नरभव दुर्लभ, पामी ने मत हारो रे लो ।
विषय कषाय तृष्णा लोभ, विकथा पाप निवारो रे लो ॥
- १२—सण उपदेश वैराग मन आणी, चित्रसार ने दोनु नारी रे लो ।
घररो भार सू पी निज सुतने, सजम लिधो सुखकारी रे लो ।
- १३—पच आचार महाव्रत पाले, दोषण सगलाई टाले रे लो ।
तप जप सयम शुद्ध आराध, आतम गुण उजवाले रे लो ॥

- १४—कर अणसण उपना देवलोके, महधिक पदवी पाई रे लो ।
लेहि नरभव ने कर्म खपावी, मुगती जासी मुनीराई रे लो ॥
- १५—शील उपदेश थी ए विस्तारो, 'पूज सबलदास' चित लायो रे लो ।
भौद्यो अधिको आयो हुवे लो, मिच्छामी दुक्कड थायो रे लो ॥
- १६—अष्टादस सो वाणवे वरसे, कियो फलोधी चौमासो रे लो ।
शील री महिमा सुणे सुणावे, जिण घर लील विलासो रे लो ॥



बोहा

- १— पूर मनोरथ सरस्वती, वली प्रणमु अरिहत देव ।
सानीध करजो मात जो, सेव करू नित्यमेव ॥
- २— गुण गाउ गिरवा तरा, साभल जो घर प्रेम ।
शीलवत की जगत मे, महिमा फेले केम ॥
- ३— शील पाल्यो शुद्ध मने, चवदे पूर्वघर कोड ।
नाथ नम्यो है आयने, सुणजो आलस छोड ॥

ढाल १

राग—हमीरीपा नी

- १—पूरब महाविदेह मे, चपानगरी सुजाण हो ॥चतुर नर॥
अरिमदन तिहा राजवी, धूजे वरी ना प्राण हो ॥चतुर नर॥
सुणजो जी चरित्र सुहावणो ॥टेर॥
- २—जिण नगरी माहे वसे, श्रीपति नामे सेठ हो ॥च०॥
दान मान करी दीपतो, भरे घणा ना पेट हो ॥
- ३—पुत्र नी चिंता अति घणी, पूर्व पूण्य विशेष हो । चतुर नर ।
देवी देव मनावता, बेटी जनम्यो एक हो ॥चतुर॥
- ४—व्हालो घणो मात तातने, बीजो ही बहु परिवार हो, च० नर ।
रूपे अतिरलियामणो, जाणो देवकुमार हो ॥चतुर०॥
- ५—गुर पासे भणवा भणी वेसाड्यो पोसाल हो, चतुर नर ।
रायकुंवर पिण पढे तिहा, बीजा ही बहु बाल हो ॥

- ६—प्रीतवधी माहो माहे घणी, राय कु वर सु अधिक हो ॥चतुर॥
भणी गुणी ने आया घरे, कलावत प्रसिद्ध हो ॥चतुर॥

दोहा

- १— पाच से घोडा सारीखा, राजा दीना सूप ।
कुवर खेलावे खात सु चित्त घरी ने चूप ॥
२— सेठ पुत्र पिण देखने, कहे पिता ने आय ।
हू पिण घोडा खेलावसु, माने दो तुरी मगाय ॥

छाल २

राग—कच तमाचू बखरी

- १—सेठ कहे सुत साभलो, आया वेवारी लोक ॥म्हारा लाल ॥
बिणज करो बाजार मे, वे छे तुरिया जोग ॥म्हा॥
सेठ कहे सुत साभलो ॥टेरा॥
२—बीजी वस्तु मागो जको, हाजर तुरत तैयार ॥म्हारा ॥
तो पिण हठ पडियो घणो, भरजासु इण बार ॥
३—हठ बंटा नो देखने, सेठ गयो राजा पास ॥म्हा॥
आगल मेली भेटणो, जेम करे भरदास ॥
४—आदर दे राजा पूछियो आवणो हुवो केम ॥म्हा॥
बीतक सहु बतावीयो, राय बोल्हो घर प्रेम ॥
५—तुम पुत्र मुक्त कवर सु अन्तर की सो होय ॥म्हारा॥
घोडा ले जावो रावला, बेराजी मत करो कोय ।
६—वचन सुणी राजा तणो, सेठ बोल्हो इम वाय ॥म्हा॥
मगाळ आप हुकम सु, आज्ञा दीवो राय ॥
७—तुरत मेल्या आदमी, कबोज देश वे माय ॥म्हा॥
पाच सो तुरण मगाविया, चाली वणं सुहाय ।

दोहा

- १— सोना नी सागत सजी, सोना राही पत्ताण ।
सेठ निज सुत ने सूपिया, बसावत वे पाण ॥

- २— राय कुँवर रमतो जठ, आयो सेठ कुवार ।
खेलावे वहु खात सु, दोउ मिल एक हजार ॥
- ३— वली प्रोहित सुत मत्री कियो, ए पिण कँवर नी साय ।
इतरा मे अचरज हुओ, सुणो आगली वात ॥
- ४— घाढायत जाय दीडिया, वारू पुकार्या आण ।
कन्या घोडा देखने, रोवा लागी जाण ॥

ढाल ३

राग— पथीडा रे बात कहो धूर छेह्यो

कोइक रे कमाने वेग छोडाव जोरे ॥टेर॥

१—कन्या रे, कन्या रुदन करे घणी रे ।

घाढायत लिया जाय रे, साहसीक रे साहसीक कोई वीर हो रे,
माने दोनी छुडाय रे ॥

२—कन्या रे, कन्या रुदन ते सामली रे सेठ कुँवर तिणवार रे ।
राय सुत रे, राय० ने ते इम कहे रे, चालो छुडावा जाय रे ॥

३—राय कुँवर रे, राय० चित्तधमकीयो रे, बोल्हो मस्तक घुण रे ।
हुतो रे, हु० जाव सु शहर मेरे, आडा कजिया ले वे कुण रे ॥

४—सेठ सुतरे, से० साहसीक पण रे, सवार पाचसो ले लार रे ।
कन्या रे, क० ने छोडावा चालीयो रे, लायो रायतणे दरवार रे ॥

५—मालज रे, मा० लायो लूटने रे ते पिण दियो भूप ने सू प रे ।
राजा रे, रा० रीज्यो सेठ सुत उपरे रे, रोज भोज दीनि अनूप रे ॥

६—खबर रे, ख० देय बुलावियो रे, इण कन्या नो तात रे ।
मालज रे, मा० ने कन्या सू प दी रे कृपा करी नरनाथ रे ॥

७—कन्या रे, क० कहे निज तात ने रे, परणु एहोज कुवार रे ।
अवर रे, अ० परणवा री आखडी रे, इण भव ए भरतार रे ॥

८—राजा रे, रा० सेठ भणी वोलायने रे, थाप्यो ब्याह मण्डाण रे ।
उत्सव रे, उ० कर परणावीयो रे ब्याह तणी विध जाण रे ॥

दोहा

- १— बेटी भणी परणाय ने, सेठ गयो निज ठाम ।
राजा जस वीच मे लियो, पुण्य बडा अभिराम ॥

- २— पुत्र बहु ने देखने, श्रीपति सेठ सुजाण ।
एक दिन निज कबरसु, बोल्या इण परमाण ॥

ढाल ४

राग—नित्य कहूँ साधु जी ने वन्दना

- १—सेठ कहे पुत्र साभलो, म्हारो, वचन मानो नेट रे ।
प्रोहित मत राखो घर बारण, घोडा कर दो राय ने भेंट रे ॥
सेठ कहे पुत्र साभलो ॥टेर॥
- २—आपा बेवारी वाणिया, विणज करा बाजार मे जाई रे ।
' आखिर मे तो एक दिन जावसा, सीख मानो तो गुण थाई रे ॥
- ३—तात वचन शिरधार ने, तुरग किया राय नी भेटो रे ।
' विणज करे हीरा तणो, पिण प्रोहित सु प्रीत नेटो रे ॥
- ४—केईक दिना के आतरे, भात पिता किनो कालो रे ।
घर नो धुरन्धर ते थयो, ससार नी काची जालो रे ॥

' बीहा

- १— सुख विलसे ससार ना, भामिनी ने भरतार ।
न जालो जग्यो आयम्यो, पुण्य जोगे ससार ॥
- २— एक दिवस प्रदेश थी, आया है समाचार ।
लेखा ने सुलभावणो, वेगा आवो इणवार ॥
- ३— प्रोहित भणी घर सू पने, सेठ गयो परदेश ।
प्रोहित पापी आतमा, नही धर्म नी रेश ॥

ढाल ५

राग—चित्रा प्रभु मुक्त मन जावे रे

- १—मुक्त मित्र की नार केहवी रे, आयो घर भझार ।
रूप माहे रत्नीयावणी रे, देखी जाग्यो विकार ॥
जो यो कमगत भारी रे, न्याय डुबोवे व्यभिचारी रे ॥टेर॥
- २—पक्षोत्तर ने मणीरथ राजा, रायण लंबा रो नाथ ।
पर नारी ना नेह सू र, गमाई घर की आत ॥
- ३ नया वपडा पहर ने रें मुक्त आगत उभो मेल ।
मुक्त मित्र कह्यो मुक्त भणी रे, म्हारो वधा न दोजो ठेल ॥

- ४—प्रीत करो मुझ थी तुम्हारे, भोगवो सुख ससार ।
जीवन लावो लीजिये रे, वार वार नही अवतार ॥
- ५—वचन सुणी ए विप्रना रे, बोली वचन कहर ।
पर नारी वछे पापीयो रे, फिट थारी पगडी मे धूल ॥
- ६—सती घरणो निभ्रँच्छीयो रे, मूल थी पाडी माम ।
निकल पापी यहा थकी रे, मत आइजे इण ठाम ॥
- ७—मुँह लेई आयो घरे रे, गयो सेठ ने पास ।
तुझ नारी व्यभिचारणी रे, सेठ सुणी हुओ उदास ॥

दोहा

- १— सेठ इण पर चितवे, आ बात मानी किम जाय ।
वो नारी सीता सारखी, किम लागी पाणी मे लाय ॥
- २— आट दोट मन मे थयो, दुकान उभी छोड ।
नारी की परीक्षा भणो, आयो निज घर दौड ॥
- ३— रात पडो रवि आयम्यो, सूतो महल मभार ।
नारी आय उभी तीहा, सज सोले शृगार ॥
- ४— मूल नही बतलावणो, नही आदर सम्मान ।
नारी तुरत पाछी बली, आयी आपणे स्थान ॥
- ५— मन शका मे निकल्या, पूरव चवदे क्रोड ।
महासती ए मोटकी, सणजो आलस छोड ॥

प्रक्षेप ढाल

राग—टयाल की

सती मन आलोचे अतम सुघारे जिनवर ज्ञान से ॥टेर॥

- १—पवखी पर्व आराधती सरे, आलोचन विघी माय ।
आरती आया सोवती सरे, कैसा कलक शिर आयरे ॥सती०॥
- २—और कारण दिखे नही सरे, ब्राह्मण चुगली खाय ।
पति वियोग पडावियो, सरे केसो कियो अन्याय रे । सती०॥
- ३—प्रभु तुम्हारी साख से सरे दोष नही मुझ माय ।
कलक सहित सजम लेणा, के मरण भलो नही थाय रे ॥सती०॥

- ४—इम पश्चाताप सती करे, पति खड़ा था बहार ।
प्रच्छन्न पणै सहु सामल्यो सरै, दिल पलटचो तिरावार रे ॥सती॥
- ५—एकपक्षी सुण वारता, द्वेष घर्यो मैं मन्न ।
अव निर्णय किया बिना खाणो नही मुझे अन्न ॥सती॥
- ६—घाय माता ने पुछता, फिटकारी दियो सुनाय ।
यो सोनो है सोलमो, ये कष्ट दियो बिन न्याय ॥सती॥

ढाल ६

राग—आज शहर मे योगीसर आया ।

- १—घाय भरी सेठ पुछी बातो, प्रोहितनी ए बाणी रे लोल ।
ए सुलक्षणी सती उत्तम, ये महासती गुणखाणी रे लोल ॥
घन्य घन्य जे नर शील आराधे ॥टेरा॥
- २—प्रोहित मित्र कुपात्र निवारो, जात ऊँची गुण काला रे लोल ।
उण दुख दीयो सतो भरी, पिण ये रतनारी माला रे लोल ॥
- ३—घाय बात साची कही ये, तू छे बडी प्रवीणो रे लोल ।
मैं कह्यो न मान्यो तात केरो, यो कणमागण मतिहीणो रे लोल ॥
- ४—नेह जोड़्यो पाछो निज नारी सु, क्षीर ने साकर जेमो रे लोल ।
नारी जाणी शील सुहाणी, विप्र ने जाण्यो तेमो रे लोल ॥
- ५—घणा वर्ष लग सुख भोगवियो, भद्रकभावे थायो रे लोल ।
दोनो ही काल करी ने उपन्या, जुगल पणा रे मायो रे लोल ॥
- ६—सेठ जीव नाभीराजा थया, सेठाणी मोरादेवी रे लोल ।
कयाकार मे मैं सांभलियो, जिणी पुत्र जनम्या जिनराई रे ॥
- ७—कोई कहे पेलरे भव सहा, परीपा दिन रातो रे लोल ।
ते तो जाणो केवलजानी, कयाकार की बातो रे लोल ॥
- ८—पूर्वमव सम्यन्ध कह्यो मैं, मोछो अधिको होई रे लोल ।
पूज्य "सवलदास" इम कहे माने दोय मत लाग जो कोई रे ॥



दोहा

- १— भवसर जे नर अटकले, ते तो चतुर सुजान ।
दीपावे जिनधर्म ने, तेनो भण्यो प्रमाण ॥
- २— किए विघ घर्म दीपावियो, सामल जो नर नार ।
सेणा होवे साधु जी, सन्धितणा भण्डार ॥

ढाल १

राग—मणदल ए नणदल

- १— पच महाव्रत पालता, विचरता नगर पुर ग्राम हो मुनिवर ।
कठिन क्रिया जिणा आदरी, साधु सुदर्शन नाम हो मुनिवर ॥
साधु सदा ही सुहामणा ॥टेर॥
- २—साधु सदा ही सुहामणा, पूरण ज्यासु प्रेम हो, मुनिवर ।
हिबडा भीतर बस रह्या, हीरा जडिया हेम हो, मुनिवर ॥
- ३—तप कर काया सोखवी, वैराग मे भरपूर हो, मुनिवर ।
आचारमे बली उजला, सत्यवादी ने शूर हो, मुनिवर ॥
- ४— जाणो सोनो ने पत्थरसारखो, त्रिया तृणसमान हो मुनिवर ।
शत्रु ने मित्र सारखा गिणे, निश्चल ज्यारो ध्यान हो, मुनि० ॥
- ५— जीवण री वाछा नही, मरण तणो भय नाय हो, मुनिवर ।
पूठ दे ससार ने निसरचा, जेनी शाख सूत्र रे माय हो मुनि० ॥
- ६—उग्र विहारी एकला, सहता शीत ने ताप हो, मुनिवर ।
पूरण पराक्रमधारी है, परिहरचा सहु पाप हो, मुनिवर ॥
- ७— लब्धि इणा ने ऊपनी, करता उग्र विहार हो, मुनिवर ।
रिख रायचन्द कहे साभलो, आगे बहु अधिकार हो, मुनिवर ॥

ढाल २

राग - मङ्गल

- १— मगधदेशमे रे, राजगृही नगरी भली,
सुन्दर सोहेरे, सूत्र सिद्धान्त माहे चली,
रिद्धि वृद्धि वरे, धन धान्य करी ने भरी,
महल मंदिर रे, जाणो इन्द्र पूरी जणी ।
देवता नी पुरी सु अधिकी, देखता सुहावणी ।
वर्णन उववाई माहे दाख्यो, ठेक सुखी ने धनधणी ॥

- २— राजा श्रेणिक रे, पटराणी बेलणा,
पियु साथे रे, नित करती खेलणा,
दिल दाता रे, न करे किएरी हेलणा,
सोले सिणगार रे, नित करती मेलणा,
नित नित नवलावेस पहेरे, भोगवे सुख भरतार ना ॥
महाकृष्ण मे समकित लीनी, पुण्य प्रगट्या इण नार ना ॥

- ३— चेलणा पुरी रे, चेडाराय नृप जणी ।
कर्मा जोये रे, मिथ्यात्वा घुस रो घणी ॥
आप आपना रे गुरा रा वखाण कर रही ।
नही हारे रे, वेहु बराबर सही ॥
हारे नही रे, वेहु बराबर, यो भीड न जीवें दिन रात रे ।
राजा श्रेणिक भित्त मे चितवें यत्न करे इण बात रे ॥

- ४— राजा श्रेणिक रे मन मे विचरि इसी करे ।
नवन घुसजे रे, बाय लो कोई नही सिरे ॥
तिरिण मारणुरे एकी, उपाय दुख करि तात ॥
हो रही साधु रिगण एण बायनी मे अख नाचो रे ।
जडे सिंहरा जायगा मि, साधु धावे इहा खरणि ॥
"कैवि रमिषेद" कहें बोच मे, अधि धातो मतो करी रे ।
दोहा ॥

- १— ॥ कंचरो जापदी देख मे, नरत्त त्रपयिहार ॥
॥ भुंज्यंत, नामे गता पुजो प्रसंगोतार्ति ॥

२— महला मे बैठी थकी, पियु ने सुणावा काजो ॥
राणी चेलणा गुण करे, घन्य दिहाडो आज ॥

ढाल ३ राग—मारी सजनी आज म्हारा गुरासी पधारसी जी ॥

१— दृढ़ सजम तप धारी ।
ये तो एकला उग्र विहारी, हो ज्ञानी ॥

गुरुजी आपरा, दर्शन की बलिहारी ॥टेर॥

२— वारी वार हजारो, हो ज्ञानी गुरु जी ।
आपरा दर्शन की बलिहारी ॥

३— स्वामी राजगृही मे आया ।
राणी चेलणा ने घणा सुहाया हो० ॥

४— मैं आवता दूर सु दीठा ।
मने लाग्या अमृत सरीसा मीठा हो० ॥

५— आप अठे पग धरीया ।
म्हारा देखता रा नैण ज ठरीया हो० ॥

६— मैं चरण तुम्हाग भेटिया ।
मारा भव भव रा दुख भेटिया हो० ॥

७— पूरब सुकृत कीना ।
म्हारा ज्ञानी गुरु जी दर्शन दीना हो० ॥

८— पूरब सुकृत अतिशायी ।
म्हारा ज्ञानी गुरु जी की आई बधाई हो० ॥

९— म्हारा मनरा मनोरथ फलिया ।
मुँह मगिया पासा ढलिया हो० ॥

१०— आज म्हारा ज्ञानी गुरु जी मिलिया ।
म्हारा भव-भव रा पातक टलिया हो० ॥

११— ये शील सयमरा दाता ।
आप सयम मे रग रती हो० ॥

१२— ये शीलागरथ पर बैठी ।
ये सारथी मुक्ति ना सँठा हो० ॥

- १३— घन्य दिहाडो आज ।
महारा सरीया बखित काज हो० ॥
- १४— शीलसमुद्र मे पेठा ।
मुक्ति महल रे द्वार माहे बैठा हो० ॥
- १५— ये अभयदानरा दाता ।
ये तो सज्जम मे रगराता हो० ॥
- १६— ढाल भई या तीजी ।
राणी चेलणा इण पर रीझी हो० ॥
- १७— ऋषि रायचवजी वाणी ।
श्री मुख थी वीर बखाणी हो० ॥
- १८— सेणी श्राविका चेलणा राणी ।
रायचव कहे वीर बखाणी हो० ॥

दोहा

- १— श्रेणिक रे समकित नही, तेह समय की बात ।
राणी गुण इतरा किया, नृप माने नही तिल मात ॥
- २— वली रानी चेलना कहे, साभल जो महाराज ।
मोटा गुरु छे माहरा, तिरण तारण की जहाज ॥
- ३— भोग तजी जोग आदर्यों, करणी ज्यारी श्रेयकार ।
त्यागी कनक ने कामिनी, ते विरला भणगार ॥
- ४— श्रेणिक कहे राणी सुणो, महारा गुरु री होड ।
घारा गुरु बदी ना करे, बयो करे तू शोड ॥
- ५— चेलना घरचा करे घणी, पिण पाछो ने देवे पाव ।
करणी इणने पाघरी, यु राजा खोटा खेले दांव ॥
- ६— हलबारा ने हुबम कियो, जो वो शहर मे जाय ।
राणीरा गुरु बठे उत्तरे, मोने वेगा बहि जो प्राय ॥
- ७— हलबारा शहर जोयने, बहे साभम जो महाराय ।
महाराणी रा गुरु उत्तरी, यददेवरा माय ॥

- ८— राजा श्रेणिक तिरण समे, एक वेश्या दिधी वाड ।
चोकी वेसाडी चहु दिशे, वली जडीया जोर किवाड ॥
- ९— खिष्ट राणी ने करवा भणी, श्रेणिक कीघा काम ।
पिरण वात रो पेच हिवे सुणो, किरणरी जावे माम ॥

ढाल ४

राग—घोषाई की

- १— वेश्या देखी देवरा रे माय ।
तव विचार कियो मुनिराय ॥
- २— जड दियो आडो माहे घाली नार ।
तो अठे दिसे कोई अवर विचार ॥
- ३— यो कीघो कोई धंखी काम ।
इण वाता साघा रो होसी कुनाम ॥
- ४— दिन उगा लोक देखसी नार ।
साच कूड रो कुण काढसी तार ॥
- ५— जिनमारण जो नीचो जाय ।
ऊचो आणे रो करू उपाय ॥
- ६— लब्ध काढ किया विस्तार ।
दूर उभी देखे वेश्या नार ॥
- ७— ओघो मुंहपति वस्त्र पातरा ।
वाल दीवी सब माया मातरा ॥
- ८— जोगी वण बैठी अवधूत ।
गोटो करने लगाई भभूत ॥
- ९— लाम्बा लटारी जटा असराल ।
रुद्राक्ष की गलेमे माल ॥
- १०— सिदुर टीको आरया लाल ।
बैठो विछाय चित्तारी खाल ॥
- ११— हाथ मे तुम्बी लोह रो कडो ।
बैठो राख रो ऊँचो कर दडो ॥

- १२— हाथ मे' बडो हिरण रो सीग ।
वण बैठो बाबारो घीग ॥
- १३— वेश्या डरती बोली नार ।
वावा म्होने मत कर जो छार ॥
- १४— नेडी तू मत आय अवार ।
थर थर घूजी वेश्या नार ॥
- १५— टुक टुक वेश्या रही छे जोय ।
रखे भस्म मारी पिण होय ॥
- १६— जो हू निकलू देवरा रे बार ।
जाणो भाई नव ससार ॥
- १७— जुलक जुलक उभी जीवे दूर ।
जोगी जोश चढ्यो भर पूर ॥
- १८— श्रेणिक कह्यो राणी ने जाय ।
धारा गुरु मे कला नही काय ॥
- १९— स्त्रीना वे सेवणहार ।
तिण मे नही कोई फरक लगार ॥
- २०— शका वे तो देखो नचीत ।
नहींतर राखो मुक्त परतीत ॥
- २१— राणी कहे सुणजो महाराज ।
हिवे किसी विन्याय करो काज ॥
- २२— वेश्या भेली राखसी सोय ।
ते तो गुरु धारा ही होय ॥
- २३— धारा गुरु जोगी होसी महाराय ।
देखो चालो भाषा दोनु जाय ।
- २४— चयहे देस लेसा महाराज ।
जिण रा गुरु तिणरी जासी ताज ।
- २५— राय राणी भाषा देवरा रे बार ।
यसे धणा मित्या तर नार ॥

- २६— देवरा रा खोल दिया किमाड ।
बैठा जोगी ने वेश्या नार ॥
- २७— सामो जिणसु कुण माडे सोग ।
जाणो बैठो बाबा रो धोग ॥
- २८— राणी कहे सुणजो महाराज ।
हिवे गुरु चेलारी किसी रही लाज ॥
- २९— हू तो साधी तरह आपसु खसी ।
राणी राजा साथे हँसी ॥
- ३०— हाक्यो वाक्यो राजा थयो ।
ओ कठी पेठो, वो कठी गयो ॥
- ३१— जिनमारग रो हुवो उद्योत ।
दीप रही समकित की ज्योत ॥
- ३२— अन्तसमय अवसाने आये ।
आलोवणा लीधी मुनिराय ॥
- ३३— अन्तसमय साधु अनशन करी ।
गया मुनिवर स्वर्गे सचरी ॥
- ३४— चेलणारी हुई चौथी ढाल ।
समकित री ज्योति रसाल ॥
- ३५— "ऋषि रायचंद" जोडी रीया गाम ।
आवक लोक वसे शुभ ठाम ॥
- ३६— जेमलजीरे प्रसाद प्रमाण ।
सवत अठारे तेतीसा जाण ॥
- ३७— जेठसुदि बारस दिन जाण ।
वीतराग रा वचन प्रमाण ॥



बोहा

- १— नवमा अग तीजा वर्ग मे, कहा घन्ना रा भाव ।
साभल जो चतुरा नरा, आलस अग निवार ॥
- २— वैरागी शील सेहरो, घन्य घन्ना अणगार ।
तेह तणा गुण वर्णबु, पातिक दूर निवार ॥

ढाल १

- १—नगरी काकदी अति रलियावणी,
सहस्राभवन उद्यान, हो भविक जन ।
प्रजा लोक सुखीआ तिणा नगरी मे,
जित शत्रु राजान्, हो भविकजन ॥
- भावघरी ने हो भवियण साभलो ॥टेर॥
- २— भद्रासार्थवाही बसे तिहा,
जाने गज सके नही कोय हो ॥भ०॥
तस घर घन्ना ओ कुवर जन्मिया,
रूप देखी ने हषित होय हो ॥भ० भा०॥
- ३—जीवन वेशमे आया जाणी करी,
परणाई बत्तीसी नार हो ॥भ०॥
महल तैंतीस मे लीला कर रह्या ।
एक नाटकना मणकार हो० ॥भ० भा०॥
- ४— पट् रस भोजन चीजा नितनई
घणा दासी ने घणा दास हो ॥भ०॥

क्रोड वत्तीसा रो सोवन डायचो ।
विलसे लील विलास हो ॥भ० भा०॥

५—बिचरत वीर जिनेश्वर समोसर्या,
लक्षण सहस्र ने आठ हो ॥भ०॥
वारह परिपदा हो आई वन्दवा,
लग रह्या धर्म का ठाठ हो ॥भ० भा०॥

६— करी सवारी ओ राजा सचर्या,
घरी कुणिक जिम कोड हो ॥भ०॥
पच अभिगम दूरा मूकने ।
वन्द्या है वेकर जोड हो ॥भ० भा०॥

७—पहली ढाल सम्पूर्ण थाए यई,
समवसर्या जिनराज हो ॥भ०॥
नगरी मे हगेमगे लागी अति घणी,
लोग टोले टोले जाय हो ॥भ० भा०॥

ढाल २

राग—भाछे ताल री

- १— घन्ना नाम कु वार, बैठा है गोख मझार ।
सुन जो चित्तलाय, लोका ने जाता देखिया जी ॥
- २— कहे सेवक ने एम, लोक जावे छे केम ॥सुन०॥
किए कारण मेलो मण्डियो जी ॥
- ३— सेवक कहे कर जोड, समवसर्या जिनराज ॥सुन०॥
लोक जावे छे वन्दवा जी ॥
- ४— सुण्या सेवक ना वैण, वाला लागा अमीय समान ॥मुन०॥
वन्दन ने मन हुलसियो जी ॥
- ५— सकल सजा शृ गार, बहु लोका रे परिवार ॥मुन०॥
जमाली जिम चालिया जी ॥
- ६— आया तिहां जिनराज, पच अभिगम साच ॥सुन०॥
सन्मुख बैठा श्री वीर ने जी ॥

- ७— भगवन्त दे उपदेश, काल घटे छे हमेश ॥सुन०॥
जन्म मरण रा रोग लग रह्या जी ॥
- ८— जैसी उन्हाला की साझ, तैसी ससार्या की मौज ॥सुन०॥
सडन पडन अणी देह नो जी ॥
- ९— मेलो मण्डियो अचराल अणचिन्त्यो उठ जाय ॥सुन०॥
जीव बटाऊ पाहुणो जी ॥
- १०— अस्थिर कुटुम्ब धन माल, काई फँसीयो रे माया जाल ॥सुन०॥
भ्रमर कमल तरणी परे जी ॥
- ११— सुण्या भगवन्त ना वैण, लाग़ा वैरागी ने वाण ॥सुन०॥
घन्नाजी कहे कर जोड ने जी ॥
- १२— हु लेसु सयम भार, छोड वत्तीसी ही नार ॥सुन०॥
आऊ मे आज्ञा लेय ने जी ॥
- १३— भाखे दीनदयाल, जिमे थाने सुख थाय ॥सुन०॥
ढील न कीजे देवानुप्रिया जी ॥
- १४— वदथा है दीनदयाल, या थई दूसरी ढाल ॥सुन०॥
घर आई माता जी ने किम कहे जी ॥

ढाल ३

राग—रागकपुरो रत्नियानणो रे लाल

- ॥ कृपा करी ने दीजे आगन्या रे लाल ॥टेर॥
- १— घर आई माता जी ने इम कहे रे लाल ।
हु लेसु सयम भार ॥सुनो मात जी ॥
आज्ञा दीजे मुझ भणी रे लाल ।
करणी न ढील लिगार ॥सुनो मात जी ॥कृपा०॥
- २— एह वचन अवणो सुणी रे लाल ।
माता जी गई मुर्छाय, ॥सुत सामलो रे ॥
सावचेत थई माता इम कहे रे लाल ।
आज्ञा दीवो किम जाय ॥सुत०॥
चारिन छे बच्चा दोहिलो रे लाल ॥टेर॥

- ३— पाचो ही महाव्रत पालना रे लाल ।
करणो माथा रो लोच ॥मुत०॥
वाईस परिपह जीतना रे लाल ।
मरण रो नही करणो सोच ॥सुत०॥
- ४— खड्गधारा नी परे चालणो रे लाल ।
करणो उग्रविहार ॥सुत०॥
माह माया दोनो जीतना रे लाल ।
शील पालणो नववाड ॥सुत०॥
- ५— सावद्य औपध करणो नही रे लाल ।
दुष्कर मारग घोर ॥सुत०॥
हरगीज थासु पले नही रे लाल ।
मत करो झुठी भक्झोर ॥सुत०॥
- ६— एकाएकज तू माहरे रे लाल ।
आज्ञा देऊ कणी रीत ॥मुत०॥
ये कचन, ये कामण्या रे लाल ।
सुखविलसो घर श्रीत ॥सुत०॥
- ७— कुँवर कहे माता सुणो रे लाल ।
हु गयो नकं निगोद ॥मुणो मात०॥
दुख अनन्ता में सह्या रे लाल ।
कह्यो कठा लग जाय ॥सुणो० कृपा०॥
- ८— वन माहे । एक-मृगनो रे लाल ।
कुण करे । वीही । सार ॥मुणो०॥
मृगला नी परे विचर स रे लाल ।
एकडलो अणुगार ॥सुणो० कृपा०॥
- ९— हरगिज तोरेसु नही रे लाल ।
छोड सु । मीयाजलि ॥सुणो०॥
माता जी वरजीने आकिसाहरे ज्ञानमही नीह ६- ९
या थई तासरीक दास ॥सुणो० विप्रान॥

ढाल ४

राग—बिछियानी राग

१—रे लाला महावल कुँवर तणी परे ।
 माताजी ने उत्तर दीघ रे लाला ॥
 कृष्ण थावरचानी परे ।
 दीक्षा दीनी मोटे मण्डाण रे लाला ॥
 वरागी वेराग मे झिल रह्या ॥टेर॥

२— रे लाला माला मोती सहू खोलिया ।
 माता झेल्या खोला रे माय रे, लाला ॥
 ठलक ठलक आसु पड ।
 जाणो टूटो मोत्यारो हार रे ॥ला०॥

३—रे लाला भगवत ने दीनी भलावणी ।
 पुत्र ने दीधी सीख रे लाला ॥
 किरिया मे कसर राखो मती ।
 गुरुरी आज्ञा मे रहिजो ठीक रे ॥ला०॥

४— रे लाला माता वदि निजस्थानक गई ।
 धन्ना जी हुआ अणगार रे लाला ॥
 समिति गुप्ति री खप करे ।
 किरियारो कोड अपार रे ॥ला०॥

५—रे मुनि चरण वद्या जिनराज रा ।
 दीक्षा लीनी तीणहिज दिन रे लाला ॥
 बेले बेले करसु पारणो ।
 जावज्जीवन पाडु भिन्नरे ॥

६— रे लाला आमिल करसु पारणो ।
 आहार लेसु खरडे हाथ रे लाला ॥
 कोई नाख्यो थको वछे नहीं ।
 एहवो लेसु पारणो आहार रे ॥

७—रे मुनि जिम सुख होवे तिम करो ।
 आज्ञा दीनी श्री जिनराज रे लाला ॥

धन्नाजी सुण राजी हुआ ।

अब सारसु आतम काज रे ॥

८— रे लाला आयो बेला रो पारणो ।
मुनि काकदी नगरी मे जाय रे लाला ॥
गोतमस्वामी नी परे ।
आय वीर ने बतायो आहार रे ॥

९— रे लाला आहार मिलेतो पानी नही मिले ।

पानी मिले तो नही मिले आहार रे ॥

मुनि दीनपणो आण्यो नही ।

क्रोधादिक जीत्या शुद्ध भाव रे ॥

१०— रे लाला आज्ञा हुई जिनराज री ।
जिम बिल माहे पेसे भुजग रे लाला ॥
गृद्ध पणो आण्यो नही ।
मुनि माण्ड्यो कर्मा सु जग रे ॥

११— रे लाला विहार कियो जनपद देश मे ।

धन्नाजी वीरजी के सग रे लाला ॥

सामायिक स्थविरा कने ।

मुनि भण्यो ग्यारह अगरे ॥

१२— रे मुनि तपस्या अति कठीन करी ।
वली लीनी अतापना घोर रे लाला ॥
शुद्ध ज्ञान मे लयलीन हुआ ।
दुष्कर करणी कीनी घोर रे ॥

१३— रे मुनि री काया सूखी खखर थई ।

जाव खघक नी पर जाण रे लाला ॥

चौथी ढाल सम्पूर्ण थई ।

वली आगे शरीर वखाण रे ॥

ढाल ५

राग—शकर बसं रे केलाश मे

श्री धन्ना मुनिश्वर तप तप्या ॥टेर॥

१— सूखी तो छाल काष्ट नी पावडी ।

एहवा पग दोई सूखारे ॥

लोही ने भास सूखी गयो ।
 दीसे दुर्बल लूखार ॥श्री०॥
 श्री घन्ना मुनिश्वर, तप तप्या ।

२— श्रुत मुगत्या सु लागी रे ॥
 श्रुत लागी ज्यारी मोखो ॥टेर॥
 काया तो खखर डरावणो ।
 सूखा सर्प नो खोखो रे ॥श्री०॥

३—मूग उडद नी कोमल फली ।
 बली सूखी तेहनी फलीया रे ॥
 एहवो तो घन्ना मुनिराज नी ।
 सूखी पग नी अगुलिया रे ॥श्री०॥

४— कागपक्षी ने मोरिया ।
 एवो सूखी ऋषि नी पिण्ड्यारे ॥
 गोडा री गाठ बनास्पति ।
 पिण परिणाम चेंगारे ॥श्री०॥

५—सापल पिगु कुम्पल सारिखी ।
 कटि ऊँट अर्घ पगोरे ॥
 पेट तो सूखो जागे दीवड्योडा ।
 पेठो ऊण्डो अयगो रे ॥

६— आरेसा उपरा ऊपरी मूकिया ।
 एवी पासुल्या जाणो रे ॥
 हाथ कडा आभरण जेवडा ।
 पासली लारली पिछाणोरें ॥

७—छाती तो सुखी दोपट बीजणो ।
 बाया खेजहला नी फलिया र ॥
 हाथ रो पजो बढ नो पानडो ।
 कुलत्य फली सूखी आगुलिया र ॥श्री०॥

८— गलो तो सूखो करवा जेवडो ।
 झाड्यो आमकुली जानो रे ॥

सूखी जलोक होट जेवढा । - १
जिह्वा सूखो साग पानो रे ॥श्री०॥

६—नाक बिजोरा री कातडी ।

घाल्या छिद्र दोय वीणा रे ॥

अथवा तो तारा प्रभात रा ।

कान कादा छोट मीणा रे ॥श्री०॥

१०— उदर कान होट जिभिया । -
ज्या मे चाम-नसा जाणो रे ॥
सतरा बोला मे घाल्या हाडका ।
काया दीसे महाविकरालो रे ॥श्री०॥

११—ढीलो पलाण तुरगनो पावडो ।

एहवा लटके दोनो हाथो रे ॥

आयुष्य रे बल हाले चालता ।

धुजे कम्पणवायु माथो रे ॥श्री०॥

१२— बाजे निहाला तिलनी साकली ।
एवा खड खड हाडो रे ॥
ढाकी तो अगनि तणी परे ।
माहे तेज धणो गाडो रे ॥

१३—ढाल थई एतो पाचमी ।

मुनि काया जोर कसी रे ॥

परवानी राखी कोई शरीर नी ।

सुरत मुगत्या जाय वसी रे ॥

ढाल ६

नगरी राजगृही समोसर्या ॥ हो जिनद ॥

करता उग्र विहार हो ॥टेरा॥

१— राजा श्रेणिक आया वदवा हो ॥ जि० ॥

साथे अभयकुंवार हो ॥

२— जिनवर दे उपदेशना ॥ हो श्रोताजन ॥

सकल जीवा हितकार हो ॥

- ३— श्रेणिक राय पूछा करे ॥ हो० ॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
- ४— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो० ॥
चवदा सहस्र मे कुण थारे होय हो ॥
- ५— वीर जिनेश्वर इम कहे ॥ ओ श्रेणिकराय ॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
- ६— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो श्रे० ॥
भारे घन्ना नाम कुँवार हो ॥
- ७— श्रेणिक कहे कारण किसो ॥ हो जि० ॥
कह्यो लारलो विस्तार हो ॥
- ८— वीर वन्दी घन्ना जी कन ॥ हो श्रे० ॥
चरण वदथा बारम्बार हो ॥
- ९— सुकृत मानव भव था लियो ॥ हो मोटा मुनि ॥
घन थारो अवतार हो ॥
- १०— वीर जिनेश्वर गुण किया ॥ हो मोटा मुनि ॥
दुष्कर करणी रा अवतार ॥
- ११— श्रेणिक वदी निज स्थानक गया ॥ हो जि० ॥
मुनिवर रा गुण गावे हो ॥
- १२— घन्ना जी रातरा चितवे ॥ हो जि० ॥
उपन्यो बैराग अपार हो ॥
- १३— दान शील तप भावना ॥ हो जि० ॥
शिवपुरी मारग सार हो ॥
- १४— छठी ढाल सम्पूर्ण थई ॥ हो जि० ॥
सुणो सथारारो सार हो ॥

ढाल ७

राग— ४ बलिहारी जाववा

- १— घन्ना जी ऋषि मन चितवे,
तप करता टुटी हम तणी काय के ।

वीर जिनन्द जी ने पूछ ने,
आज्ञा ले सथारो देसु ठाय के ॥

२— प्रह उठी वन्द्या श्री वीर ने,
श्री मुख आज्ञा दीवी फरमाय के ।
विमलगिरी स्थविरा सगे,
चाल्या सब सत सतियो ने खमाय के ॥

३— सथारो आयो एक मास को,
स्थविर पाछा आया वीरजी रे पास के ।
भण्डोपकरण सहें सूँपने,
गौतम स्वामी पुछें बेकर जोड के ॥

४— तप तप्या हो मुनिवर आकरो,
को स्वामी वासो कियो किए ठाम के ।
सागर तेतीसा रे आउखे
नौ महीना मे सर्वार्थसिद्ध पाय के ॥

५— महाविदेह क्षेत्र मे सिद्धसी,
विस्तार नवमा अंग के माय के ।
सत ढालियो सम्पूर्ण थयो,
“आशकरण” मुनिवर गुण गाय के ॥

६— सबत् अठारे इकसठे,
वैसाख विद पक्ष के माय के ।
विशालपुरी गुण गाविया,
रिख रायचद जी के प्रसाद के ॥

७— बुद्धिजीसारु गुण वर्णव्या,
सूत्र रे अनुसारे जोय के ॥
ओछो जी अधिको जो कियो,
मिच्छामि दुक्कड मुझने होय के ॥



बोहा

- १— तेरमो परिपह वर्णवु, वघ है जिणरो नाम ।
मोक्षगामी मुनिवर सहे, ते सारे आतम काम ॥
- २— मन हठ राखी मुनिवर, न आणो राग ने द्वेष ।
खन्दक ना शिष्य पाच से, सुणजो भाव विशेष ॥

ढाल १

राग—धन धन शील सुहामणी

भविष्यण भाव सु सामलो ॥टेर॥

- १—भरतक्षेत्र माहे भली, सावत्थी नगरी सोहे रे ।
स्वर्गपुरी की ओपमा, देखता मन मोहे रे ॥भ०॥
- २—भविष्यण भाव सु सामलो चित्त ठिकारो कीजे रे ।
निद्रा नेडी मत आणजो, सुण सुण ने रस पीजे रे ॥भ०॥
- ३—सेठ सेनापति मन्त्रवी, वसे घणा व्यापारी रे ।
प्रदेशी आवे घणा, सुख विलसे नर नारी रे ॥भ०॥
- ४—राज्य करे रलीयामणो, राय जितशत्रु जाणी रे ।
राणी तेहने धारणी रूपे जाणे इन्द्राणी रे ॥भ०॥
- ५—कुवर खन्दक कला घणी, रूपे सुर अवतारी रे ।
सूत्र भण्यो भली परे, धर्म नी श्रद्धा धारी रे ॥भ०॥
- ६—जैन धर्म साचो श्रद्धियो, नही माने मिथ्यातो जो ।
समकित मे सेठो घणो, साधु सेवे दिन रातों रे ॥भ०॥
- ७—चर्चा मे सेठो घणो, अन्यतीर्षि कोई आवे रे ।
विद्या विद्या ने रूपे जिण जीजी कोई नको आवे रे ॥भ०॥

- ८—कुँवर मे कमी कोई नही, सगली बातें सेणो रे ।
उदार दिल नो छे घणी, अल्पभापी मृदु वेणो रे ॥भ०॥
- ९—पुरन्दर यशा पुत्री भली, सुदर छे मृगानंणी रे ।
रूप जीवन आई भली, भणी गुणी ने हुई सैणी रे ॥भ०॥
- १०—कन्या कुँवारी राय नी, थई परणावण जोगो रे ।
गुण बुद्धि देखी पुत्री नी, सोचे कुँवर मिले जोगो रे ॥भ०॥
- ११—पहलो ढाल माहे किया, वहिन भाई ना वखाणो रे ।
“रिख रायचद” कहे साभलो, आगे चतुर सुजाणो र ॥भ०॥

ढाल २

राग—माधव हम बोले

- १—कुम्भकारकटक नो घणी रे, कु भकार राय जाण ।
तेज प्रतापे रवि जिसो रे, कोई न लोपे आण र ॥
पृथ्वीपति राया ॥टेर॥
- २—सेना चार प्रकार नी रे, भरिया भण्डार पूर ।
कमी नही किए बात री रे, दुश्मन गया दुर र ॥पृ०॥
- ३—रूपवत ए राजवी रे दीसे कुँवरी जोग ।
पुत्री परणाई प्रेम सु रे हर्षा सगला लोक र ॥पृ०॥
- ४—दत्त दायचो दीधो घणो रे, जितशत्रु महाराय ।
बाई सासरे सचरी रे, तीहा रहे सुख माय रे ॥पृ०॥
- ५—सासरा माहे सुख घणो रे, कुँवरी ने चित्त चैन ।
पिहर मे व्हाली घणी रे, खन्दक कुँवर री बेन रे ॥पृ०॥
- ६—एकदा प्रोहत ने कह्यो रे सावत्यी नगरी तू जाय ।
वस्तु अमोलक भेटणो र मेल जो सुसरा ने पाय रे ॥पृ०॥
- ७—पालक तीहा थो आवीयो रे, साव थी नगरी रे माय ।
आशिर्वाद देई करी रे, उभा राजसभा रे माय र ॥पृ०॥
- ८—समाचार सगला कहा रे, परवानो दी राय ।
मिजमानी मेली आगले र, आदर से लिराय रे ॥पृ०॥

६—राजा बैठो सिंहासने रे, कुँवर प्रजा तिहा जाए ।
 “रिख रायचंद” कहे सामलो रे, दोनो राजा रा किया
 बखाए रे ॥पृ०॥

दोहा

- १— पालक प्रोहित तिण समे, राजसभा के माय ।
 मिथ्या धर्म बखाएता, नास्तिक मत थपाय ॥
- २— शास्त्र नी जुगती करी, निपेध्यो स्कंदक कुमार ।
 पालक खीसाणो हुओ, भरी सभा मझार ॥
- ३— प्रोहित नो हासो हुओ घटयो सभा मे तोल ।
 कुंवर मिथ्यात्व घटावियो, रह्यो सभा मे बोल ॥
- ४— पालक खंदक ने ऊपरे, धर्यो धर्योरो देख ।
 द्वेष तरा फल पाडुवा, आगे लीजो देख ॥

ढाल ३

राग—भरतेश्वर, तेरे तैला करे एम

- १—तिण काले ने निण समे जी, करता उग्रबिहार ।
 सावत्यी नगरी समोसर्या जी, साधा रे परिवार ॥जि० ज०॥
 जिनेश्वर जगतारण जगदीश, मुनि सुव्रत विश्वाधीस ॥टेर ॥
- २—प्रभू पधार्या बाग मे जी, जोवता जारी वाट ।
 विधसु वदन आविया जी, नर नार्या रा ठाट ॥जि० ज०॥
- ३—कोणिकनी परे आवियो जी, जीतशत्रु राजान् ।
 स्कंदक कुंवर तिहा आवियो जी, सफल गिण्यो दिन जान ॥जि० ज०॥
- ४—दीधी धर्म नी देशना जी, भव जीवा ने काज ।
 जन्म मरण मे बूडो मती जी, जो मिल्यो धर्म नो साज ॥जि० ज०॥
- ५—तन धन जीवन कारमो जी, अस्थिर सह ससार ।
 वाणी सुण वैरागीयो जी, स्कन्दकराय कुंवार ॥जि० ज०॥
- ६—कर जोडी कुंवर कहे जी, लेसु सजम भार ।
 मात पिता ने पूछने जी, छोडु वेग ससार ॥जि० ज०॥
- ७—यथासुख जिनजी कह्यो जी, घर आयो घर राग ।
 ‘रिख रायचंद’ कहे तीजी ढाल मे जी, कवर पाम्यो वैराग ॥जि० ज०॥

ढाल ४

राग—राजवीया ने राजपियारो

माता जी मोने अनुमति दीजे ॥टेर॥

- १—तात मातरे पाए लागी, बोले बेकर जोडी जी ।
काया माया मैं जाणी काची, आयुष्य नो थिति थोडी जी ॥
- २—माता जी मोने अनुमति दीजे, जेज हिवे नही कीजे जी ।
क्षिण क्षिण माहे देही छोजे, इम जाणी आतम दमीजे जी ॥
- ३—वैण सुणी मुर्छाणी माता, बोले सुण मुझ जाया जी ।
तु मुझ वालो बेटो एक, सुकोमल थारी काया जी ॥
- ४—जीवनवय मे जोग न लीजे, सुख भोगवीजे सदाई रे ।
रमणी रिद्ध रो लावो लीजे, सपदा सखरी पाई जी ॥
- ५—कुँवर कहे काची सर्वे माया, म्हारो मन नही लागे जी ।
मुनिसुव्रत स्वामी मुझ मिलीया, सजम लेसु जा भागे जी ॥
- ६—उत्तर प्रत्युत्तर कीधा बहुला, जमाली जिम जाणी जी ।
सहस्रपुरुष सिविका शृ गारो, कुँवर ने सुप्यो आणी जी ॥
- ७—मुनिसुव्रत स्वामी गुरु मिलीया, दीक्षा ली स्कदक कुमारो जी ।
रायपुत्र पाचसे कुवरा सु निकल्या स्कदक कुमारो जी ॥
- ८—पाचसे जणा सु सजम लीघो, काटी जग नी फासो जी ।
सूत्र सिद्धान्त भली तरे भणीया, आणी मन हुल्लासो जी ॥
- ९—अनुक्रमे पदवी पाया मोटी, आचारजनी जाणी जी ।
परिवार जारे पाचसे चेला, सगला उत्तम प्राणी जी ॥
- १०—चौथी ढाले दीक्षा लीघी पदवी मोटी पामी जी ।
रिख रायचंद कहे आगे सुण जो, किण गति रा होवे गामी जी ॥

ढाल ५

राग—जम्बुद्वीप मत्तार

- १— बीसमा जिनराय, मुनिसुव्रत भला ए ।
पग ज्यारा प्रणमी करी जी ॥
- २— स्कदक कहे छे एम, विहार हु कर ।
कु भकारकटक भणी ए ॥

- ३— बहैन बहनोई तिहा, ज्या ने प्रतिबोधवा ।
भगवत बिहार हु करु ए ॥
- ४— भगवत भाखे एम, जो तुम्हे जावसो ।
तो थाने उपसर्ग होवसी ए ॥
- ५— तुम बिना आराधक होय, भगवत भाखीयो ।
होण पदार्थ नही दाखीयो ए ॥
- ६— करता उग्रविहार, स्कदक आचार्य ए ।
पाचसे परिवारसु ए ॥
- ७— कु भकटक है देश, नगर बसत पुरे ए ।
उद्याने आई उतर्या ए ॥
- ८— पालक प्रोहित तेह, रीस ज पाछलो ।
इण मोने खिष्ट कियो हुतो ए ॥
- ९— सजम ले आयो एथ वर बालु म्हारो ।
परभव मै करु पौंचतो ए ॥
- १०— बाग,वाहर बालु रेत, आयो आधी रात रो ।
प्रोहित छानो पापीयो ए ॥
- ११— पाव से खड्ग दिया, गाठ ।
ढाला पाव से, गडाइ जुदी जुदी जायगा ए ॥
- १२— तीर कामठी तेह, बडुक बर्छीया ए ।
कुल्हाडी ने कटारीया ए ॥
- १३— सग्राम ना छे साज, घरतीमा घरदीयो ए ।
प्रोहित कपट इसो कियो ए ॥
- १४— प्रोहित पापी जीव कुवध केलवी ।
साधा ने मारवा मणी ए ॥
- १५— महामिथ्यात्वी जीव, द्वेषी धर्मनो ए ।
अभवीजीव ज जाणीये ए ॥
- १६— राते कपट वणाय प्राप्त प्रोहतीयो ए ।
राजाजी कने आवीयो ए ॥

१७— प्रोहित माण्ड्यो जजाल, पांचमी ढाल मे ।

“रिख रायचद” कहे साभलो ए ॥

ढाल ६

राग—पुज्य पधारीया ए

कर्म छोडे नही ए ॥टेर॥

१—स्कन्दक विराज्या बाग मे ए, जावणो वदन काज के ।

सगपण साला तणो ए, वली धर्म नो राज के ॥कर्म॥

२—कर्म छोडे नही केहने ए, कुण साधु ने कुण चोर के ।

उदय हुगा पछे ए, किए रो न चाले जोर के ॥कर्म॥

३—पालक कहे महाराय ने ए, किए ने वदन जावो आज के ।

स्कन्दक आयो बाग मे ए, लेखण आपरो राज के ॥कर्म॥

४—कपटी भेष वणावियो ए, पाचसे साथे सरदार के ।

जो वदन जावसो ए, तो लेसी आपने मार के ॥कर्म॥

५—म्हारो साच मानो नही ए, ऐ लाया सग्रामनो साज के ।

छिपाया धूल मे ए, आप देखी जे महाराज के ॥कर्म०॥

६—इण रे चारित्र नो मन को नही ए, पाचसे लायो उमराव के ।

नृप कहे साची अछे ए, तु कहे तिका बात के ॥कर्म०॥

७—पालक कहे महाराय ने ए, किसो राखो भ्रम के ।

उरा आवो देखो इहा ए, इण मोडा रा ए कर्म के ॥कर्म०॥

८—सग्राम नो साज देखाडीयो ए कर कर ऊची धूड के ।

राजा मन मे जाणीयो ए, पालक रे नही कूड के ॥कर्म॥

९—प्रोहित कहे महाराय ने ए अबे आयो म्हारो साच के ।

ज्यू नाणो दिखाय द ए, हाथ मे लेइने काच के ॥कर्म०॥

१०—राजा रो मन फेरीदियो ए, प्रोहित कपटी एम के ।

आगे हुआ ते साभलो ए, वाचा कानारा नृप केम के ॥

११—राम रे मन पढ गई ए सीता केरी शक के ।

घोवी रा वचन सु ए, देखो कर्मा रो वक के ॥कर्म०॥

- १२—शख राजा रे शका पड़ी ए, पूछी नहीं कोई बात के ।
कलावती राणी तणा ए, कपाया दोनु हाथ के ॥कर्म०॥
- १३—चेलणा किरा ने चितारीयो ए, कोप्यो श्रेणिक भूपाल के ।
कह्यो भ्रमय कुमार ने ए, दीजे अतेउर प्रजाल के ॥कर्म०॥
- १४—सती अजना रे ऊपरे ए, रुठ्यो पवनकुमार के ।
परणी ने पर हरी ए, बली दियो पग नो प्रहार के ॥कर्म०॥
- १५—इणरीते भागे हुवा ए, राजा किरारा न होय के ।
प्रोहित ने कहे राजवो ए, साधा सु दुश्मन होय के ॥कर्म०॥
- १६—पालक ने राजा कहे ए, यँ राख्यो म्हारो राज के ।
तु साधमीं हुओ ए, अब तोने भला यो काज के ॥कर्म०॥
- १७—ओ मोने मारण आवीयो ए, ए मोड्यो पाखण्ड के ।
पाष से भेला करी ए, दे मन आवे जो दण्ड के ॥
- १८—प्रोहित ना बहु धितीया ए, होणहार होवे जिम होय के ।
साधा ने मोक्ष जावणो ए, कर्म न छोडे कोय के ॥
- १९—प्रोहितपरिवहदिवे किरा परे ए, थे सुण जो बाल गोपाल के ।
“रिख रायचद” इम कहे ए, पुरी थई छठी ढाल के ॥

ढाल ७

राग—राजवीया ने राज विपारो

धन्य धन्य साधुजी सहे परिसो ॥टेर॥

- १— पालक पापी भ्रमवी प्राणी,
नगर बाहर मण्डाई घाणी रे ।
पिलता चेला अनुक्रमे,
गुरुगोडे उभा रिखो घाणी रे ॥ध०॥
- २— धन्य धन्य साधु जी सहे परिसो,
कठिन कम ना तोडी जाला रे ।
मुक्ति मंदिर मे जाय विराज्या,
जन्म मरण फेरा टाला रे ॥ध०॥
- ३— प्रथम चेला ने घाणी मे घात्यो,
चारआहारना किया पवचक्खाणी रे ।

तिल भर द्वेष न धारियो मुनीश्वर,
केवल लेई पाया निर्वाणी रे ॥घ०॥

४— अनुक्रमे पिल्या पापी,
स्कन्दक आचार्य ना शिष्य रे ।
चार से ने अठाणु चला,
किण नही आणी मन रीस रे ॥घ०॥

५— चार से ने अठाणु पिल्या,
रह्या आचारज देख रे ।
इहा लग तो गुरु रा मन मे,
नही आयो कुछ घेख रे ॥घ०॥

६— बालक चेलो नानो रह्यो,
मोने देखता मत पिलरे ।
नवदीक्षित है नानो चेलो,
कोमल इण रो डिल रे ॥घ०॥

७— मो प्रते जोयो किम जावे,
तु पीलेला घाणी मे घाल रे ।
इण ऊपर मारो मोह ज अधिको,
रह्या पालक ने पाल रे ॥घ०॥

८— पालक प्रोहत पाछो बोल्यो,
तु मोने रह्यो पाल रे ।
पिण तोने दुख देवण गाढो,
अभी पीलु घाणी मे घाल रे ॥घ०॥

९— जुलक जुलक चोला रे सामो,
रह्या आचारज जोई रे ।
तब चेले मन माहे जाण्यो,
गुरु रे चिता रो छेहन कोई रे ॥घ०॥

१०— चिता देखी ने चेलो बोल्यो,
आप सोच करो छो केम रे ।
मुझ ऊपर मोह न राखो,
म्हारे मुगत जावण रो प्रेम रे ॥घ०॥

११— अकाममरण मैं कीधा अनन्ता,
 ' ' ' गरज न सरी लिगारो रे ।
 अब के पण्डितमरण करी ने,
 आप प्रसादे करु खेवो पारो रे ॥घ०॥

१२— इतरे पालक आणी पकड़यो,
 दीयो घाणी मे घाल रे ।
 केवल लेइ मुगत सिघाया,
 भव फेरा दिया टाल रे ॥घ०॥

१३— सातवी ढाल मे सिद्ध गति पाया,
 ' ' ' स्कदक आचार्य ना शीष्य रे ।
 "रिख रायचद" कहे 'जाने नमाऊ,
 कर जोडी ने मारा शीप रे ॥घ०॥

ढाल ८ । ॥

बात सुणो, स्कन्दक तणी ॥टे०॥

१— इए मूरख कह्यो नही मानीयो, ओ लागो म्हारी लारो रे ।
 पछे गुरु ने पीलीया, ये पालक पापी हत्यारो रे ॥

२— बात सुणो स्कन्दक तणी, जाने आयो क्रोध अपारो रे ।
 विराधिक हुओ साध जी, जाय उपन्यो अग्निकुमारो रे ॥

३— अवध करी ने जाणीयो, पालक कीधी घातो रे ।
 वर पूग्वलो साभर्यो, हिवे छे इणरी बातो रे ॥

४— साधु थावक ने टालने, बीच मे लिया भूपालो रे ।
 पाप पालक ना प्रगट्या, भस्म किया सहु वालो रे ॥

५— रयत ने आत आयो नही, बेन पुरन्दर यशा टालो रे ।
 साधाने दुख दियो ज्यारे, पाप उदे हुआ तत्कालो रे ॥

६— अनर्थ ए मोटो हुओ, साधा रो हुओ सहारो रे ।
 वार वार वाल्यो देश ने, नाम थयो दण्डाकारो रे ॥

७— पुरन्दरयशा सजम लियो, तपस्या विनी घणी वाई रे ।
 स्वर्ग पहुँची साधवी, दोनी मुगति नी साई रे ॥

- ८—चेला तो भुगति गया, गुरु हुआ अग्निकुमारो रे ।
 रोश कदे रूडी नही, क्षमा सु सुख अपारो रे ॥
- ९—स्कदक आचारज जिम कियो, तिम साधु ने करणो नाई रे ।
 क्रोध तणा फल पाडुवा, क्षम्या सु शिव सुख होई रे ॥
- १०—चेला परिवह जिम सही, कर दियो खेवो पारो रे ।
 तिम सेणो (सहनो) सर्व साधु ने, इम भाख्यो किरतारो रे ॥
- ११—वध परिपह तेरमो, कह्यो उत्तराध्ययन मभारो रे ।
 दूजे अध्ययन मे कथा कह्यो, तिए रो ए अधिकारो रे ॥
- १२—पूज्य जयमलजीरा प्रसाद सु 'रिखरायचद' जोडी ढालो रे ।
 चेत मास नागौर मे, प्रीत साधा सु पाला रे ॥



बोहा

- १— श्री जिन समरु भाव सु सत्गुरु लागु पाय ।
कथा अनुसारे गाव सु मेतारज मुनीराय ॥
- २— पूर्वभव दो मित्र थे, ब्राह्मण केरी जात ।
देशना सुणी ऋषि राज की, सजम लियो सघात ॥
- ३— सजम पाले भाव सु तपस्या करे करुण ।
एक दिन मन मे चितवे, पूर्व पाप अकूर ॥
- ४— जैनधर्म स्वीकार छि, शका नहीं लिगार ।
स्नान नही इण मार्ग मे, एतो कही आचार ॥
- ५— कुलमद दुगु छा भाव थी, नीच कुल बन्धन कीन ।
आलीयणा विन सोच बी, सुर गति दोनु लीन ॥
- ६— दोय मित्र तिहा देवता, बोले आपस माय ।
जो पहले नरभव लहे, घाली जे धर्म माय ॥
- ७— सजम लेवाणो तिण भणी, करि कोई दाय उपाय ।
इम सकेत कीनो उभे, सुर भव आपस माय ॥
- ८— कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहले चव्यो तेथ ।
मातंग कुल मे अवतर्यो, उदय कर्म के हेत ॥
- ९— शेष पुण्य प्रतापथी, पायो सम्पति सार ।
किणविष ते सजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥

ढाल १

राग—सोवन सिंहासन रेवती

शेठ युगधर दीपतो रे ॥टेर॥

- १—बाहर राजगृही दीप तु, राज करे अंगिक राय रे ।
शेठ युगधर दीपतो, लक्ष्मीवत कहाय रे ॥शे०॥
- २—श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुण अधिकाय रे ।
अशुभ कर्म प्रभाव थी, मृत वझणी ते थाय रे ॥शे०॥
- ३—एकदा गर्भ रह्यो तेहने चितवे ते मनमाय रे ।
जीवे नहि बालक माहरे, धन रख बालक नाय रे ॥शे०॥
- ४—जिम सन्तति रहे कुल विषे, तिम करु कोई उपाय रे ।
एटले आवी मातगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥शे०॥
- ५—तिण ने एकाते लेई करी, दीयो घणो सन्मान रे ।
सम्पति छे मुझ घर घणी, जीवे नही मुझ सन्तान रे ॥शे०॥
- ६—जो तुझ होवे नन्दन कदा, गुप्त पण घर मोय रे ।
मेल जे तु निशि समे, ठीक पढे नही कोय रे ॥शे०॥
- ७—द्रव्य देशु तुझ सामटु, होसी सुखी तुझ पूत रे ।
प्रेम हु राख शु अतिघणी, रहसी मुझ घर तणो सूत रे ॥शे०॥
- ८—राजी यई तिणो मानीयो, जनमीयो नन्द जिणवार रे ।
प्रच्छन्न पण तिणो मोकल्यो, ठीक नहि पुर नर नार रे ॥शे०॥
- ९—जनम महोत्सव सब ही कियो, दिवस थया जब बार रे ।
दियो दशोदण जात मे, वरतिया मगलचार रे ॥शे०॥
- १०—नाम मेलारज थापी यु, प्रतिपालन करे पच घाय रे ।
पूर्व पुण्य प्रभाव थी, रूप गुण अधिकाय रे ॥शे०॥
- ११—कुलमद कियो तिण कर्म थी, महतर घर अवतार रे ।
बीज शशी परें दिन दिने, वढे तस जश विस्तार रे ॥शे०॥
- १२—बहोतर कला मे पण्डित थयो, आवियो योवन माय रे ।
'तिलोक रिख' कहे पहली ढाल मे, पुण्य थी सुख सवाय रे ॥शे०॥

दोहा -

- १— यौवन वय जाणी करी, कन्या परणार्ई सात ।
पच इन्द्रिय सुख भोगवे, आनन्द मे दिन रात ॥
- २— हवे तिण अवसर ने विषे, पूर्वे कीनो करार ।
ते सुर आई उपदिशे, ले तु सजम भार ॥
- ३— तलालीन ते भोगवे, माने नही लगार ।
कीनी सगाई वली तिणे, ते सुणजो अधिकार ॥शे०॥

ढाल २

राग — इण सरवरीयारी ढाल, उभी दोव रावली

- १—आठमी कन्या तेह, परणवा उमाह्या ॥हा० प०॥
कीनी सजाई जान, जानी भेला थया । हा० जा०॥
केशरीया जामो पहर, मुकुट शिर पर घर्यो ॥हा० मु०॥
माथे बाध्यो मोड, बीदनो वेश कह्यो ॥हा० बी०॥
- २—शिरपर शिर पेज जडाव, तुरीं झगमगे सही ॥मा० तु०॥
कलगी तिण ऊपर जाण, अधिक भलकी रही ॥मा० अ०॥
झगमगे कुडल कान, हार झगझग करे ॥मा० हार०॥
बाजुबंद भूज दण्ड, पोची कडाकर सिरे ॥मा० पो०॥
- ३—मुँदडी अंगुली के माथ भलके हीरा तणी ॥मा० भ०॥
कमर कन्दोरो जडाव, सुवर्ण की खिखडी ॥मा० सु०॥
अत्तर अंग लगाय, तिलक भाले कर्यो ॥मा० ती०॥
कियो उत्तरासण तेण, सुरयकी सो नहि उर्यो ॥मा० सु०॥
- ४—वेठी होय असवार, लाडो वण्यो सो सही ॥मा० ला०॥
गावे मगल नार, अधिक उच्छा वही ॥मा० अ०॥
घप मप मादल नाद, के साद सुहामणा ॥मा० के०॥
घडिन्दा घडिन्दा ढोल, तिड किड नासा तणो ॥मा० ती०॥
- ५—चाल्या अधिक उत्साह, ब्याह करवा भणी ॥मा० ब्याव०॥
आया मध्य बजार, वणी शोभा घणी ॥मा० व०॥
तिण समे सो सुर कीध, बात कौतुक तणी ॥मा० वा०॥
मातंग मन दियो फेर, हेर अवसर भणी ॥मा० है॥

६—लीनो हाथ मे लट्ठ, घठ धौठो घणो ॥मा० घ०॥
 आयो जानके माय, घरी कुलठ पणो ॥मा० घ०॥
 माने नही कछु शक, वक एकी जणो ॥मा० व०॥
 आयो सो वीद हजूर, काम नही दूर तणो ॥मा० का०॥

७—सघलाही रह्या देख, बोले सुणो नन्दना ॥मा० वो०॥
 हु छु सगो तुभ बाप, जाणो मत फन्दना ॥मा० जा०॥
 सातक्या ब्याही वणिक, परणाऊ एक माहरी ॥मा० प०॥
 पकडी अश्व लगाम, कोई नही बाहरी ॥मा० को०॥

८—वदलायो चित्त लोक, घोको सवने पड्यो ॥मा० धो०॥
 साची दीसे ए वात, जोग इसडो घड्यो ॥मा० जो०॥
 लोक गया सव ठाम, वीद रह्यो एकलो ॥मा० वी०॥
 अधिक खीसियाणो होय, देखे सो भूई तलो ॥मा० दे०॥

९—तिणसमे सो सुर वेण, कहे मेतार्य विपे ॥मा० क०॥
 ले हवे सजम ताम, कहे सो भूडी दीसे ॥मा० क०॥
 हवे पाछो होय सुजस परण कन्या वणिकनी ॥मा० प०॥
 नवमी पण भूप, घूया श्रेणिक नी ॥ना० गु०॥

१०—वारा वरस गृहवास, रहू तदन्तरें ॥मा० रहू०॥
 लेशु पिछे सजम भार, वचन ए नहि फिरे ॥मा० व०॥
 एम सणी सुर वेण, सेण मन फेरियो ॥मा० से०॥
 झूठी मातग नी वात, वीद बली हेरीयो ॥मा० बि०॥

११—हुई सजाई सर्व, तिहा बली ब्याहनी ॥मा० ती०॥
 आया सोही बाजार, वात थई न्यायनी ॥ना० बा०॥
 महेतए आयो सो चाल जान माही दीडी ने ॥मा० जा०॥
 उण मदिरा पीघ, बोले कर जोडी ने ॥मा० वो०॥

१२—ए नहि माहरो नन्द, खोटो हु बोलियो ॥मा० खो०॥
 माफ करो अपराध, कह्यो वे तोलियो ॥मा० क०॥
 भर्म टल्यो सहलोक, कन्या परणी सही ॥मा० क०॥
 'तिलोक रिख' कहे दुजो ढाल, दुविधा राखी नही ॥मा० दु०॥

बोहा

- १— राज सुता परणावणी, सुर सोची ने तास ।
दीनी बकरी रूयडी, उगले रतन उजास ॥
- २— रत्न राशि भगमग करे, देखे बहु नरनार ।
धुरमे पसरि वारता, भेतारज पुण्यसार ॥

ढाल ३

राग—बैदभोग्यु मन बस्यो ॥

- १— राय सुणी इम वारता, मन मे विस्मय थाय ॥हो लाल॥
बकरी लावो वेग सु, जेज करो मति काय ॥हो लाल॥
राय सुणी इम वारता ॥टेर॥
- २— सुभट सुणी चल आवीया, युगधर ने गेह ॥हो लाल॥
मागे बकरी शेठ थी, उगले रत्न छेह ॥हो लाल॥रा०॥
- ३— शेठ वदे सुभटा भणी, मैं नाही मालक तास ॥हो लाल॥
भेतारज ने पूछो ने, लेई जावो थें उल्लास ॥हो लाल ॥रा०॥
- ४— कुँवर कने जाची तिका, सो बोले तिणवार ॥हो लाल॥
बकरी जीवन प्राण छे, रत्न पुज दातार ॥हो लाल रा०॥
- ५— सुभट गया फिर राय पें, दाख्या सहू समाचार ॥हो लाल॥
सुणी नोधातुर बोलीयो, जेज न करो लगार ॥हो लाल रा०॥
- ६— हलकार्या सुभटा भणी, घसमस करता जाय ॥हो लाल॥
छाली लाया छोडिने, पूछयो तिण सु नाय ॥हो लाल रा०॥
- ७— राय कचेरी लाविया, क्षण अन्तर नी माय ॥हो लाल॥
बकरी छेरी तिण सभे, दुगन्ध रही फैलाय ॥हो लाल रा०॥
- ८— सभा सहू व्याकुल थई, उठ चाल्या सहू लोक ॥हो लाल॥
छे भूप कारण किसो, वात थई ते फोक ॥हो लाल रा०॥
- ९— सुभट कही झूठी नही, एही रत्न दातार ॥हो लाल॥
पूछे कारण कुँवर शु, सुभट गया तिण वार ॥हो लाल रा०॥
- १०— पूछयो कारण कुँवर थी, किण कारण दुगन्ध ॥हो लाल॥
उगले नहि किम रत्न तें, दाखो तेह प्रबन्ध ॥हो लाल रा०॥

- ११—सो कहे मुक्त राजी करे, रत्न उगले श्रीकार ॥हो लाल॥
नहि तोए रे वुशी, शका नहि लगार ॥हो लाल रा०॥
- १२—राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मोय ॥हो लाज॥
मुख मागी वस्तु तिका, देशु हु खुश होय ॥हो लाल रा०॥
- १३—सो कहे कन्या तुम तणी, दो मुभने परणाय ॥हो लाल॥
रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय ॥हो लाल रा०॥
- १४—गुण मजरी कन्या भली, कीधो ब्याह उत्साह ॥हो लाल॥
'तिलोक रिख' कहे तीजी ढाल मे, कुँवरनो पुर्यो उमाह ॥हो लाल॥

दोहा

- १— नव कन्या परणो भली, नव निधि पति जिम तेह ।
भोगवे सुख ससारना, दिन दिन बधते नेह ॥
- २— वारा वर्ष इम बीतिया, सो सुर आयो चाल ।
कहे ले हवे तु बेग शु, सजम बित्त उजमाल ॥
- ३— नही तो देऊ सकट घणो, इणमे फेर न फार ।
सियाल परे श्री बीर पे, लीधो सजम भार ॥
- ४— मन मे ताम विचारियो, धिक् धिक् काम विकार ।
पायो हीनता लोक मे, महतर घर अवतार ॥
- ५— हवे करणी दुष्कर करु, कर्म करु सब छार ।
मास मास तप धारियो, निरन्तर चौबिहार ॥

ढाल ४

राग—जमी कदमे रे जीव जाई उपनो ।

- १—नित नित प्रणमु रे भेतारज मुनी, तारण तरण जहाज ।
परम बैरागी रे रागी धर्मना साधे आत्म काज ॥

नित नित प्रणमु रे भेतारज मुनी ॥टेर॥

- २—सुत्तर धिविरा पासे रे सीख्या स्थिर मनै, नव पूर्व के रो ज्ञान ।
ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो घ्यावे निर्मल ध्यान ॥
- ३—कोई समे आया रे राजगृही बली, पागणो आयो रे तास ।
प्रभु आज्ञा लेई गोचरो पागुर्या, भिक्षा निरवद्य काम ॥

- ४—मारग जाता रे सुवर्णकार के ओलखिया रखराय ।
एह जमाई रे थाय श्रेणिक तणा, मोचरी कारण जाय ॥
- ५—आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय ।
बहरो सूक्तो आहार छे माहरे, बोले ते एक उपाय ॥नि०॥
- ६—इम सुणी मुनीवर तिहा बहोरण गया, उभा रहियारे बार ।
सोनी घर मेरे आयो वेग सु, वहीरावण भणी आहार ॥नि०॥
- ७—सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिक ना, कुर्कुट आयो रे चाल ।
सो जव चुगिने रे गयो ते शीघ्र शु, मुनिवर रहिया रे भाल ॥
- ८—बाहिर आयो रे आहार बहरायने जव नाही दीठा रे नयण ।
कहो फिए लीधा रे कुण आयो इहा, कहे रोपे भयो वयण ॥
- ९—मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहु, भूठज लागे रे मोय ।
कुर्कुट चुगिया रे इम उच्चारता, हिंसा पातक होय ॥
- १०—देख्यो अदेख्यो रे काई न बोलणो, निश्चय कियो अणगार ।
मोनज पकडी रे आण आराधवा, धन्य सो करुण भण्डार ॥
- ११—मोनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आई रीस अपार ।
इणना भेद मे थई चोरी सही, पूछे बारम्बार ॥नि०॥
- १२—मारे चपेटा रे कहे बलि चोर तु, किम नही बोले रे साच ।
मुनिवर क्षमा रे थारी तन मने, बोले नहि मुख वाच ॥नि०॥
- १३—तिम तिम आधिको रे सो क्रोधभयो, सोचे ए अति धीठ ।
कुट्या विन रस ए देवे नहि, भूख चोल मजीठ ॥नि०॥
- १४—मुनिवर पकडी रे ले गयो वाडा मे, शिर पर आलो रे चर्म ।
खेंची ने बाध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥नि०॥
- १५—लोचन छटकीरे बाहिर नीकल्या, तड तड तुटी रे नाड ।
मुनिवर स्थिर मन दृढ करी राखी यू, जेम सुदशन पहाड ॥नि०॥
- १६—केवल पाई रे मुगत सिधाविगा, अजर अमर अविकार ।
देव बजावे रे दुहुभि गगन मे, बोले जय जय कार ॥नि०॥
- १७—तिण समे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमक सु ताम ।
घीठज कीनी रे कुर्कुट भय वशे, जव पडिया तिण ठाम ॥नि०॥

- १८—सोनी देखी रे थर थर घूजियो, कीघो महोटी अकाज ।
 में मूढ भावे रे निर अपराधीया, घात करी रिखराज ॥नि०॥
- १९—राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करसी कुटम्भ सहार ।
 एम जाणी ने सहु श्री वीर पें, लीघो सजम भार ॥नि०॥
- २०—जप तप करणी रे कीघी सहु जणा, पाया सुर अवतार ।
 अनुक्रमे जासी रे कर्म खपाई ने, सहु तो मोक्ष मभार ॥नि०॥
- २१—नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार ।
 नव पूर्वधर नव सवर करी, पाया भव जल पार ॥नि०॥
- २२—एहवा मुनिवर क्षमा सागरू, तस गुण गाया उमाय ।
 'तिलोक रिख' दाखे रे चोथी, ढाल ए, सुणता पातक जाय ॥नि०॥
- २३—सवत उगणीसे रे गुणचालीशमे, आपाठ वदि पडवा वखाण ।
 दक्षिण देशे रे पनाशहर मे, नानाकीपेठ मे जाण ॥नि०॥
- २४—जोडज गाई रे विपरीत जो कह्यो, मिच्छामि दुक्कड मोय ।
 भणशे गुणशे रे विधि शुद्ध भाव शु, तस घर मगल होय ॥नि०॥



दोहा

- १— सोदागर मिलिया पछे, रहे वस्तु की चाव ।
वीच दलाल मिले नही तो किमकर आवे भाव ॥
- २— घर बैठे ही भाव सु, सब कारज सिद्ध थाय ।
सेठ सुदर्शन किए विधे, गुरु ने वन्दन जाय ॥

ढाल १

राग—आधाकर्मा रो दोवज

- १— राजगृही श्रेणिक राजा जी रे,
समकित धारी चेलणा राणी रे ।
कोम छत्तीसी वसता रे,
ज्यारा पुण्य जरा नही कसता रे ॥
- २— राजा ने विचारी ने करणो रे,
बिना सोचे पाव न घरणो रे ।
बिना सोची जिवान देवे रे,
ते ने पीछे पछतावो होवे रे ॥
- ३— ललितपुरुष पट् आया रे,
काम अपूर्व दिखाया रे ।
तिण सु राय लुमाणो रे,
दियो वचन चूक गयो स्याणो रे ॥
- ४— कोई काज आज थे करसो रे,
तेनी सजा कभी नहीं पासो रे ।

ते मद्य मासना भोगी रे,
तेनी बुद्धि नही कोई जोगी रे ॥

५— तिहा रहे अर्जुनमाली रे
ते ने वधुमती घर आली रे ।
गाव बाहिर फूलवाडी रे,
तेना बाप दादा लगाडी रे ॥

६— छाव भर फूलडा लावे रे,
तेथी आजीविका चलावे रे ।
प्रमोद महोत्सव आवे रे,
ले वधुमती वाग मे जावे रे ॥

७— ललीत पुरुष आगे बैठा रे,
देख वधुमती मोह मे पेठा रे ।
पापमती तेने आवे रे,
छहु मंदिर मे छिप जावे रे ॥

८— बाप दादा सेवित जाणो रे,
मुद्गर पाणी यक्ष बखाणो रे ।
फूल लेई अर्जुन तिहा आयो रे,
वधुमती ने साथे लायो रे ॥

९— बख फूलडा ने शीप नमायो रे,
पट ललीत पुरुष तिहा घाया रे ।
गाढ बधन दियो बाधी रे,
तेह नी नारी पिण विषय रस आधी रे ॥

१०— शीलरा जतन न कीघा रे,
मोह अघ विषय रस पीघा रे ।
घन मेणरया सती तारा रे,
सीता द्रौपदी ने शील प्यारा रे ॥

११— ज्यारा परिणाम हुता चोखा रे,
देव टाल्या घणा रा दोखा रे ।
ज्यारा परिणाम हुता लूखा रे,
वाने मिलीया दादा ने भूखा रे ॥

- १२— अर्जुन ने रीसज आई रे,
 खाली पत्थर सेव्यो बाप भाई रे ।
 देव शक्ती हुती यदि चाको रे,
 मारी केम गमावतो नारी रे ॥
- १३— जब देवने रीसज आई रे,
 मारी काण न राखी काई र ।
 उठासु मुद्गर लियो हाथो रे,
 सातो मार्या एकण साथो रे ॥

दोहा

- १— देव रीस उतरी नहीं, फिरे राजगृह बहार ।
 रोजाना ते मारतो, छह पुरुष एक नार ॥
- २— नव सो अठथोत्तर नर हण्था, एक सो अंसठ नार ।
 दिन नेरे पाच मास मे, ग्यारा सो इकतालीस दिया मार ॥

ढाल २

राग—चित्त समाधी होवे

- १— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
 माथा रे तिलक समान रे भाई ।
 एक करोड ने इंगोत्तर लाख,
 गाँव लागे तिण माय रे भाई ॥
 पुण्य तरा फल मीठा जाणो ॥
- २— तिण रे माहि नालदी पाडो,
 तिणरो घणो अधिकार रे भाई ।
 चोदह तो चौमासा किया,
 भगवत श्री महावीर रे भाई ॥
- ३— लाखा घर ने घणा क्रोडीघज,
 अधिको रिद्ध रो मान रे भाई ।
 शालीभद्र सा सेठ वसे तिहा,
 पुण्य तरा निघा रे भाई ॥

- ४— सेठ सुदर्शन वसे तिए माही,
घर्म घुरघर घीरे रे माई ।
इसडी वेला मे वदन जासी,
भगवत श्री महावीर रे माई ॥

दोहा

- १— वीर जिनेश्वर समोसर्या, घणा मुनि परिवार ।
गुणशील बाग मे उत्तर्या, तप सयम गुण घर ॥
- २— दुदुभि नाद सुणी करी, हुई नगरी मे जाए ।
दिल चाहे पण जावे नही, अर्जन नो भय आए ॥
- ३— सुदर्शन मन चितवे, जाई करू दर्शन ।
चरण वदी निज मात ना, इण पर किनो प्रश्न ॥

ढाल ३

राग—सुप्रीव नगर सुहावणो

- १—हाथ जोड ने इम कहे जी, साभल म्हारी जी माय ।
आज्ञा दीजे मुझ भणी जी, मुझ मन याहिज चाय ॥हे मायडी॥
मैं वदु वीर जिनन्द ॥टेर॥
- २—मात कहे सुत साभलो जी तारा मन मे खात ।
यहाँ बैठा वन्दना करो ए, वीर जाणें सब बातरे जाया ॥
तु घर बैठा ही वाद ॥टेर॥
- ३—वलता कुवर इम कहे जी, साभल मोरी बात ।
घर बैठा वन्दन करू, म्हारी जुगत नही छे बात ॥ए जननी ॥
- ४—ग्राम नगर आया साभलु जी, तो मन खुशियाली थाय ।
भगवत आया बाग मे जी, यहाँ बैठु किए न्याय ॥ए मायडी॥
- ५—और साधु आया साभलु जी, तो पिए हर्ष अपार ।
वक्त विशेखे वीर जी, म्हारे समकित रा दातार ॥
- ६—एकज सुत तु मायरे जी, धन सुख माया अपार ।
इतरा ने छिटकाय ने तू मरण मुखे किम जाय ए जाया ॥
त अठेही जवठे वाद ॥टेर॥

- ७—ये सुख सपति सायवी जी, मिली अनन्ती वार ।
दर्शन दुर्लभ वीरना जी, म्हारे जीवन प्राण आधार ॥
- ८—मन हठता देखी करीजी, मन मे सोच्यो रे माय ।
गद् गद् नेणा इम कह्यो जी, ज्यू थाने सुखथाय रं जाया ॥
ये वदो वीर जिनन्द ॥टेर॥

दोहा

- १— घर सु बाहिर निकल्या, चाल्या एका एक ।
मेल झरोखा जालिया, देखे लोक अनेक ॥

ढाल ४

राग—ऊँची अणाई एक सेवीकारे ।

- १—चोवटा बीचे होई निसर्ग रे, पादविहारी चाल्या सेठ रे ।
जावता देख्या साथे ना हुआ रे, कायर हीया रा रह्या बैठ रे ॥
जोई जो कायर रो हियो थर हरे रे ॥टेर॥
- २—दुर्गुण आही मुख सू इम कहे रे, यश को भूखो दीसे सेठ रे ।
खबर पडसी बाहिरनिसर्ग, पडसी जदभर्जु नमाली री फेट रे ॥
- ३—सेठजी नगरी बाहिरनिसर्ग रे, भर्जु नने आतो लिया जाण रे ॥
मुग्दर उलारे पल हजार नो रे, डेढ मन पक्कारो प्रमाण रे ।

ढाल ५

राग—सुधीव नगर ।

- १—भूमी कपडा सू पूजने जी, बंठा तिण हिज ठाम ।
ए उपसर्ग उपन्यो जी, आप देख रह्याछो स्वाम ।
जिनेश्वर भव धारो रे आधार ॥टेर॥
- २—पेला अत जो आदर्यो जी, तुम पासे जिनराज ।
हिंवा अत छे मायरा जी, दो विध तीन प्रकार ॥जिन॥
- ३—इण उपसर्ग सु उवरु जी, तो लेवु अन्न पान ।
नही तर माने आज से जी, जावजीव पचवत्ताण ॥
- ४—भर्जुन भायो उतावलो जी, फिरियो चहु ओर भाय ।
सेठ सुदर्शन ऊपरे जी, वारो हाथ नीचो नही पाय ॥

५—भुक भुक देख्यो सेठ ने जी, मेखोमेख मिलाय ।
नजर मिलन्ता बासी गयो जी, ले भुग्दर देवता जाय ॥जि०॥

ढाल ६

राग—हम्मरीया री

१—अर्जुन घरती ढल पड़्यो, सेठ लीयो उठाय हो श्रोता ।
हाथ जोड़ी अर्जुन कहे, इण विरीया कित जाय हो सायवा ।
अर्ज करु यासु विनती ॥टेर॥

२—धर्म आचारज माहरा, भगवत श्री महावीर हो अर्जुन ।
जाने मैं वन्दन निसर्यो, सुधर्यो काज सधीर ॥हो अ॥
भव यिति पाकी हो तुम तरणी ॥टेर॥

३—अर्जुन कहे हू पापियो, ष्या मुझ ने पिण साथ ।
ले जाय हो सायवा, पतित पावन म्हारा वीर ॥हो अ॥
तू चाल थने ज्यु सुख थाय ॥टेर॥

४—अर्जुन सेठ दोनो चाल्या, आया भगवन्त पास ॥हो अ॥
दशन देख जिनन्द रा, चरण वदी बैठा पास, हो अर्जुन ॥

५—भगवन्त दीनी देशना सुणी सभी चित्त लाय ॥हो अ॥
सोची श्रद्धी अर्जुन कहे, मैं लेसु सयम भार ॥हो अ॥
अर्ज करु सुणो विनती ॥टेर॥

६—वलता वीर ऐसी कहे, ज्यु थाने सुख थाय ॥हो अ॥
विश्वास नही इण श्वास रो क्षिण २ माहे जाय । हो अ॥
सयम लीनो भाव सु ॥टेर॥

७—सयम लीनो भाव सू दीधी समकित की नीव हो स्वामी ।
वैले वैले पारणा करावो, जावोजीव हो स्वामी ॥

८—तिण नगरी मे गोचरी, उठया अवसर देख ॥हो अ॥
भात मिले तो पाणी नही मिले, धीरज घारी विशेष हो ॥

९—कोई मारे भाटा काकरा कोई दे मुख सु गाल हो ।
खम्या किधी अति एणी, ना आप्यो श्रोघ लिगार हो ॥

ढाल ७

- १— मुनि अर्जुन सजम लीयो ।
प्रभू पासे पासे अभिग्रह किषो हो ॥
मुनिवर हृद क्षमा दिल धारी ॥टेर॥
- २— जावजीव छठ छठ पारणा करवा ।
ससार समुद्र ज तरवा हो ॥मु०॥
- ३— देह री ममता टाली ।
काई काटवा कर्मा री जाली हो ॥मु०॥
- ४— राजगृही में गोचरी सिधाया ।
जहाँ कीनो छे पेली बार धावो हो ॥
- ५— छठ पारणे गोचरी जावे ।
लोग देखी मुनिरीसन लावे हो ॥मु०॥
- ६— घर माहि मुनिवर ने तेडें ।
ज्यारा पातरा मे धूलज रेडे हो ॥मु०॥
- ७— कोई एक तो मारे चपेटा ।
कोई नाखे मुनिवर ने हेठा हो ॥मु०॥
- ८— कोई बाल जवान ने बुढा ।
मुनिने वयणमुणावे छे भूडा हो ॥मु०॥
- ९— कोई कहे मारिया मुझ पिता ।
कोई कहे पापलागे इणरो मुखजोता हो ॥
- १०— कोई कहे मारी मुझ माता ।
कोई कहे याने डामज देवो करताता हो ॥
- ११— कोई कहे मारिया मुझ भाई ।
याने दीजँ यमपुर पहुँचाई हो ॥
- १२— कोई कहे मारी मुझ भगिनी ।
याने देखता उठे हिये भगनी हो ॥
- १३— कोई कहे मारी मुझ नारी ।
याने दीजँ मुख पर धारी हो ॥

- १४— कोई कहे मारी मुझ वेटी ।
याने काढो पकड कर घेटी रे ॥
- १५— कोई कहे वेटी बहुआ मारी ।
याने दिजो तीन वार धिक्कारी हो ॥
- १६— कोई कहे मारीयो मुझ काको ।
याने जल्दी द्वारा हाको हो ॥
- १७— कोई कहे मारी मुझ सासू ।
याने दैग्यता आवे नयणा आसू हो ॥
- १८— कोई कहे भरियो सुसरो ने सालो ।
यारो मुख करिजे कालो हो ॥
- १९— कोई करे वचन प्रहारा ।
कोई घाव देवे तलबारा हो ॥
- २०— कोईक तो कचरो डाले ।
कोईक तो पाणी हिलोले हो ॥
- २१— कोईक पत्थर फेंके रीसे ।
मुनि ने देखी ने दातज पीसे हो ॥
- २२— इण कर्म कीधा घणा खोटा ।
याने कोई न देसी रोटा हो ॥
- २३— इण कारण सयम लीघो ।
इण वेण मुनि नो कीघो हो ॥
- २४— इत्यादिक सुणी जन-वाणी ।
मुनि रीस नही दिल आणी हो ॥
- २५— सुणी ने मन मे एम विचारे ।
मैं कीधा कर्म चढाले हो ॥मु०॥
- २६— मैं मारिया मनुष्य जीव सेतो ।
दुख थोडो छे मुझने तेह थी हो ॥
- २७— हण्या मनुष्य इग्यारे सी ने इकताली ।
म्हारी आत्मा हुई घणी काली हो ॥

- २८— आर्त्त रीढ़ ध्यान निवारे ।
मनि घर्म शुक्ल चित्त धारे हो ॥
- २९— अन्न मिले तो नहीं मिले पाणी ।
पानी मिले तो नहीं मिले अन्न हो ॥
- ३०— छह मास चारित्र पाली ।
दिया सगला पाप ने टाली हो ॥मु०॥
- ३१— तप करता शरीर सुखायो ।
अन्तकृतजी मे अधिकार जाणो हो ॥
- ३२— अर्धमास सलेखना आई ।
अत समय केवल शिव पाई हो ॥मु०॥
- ३३— क्षमा सहित तप करणी ।
ससार समुद्र ज तरणी हो ॥मु०॥
- ३४— उगणीस सौ गुणतीस को साली ।
यह तो जोड़्यो है सतढाल्यो हो ॥
- ३५— "तिलोकरिखजी" गुरु सेबीजे ।
यह तो नरभव सफल करीजे हो ॥
- ३६— विपरीत जोड़ कोई दाखी ।
मिच्छामि दुक्कड छे सब साखी हो ॥
मुनिवर हृद क्षमा दिलधारी ॥टेर॥



ढाल १

राग—हृ तुम आगत सू कहु कहैया

- १—चपा नगरी अति भली हू वारी,
 दधिवाहन राय भूपाल रे, हू वारी लाल ।
 पद्मावती री कुक्षे उपन्या हू वारी,
 कर्म किया चण्डाल रे ॥हू०॥
 करकण्डु जी ने वन्दना हू वारी ॥टेश॥
- २—करकण्डु जी ने वदना, हू वारी,
 पहला प्रत्येक बुद्ध रे ॥हू०॥
 गिरवाना गुण गावता, हू वारी,
 समकित थावे शुद्ध रे ॥हू० क०॥
- ३—लाधी हैं बास की लाकडी, हू वारी,
 थया कचनपुरी रा राय रे ॥हू०॥
 बाप सु सग्राम माण्डियो हू वारी,
 साध्वी दिया समझाय रे ॥हू० क०॥
- ४—वृषभरूप देखी करी हू वारी,
 प्रतिबोध पाय्या नरेश रे ॥हू०॥
 उत्तम समय आदर्यो हू वारी,
 देवता दियो मुनि वेश रे ॥हू० क०॥
- ५—कर्म खपाय मुक्ति गया हू वारी,
 करकण्डु ऋषिराय रे ॥हू०॥
 “समय सुन्दर” कहे साधने हू वारी,
 नित्य नित्य प्रणाम पाय रे ॥हू० क०॥

ढाल २

राग—दसवा स्वर्ग धकी धम्या जी

- १—नगर कम्पिल पुर ना धरणी जी, जय सेन नाम भूपाल ।
न्याय नीति प्रजा पाले जी, गुणमाला पटनार ॥दु०॥
दुमोही लाल, बीजो प्रत्येक बुद्ध ॥दे०॥
- २—घरती खणन्ता निसर्यो जी, मुकुट एक अभिराम ।
बीजो मुख प्रतिबिम्बनो जी, दुमोही थयो जारो नाम ॥दु०॥
- ३—मुकुट लेवा भणी भाडियो जी, चण्डप्रद्योतन सग्राम ।
ते अन्यायो कुशीलियो जी, किम सरें ज्यारो काम ॥दु०॥
- ४—इन्द्र ध्वजा अति सिरामारीया जी, जोता तृप्ति नही थाय ।
खलक लोक खेले रमे जी, मोच्छव माण्ड्यो राय ॥दु०॥
- ५—दुमोही तेहने देखियो जी, पड्यो मल मूत्र मझार ।
हा ! हा ॥ शोभा कारमो जी, ए सह अस्थिर सतार ॥दु०॥
- ६—वैरागे मन वाल ने जी, लोनो हैं सजम भार ।
तप जप करणी आकरी जी, पाम्या है भवनो पार ॥दु०॥
- ७—बीजो प्रत्येक बुद्ध एहवो जी, दुमोही नाम ऋषि राय ।
“समय सुन्दर” कहे साधु ने जी, प्रणम्या परतिक जाय ॥दु०॥

ढाल ३

राग—बीरा मारा गज धकी उत्तरो

- १—नगर सुदर्शन सार जीहो,
मणिरथ राज करे तिहा ।
- २—कीनो है सब लो अन्याय, जीहो,
युगवाहु बधव मारीया ॥
- ३—मेणरया गई नास, जीहो,
पुत्र जायो रे उजाड मे ॥
- ४—पढी विद्याघर रे हाथ, जीहो,
शोल पण राख्यो सती सावतो ॥
- ५—पसरय नाम भूपाल, जीहो,
धुइला अपहरिया तिहा जाविया ॥

- ६—ते तिहा दीठो वाल, जी हो,
पुत्र लेई पाछा बल्या ॥
(जी हो, पुत्र पाल मोटो कियो) - २
- ७—भोम्या नम्या सहु आय जी, हो,
नमी एवो नाम थापीयो ॥
- ८—थया मिथिला ना राय, जी हो,
सहस्र अन्तेउरी सामठी ॥
- ९—दाह ज्वर चढीयो देह, जी हो,
बिन भुगत्या छूटे नहीं ॥
- १०—सुण्यो है ककरण को शोर, जी, हो,
चदन घीसती कामण्या ॥
- ११—मन माहे कियो रे विचार, जी हो,
कुटुम्ब बिटम्ब सम जाणीयो ॥
- १२—उपन्यो है जाति स्मरण ज्ञान, जी हो,
उत्तम समय आदर्यो ॥
- १३ इन्द्र परीक्षा कीध, जी हो,
चढता परिणाम सु निसर्या ॥
- १४—'समय सुन्दर' कहे साधना जी हो,
नित्य नित्य प्रणाम पाय ॥

हाल ४

राग—आशावर

- १—पण्डुवर्धनपुर नो राजवी ॥ मोरी सैया ॥
मिहरथ नाम नरिन्दो ए ॥
- २—एक दिन घुडला अपहर्या ॥ मो० ॥
पढीयो अटवी दुख दण्ड ए ॥
- ३—पर्वत ऊपर देखीयो ॥ मो० ॥
सप्तभूमिया आवास ए ॥
- ४—कनकमाना विद्याधरी ॥ मो० ॥
पण्यो है राय हुलासो ए ॥



५—नगरी भणौ राय सचर्यो ॥मो०॥

नगई नाम कहायो ए ॥

६—सैल करण राजा चत्यो ॥मो०॥

चतुरगी सेना तार ए ॥

७—माणं मे भ्राम्बो फत्यो ॥मो०॥

फूटरा फल-फूल पान ए ॥

८—कौयलडी टहुका करे ॥मो०॥

मिजर रही लहकाय ए ॥

९—एक मिजर राजा ग्रही ॥मो०॥

ज्यु मंत्री प्रधान ए ॥

१०—राजा फिर ने भ्रावियो ॥मो०॥

वृक्ष देख्यो विन छाया ए ॥

११—हा ! हा!! शोभा कारमी ॥मो०॥

क्षण माहे खेरु नाय ए ॥

१२—जातिस्मरण उपन्यो ॥मो०॥

लीनो समय भार ए ॥

१३—“समय सुन्दर” कहे साधुजी ॥मो०॥

चौथो प्रत्येक बुद्ध ए ॥

ठाल ५

राग—प्रभाती

१—समकाले चारो चव्या,

समकाले हो थपा कुल सिणगार ॥

सहेत्या ए, वदु रुडा साधने,

ज्याने वद्या हो जावे जन्म रा पाप ॥टेरा॥

२—ए तो समकाले समय लियो,

समकाले हो करता उग्रविहार ॥स०॥

३—चारो दिशा सु चारो भ्राविया,

समकाले हो यक्ष देवरा रे माय ॥स०॥

- ४—यक्ष चमक रहा देखने,
कीने आपु वो म्हारी पूठ की बाण ॥स०॥
- ५—करकण्डु जी तरीणो काढियो,
काना मासु हो, खाज खिणवारे काज ॥स०॥
- ६—दुमो ही कहे माया अजु रखी,
काई छोड़्यो हो सघलोई राज के ॥स०॥
- ७—नमी जी कहे निंदा भति करो,
निंदा माहे हो कह्यो मोट को पाप ॥स०॥
- ८—निगाई कहे निंदा नहीं,
हित कहता हो पामे परम आनन्द ॥स०॥
- ९—समकाले जप तप किया,
समकाले हो दीना कर्म खपाय ॥स०॥
- १०—समकाले केवल सह्यो,
समकाले हो पहुँच्या मोक्ष मझार ॥स०॥
- ११—उत्तराध्ययन मे चालिया,
कया माहि हो, चारो प्रत्येक बुद्ध ॥स०॥
- १२—“समय सुन्दर” कहे साधु ना,
गुण गाया हो, पाटणपुर बाहर ॥स०॥



बोहा

- १— श्री जिनराज प्ररूपीयो, विनय मूल जिनघर्म ।
इम जाणी भवी आदरो, टूटे आठो ही कर्म ॥
- २— विनय विना शोभा नाही, नाक विना जिम नूर ।
जीव विना जिम देहडी, शस्त्र विना जिम शूर ॥
- ३— नमसी सो सुख आपने, इणमे शक न कोय ।
घाली तराजू तोलीए, नमे सो भारी होय ॥
- ४— आव आवली जम्बुदिक, उत्तम वृक्ष नमस्त ।
तिम सुगुणा जन जाणीये, मध्यम तरु अकडत ॥
- ५— मात पिताथी अधिकतर, गुरु उपकार अपार ।
टालो अशातना सर्व थें, जो तरणो ससार ॥
- ६— धर्म गुरु मत वीसरो, पल पल गुण करो याद ।
सुगुणा जन सुणजो तुमे, गुरु गुण अगग अनाद ॥

ढाल १

राग—पास जितेश्वर रे स्वामी

गुरु-गुण समरो रे भावे ॥टेर॥

- १—गुरु गुण समरो रे भावे, मोक्ष मार्ग गुरु विना नहि पावे ।
गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥गु०॥
- २—मोती जैसा मेलारे वहीये, शककर सरीखा खारा मनइये ।
सुमेरु ज्यु समरोरे न्हाना, अणगमता जिज प्राण समाना ॥

- ३—अधीरज कुजर रे जेहवा, केशरीसिंह जेम कायर कहेवा ।
गुणधर जेहवा ऐ विराधी, भारडपखी जिम परमादी ॥
- ४—सुर गुरु जेहवा रे अभणीया वैश्रमणजेहवा मूजी सो थुणीया ।
क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नही जे कर्म शत्रु अरि से ॥
- ५—शशिसम उप्पगतारे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो ।
सुस्तह जेहवा रे अदाता, श्री जिन जेहवा लोभी विद्याता ॥
- ६—शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भव तरणी ।
भवजलतारक रे वाणी, दे उपदेश सदा सुखदाणी ॥
- ७—मोहनीकम रे अन्धो, करतो नीच अकारज घघो ।
दुर्गति पडतो रे राखे, निर्वद्य वैण मधुर सत्य भाखे ॥
- ८—सत्गुरु करुणा रे कीनी, बोध बीज समकीत घट दीनी ।
भर्म मिटायो रे भारी, सत्गुरु सम नही कोई उपगारी ॥
- ९—महिपति सजती रे नामे, पहुतो वन मृग मारण कामे ।
गदभाली मुनिवर रे तायों, सजम लेई निज कारज सायों ॥
- १०—परवेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रच न डरतो ।
केशी गुरु तायों रे सोई, गुणचालीस दिन मे सुर होई ॥
- ११—दृढप्रहारी रे नामे, चार हत्या करी जातो पर गामे ।
सत्गुरु बोधज रे दीनो, सजम देई शिववासी सो कीनो ॥
- १२—एम अनन्ता रे प्राणी, तरिया सत्गुरु की सुणी वाणी ।
सेवा करसी रे भावे, सो नर भव भव मे सुख पावे ॥
- १३—जिणो गुरु आज्ञा रे घारी, सो जिन आज्ञा मे नर नारी ।
गुरुकी तो महिमा रे भारी, “तिलोक रिख” कहे नितबलिहारी ॥

दोहा

- १— गुरु कारीगर सारिखा टाकी वचन उच्चार ।
पत्थर की प्रतिमा करे, जिम सत्गुरु उपगार ॥
- २— मूल तेंतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार ।
गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो ससार ॥

- ३— राग द्वेष पक्ष छोड़ जो, मत करजी मन रीश ।
टाल्याथी सुख पावसो, भाख्यो श्री जगदीश ॥

ढाल २

राग—निर्मल शुद्ध समकित जिन पाई

जाणी करे आशातना प्राणी,
जिणने आगे नरक निसाणी ॥टेर॥

- १— अडतो आगे पाछो वरोवर, उठै बैठे चाले ।
एक एक मे तीन गणीजे, ए नव भेद दिखावे ॥जाणी०॥
- २— गुरु सगाते थडिल पहुचा, शुचि करे पहेली चेलो ।
कोइक बन्दवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पहलो ॥जा०॥
- ३— गुरु शिष्य आवे साथे उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ।
अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ॥जा०॥
- ४— गुरु पहेली बतलावे परने, देवण की मन वारो ।
गुरुने बिन पूछा पर सोपे, सोलमी ये अवधारो ॥जा०॥
- ५— लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने देनो चहावे ।
सरस आहार मन गमतो देखो, आप लेई हरखावे ॥जा०॥
- ६— रात्रे सूतो गरजी पूछे कुण सूतो कुण जागे ।
सुनकर उत्तर दे नही जाणी, कामज करणो लागे ॥जा०॥
- ७— गुरु बतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण बैठो ।
उठण केरो आलस अगे, काम करण मे ढीठो ॥
- ८— गुरुबतलायो कोईक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ।
जाणे कोईक काम बतासी, राखे मन अण मणियो ॥
- ९— गुरु बतलायो बैठो बैठो, शु कहो । शु कहो, बोले ।
तहतवाणी मयेणवन्दामी, सो तो कहे ना भोले ॥
- १०— गुरु गरहा तपसीनी वैयावच्च, करता निर्जरा भारी ।
एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शु नहि प्यारी ॥
- ११— गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ।
कहे अपुठो गुरु सू भूरस, पोते क्यो नही चालो ॥जा०॥

- १२— तु तु कारी देवे गुरु ने, ऐसो मूरख प्राणी ।
गुरु उपदेश देवे भविजन ने, आणो चित्त अकुलाणी ॥जा०॥
- १३— गोचरी वेला हुई आभेरी, दिन चढ्यो नही दीसे ।
वखाण थोभे नही सुखज लागी, बोले भरियो रीसे ॥जा०॥
- १४— गुरुजी अर्थ करे भविजनने, बीच बीच माही बोले ।
कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वर्ष निकाल्या मोले ॥जा०॥
- १५— गुरुजी कहेता शिष्य पयपे, याद पुरी नही थाने ।
मैं कहू सावत बात वणाई, गुरु क्या छेदी वखाणो ॥
- १६— गुरु वखाण करे तीण माही, कोईक काम बताई ।
पर्यदामाही भेदज पाडे, मूरख समझे नाई ॥जा०॥
- १७— गुरु वखाण करीने उठे, तिणहीज सभा मझागे ।
सोहीज शास्त्र सोहीज गाथा, करे अर्थ विस्तारो ॥जा०॥
- १८— हीणता जणावे निज गुरु केरी, पढित पणो बतावे ।
लोकसरावण सुण करमूरख, मनमे अति अकडावे ॥जा०॥
- १९— गुरुना आसन ओघो पुजणी, पग सु ठोकर देवे ।
गुरु ने आसणो सुवे वेसे, ऊचो आसण सेवे ॥जा०॥
- २०— गुरुनी प्रशमा करे न पोते, सुणकर अति मुरझावे ।
तैंतीस आशातना मूल कहोसो, जडामूलसु ढावे ।जा०॥
- २१— गुरुने आगे वस्तर केरी, पालठी मारी वसे ।
कर दान्ये किरसाण जु मोलो, टेके बैठे विशेषे ॥जा०॥
- २२— पाय पसारी आलस मोडे, पग पर पग चढावे ।
विकथा माडे कडका मोडे, गुरुने नही मनावे ॥जा०॥
- २३— हड हड हँसे शर्म नहीं राखे, जिम तिम बोले वाणी ।
काम करे गुरुने विण पूछ्या, बीच बीच बात ले ताणी ॥
- २४— गुरुजी कोईक जिनस मगावे, जावण को मन नाही ।
उत्तर टाले चोज लगाई, ते सुण जो चित्त लाई ॥जा०॥
- २५— हालवसत नही गोचरी केरी, अथवा नर नही घर मे ।
दिया होसी किवाड दारणों, मिले न अण अवसर मे ॥जा०॥

- २६— वेहरावणारा भाव न दीसे, अथवा जिणारे नाई ।
असुजता के सृजता होसी, वस्तु न मिलसी ठाई ॥जा०॥
- २७— अवार तो हु आखर सीखु, लिखमु पानो पूरो ।
पलेवणो तथा थडिल जाणो, अथवा घर छे दूरो ॥जा०॥
- २८— सोतो कज्जस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहि पीछाणे ।
गर्म आवे मुझ भीख मागता, जाऊ केम अजाणे ॥
- २९— मुझने ठण्डवाय नही सोसे, तडको चढिया जामु ।
कहे उन्हालो पाववले मुझ दिनढलोयाथी सिधासु ॥जा०॥
- ३०— चौमासे कहे कीचड बहुलो, पग लपसे छे महारा ।
भुख लागी थकेलो चढोयो, पग अकड्या छे सारा ॥जा०॥
- ३१— म्हारा शरीर मे अडचण दीसे, चालण शक्ती नाई ।
एक बार मे आणी दीघो, अव भेजो परताई ॥जा०॥
- ३२— एक काम करावे तिण मे, जाणी ढील लगावे ।
जाणे जलदी करसु कारज, फेर मुझ और बतावे ॥जा०॥
- ३३— विनय वन्दता करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सिखावो ।
पाछे कर जो काम तुम्हारे, पहेला बोल बतावो ॥जा०॥
- ३४— समय लीघो मैं तुम पासे एता दिन के माई ।
काम काममे काल बीतावो, ज्ञान सिखावो नाई ॥जा०॥
- ३५— अवगुण आपणा देख नाई, बात करण को तसियो ।
पेट भरीने निदज लेवे, विकथा सणवा रसियो ॥जा०॥
- ३६— समीसाज थी पाय पसारे, भणियो सो न चितारे ।
टेके बँठा अक्षर सीखे, भली सीख नही धारे ॥जा०॥
- ३७— गुरु की केहणी करे बँठ जु अवगुण ताके पर का ।
सुधर मिष्टा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ॥जा०॥
- ३८— अभिमानी अरु शोध घणोरो, चाले आपणे छन्दे ।
आप करे गुरु छानो कारज, परना अवगुण बिन्दे ॥जा०॥
- ३९— गुरु देखी ने अक्षर घोवे, दोसे घणो सयाणो ।
पीठ फेरीया छान्दे चारो, जाणे जग को राणो ॥जा०॥

- ४०— आपणो हाथे कामज विगडे, परने माथे नाखे ।
गुरु पूछ्या घुरवि श्वान ज्यु, रच न साचु भाखे ॥जा०॥
- ४१— और आशातना भेद घणोरा, पुरा कह्या न जावे ।
“तिलोक रिख” कहे ढाल दूसरी, भविकसुणी हरकावे ॥जा०॥

दोहा

- १— जे अविनय थी डरे नही, करे आशातना कोय ।
ते दुख किण परे भोगवे, सामलजो भवी लोय ॥
- २— सड्या कान की कूतरी, जीण घर जावे चाल ।
नीकाले घुर घुर करे, इण विघ्न होय हवाल ॥
- ३— परभव किल्मिष देव मे, उपजे सो अविनीत ।
तिहायी मरी चउगति मे होवे पूरी फजीत ॥
- ४— गुरु बालक वृद्ध अणभण्या, ते पण अविनय टाल ।
अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ॥
- ५— सूतो सिंह जगावणो, खेर अगारे पाय ।
गिरि खणवो, जेम नख थकी, पोते अशाता थाय ॥
- ६— करतल मारे शक्ती पर, विप हलाहल साय ।
मिर्चा आजे आख मे, पोते अशाता थाय ॥
- ७— एतो देव प्रभाव थी, विघ्न करे नही काय ।
आशातना फल ना टले, करता कोई उपाय ॥
- ८— एक वचन ज्ञानी तणा जो धार नर नार ।
तासअविनय तजवो कह्यो दशवैकालिकमझार ॥
- ९— जिण पासे धारण कियो सजम शिव दातार ।
तेहनी करे आशातना, सो मूरख सरदार ।
- १०— नीतिशास्त्रे पुन दाखीयो सातवार होय श्वान ।
सो भव लहे चाटालना, आगे लहे दुख खान ॥
- ११— गुरुनी निदा जे करे, महापापी कहेवाय ।
सर्व शास्त्रे दरसावियो, मुक्ती कदही न जाय ॥

- १२— के बहेरो के चोवडो, के दुर्वल के दीन ।
जिन मारग पावे नही, जो करे गुरु की हीन ॥
- १३— हम जाणी भवि प्राणिया, करो विनय गुरु देव ।
ते सुणजो मुगुणा सभे, किण विघ करी ये सेव ॥

ढाल ३

राग—सोई सयाणो अवसर साथे ।

विनय करीजे भाई, विनय करीजे ।

विनय करीने शिव रमणी वरीजे ॥टेरा॥

- १— श्री गुरु सेव करो मन रगे,
मोह क्लेश कुमति सब भगे ।
सजम किरिया गुरु मुख धारो,
लुल २ नमन करी गुरु ठावो ॥वि०॥
- २— गुरु बतलाया तहेत उच्चारो,
क्रोध मान सब दूर निवारो ।
कठिण मुली श्री गुरुजी की वाणी,
रीश करो मत हित पिछाणी ॥
- ३— फरमावे गुरु कामजो कोई,
जेज न करणो अवसर जोई ।
गुरु मुझ ऊपर कृपा किनी,
निर्जरा रूप प्रसादी दीनी ॥वि०॥
- ४— भग चेष्टा श्री गुरुकी देखी,
सो कारज करणो सुवि सेखी ।
वैयावच्च करता आलस छोडो,
भक्ती किया पहले मत पोडो ॥वि०॥
- ५— प्रश्न पूछता हाथ ज जोडो,
शीश नमावो मानज मोडो ।
मधुर वचन प्रशमा करके,
ज्ञान सीखो अति आनन्द धरके ॥वि०॥
- ६— छोटा मोटा सु हिल मोल रहीजे,
अधिक भण्पा को गर्व न कीजे ।

खारईसको किण सु राखणो नाई,
मारो थारो करो मत काई ॥वि०॥

७— वाद विवाद झोड मत माडो,
विकया वात तणो रस छाडो ।
वचन कहो मतो कोई मर्मनो,
मनसे सदा डर राखो कर्मनो ॥

८— रीशवसे पातरा मत पटको,
झिजको खाई दुजापर तटको ।
जेम तेम बड बड पण नहि करीये,
लोक व्यवहार सु अधिको डरिये ॥

९— ऊंचे शब्द करो मत हेला,
सुणकर लोक हो जावे ज्यु भेला ।
जंनमार्ग की लघुता आवे,
सासारिक सगा सुणो दुख पावे ॥वि०॥

१०— प्रियधर्मी की आस्ता छुटे,
क्रोध रिपु सजम धन लुटे ।
ऐसो काम करो मत स्याणा,
इणभवे निन्दा आगे दुख पाणा ॥

११— रिद्धि छोडी जिणरो गर्व न कीजे,
अधिक गुणी पर नजर जो दीजे ।
आगल का अवगुण मत देखो,
अपणा अवगुण को करो लेखो ॥वि०॥

१२— बालक तरुण वृद्ध जो जो नरनारी,
सब थी जीकारे बोली विचारी ।
तु तु तु कारो ओछी बोली,
करीये कछु नही ठट्टेरोली ॥वि०॥

१३— नीचे देखी घीरे पग मेली,
न्याय प्रमाण सुणी मत ठेली ।
सजम काम मे निर्जरा जाणो,
उज्जवल भावे शका मत आणो ॥वि०॥

- १४— पच व्यवहार प्रमाण करीजे,
निश्चयव्यवहार अरु नयसमजीजे ।
उत्सर्ग अरु अपवाद पिछाणो,
सतगुरु वयण करो परमाणो ॥वि०॥
- १५— इरा विध करणी भवजल तरणी,
दुख दुगति आपद भय हरणी ।
श्रीजी ढाले विनय रीत वरणी,
“तिलोक रिस” कहे शिववरणी ॥

बोहा

- १— मान बढाई ईर्ष्या, क्रोध कपट दे टाल ।
म्हारो थारो छोड के, चाले रुडी चाल ॥
- २— विनय करे गुरु देव को, करे आज्ञा प्रमाण ।
तिरा ने महागुण निपजे, ते सुणजो भविमाण ॥

ढाल ४

राग—रे भाई सेवो साधु सयाणा

- रे विनय तणा फल मीठा, हलुकर्मो सुण कर हर खावे ।
मुरझावे नर धिठा रे भाई, विनय तणा फल मीठा ।।टेर।।
- १—प्रगमे भलो ज्ञान विनीत शिष्य ने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ।
भर्म गया सु समकित पुष्टि, समकीत सु व्रत छाजे रे ॥भा०॥
- २—व्रत पाल्या सु घन घन वाजे, आदर अधिको धावे ।
खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित्त पावे रे ॥भा०॥
- ३—विनयवत शिष्य ने सीरा चोखी, होवे शु शांताकारी ।
इरा भव माही ऋद्ध सिद्ध सम्पत, परभव मे सुख त्यारी रे ॥भा०॥
- ४—होय धाराधक सुर पद पावे, महल मनोहर भारी ।
रतन जडीत पच रंग मनोहर, वास कुसुम छवि प्यारी ॥भा०॥
- ५—ककर कटक पक रजादिक, नीच अपावन नाई ।
जाली झरोखा ऋगमग दीपे सुगन्ध रही महकाई रे ॥भा०॥
- ६—यत्तीस नाटक पढे निस दिन जठे, राग छविशे आलापे ।
घपमघ घप मघ वाजे मृदगा, सुणता श्रवण नहीं धावे रे ॥भा०॥

- ७—नाना प्रकार हार ज्या लटके, तोरण छे पच प्रकारें ।
 आथडता होय नाद मनोहर, जाणें कोई देवी उच्चारें ॥भा०॥
- ८—दोय सहस्र वर्ष छोटा नाटक मे, मोटा मे दश हजारो ।
 एक मुहूर्त को काल ज्यु बीते, विनय करणी फल धारो ॥भा०॥
- ९—पल सागर स्थिति एम निकाली, तिहायी चवी नर थावे ।
 सजम धारो कर्म निवारो, ज्ञान वेचल सोहि पावे रे ॥भा०॥
- १०—होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो ।
 विनय करण फल पार न पावे, शास्त्र को भेद पहिचाणो रे ॥भा०॥
- ११—सुणता तो आनंद वढावे, गुणता बुद्धि प्रकाशो ।
 पालता तो शिव ना फल लहीये, राखो चित्त विश्वासो रे ॥भा०॥
- १२—सवत् उगणीसे छत्तीस सालें, तेरस वदि वैशाखें ।
 विनय फल ढाल कही पर चौथी, सर्व सिद्धान्त की साखें ॥भा०॥
- १३—देश दक्षिण विचरता आया, खानरा हिवडा मझारो ।
 “तिलोक रिख” कहे मूज धर्म को, करवा पर उपगारो रे ॥भा०॥
- १४—सुणकर रागद्वेष मत करजो, समुच्चय दियो उपदेशो ।
 नही मानो तो मरजो तुम्हागी, निज करणी फल लहेशो ॥भा०॥
- १५—दान शीयल तप भावना भावो, ए जग मे तत सारो ।
 पालो आराधो विनय यथाथ, उत्तर्या चाहो भव पारो ॥भा०॥

‘कलश’

- १—विनय करणी, दुख हरणी सुख निसरणी, जाणिये ।
 इणलोक शोभा, आगें शुभ गर्त, सिद्धांत न्याय वखाणिये ॥
 धर्म मूल सो, विनय दारयो, सीचे तो फल पाईये ।
 कहे ‘रिख तिलोक’ भविका, आराध्या शिव जाईये ॥



दोहा

- १— प्रथम जिनेश्वर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ।
दान शील तप भावना बोलु सहष सवाद ॥
- २— वीर जिनन्द समोसर्था, राजगृही उद्यान ।
समवशरण देवे रच्यो, बैठा श्री वर्धमान ॥
- ३— आई बारा परिषदा, सुणवा जिनवर वाण ।
दान कहे जग हु बडो, मुक्त ने प्रथम वखाण ॥
- ४— सांभल जो सहू को तुमे, कुण छे मुक्त समान ।
अरिहत दीक्षा अवसरे, आपे पहिले दान ॥
- ५— प्रथम प्रहर दातार नो, सहू कोई ले नाम ।
दीघा री देवल चढे, सीके वद्धित काम ॥
- ६— तीर्थं कर ने पारणो, कुण करसी मुक्त होइ ।
वर्षा करू सौनैया तणी, साढी बारा क्रोइ ॥
- ७— हु जग सगलो वश करू, छे मुक्त मोटी बात ।
कुण कुण दान थकी तर्पा, ते सुण जो अवदात ॥

ढाल १

राग—सतना

- १— धन्नो सार्थवाह साधु ने, दीघो धृत नो दान ॥ललना॥
तीर्थं कर पद मै दीयो, तिण से मुक्त अभिमान ॥ललना॥
दान कहे जग हूँ बडो ॥टेरा॥
- २— दान कहे जग हूँ बडो, मुक्त सरीसो नही कोय ॥ ल० ॥
अद्धि वृद्धि सुख सम्पदा, दाने दीलत होय ॥ ल० ॥

- ३— सुमुख नामे गाथापति, प्रतिलाभ्यो अणगार ॥ ल० ॥
कँवर सुवाहु सुख लियो, ते तो मुझ उपकार ॥ ल० ॥
- ४— पाचसे मुनि ने पारणो, देतो, वहरी आण ॥ ल० ॥
भरत थयो चक्रवर्ती भलो ए पिण मुझ फल जाण ॥ ल० ॥
- ५— मासखमण ने पारणो, प्रतिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ल० ॥
शालिभद्र सुख भोगव्यो, दान तणे सुपसाय ॥ ल० ॥
- ६— आप्या उडद ना वाकुला, उत्तम पात्र विशेष ॥ ल० ॥
मूलदेव राजा थयो, दान तणा फल देख ॥ ल० ॥
- ७— प्रथम जिनेश्वर ने पारणो, श्री श्रयास कुमार ॥ ल० ॥
इसु रस बहुरावियो, पाम्यो भव नो पार ॥ ल० ॥
- ८— चन्दनवाला वाकुला, प्रतिलाभ्या महावीर ॥ ल० ॥
पाच द्रव्य प्रकट थया, सुन्दर रूप शरीर ॥ ल० ॥
- ९— पूर्वभव पारेवडो, शरण राख्यो सूर ॥ ल० ॥
तीर्थंकर चक्रवर्ती तणो, प्रगट्यो पुण्य अकूर ॥ ल० ॥
- १०— गज भवे सुसत्यो राख्यो, करुणा किधी सार ॥ ल० ॥
श्रेणिक ने घर अवतयो, अगज मेघ कुमार ॥ ल० ॥
- ११— इम अनेक मे उढर्या, कहता न आवे पार ॥ ल० ॥
“समय सुन्दर” प्रभु वीर जी, पहलो दियो अधिकार ॥ ल० ॥

दोहा

- १— शीयल कहे सुण दान तु, किस्यो करे अहकार ।
आठम्बर आठे प्रहर, जाचक सु व्यवहार ॥
- २— अन्तराय बली ताह रे, भोग करम ससार ।
जिनवर कर नीचा करे, तुझने पडो धिक्कार ॥
- ३— गर्व मा कर रे दान तु मुझ पूठे सह कोय ।
चाकर चाले आगले, तो शु राजा होय ? ॥
- ४— जिनमन्दिर सोना तणो, नवु निपजावे कोय ।
सोवनकोडी दान दे, शील समो नहि होय ॥

- ५— शीयले सकट सबही टले, शीले सुजस सौभाग ।
शीले सुर सान्निध्य करे, शीयल बडो वैराग ॥
- ६— शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग ॥
शीले अरि करि केहरी, भय जावे सब भाग ॥
- ७— जन्म मरण ना भय थकी, मैं छोडाव्या अनेक ।
नाम कहु छु तेहना, साभल जो सुविवेक ॥

ढाल २

राग—पास जिणव जुहारी प

- १—शील कहे जग हु बडो, मुझ वात सुणो अति मिठी रे ।
लालच लावे लोकने, मैं दान तणी वाता दीठी रे ॥
शील कहे जग हु बडो ॥टेर॥
- २—कलह कारण जग जाणीये, बली व्रत नही पिण काई रे ।
ते नारद मैं सीभव्यो, जोवो मुझ अधिकई रे ॥
- ३—बाहे पहेर्या बेरखा, शख राजा दोषण दीधो रे ।
काप्या हाथ कलावती, ते मैं नवपरलव कीधा रे ॥
- ४—रावण घर सीता रही, तो रामचन्द्र घर आणी रे ।
सीता कलक उतारी यु, मैं पावक कीधो पाणी रे ॥
- ५—चम्पा पोल उघाडिया, चालनी काढ्यो नीरो रे ।
सती सुभद्रा जश थयो, मैं तस कीधी भीरो रे ॥
- ६—राजा मारण माडियो, अभिषा दोषण दाख्यो रे ।
धूली सिंहासन कियो, मैं सेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥
- ७—सीयल सन्नाह मन्त्रीषवरु, आवतो अग्निदल थम्भ्यो रे ।
ते पिण सन्निध मैं करी, बली घर्म कारज आरम्भ्यो रे ॥
- ८—पहेरण चीर प्रकट किया, म अठोत्तरेसो वारो रे ।
पाण्डव हारी द्रौपदी, मैं राखी माम उँदारो रे ॥
- ९—ग्राह्यो चन्दनबालिका, बली शीलवती दमयन्ती रे ।
चेहानी साते सुता, राजमती शिवा कुती रे ॥
- १०—इत्यादिक मैं उद्धर्या, नर नारी केरा वृन्दो रे ।
'समय सुन्दर' प्रभु वीर जो, पहलो मुदा आनन्दो रे ॥

दोहा

- १— तप बोल्यो तटकी करी, दान ने तू अब हीन ।
पण मुझ आगल आवियो, साभल रे तू शील ॥
- २— सरस भोजन ते तज्या, न गमे मीठा नाद ।
देह तणी शोभा तजी, तुझने किसो स्वाद ॥
- ३— नारी थकी डरतो रहे, काया किमो बख्ताण ।
कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥
- ४— कोई विरलो तुमन आदरे, छोड तुझ ससार ।
आप एकलो भाजता, बीजा भाजे चार ॥
- ५— कर्म नीकाचित तोडवा, भाजु भव भय भीम ।
अरिहत मुझने आदरे, वर्प छमासी सीम ॥
- ६— रुचक नन्दीसर पर्वते, मुझ लब्धे मुनि जाय ।
मेरु पर्वतकी चूलीका आनन्द अग न माय ॥
- ७— मोटा जोजन लाखना, लघु कथुवा आकार ।
गज रथ पायक तणा, रुप करे अणगार ॥
- ८— मुझ कर-स्पर्श उपशमे, कुष्ठादिक नो रोग ।
लब्धि अठावीस उपजे, उत्तम तप सयोग ॥
- ९— जे मै तार्या ते कहू, सुण जो मन उल्लास ।
धमत्कार चित्त पामसो, दे सो मुझ शावास ॥

ढाल ३

राग—नगदत्त ए

- १— दृढप्रहारी अति पापीयो, हत्या किधी चार ॥हो सुदर॥
ते म तीणए भव उधर्यो, मुक्थो मुगति मझार ॥हो सुदर॥
तपसरीखो जग को नही ॥टेरा॥
- २— तप सरीखो जग को नही, तप करे कर्म नो सूड ॥हो मु०॥
तप करवो अति दोहिलो, तप माहे न वहे कूड ॥हो सु०॥
- ३— सात माणस नित्य मारतो, करतो पाप अघोर ॥हो सु०॥
अर्जुनमाली मै उढ्यो, छेद्या कर्म कठोर ॥हो सु०॥

- ४— नन्दीपेण ने मैं कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव ॥हो सु०॥
बहोत्तर सेंस अन्तेउरी, पुण्य भोगे नित्यमेव ॥हो सु०॥
- ५— रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चडाल ॥हो सु०॥
सुर नर कोडी सेवा करे, ते मैं कीध निहाल ॥हो सु०॥
- ६— विष्णु कुंवर लब्धि कीयो, लाख जोजन नो रूप ॥हो सु०॥
श्री सघ केरे कारणे, मुझ मे शक्ति अनूप ॥हो सु०॥
- ७— चवदे सेंस अणगार मे, श्री घन्नो अणगार ॥हो सु०॥
वीर जिनन्द वखाणीयो, ये पिण मुझ अधिकार ॥हो सु०॥
- ८— कृष्ण नरेसर आगले, दुवकर करणी कीध ॥हो सु०॥
ढढण नेमि प्रशसीयो, मुझ शक्ते हुप्रो सीध ॥हो सु०॥
- ९— नन्दीपेण बहोरण गयो, गणिका कीसी हास ॥हो सु०॥
वृष्टि करी सोनैया तणी, मैं तसु पुरी आश ॥हो सु०॥
- १०— इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपसी जीव ॥हो सु०॥
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, राखो मेर प्रतीव ॥हो सु०॥

बोहा

- १— भाव कहे तप तु कस्यो, छेड़्या करे कषाय ।
पूर्वकोडी तप तप्यो, खिण मे खेर थाय ॥
- २— खदक आचारज प्रते, ते बलाव्यो सवदेश ।
अशुभ नियाणो तु करे, क्षम्या नही लवलेष ॥
- ३— द्वीपायण ऋषि दुहव्या, शम्भ प्रद्युम्न साह ।
तपसी मोघ करी तिहा दीघो द्वारिका दाह ॥
- ४— दान शील तप सामलो, मकरो भूछो गुमान ।
लोक सहु को साखदे, धर्म भाव प्रयान ॥
- ५— घाय नपु सक थें प्रणे, दे व्याखरण ते साख ।
काम सरे नही को तुमे, भाव भने मुझ पाख ॥
- ६— रस बिना वनध न नीपजे, जल बिना तरुनही वृद्धि ।
रसवती नही लवण बिना तिम मुझविन नही सिद्धि ॥

- ७— मत्र तत्र मणी औपधी, देव धर्म गुरु सेव ।
भाव बिना ते सब वृथा, भाव फले नित्यमेव ॥
- ८— दान शील तप जे तुमे, निज निज कह्या वृत्तान्त ।
तिहा जो हू न हू तो, तो कोई सिद्धि न जात ॥
- ९— भाव कहे में एकले, तार्या बहु नर नार ।
सावधान थई साभलो, नाम कहू लो धार ॥

ढाल ४

राग—कपूर होवे अति ऊजलो रे

- १—वन माहे काउस्सग रह्यो रे प्रसन्नचन्द्र ऋषि राय ।
तेने में कीधो केवली रे, तत्क्षिण कर्म खपाय ॥सौभागी॥
सौभागी सुन्दर भाव बडो रे ससार ॥टेर॥
- २—थड ने डाली समो जी, एतो बीजा मुक्त परिवार ।
दाना दि बिन हू एकलो रे, पहुँचाऊ भवपार ॥सौ० भा०॥
- ३—वश ऊपर चढियो खेलवारे, एलाची पुत्र अपार ।
केवलज्ञानी में किया रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥सौ० भा०॥
- ४—भूख तृपा खमे अतिघणी रे, करतो कूर आहार ।
केवल महिमा सुर करे रे कुरगडु वे अणगार ॥सौ० भा०॥
- ५—लाभ थी लोभ वधे घणो रे, आप्यो मन वैराग ।
कपिल मुनि थयो केवली रे, ते मुक्कने सौभाग ॥सौ० भा०॥
- ६—अर्णिका सुत गच्छनो घणी जी, खिणजधा वली जाए ।
कीधो अन्ते गुरु केवली रे, गगाजल गुण खान ॥सौ० भा०॥
- ७—पन्द्रे से तापस मणी रे, दीधो गौतम दोख ।
तत्क्षीण कीधा केवली वे, जो मुक्त मानी सीख ॥सौ० भा०॥
- ८—पालक घाणी पीलीया रे, खन्दक सूरि ना शिष्य ।
जन्ममरण थी छोडाविया रे, आपे मुझ अशीष ॥सौ० भा०॥
- ९—चण्डरुद्र ने चलता रे, दीधो दण्ड प्रहार ।
नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरुपण तिणी वार ॥सौ० भा०॥

- १० - धन धन खाती खातर भली रे, प्रतिलाभ्यो अणगार ।
मृगलो भावना भावतो रे, गया पचम कल्प मभार ॥सौ० भा०॥
- ११—निज अपराध खमावती रे, मुक्यो मन थी मान ।
मृगावती ने मैं दीयो रे, निर्मल केवलज्ञान ॥सौ० भा०॥
- १२—मरुदेवी, गज उपरे रे, पेखी पुत्र नी रिद्ध ।
मुक्त ने मन माहे घर्यो रे, तत्क्षिण पाई सिद्ध ॥सौ० भा०॥
- १३—वीर वदन चलयो मारठो रे, चाप्यो चपल तुरग ।
वदुंर नामे देवता रे, थयो ते मुक्त ने सग ॥सौ० भा०॥
- १४—प्रभु पाय वदन निसरी रे, दुगला नामे नार ।
कालघर्म बीच मे करी रे, पहुची स्वर्ग मभार ॥सौ० भा०॥
- १५—काया नी शोभा कारमी रे, रूप रो कीसो अभिमान ।
भरत आरेसा भवन मे रे, पाम्यो है केवलज्ञान ॥सौ० भा०॥
- १६—अपाढाठाकर कलानीलो रे, प्रगट्यो, भरत स्वरूप ।
नाटक करता पामीयो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥सौ० भा०॥
- १७—दीक्षा दिन काउस्सगरह्यो रे, गजमुखमाल मसाण ।
सोमले शीश प्रज्वालिओ रे, सिद्ध हुमा सुजाण ॥सौ० भा०॥
- १८—गुणसागर थयो केवली रे, साभल पृथ्वीचन्द्र ।
पोते केवल पामीयो रे, सेव करे सुर इन्द्र ॥सौ० भा०॥
- १९—एम अनेक मैं उघर्या रे, मूक्या शिवपुरी वास ।
“समय सुन्दर” प्रभु वीर जी रे, मूक्त ने प्रथम प्रकास ॥सौ०॥

दोहा

- १— वीर कहे तुमे साभलो, दान शील तप भाव ।
निदा छे अति पापिणी, धर्म करे प्रसाव ॥
- २— पर निदा करता थका, पापे पिण्ड भगाय ।
राग द्वेष बाधे घणा, दुर्गति प्राणी जाय ॥
- ३— निदक सरीखो पापीयो, भुण्डो कोय न दोठ ।
बलो चण्डाल समो कह्यो, निदक मुख अदोठ ॥

- ४— आप प्रशसा आपरी, करता इन्द्र नरिन्द्र ।
लघुता पामे लोक मै, नासे निज गुण वृन्द ॥
- ५— को केहनी म करो तुमे, निन्दा ने अहवार ।
आप आपणे ठामे रहो, सहु को भलो ससार ॥
- ६— तो पण अधिको भाव छे, एकाकी समरत्य ।
दान शीयल तप तीन भला, पण भाव विना अकथ ॥
- ७— अजण आसे आजता, अधिकी आणी रेख ।
रज माही तज काढता, अधिको भाव विशेष ॥
- ८— भगवत हठ भाजण भणी, चारे सरीखा गिणन्त ।
चरी करी मुख आपणे, चतुर्विध धम भणत ॥

ढाल ५

राग—चेतन चेतीए रे

- १— वीर जिनेश्वर इम भणो रे, वंठी परिपदा वार ।
धर्म करो तुमे प्राणीया रे, जिम पामो भवपार रे ॥
धर्म भवियण हीये धरो ॥टेर॥
- २— धर्म भवियण हीये धरो धर्म ना चार प्रकारो रे ।
भवियन तुमे साभला रे, धर्म मुगति सुखकारो रे ॥
- ३— धर्मथकी धन सपजे रे, धर्मथकी सुख होय ।
धर्म थकी आरती टले रे, धर्म समो नही कोय रे ॥
- ४— दुर्गति पडता प्राणीयो रे, राखे श्री जिनधर्म ।
कुटुम्ब सहु को कारमो रे मत भूलो भवि भर्म रे ॥
- ५— जीव जके सुखिया हुआरे, वले होसी रे जेह ।
ते जिनवर ना धर्म थी रे, मत कोई करो सदेह रे ॥
- ६— सोले से ने छासठ समे रे, सागानेर मझार ।
पद्म प्रभु सुपसायते रे, एह भण्यो अधिकार रे ॥
- ७— सोहम स्वामी परम्परा रे, खरतर गच्छ कुलचद ।
युग प्रधान जग परगटचो रे, श्री जिनचद सुरिन्द रे ॥

- ८— तास शिष्य अति दीपतोरे विनयवत जसवत ।
आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सुरी महत रे ॥
- ९— प्रथम शिष्य श्री पुज्यनारे, सकलचद तस शिष्यो ।
“समय सुन्दर” वाचक भणें रे, सध सदा सुजगीषो रे ॥
- १ — दान शील तप भावनो रे, सरस रच्यो सवादो ।
भणता गुणता भाव सु रिद्धि समृद्धि सुख सुभसादो रे ॥



ढाल १

- १— धम्मोमगल महिमानिलो, धर्म समो नही कोय ।
धर्म सु नमे देवी देवता, धर्म शिध सुख होय ॥धम्मो॥
- २— जीव दया नित्य पालिये, सयम सतरे प्रकार ।
वारह भेदे तप तपे, ये है धर्म को सार ॥
- ३— ज्यो तरुवर ना फूलडे, अमरो रस ले जाय ।
त्यो सतोपे साधु आतमा, फूल ने पीडा नही थाय ॥
- ४— इण विघ विचरे गोचरी, लेवे सुझतो आहार ।
ऊँच नीच मध्यम कुले, धन धन ते अणगार ॥
- ५— मुनिवर मधुकर सम कहा, नही तृष्णा नही रोप ।
मिले तो भाडो देवे देह ने, नही मिल्या रो सन्तोष ॥
- ६— घणा घरारी गोचरी, थोडो थोडो लेवे आहार ।
पाचो इन्द्रिय वश करे, सफल करे अवतार ॥
- ७— महाव्रत पाले निर्मला, टाले सगलाई दोष ।
देवलोक निश्चय सरा, सूरत लागी ज्यारी मोक्ष ॥
- ८— धन रो कैसो गारवो, रूप रो कैसो अभिमान ।
भरत आरीसारा भवन मे, पाया केवलज्ञान ॥
- ९— धन्य मरुदेवी माता जो ध्यायो है निर्मल ध्यान ।
गज होदे बैठा थका, पाया है केवलज्ञान ॥

- १०— श्री आदेश्वरजीरा डीकरा, भरतादिक सो पूत ।
इए भव थी मुक्ति सिधाविया, कर करणो करतूत ॥
- ११— श्री आदेश्वरजीरी डीकर्या, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय ।
बले बले माण्ड्या पारणा, मुक्ति गया सिद्ध होय ॥
- १२— बाहुबलजीरो पोतरो, श्री श्रेयासकुमार ।
इक्षुरस बहिरावियो, भावे सुभक्तो आहार ॥
- १३— खाजा लाडू ने सूखडी, पच विगय परिहार ।
बीर जिनन्द बखाणियो, घन्य घन्नो अणगार ॥
- १४— घना नी परे नव जणा, तप कर भीशी देह ।
घर्म तणे प्रसाद से, पहुचा है स्वार्थसिद्ध तेह ॥
- १५— प्रदेशी पापी हूतो, मिथ्यामत भरपूर ।
केशीगुरु समझाविया, हुआ सूर्याभनामा सूर ॥
- १६— अर्जुन माली बहु कीनी, देवता रा जोग सु घात ।
घर्म तणे प्रसाद से, मोक्ष मिली हाथोहाथ ॥
- १७— रूप स्वरूप मे काला हूता, हरिकेशी अणगार ।
घम तणे प्रसाद से, पहुचा है मोक्ष मझार ॥
- १८— नन्दन को जीव डेढको, आयो थो समकित सेव ।
घर्म तणे प्रसाद से, हुआ ददुंर नामा देव ॥
- १९— किडीयानी करुणा किनी, धर्मरुची अणगार ।
दया तणे प्रसाद से, सर्वार्थसिद्ध मझार ॥
- २०— अम्बड जी का शिष्य सात सो किधो पाणी रो नेम ।
उनाला की रेणु मे, राख्यो नेम सु प्रेम ॥
- २१— खलल खलल नदीया वहे, पिए नहीं आज्ञा रो जोग ।
सूरा तो सयारो कियो, पहुँचा है पाचवे देवलोग ॥
- २२— ईर्या जोय ने चालणो, भापा बोल विचार ।
वाईस परिपह जीवणा, सजम साढा रो धार ॥
- २३— अघ्यमन पहले दुम पुपिफया, सखरो अथे विचार ।
"पुण्ययत्न" "शिष्य जेतसी", घर्मे जय जय धार ॥

ढाल २

राग—कपूर होवे अति उज्जलो

- १— दीक्षा दोहिली आदरी, काम भोग घर छोड ।
सकल्प थो दुख पग पगे जी, वैरागे मन मोड ॥
मुनिश्वर, घन घन ते अणगाय ॥टेर॥
- २— घर छोडो ने निसरचा जी, लोघो सजम भार ।
भोग छोडो जोग आदरघो जी, हूँ जाऊँ ज्यारी बलिहार ॥
- ३— मनवाले भूल चूकतोजी, मत करो ढील लिगार ।
यो जग जाणो कारमो जी, कुण कता कुण नार ॥
- ४— करे अतापना आकरी जी, कोमल मती राखो देह ।
राग-द्वेष तजो पाडुवा जी, जो सुख चावो अछेह ॥
- ५— अग्निकुड जलते पडे जी, अगघनकुल नो सर्प ।
वमीयो विप वछे नही जी, ज्यु कुल आपणो भप ॥
- ६— धिक् धिक् तुझ जीतव भणी जी, वमीयो वछे आहार ।
जीवित वछे मरणो भलो जी, निर्लज ने लाज न लीगार ॥
- ७— नारी सारी पारकी जी, देख भरम मत भूल ।
वाय झकोरे तरु पडे जी, ऐसी स्थिती होसी डावाडूल ॥
- ८— घर घर फिरणो गोवरो जी, देखोला सुन्दर नार ।
हडवृक्ष री ओपमा जी, मोटो उठायो भार ॥
- ९— हडवृक्ष हेटो पडे जी, वायु तरणे सजोग ।
अस्थिर होसी थारी आत्मा जी, रूलशी घणो रे ससार ॥
- १०— जिम हस्ति अकुश वसे जी, स्थिर राखो मन तेम ।
राजमती सती बुझव्यो जी, ठाम आया रहनेम ॥
- ११— अध्ययन श्रामण्य नाम पुब्विया जी, बीजे ये अधिकार ।
पुण्यकलश—शिष्य “जेतसो” जी, प्रणमे सूत्र श्रेयकार ॥

ढाल ३

राग—चेला जी रे आइ मन माय

- १— सुध साधु निर्ग्रन्थ, साधे मुक्तिनो पथ ।
आतम सचर्यो रे, सबर आदर्यो ए ॥

- १२— दूषण टाले सदीव, तेहने एहवी सीख ।
वीर जिनवर कहे ए, मुनिवर सरदहे ए ॥
- १३— उद्देसिक अद्भूत, कृतगड लीधु मूल ।
नित्यपिंड जाणियो ए, सामो आणियो ए ॥
- १४— न करे राई भात, न जीमे, गृहीने पान ।
रायपिंड ना करे ए, सेजातर परिहरे ए ॥
- १५— न राखे सन्निहिराय दानशाला नही जाय ।
वाय न विजणो ए, रगन रिजणो ए ॥
- १६— चोवा चन्दन चपेल, तन न लगावे तेल ।
नही जोवे आरसी ए, ते गुरु तारसी ए ॥
- १७— न खेले पासा सार, मुख न कहे मार ।
छत्र शिर ना धरे ए, गृही सग परहरे ए ॥
- १८— आदरे तीन रतन, तेहना करे जतन ।
तीन बोल वरजणा ए, अग्नि-जल अगनाए ॥
- १९— पीठ खाट पलग, तजे तिगिच्छा अग ।
जुती नही पायतले ए, जीव दया पाते ए ॥
- १०— मूलादि कद मूल, परहरे सचित फल फूल ॥
तजे तिम सेलडो ए, लूण धूपेणावली ए ॥
- ११— वमन विरेचन कर्म, करीने गुमावे धर्म ।
दात दातण घसी ए, नाही लगावे मसी ए ॥
- १२— नही पेहरे हीर चीर, नही करे शोभा शरीर ।
शरीर पीठी न माजणो ए, आस न आजणो ए ॥
- १३— सूत्र ना वावन बोल, वर्ज साधु अमोल ।
तप कीरिया वरी ए, पहुचे शिवपुरी ए ॥
- १४— अध्ययन सुट्डीयार, नामे तीजो सार ।
अर्थ शोव छे ए, 'जेतसी' मन वसे ए ॥

ढाल ४

- १— श्री महावीर भाखे एम, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया ।
जीओ मुनिराज, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया ॥
- २— सुण सुण जम्बू स्वामी, चौथो अघीन छ जीव ।
जीओ मुनिराज चौथो अघीन छह जीव ॥
- ३— पृथ्वी पाणी तेऊ वाय, वनस्पति त्रस जाणिये जी ॥जि०॥
- ४— ए छह जीवनिकाय, हिंसा टालिने दया पालीयेजी ॥
- ५— महाव्रत पाच सदीव, रात्रि भोजन टालियेजी ॥
- ६— त्रिविधे त्रिविधे जावजीव, गर्ह निंदी पडिक्कमीजी ॥
- ७— दीक्षा लेई ने पूछे शिष्य, किम बोलु चालू रहूँजी ॥
- ८— समभावे गुरु एम, जयणा बोले ने जयणा चालजेजी ॥
- ९— श्रीजिनशासन सार, प्रथम ज्ञान पछे दयाजी ॥
- १०— जीवाजीव विचार, जाणे अनुक्रम ज्ञानथी जी ॥
- ११— केवलदर्शन नाण, उपजे कर्म सपाय ने जी ॥जि०॥
- १२— छेहडे लहे सिद्ध ठाण, अजरअमरसुख शाश्वना जी ॥
- १३— एह छह जीवनिकाय, सुणता तन मन हूलसे जी ॥
- १४— अद्धे शुद्ध परिणाम, पुण्यकलश शिष्य 'जेतसी' जी ॥जि०॥

ढाल ५

राग— प्रनो तो पुरो उडियो गिरनारिया “कलश”

- १— पाचमो पिंडेसणा अज्झयणा, उद्देसी न लेवे साधु रे ।
विधी लेई भात पाणी, करो तिरो ससार रे ॥
- २— दीक्षा पाले दोष टाले, धरे ध्यान समाध रे ।
सूत्र साचा अर्थ आछा, भणो गुणो ते साध रे ॥
- ३— सचरे मुनि गौचरी कु ग्राम नगर मभार रे ।
जोय चाले शुद्ध पाले, हसे न बोले लिगार रे ॥
- ४— छकाय मर्दे साधु अर्थे, किया भोजन जेह रे ॥
तेहने धरे जती वर्ज, दोषिलो आदि देह रे ॥दि०॥

- ५— असण पाण खादिम सादिम, लेवे सूझतो जेह रे ।
असूझता मुनि दोष जाणी, कहे कल्पे न एह रे ॥
- ६— विधे लेवे विधे आलोत्रे, विधे करे आहार रे ।
लूखो सूखो अस वीरस, हीले निंदे नही लिगार रे ॥
- ७— पिंड निपेध्या, कुल निपेध्या, तजो भलो निर्दोष रे ।
मुहादाई मुहाजीवी, बेहुं जासी मोक्ष रे ॥दि०॥
- ८— काले जावे काले आवे, विचरे नही अकाल रे ।
कालोकाले समाचरे ते, बडु साधु त्रिकाल रे ॥
- ९— वस्त्र पात्र सयण आसण, छत्ता नही देवे जेह रे ।
जति रती ते रोष न करे निंदे वदे तेह रे ॥
- १०— तपचोर वय चौरादि, हुवै कलिपीदेव रे ।
दुर्गत दुर्लभबोध जाणी, धर्ममारग सेव रे ॥
- ११— सीख शिक्षा ग्रहण शिक्षा, ते लहे सुर लोय रे ।
“जेतसी” कहे सूत्र माहे, बोल बहु छे जोय रे ॥

ढाल ६

राग—इंद्र इन्द्राणी हो सुखमर पोतरि

वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी ॥टेरा॥

- १— वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी नाण दसण सपन्न ।
वनवाडी मे हो आय समोसर्पा, सुमति गुप्ति प्रतिपन्न ॥वे०॥
- २— मिल मिल राय राजा ने मूहता, ग्राह्यण क्षत्रिय लाग ।
साधु ने पूछे हो किम छे थाहरो, आचार गोचर जोग ॥
- ३— मुनिवर भाख मारग मोक्ष नो, कठिन आचार विहार ।
हुप्रो नै होसी ए धम कहेने, मुक्ति तणो दातार ॥
- ४— छ व्रत पाले हो राखे छ जीव ने, नही स्नान शृंगार ।
पत्यक निपिद्या गृहभोजन तज्या, अकल्प ठाण ग्रठार ॥
- ५— तेल गुहादि स्निग्ध जेकरे, ते ग्रही नही अणगार ।
नित तप भाखे इक भोजन करे, वर्जे त्रिपय दिवार ॥
- ६— वस्त्रादि राखे समय पालवा, न धरे ममता प्रेम ।
विभूषा से बग कम चीकणा, अवल्प कर्त्य प्रेम ॥

- ७—जीव इत्यादि पाले पग पगे, न करे रात विहार ।
 एक काय हणता नम स्यावर हण्या, लहे दुर्गति अवतार ॥
- ८—तप जप करणी दुख हरणी करे, निमल नही ग्रहकार ।
 सवेगी सोभागी चद्र ज्यू सोभता, पहुँचे मुक्ति मक्षार ॥
- ९—छठो मीठो लागे मोभणी, भलो घर्मार्थ काम ।
 नमे सुख पामे हो जेतसी, आत्म उज्जवल परिणाम ॥

ढाल ७

राग—भापा रे ठग बाजिया

- १—साधु वृक्षो रे, भापासमिति विचार, भापा चार भेदे कही ।
 साधु वृक्षो रे, सत्य असत्य ने मिश्र, असत्यामृषा चौथी कही ॥
- २—साधु वृक्षो रे, भापा निर्वद्य बोल, पहली ने चौथी बली ।
 साधु वृक्षो रे भापा न भाखे दोय द्वीजी ने तीजो टली ॥
- ३—साधु वृक्षो रे, निश्चय कठिन कठोर, शक्ति सावद्य सलवे ।
 साधु वृक्षो र जेहथी लागे पाप तेहवी वाणी न सलवे ॥
- ४—साधु वृक्षो रे, चोरने न कहे चोर न कह काणो काणा भणी ।
 साधु वृक्षो र, पर पीडा हुई जेह, तेहवी वाण न बोलवी ॥
- ५—साधु वृक्षो र, असाधु ने न कहे साधु, साधु ने साधु बुलाय जे ।
 साधु वृक्षो रे, सुर नर तिर्य च हार कहि दोष न लगाय जे ॥
- ६—साधु वृक्षो रे, सुवक्त्रशुद्धि अञ्जयण, बोल घणा छे सातवें ।
 साधु वृक्षो रे, जेहथी लागे पाप, न पढीश तू इण वात मे ॥
- ७—साधु वृक्षो रे, दस विध बोली साच, अरिहत आज्ञा छे इसी ।
 साधु वृक्षो रे, पुण्यकलश कहे सीप सूत्र रागे जेतसी ॥

ढाल ८

राग—मन मोयो रे तु गियापुर

श्री जिनवर गणघर मुनिवर ने कहे रे ॥टेर॥

- १—श्री जिनवर गणघर मुनिवर ने कहे रे,
 हिसा टाली ने दया पालरे ।
 जो जो जाणो जीव छ कायना रे,
 पग पग जयणा कर चाल रे ॥

- २—टाले तो सूदम आठ विराघना रे,
 टाले मय मत्सर ने प्रमाद रे ।
 तप जप रापकर बाया सोलवे रे,
 जोते इन्द्रियना विषय स्वाद रे ॥
- ३—जरा न बरो देही जोजरी रे,
 न बंदे रोग पीडा घट माहि रे ।
 इन्द्रिय हीणी खीणी ना पही रे,
 ता लग बर घमं ससार रे ॥
- ४—शोध तो बर बघे घटे प्रीतही रे,
 माने तो विणमे विनय आचार रे ।
 माया मिथई नासे जगत में रे,
 लोभे तो धिणसे सर्व गुणसार रे ॥
- ५—ज्योतिष निमित्त स्वप्न फन जे बहे रे,
 यत्र मत्र भाडा जुडाय रे ।
 टामण टूमण शोषण केनवे रे,
 ते किम तोरसी किम तारेय रे ॥
- ६—भीत न जोवे नारी-चित्ररी रे,
 बाले जिम मोचन रवि तेज रे ।
 हीणी खीणी बले बरसा सी तणी
 ब्रह्मचारी न घरे तिण सु हेज रे ॥
- ७—पक्षी का बछडा डरे विलाव थी रे,
 ब्रह्मचागे नारी सु तेम रे ।
 'शोभा सिएगार ने पट्टरस जीमणी रे,
 तालपुट जहर करे एम रे ॥
- ८—हाथ ने पाव बली छेद्या हुए रे,
 कान ने नासिका बली जेह रे ।
 ते पिण डोसी सी बरसा तणी रे,
 ब्रह्मचारी न घरे तिण सु नेह रे ॥
- ९—बसहि सयणासण पाय-पूछणो रे,
 पडिलीह लीजे वारम्बार रे ।

घन ते मुनिवर चन्द्र सूर्य सगा रे,
याप तीरसी ओरा ने तार रे ॥

१०—आयारपणही नाम अध्ययन ना रे,
सखरा तो अथ विचार रे ।
सिद्धात साखे भाखे जेतसी रे,
सुत्र थी हो जो मुझ निस्तार रे ॥

ढाल ९

राग—घारिणी समझावे हो मेघकुमार

ओलखडी करी जे हो, गीतारथ गुरुतणी ॥टेरा॥

- १—ओलखडी करी जे हो गीतारथ गुरुतणी क्रोध मान मद छोड ।
आसातना टाती नमिये पूजीये, वदिये वेकर जोड ॥ओ०॥
- २—सूत्र भणावे सखरी वाचना रे, पूछे पूछे अर्थ विचार ।
चन्द्र सूर्य ज्यो गुरू ने सेविये, विनय कीजै बारम्बार ॥
- ३—नवमा विनय समाधी अध्ययनना रे नया नया अर्थ विचार ।
उद्देशे चौथे थेवरा वर्णव्या, समाधि रा स्थानक चार ॥
- ४—पहली विनय समाधि नामे भली रे, बीजी सूत्र समाध ।
तीजी तप चौथी आचारनी रे, ए चारो आराध ॥ओ०॥
- ५—समाधि आराधे ते शिवपद लहे रे, पामे अमर पद तेव ।
करजोडी ने नदे जेतसी रे गुणवत श्री गुरुदेव ॥

ढाल १०

राग—भाव धरी ने पातजे

अरिहत वचने दीक्षा आदरी रे ॥टेरा॥

- १—अरिहत वचने दीक्षा आदरी रे, नार वमे सृजाण ।
दसवा भिक्खु नाम अध्ययन ना रे, वम्यो न वछे जाण ॥
- २—खणो ने खणावे पृथ्वीकाय ने र, पीवे न पीवावे नीर ।
जले न जलावे तेउ काय ने र, बीजे ने बीजावे समीर ॥अ०॥
- ३—छेदे ने छेदावे हारितकाय ने रे, वरजे बीज सचित ।
पचे न पचावे भोजन रसवती र, त्रस थावर वध चित्त ॥

- ४—क्रोध मान माया लोभ परिहरे, नही दे सावध उपदेश ।
घाव तिरे पर ने सारसी रे, साँचा ते दरवेश ॥अ०॥
- ५—राग द्वेष मद मत्सर परिहरे, न करे वणिज व्यापार ।
तजे तमाशो हसी मक्करी रे, बँछे नही लिगार ॥
- ६—जहाज समान गुरुदेव मिल्या रे, अरु भटकी है म्हारी नाव ।
डूबती ने पात्र लगावजो, ये छे म्हारा नाव हो ॥अ०॥
- ७—पाच महाग्रन्थ पाले इन्द्रिय दमे रे, ग्राम कटक सहें घोर ।
श्मशाने पडिमा पडिवजे रे तज्यो प्रतिवध शरीर ॥
- ८—मर्म न भासे भलो रे, वाचे सूत्र सिद्धात ।
आतम ध्याने आतम चढ़रे रे, पामे परम पद अन्त ॥
- ९—शय्यभवस्वामी ए रच्यु रे, दशवर्कालिक सूत्र ।
सखरो शुद्ध आचार प्ररूपियो साधुनो रे, तार्यो मएक पूत ॥
- १०—जिम भाख्यो तिम पालनोरे, तो सुघरे बेहु लोक ।
इह लोके जश शोभा धर्यो रे, परलोके सुख ना थोक ॥
- ११—सवत् सतरे सत्योतरे रे जी, बीकानेर मझार ।
पुण्यकलश शिष्य भए जेतसी रे, गीत रच्यो टकसार ॥



दोहा

- १— अरिहत सिद्ध अनत गुण, धरिये शुद्ध मन ध्यान ।
सम्यग्ज्ञान प्रकट हुए, दूर हरण अज्ञान ॥
- २— आचारज छत्तीस गुण, जिन गादीघर जाण ।
अबुश चारो सघ मे, वरतावे जिन आण ॥
- ३— वाणी द्वादस अगनी, वदन करी वरसाय ॥
दोष रहित निष्पक्ष लवे, ते प्रणमू उवज्जाय ॥
- ४— अढ्ढोढ्ढोप माहे नमू, साधु सकल गुणधार ।
ज्ञानादि त्रिरत्न घर, साधे मोक्षद्वार ॥
- ५— आदि दोय पद देव छे, तिहु पद मे गुरु शुद्ध ।
चरण कमल तेहना नमू, आपे निर्मल बुद्ध ॥
- ६— तसु प्रसाद चेतन तने प्रगट्यो ज्ञान प्रकाश ॥
दिव्यहिये सम्यक्दशा, खोजत भद्र खुलास ॥
- ७— आत्म निन्दा आपणी, जीव सदा करे जोय ।
पर निन्दा है पाप सू, हर्गिज नलो न होय ॥

ढाल १

राग—अगौरी कस चगौ सुयण सावट

- १— पर निन्दा पचक्खाण, करो कोमल पणें ॥चेतनीया॥
आत्म निन्दा प्रभाव, वधे गुण आपण ॥चे०॥
मर्म सखो जिन धर्म, निर्वेरी मग खरो ॥चे०॥

- २— तू दुश्मन तो दुश्मन, थारे घणा ॥चे॥
तू सज्जन तो सज्जन, सारा आपणा ॥चे॥
- ३— तू परने दुख दाई, तो भव भव दुखी ॥चे॥
तू सहने सुखदायक, तो पोते सुखी ॥चे॥
- ४— छहूँ जीवनिकाय, जीवणो वधे मही ॥चे॥
लूटे छ कायारा प्राण, अनुकपा थारे नही ॥चे॥
- ५— या जीवारा चैर बदला, किम छूटसी ॥चे॥
अलवत्त थारा प्राण, भवोभव लूटसी ॥चे॥
- ६— हिंसा अनर्थ मूल, करता नही ठरे ॥चे॥
उदय आसी फल तेह, निश्चय मे तू मरे ॥चे॥
- ७— पण जीवा रो घर मरण थारे जाण ले ॥चे॥
इण मे भूठ न लेण, जिन वचन पिछाण ले ॥चे॥
- ८— जीतव विधि इण लोक, चन्दन पूजा अर्चवा ॥चे॥
चाहे तू प्रणसा, जनम मरण मुकायवा ॥चे॥
- ९— सब दुख टालण निमित्त, छविघ जीव हण ॥चे॥
तू अज्ञानी वाल निष्ठुर, निर्दय पण ॥चे॥
- १०— ए हिंसा कर्मगठ, नरक मरी खलु ॥चे॥
सूत्र आचारण साख, उदेरस कुल वधु ॥चे॥
- ११— कारखाना छत्तीस, छकाया मरण का ॥चे॥
देव धर्म गुरु मोक्ष, निमित्त नही करण का ॥चे॥
- १२— अर्थ अनर्थ धर्म काज, हिंसा वरजीवली ॥चे॥
प्रश्न व्याकरण माय, प्ररप्यो केवली ॥चे॥
- १३— माठी बुद्ध अबोध, तीके हिंसा करे ॥चे॥
श्रीजिन वचन समाल, भवि दित मे घरे ॥चे॥
- १४— ओघ लोभ भय हास, तणी सगत रह्यो ॥चे॥
बोले कूर कठोर कुमति के वश थयो ॥चे॥
- १५— पाच मोटका भूठ, वचन मुख मत कहो ॥चे॥
सवथा प्रकारे भूठ, तजो तो सुख लही ॥चे॥

- १६— चोरी को मोटो दीप, परायो धन चहे ॥चे०॥
परधण री परवासु, जग मे अपजस लहे ॥चे०॥
- १७— देव मनुष्य तिर्यंच, सम्बन्धी कुशीलसु ॥चे०॥
तृप्त कदापि न होय, विषय सुख लील सु ॥चे०॥
- १८— नर नारी को वेद, विकार विसारिये ॥चे०॥
वर्ज कुशील कुसग, मदन मन मारिये ॥चे०॥
- १९— नर नारी के सग, मथुन सेवता ॥चे०॥
मरे सन्नी नव लाख, किंचित्, सुख देवता ॥चे०॥
- २०— असन्नी री नही सरया, श्री जिन भाखियो ॥चे०॥
पाच आश्रव मे सरदार, मैथुन दाखियो ॥चे०॥
- २१— दुर्गति को दातार, कहि जे परिग्रहो ॥चे०॥
तृष्णा परी रे निवार, हिये समता धरो ॥चे०॥
- २२— मुर्च्छा दूरी निवार, भाव दोऊ तजो ॥चे०॥
पुद्गल सुखनी चाह, मेढ निज सुख भजो ॥चे०॥
- २३— निज गुण असे अडोल, अतोल अमोल है ॥चे०॥
पुद्गल सुख मे भीनो, न चीनो पोल मे ॥चे०॥
- २४— भोलो थको तू भूल, आश्रव मे अलु भियो ॥चे०॥
सेवे पाप अठार, बुरो तोने सूभियो ॥चे०॥
- २५— पापी निर्लज नीच, नि शर्मो ह्वय गयो ॥चे०॥
माठा लखण भाय, भागल भूण्डो भयो ॥चे०॥
- २६— कामी श्रोधी कुटिल, करापाती कुकर्मो ॥चे०॥
कपटी कुटिल कठोर, अपत तु अधमो ॥चे०॥
- २७— कायर कृपण बरूर, कुवध उपजे सची ॥चे०॥
लपट लोभी लबाह, लोलुपी लालची ॥चे०॥
- २८— अहकारी अणखीलो, अपछन्दी उठी ॥चे०॥
अद्धे नही गुर सीस, सुमति दिल मे घटी ॥चे०॥

बोहा

- १— हे चेतन मिथ्यातमे, भमियो आदि भूल ।
अज्ञानी तू बापडा, समकित से प्रतिकल ॥
- २— अति अज्ञानी ग्रासता, महा मूल मिथ्यात ।
तदपी तू यामे तपे, सणाय भर्म सगात ॥
- ३— तज मिथ्यातअज्ञान तम, समकितगुण कर शुद्ध ।
विमलजोत विज्ञान के परचे होत प्रबुध ॥
- ४— काम स्नेह दृष्टि राग मे, रहे सदा अनुरक्त ।
रस साता रिद्धि गर्व मे, आतम तू आशक्त ॥
- ५— पतंग, भली, मृग, गज मच्छी, मरे एकमे मुरझाय ।
पाचो इन्द्रिय वश पड्यो, को हवाल तुम्ह थाय ॥
- ६— तू भटके दुर्भव अति, सूझ न पडे लिगार ॥
अष्टकम को बहूलता, बाकी बधु ससार ॥
- ७— दुश्मन तेरह काठिया, जबर धाडायती जाण ।
मुक्ती पुरी के पथ मे, करे धर्म धन हाण ॥

ढाल २

राग—कमक कचोला छोड लेणी बछ काछली

- १— माठी लेश्या माय, ध्यान माठो घरे ॥रे जीवा॥
माठी बुद्ध विचार, माठी चिंता कर ॥
- २— माठा अध्यवसाय, परिणाम उपजे होये ॥रे जीवा॥
माठा लक्षणधार, मोह मदिरा पीये ॥रे॥
- ३— अतस दुर्मति दुष्टपणे तू सेवसी ॥रे जीवा॥
जासी नरक निगोद, महादुख वेवसी ॥रे०॥
- ४— कबहुक वेद विकार, विषय रस चितवे ॥
कबहु वितण्डा वाद, वृथा नायक चवे ॥रे जीवा॥
- ५— बोले भुडा बोल, मर्म मोसावले ॥रे जीवा॥
देवे कूडा आल, पोते भुडो छाले ॥रे०॥
- ६— ताके पराया छिद्र, करे चुगली बुरी ॥रे०॥
परनिदा पर मयल, चुथे कर कर बुरी ॥रे०॥

- ७— छाती पराई वाले, ते अपनी बल ॥रे०॥
पोखे घेस विशेष, वधे फोकट कले ॥रे०॥
- ८— दोष पराया काढ, आपणा जे ढके ॥रे०॥
अशुभ कर्म के वध, उलझी अछत्तो वके ॥रे०॥
- ९— तिण निंदा रे पाप, आगे गू गो थावसी ॥रे०॥
देव किल्मेपी होय, घणो पछतावसी ॥रे०॥
- १०— तू आगे अहकार, मो सरिखो नही ॥रे०॥
पूर्व पुण्य सजाग, पाई सपत सही ॥रे०॥
- ११— पुण्य क्षीण हो जाय, पडेल निगोद मे ॥रे०॥
रलसी काल अनन्त, म फूले मोद मे ॥रे०॥
- १२— कबहुक भिष्ठारो जीव, हुवो तू चुरणीयो ॥रे०॥
बोरकली रे माय, पगे चिथीजियो ॥रे०॥
- १३— साधारण मे उपज्यो, उदे आया पापडा ॥रे०॥
कवडी रे भाग अनन्त, बिकाणो तु बापडा ॥रे०॥
- १४— कबहु राक कगाल-परण मागत फिर्यो ॥रे०॥
भिष्ठारी ओडी उठाई, पोइस पोइस कर्यो रे ॥रे०॥
- १५— अथ के पुण्य पसाय, उत्तम खोली मली ॥रे०॥
मति कर मान गुमान, मान शिक्षा भली ॥रे०॥
- १६— क्रोध लोभ मद माय, च्यार कपाय सु ॥रे०॥
हारे मानुष जन्म, विषेरी लाय सु ॥रे०॥
- १७— माने रति अरति, राग ओद द्वेष मे ॥रे०॥
फसियो मोहजजाल, विलमायो हर्ष ॥रे०॥
- १८— सित्तर कोडाकोड, सागर लग मोह सू ॥रे०॥
न लहे शुद्ध विवेक, मिथ्या भ्रम छोह सू ॥रे०॥
- १९— वध तीस प्रकार महामोहणी मुदे ॥रे०॥
प्रकृति अट्ठावीस, हुवे पल पल उदे ॥रे०॥
- २०— सकल कर्म मुरय मोह, समझ कर तोडिये ॥रे०॥
शील सतोष सुबुध, सुकृत मन जोडिये ॥रे०॥

- २१— दुसह कम दुर्दन्त, चार घनघातिया ॥रे०॥
तोह सके तो तोह, मोह सगातिया ॥रे०॥
- २२— नवतत्त्व स्वरूप, हिया मे धारिये ॥रे०॥
सवर निजरा मोक्ष, विशेष विचारिये ॥रे०॥
- २३— शम सवेग निर्वेद, अनुकम्पा आसता ॥रे०॥
समकित लक्षण सेव, मिले सुख शास्वता ॥रे०॥
- २४— ज्ञान दर्शन, चारित्र्य, त्रिहु आराधिये ॥रे०॥
धारे भेदे तप, अहो निश साधिये ॥रे०॥
- २५— शुक्ल ध्यान शुभ भाव, निरंतर ध्याइये ॥रे०॥
केवलदर्शन ज्ञान, परम पद पाईये ॥रे०॥
- २६— एहवी सत्गुरु सीख, न अद्वे प्राणियाँ ॥रे०॥
कर्म शुभाशुभ सग, फिरेला ताणीया ॥रे०॥
- २७— लख चौरासी जुण, चउगती भटकसी ॥रे०॥
बलि बलि गर्भावास, उधे शिर लटकसी ॥रे०॥
- २८— प्रारम्भ मे आगीवाण, पच वणियो रहे ॥रे०॥
बडपण खाटण काज, ईष को ओछो कहे ॥रे०॥
- २९— माड पचपतहीण, तड अग मे पडे ॥रे०॥
जतो घर मे भार, घणा खोटा घडे ॥रे०॥

दोहा

- १— तू चेतन प्रमादवश, न डरे करतो पाप ।
भव भव मरसी भोलिया, सहसी घणा सताप ॥
- २— पाप लगावे व्रत मे, ए भूडो आचार ।
अतिक्रम व्यक्तिक्रम मे, अतिचार अनाचार ॥
- ३— ज्ञान दर्शन चारित्र्य तप, ज्यो विराधना थाय ।
शून्य मनक्रिया करे, तो सारी निष्फल जाय ॥
- ४— आलोया निन्द्या विना, मरे विराधक होय ।
पहुचे दुर्गति पाधरो, तप जप करणी खोय ॥

- ५— जो चाहे आराधना, ले प्रायश्चित्त गुरु साख ।
ते सिद्ध गति गामी हुवे, जिनवाणी रस चाख ॥
- ६— श्रुत ज्ञान को विनय तू क्यों न करे रे जीव ।
विनयहीन ने ज्ञान की, वृद्धी न होय कदीव ॥
- ७— धन्य विनयी भव्य जीवते, पावे निर्मल ज्ञान ।
श्रुत ज्ञान के विनय सू, हुवे त्रोट कल्याण ॥

ढाल ३

राग—आज नहेजा रे दीसे ताहलो

- १— इराभव परभव सोगन लेने भागीया ।
सेविया पाप अठार, धीतरागरा वचन उलागिया ॥
- २— अव्रत ने मिथ्यात्व, जोग प्रमाद कपाय बधारिया ।
खोटा शास्त्र अभ्यासते, अज्ञान पण अवधारिया ॥
- ३— इत्यादिक अपराध, सहु आलोई निंदी पडिक्कमी ।
समकित व्रत सभाल, शुद्ध हुवो चेतन गुरु पद नमी ॥
- ४— जो आराधक थाय तो, थारी भव थिति पाकी सही ।
ए जिनशासन न्याय, पुण्यसयोगे सत्सग लही ॥
- ५— निवर्ते सावध्य योग ते, समाई सवर कहिये ।
भावे शुद्ध परिणाम, भव निधि तिरिये ॥
- ६— मोटी नाव है पच्चक्खाण, देशव्रत सर्व व्रत इसी ।
समता रूप समाध, सूत्र वचने जिन भाखी जीसी ॥
- ७— दोय घडी रे काल तू व्यवहार समाई आदरे ।
आर्त्त रौद्र परिणाम, सकल्प विकल्प चेतन किम करे ॥
- ८— बैठे मूढो बाध तू जाणे मैं समाई करी ।
न मिटे माठो ध्यान मन शुद्ध करणो खराखटी ॥
- ९— शुद्ध समाधिक धार, चन्द्रलेहा राणी केवल लयो ।
चद्रावतसकराय, स्वर्ग वार मे पोसा मे गयो ॥
- १०— उपशम सवर विवेक, चोर चलायती शुभ ध्यानी थयो ।
अरु प्रदेशी राय समता करने सुधर्म सुर भयो ॥

- ११— देवतणा उपसर्ग, कामदेव पोपा मे लिया ।
उत्तम पुरुष अनेक, इम शुभ गति पामिया ॥
- १२— तु भरोसे मत भूल, वा समाई तोसू किम वणे ।
आत्मनिन्दा अभ्यास, कर्म घटावो रे चेतन आपणे ॥
- १३— तु सम्यग्दृष्टि कहाय, धर्म को धोरी रे चेतन बाजियो ।
म पढे पाप मकार, जो परमेश्वर सेती लाजियो ॥
- १४— प्रकट छानारे पाप, केवलिया सु न छिपे एक ही ।
उदासीनता आण, निष्फल थाय पाप अनेक ही ॥
- १५— चक्रवर्ती पद पाय, भरत निकाचित पाप न बाधियो ।
ते समदृष्टि पसाय, उदासीनता मे चिरा साधियो ॥
- १६— उदय कर्म सुख भोगतो, पिण भरुचि पुदगल सुख तणी ।
अनित्यभावना भाय, केवल पाम्यो रे खट खण्डरा घणी ॥
- १७— श्रेणिक ने कृष्ण समकित समाल, आत्म निन्दा रे चेतन
आपणी ।
धीरज दिल मे धार, प्रगटे निज ज्ञान दशावणी ।
- १८— धारिया गुण इकवीस, दृढधर्मी वारे चाव सु ॥
शखपोखली आद, आनन्दादिक दश शुद्ध भाव सु ।
- १९— पडिमाधारी एह ज्या, उत्कृष्टी किरिया आदरी ॥
पाम्या देव विमाण, सिद्ध गत पासी एक नर भव करी ।
- २०— तु जाणे रे जीव, देशव्रती आवक पोते हुवो ।
न टले प्रगट इग्यार, तो तु देशव्रत सेती जुवो ॥
- २१— पाल सके तो पाल, लीधा ते आवकव्रत निमला ।
सयम तप कर सतोष, विषे कपाय पाडजो पातला ॥
- २२— आणे मन वैराग, भावे सर्व व्रतनी भावना ।
सत् चित् आनन्द ध्याये, निज आत्म गुणध्यावना ॥
- २३— नित्य सुमरे नवकार, भवदेपूर्व माहे सार छे ।
सुधरे जन्म सुजाण, इण भव पर भव शरण आधार है ॥

- २४— धन्य धन्य गजसुखमाल, सारो तन अग्नि मे पजल्यो ।
सुमरता आत्म स्वरूप, पिण उपसर्ग थी मन न चल्यो ॥
- २५— खधक रिखना शिष्य, पालक पापी घाणो मे पोलिया ।
नाणो रीस लगार, बैरभाव पूर्ण पोसो लिया ॥
- २६— खदक रिखनी खाल, राय उतारी वर काचर तणे ।
मंतारज मुनिराय, मायों सुवर्णकार निर्दय पणे ॥
- २७— इम अनेक अणगार, समता सागर प्रगटिया केवली ।
एहवी समता रे आण, तो तु यासी रे जीव अनन्तवली ॥

दोहा

- १— पद्मल सुख की ममन से, भूल गयो मत हीण ।
ज्यु मदिरावश मानवी, होत कर्दम मे लीन ॥
- २— काम धेनु अरु कल्पवृक्ष, चिन्तामणी चित्राबेल ।
काम कुभ पारस सुधा, अमृत घुटका केल ॥
- ३— रसायण रसकु पिका, अष्टसिद्धि नवनिद्धि ।
चक्रवर्तादिक राज श्री, रतन चतुर्दश रिद्धि ॥
- ४— हेम रजत हीरा पन्ना, मणि माणक परवाल ।
गडमेदक ने लसणिया, मुक्त पिरोजा लाल ॥
- ५— पुद्गल वस्तु अनित्य सब, मिले टले बहुबार ।
तु याकी ममता धरे, कर कुडो अहकार ॥
- ६— गले मिले ने वीखरे, बादल जेम विचार ।
पुद्गल वस्तु स्थिर नहीं, अशाश्वती असार ॥
- ७— सडे पडे विणसे मुकर, देह औदारिक होय ।
तू यामे मूर्च्छित हुवे, मरसी नर भव खोय ॥

ढाल ४ राग—दो रे जीवा यें दान सुपातर खिन दीघा पामो जे केम

- १—सुमत सखी के सग न बैठे कुमति दुतीसग खेले रे ।
ताते तू पुद्गल को रसियो आशा अछती जे लेरे ॥
चेतन आत्म निन्दा कीजो ॥देर॥

- २—चेतन आत्म निन्दा कीजो, परम धर्म रस पीजो रे।
निज सुख भूल रमे पुद्गल मे, दुर्मत सू मत धीजो रे॥
- ३—पुद्गल सुता रे कारण चेतन, कृतघ्न पापी कहावे रे।
पार को कीधो गुण नहीं माने, तू उटो ओगुण गावे रे॥
- ४—पोते प्रीत करी जिण सेतो, कपट घणो उर राखे रे।
ठगाई करने घन लेवे तू, मित्र द्रोह अभिलाखे रे॥
- ५—मिष्ठवचन परतीत उपजावे, आगली भरोसो माने रे।
तिण ने मारे के फदे में पटवे, तू विश्वासघाती नहीं छाने रे॥
- ६—घरजा मरजा ने विसरजा ए वो करतो न लाजे रे।
थापण रास पराई नटसी, तो खोटाकर्मो त वाजै रे॥
- ७—छोटी करबत इत्यादि करने, पाप अठारे बधासी रे।
पचसी कुभीपाक नर्क में, पछे घणो पछतासी रे॥
- ८—तू नहीं केहनो कोई नहीं धारो, अन्तर ज्ञान विचारो रे।
आप आप रो मतलब खेले, सहू ने स्वार्थ प्यारो रे॥
- ९—सज्जन कुटुम्ब तणे वश पहियो, बधण प्रेम बधाणो रे।
हारे मानुष जन्म पदारथ, फेर न आसी टाणो रे॥
- १०—पुण्य सजोगे आय मित्या छे सज्जन कुटुम्बी सारा रे।
होत विजोगे सब उठ जासी, थासी न्यास न्यारा रे॥
- ११—यो ससार स्वप्नवत् भूठो, इन्द्रजाल की माया रे।
लख चौरासी खेल खेलियो, भेष अवरके पाया रे॥
- १२—भर्म कर्म के सग भुलानो, जगत जाल मे खूतो रे।
जन्म मरण जजाल विलोके, मोह निन्दा मे सूतो रे॥
- १३—जगतजाल मे रयाल बूया है, तू भोला किम भूले रे।
मोह निद्रा सू जाग चिदानन्द, निज समकित सुख भूले रे॥
- १४—निश्चयदेव आत्म आत्मा गुरु आत्मा धर्म पिछाणो रे।
आत्म अनुभव तीन तत्त्व है निश्चय समकित मानो रे॥

- १५—आत्मनिन्दा सिखावण एहवी, चितवता कर्म टूटे रे ।
 सुणता गुणता गुरुप्रसदे, जन्म मरण सू छूटे रे ॥
- १६—अवेदी अलेशी अविकारी, सिद्ध स्वरूप सभालो रे ।
 सोह स्वरूप “विनयचन्द” तू हित अहित कल्पना टालो रे ॥

“कलश”

- १— कुमठ गोकलचन्द जेवा, तात मुझ धर्मी लहे ।
 श्री पुज्य हमीर मुनि गुरु भेट के, जिनमत गहे ॥
- २— उगणीसो इकवीस वरसे, फाल्गुण सुद तृतीया खरी ।
 सुकृत कारण दुरित हारण, आत्म निन्दा म्हे करी ॥



परिचय रेखा

सवैया

- १—आदि अनादि अनूप अनन्त अगोचर भी अपनो प्रन छारी
 होकर भक्ति अधीन वही, भगवन्त सु सन्तन के भय हारी ॥
 एक नहीं चउवीस विलोकहु देह अहा । जग मे जिन घारी ।
 या हित भक्ति भगीरथि की "ललितागज" जावतु है बलिहारी ।

बोहा

- १— जो जन जग मे जन्म ले, करे आत्म-कल्याण ।
 नित्य करें उसको नमन, मुक्ति अहो तजि मान ॥

राग—जाओ जाओ रे मेरे साथ

तरणी चाहो वैतरणी तो तो करलो उत्तम करणी ॥टेरा॥

- १—रहनेमी गिरिनार गुहा मे, वाणी दुमुख वरणी ।
 दूर करी उसकी दुःख को, नेमनाथ की घरणी ॥तरणी॥
 २—शुभ करणी कर चन्दनवाला चढगी मोक्ष निसरणी ।
 सूत्रो मे जिसकी शोभा को, स्वय सुधर्मा वरणी ॥तरणी॥
 २—भूतकाल की भव्य कथायें, कितनी जाये वरणी ।
 दशमुख दुख हरणी करणी की, सीता विश्वभरणी ॥तरणी॥

- ४—सप्रति मे भी शीलशिरोमणि, सोहनकुँवरी गुरुणी ।
वैतरणी तरणी जिसकी यह, कथा सुनो मन हरणी ॥तरणी॥
- ५—कलिमल हरणी करणीकर्ता को जाये जो जरणी ।
धन्य वही जग मे 'ललितागज' धन्य वही है घरणी ॥तरणी॥

राग—राधेश्याम

- १—श्री वीर भूमि मेवाड-मध्य, अति सुन्दर सेरा प्रान्त अहा ।
शुचि वसन रूप तरु से शोभित हैं गगनचुम्बि गिरिराज महा ॥
कल कल अरु छल छल क्षरनो की, वजती सितार पुनि मधुर जहाँ ।
जिसकी आभा को चकित-चित्त हो अलकाधिप आलोक रहा ॥
- २—आआदिक मधुर फलो का है, जो प्रान्त मनोहर कोप महा ।
सौरभमय सुमनो का सुन्दर, बहुता समीर निशिद्योस वहा ॥
मन-इच्छित मिलती कर्पों को, शोतोपणा दोनो फसल जहा ।
क्या कहूँ अधिक अनुकम्पा है, जिस पे प्राकृतिक अनूप अहा ॥
- ३—उस सेरा प्रान्त-बीच सुन्दर शोभे है ग्राम त्रिपाल सही ।
जो स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक तीनों मे छाना छुपा नहीं ॥
लिखने को जिस का ललित चरित, 'ललितागज' लेखिनी हुलस रही ।
अवतार लिया आदर्श अहा । गुरुणी श्री सोहन कुँवर वही ॥

लावनी

राग— बिन काज आज महाराज ताज जा मोरी ॥

२ ४ ६ १

विधि वेद अक विधु वर्ष महा सुखदाई ।

तिथि अक्षय को यह अक्षय छवि प्रकटाई । डेर॥

- १— हे जाति जशोधर ओसवाल जग माही ।
जिसमे कुल भोगल-सोलकी छावि छाई ॥
जो वीतराग पद पकज का अनुयायी ।
प्रकटी उस कुल की पेसो यह पुण्याई ।
लघु लेखिनि जिसका लिखे चरित हुलसाई ॥निधि॥
- २— ये पिता "रोडमल जिसक जग विख्याता ।
विदुषी गुलाब कुँवरी थी जिसकी माता ।

श्री प्यारचंद अरु भैरव दो थे आता ।

आलोक ज्ञान वैराग्य जिन्हें हर्षता ।

सीरम गुलाब की उन पर यह प्रकटाई ॥निधि॥

३— पुत्री का भावी सुख दुख पूछनताई ।

घर जोसी जी के शेठ गया हुलसाई ॥

दैवज्ञ देखि ग्रह-कुण्डलि गिरा सुनाई ।

यह भक्ति भगीरथी तुमरे घर चलि आई ।

इसलिये नाम शुभ इसका खिमिया बाई ॥निधि॥

४— द्वितियेन्दु ज्योति ज्यो नित्य वृद्धि को पावे ।

कन्या छूति त्यो ही दिन-दिन बढ़ती जावे ।

जो अष्ट-सिद्धि नव-निधि सी प्रकट लखावे ।

मँगनी हित जिसके कई शेठ चलि जावे ।

हे पुण्य तणी कवि किकर यह प्रभुताई ॥निधि॥

राग—मोहन गारो रे०॥

वर्ष दो माही जी २ ए हुया जबै श्री खिमियाबाई जी ।द्वै॥

१— गुलाबतो का गढ है सुन्दर, मेदपाट के माही जी ।

तखत कुँवर के साथ करी है सुखद सगाई जी ॥

२— जोरी जुगल अनूपम एहो, भव्यो के मन भाई जी ।

किन्तु आतमा झूर काल की, अति कलपाई जी ।वर्ष।

३— अकस्मात् इण कारण उण हो, आपत्ती यह ढाई जी ।

तन चेतनता रोडमल की, गो गट काई जी ।वर्ष।

४— उण विरिया तिरपाल निवासी, सारा लोग लुगाई जी ।

अखियन से असुअन की घारा, अहो बहाई जी ।वर्ष ।

५— परउपकारी हरणी धर्म प्राण हा गो कितशेठसिघाई जी ।

दीनन की उण बिन अब करि हे, कोन सहाई जी ॥वर्ष॥

दोहा

- १— इए विधि आखा गाम मे, शोक तणो ह । शोर ।
जोर-जोर सू सब करे, हा । अकाज भो घोर ॥
- २— छाती माथो कूटती, अर्धांगिनि अणमाप ।
पति-विरहानल मे पडी, पेखो करे प्रलाप ॥

राग—मोहन गारो रे०॥

- हुओ ओ काई जी २ क्यूँ प्राण नाथ ऐ वोले नाई जी ॥टेर॥
- १— तन जीवन धन को चेतन बिन, लखि गुलाब कुरलाई जी ।
एडी मौन आज अलवेसर । क्यूँ अपनाई जी ॥हुवो०॥
- २— मो सू हा । अपराध इसो पिउ । कह दो हुयगो काई जी ।
किण कारण ओ कियो रुसणो, दो फरमाई जी ॥हुवो०॥
- ३— बालूरा बेहद, विलपे अ, आसूडा दग ढाई जी ।
आप विना कुण है अब याँरो, कहो सहाई जी ॥हुओ०॥
- ४— कुत्सित करणी किण भव री आ, हाय उदय हो आई जी ।
अघविच मे वहती रे वाले, मने वहाई जी ॥हुवो०॥
- ५— सुण उणारो ओ करणाक्रन्दन, कुलदेवी कलपाई जी ।
शीघ्र आय उण रे सन्मुख हो, गिरा मुनाई जी ॥हुवो०॥
- ६— नर सुर असुर नाग किन्नर है, जूँण जिती जग माही जी ।
तन नश्वरता किण ही अपणी नही मिटाई जी ॥हुवो०॥
- ७— इए कारण तूँ थिर बित करने, कर शुभ कम कमाई जी ।
शील सलूनी तोरो रच्छक, है जिनराई जी ॥हुओ०॥

राग— जाओ जाओ ओ मेरे साथ ।

- टारे टारे नवकार मत्र यह, विपदा सगरी टारे ॥टेर॥
- १— देवी कहे सती । सुन मेरी, नयना अश्रु न ढारे ।
सजनी । जप नवकार मत्र जो, तोरी विपद विडारे ॥टारे॥

- २—स्थूलिभद्र जिणरे बल देसो, वेश्या री मति-वारे ।
 श्री श्रीपाल भूप पुनि जा-बल, सूरु सिर पग धारे ॥टारे॥
- ३—दमयन्ती कुन्ती कौशल्या ,मैना काज सुधारे ।
 भूत काल की भव्य कयार्ये, कितनी ग्रहो उचारे ॥टारे॥
- ४—निर्मल मन हो नवपद की जो, प्राणी सेवा सारे ।
 शिवरमणी भी फिरती मित्रो, उणरे लारे-लारे ॥टारे॥

लावणी-अष्टपदी

राग—नेम की जान बनी म री० ।

सुरी री सीख सती मानी, लगन उर नवपद री ठानी ॥टारे॥
 लगन जो साचे मन लागे, सफल वो अवस हुवे सागे ।
 पेखलो परतख सब भाई, सती रे लिव री सफलार्ई ॥

बोहा

अमर-गच्छ के सन्त श्री—नेमिचन्द कविराय ।
 ललित लगन से प्रेरित होवे, गये ग्राम मे आय ॥

मिलत

- १— जिन्हो से सुन के जिनवाणी ॥सुरी०॥
 इसो गुरु ज्ञान-सुधा पायो, सती मन पीकर हरपायो ।
 विचारे उर मे धर क्षमता, जगत री भूठी है ममता ॥

बोहा

छाया जिणरी है परे, काया थिर वो नाय ।
 राव रक की गिनती क्या है, स्वय ग्रहो जिनराय ॥

मिलत

- २— एक दिन हुयगे जो फानी ॥सुरी०॥
 अख सुख धर्म बीच राजे, जिसे लखि भव भय सब भाजे ।
 सु-मन हो सेवा जो साजे, सिंह सम निर्भय वो गाजे ॥

दोहा

मेना सुलसा सी ग्रहो, एक न हुई अनेक ।
ग्रन्थो मे जिनकी गरिमा को, दृग उधार लो देख ॥

मिलत

३—

नही है जिनकी छवि छानि ॥सुरी॥
सोच यो सोच भोच बाई, रमयो योग-हृदय-माई ।
किन्तु सुत सुता ओर भाल्यो, नयन से आँसू तब राल्यो ॥

दोहा

मो विन याँरी कौन हा । करि है सार-सँभाल ।
जला रही है एक यही श्रव, योकुं चिन्ता-ज्वाल ॥

मिलत

४—

आड आ मोटी अटकानी ॥सुरी॥
देखि जल माता के नैनो, हुआ बड-सुत को यो कँनो ।
अश्रु क्यो आयें नयनन मे, कहो दुख काई मन मे ॥

दोहा

जननी जरद जनाय दे, मन कल्पे है मोर ।
सादर शीस नमाय के सरे, कल अरज कर जोर ।

मिलत

५—

एखे वा वात मन्त छानी ॥सुरी॥
प्यार जो अरजी गुदराई, उसे द्रुत भेरु अपनाई ।
समर्थन कियो क्षमा वाई, मुदित मन होकर तव माई ॥

दोहा

हृदय सम्राई वात जो, दी उन को दरशाय ।
वात मात की सुनकर तीनो, यो बोले हरपाय ॥

मिलत

६— 'हमारे मन' भी यह मानी ॥सुरी०॥

दोहा

प्यारचन्द भैरव क्षमा, ये तीनों एक साथ ।

अरज करें यो मात से, जोड़ी दोनों हाथ ॥

राग—जागो जागो जी मेरे साधु० ।

लेलो लेलो जी जी जल्दी लेलो, समय शिव सुखदाई । डेर॥

१—परतख ही परखो गुरु-भगा, घर बैठे चलि आई ।

इच्छा पूरण करने में अब, देर करो क्यों माई ॥लेलो०॥

२—जैसे दावी किस्तूरी की, सौरभ रहती नाई ।

वैसी ही सब जान गये हैं, इनके मन की भाई ॥लेलो०॥

३—गढ़ दुलाबतो से, दौड़े, सम्बन्धी तब आई ।

करी सगाई हम ना छोरे, ऐसी बात सुनाई ॥लेलो०॥

४—सज्जन, सनेही मिल समजावे, पै वे समझे नाई ।

आखिर गये भगडते दोनों, राज कचहरी माई ॥लेलो०॥

५—न्यायी हाकिम ने खिमिया को, अपने पास बुलाई ।

साम दाम अरु दण्ड भेद से, बहुतेरी समजाई ॥लेलो०॥

६—हाकिम कहे मानजा नहितर, दू ला खाल खिचाई ।

तब तो अपनी भाषा में यो, बोली खिमिया बाई ॥लेलो०॥

७—दरखत ऊपर, बाघ कोअडा, मारो आप भलाई ।

तन करदो चेतन बिन तो भी, मैं परणीजू नाई ॥लेलो०॥

दोहा

१— नन्ही ऊमर में निरखि, प्रज्ञा अहो । प्रवीन ।

हाकिम साहिव भी हुये, विस्मय बीच विलीन ॥

२— धर्म अर्थ अरु काम पुनि, मोक्ष पदारथ चार ।

नर सेवे हो निडर निज, इच्छा के अनुसार ॥

राग—इक तीर फँकता जा, तिरछी कबान घाले

ऐसा विचार करके, हाकिम हुकम सुनावे ।
कानून से रुकावट, शुभ काम में न आवे ॥टेर॥

- १— एकान्त सत्य करणी, कानून से परे है ।
इस हेतु हम उसे तो, हाँ रोकने न पावें ॥ऐसा०॥
- २— नर योनि में निराला, स्वात्माभिमान सोहे ।
उसको बताओ हम किस, कानून से हटावे ॥ऐसा०॥
- ३— निज बुद्धि के मुग्धाफिक, मैंने इसे टटोली ।
भरना भला, न करना, यह तो विवाह च्हावे ॥ऐसा०॥
- ४— है रग ना पतंगी, जिसको कि आप धोये ।
यह रग है किरमची, घोया घुला न जावे ॥ऐसा०॥
- ५— ये आपके रु मेरे, रोके नहीं रुकेगी ।
अतएव खुश मना हो, आज्ञा इसे दिरावे ॥ऐसा०॥
- ६— सुन फैसला सयाना, ललितागज हरपकर ।
“सत्योक्ति माम् पुनातु,” कह शीस को भुकावे ॥

राग—अगर है मोक्ष की वांछा

हुआ यह हुक्म जब जाहिर, मोद सबने मनाया है ।
चतुर्विध सध में मित्रो ! बड़ा आनन्द छाया है ॥टेर॥

- १— सु गुरु पै मुदित मन आकर, सविधि कर वन्दना सादर ।
विजय का वृत्त सब उनको, उन्होंने कह सुनाया है ॥हुआ॥
- २— विनय फिर यो करे सब ही, रखे जो धर्म पै आस्ता ।
वरे वह विजय लक्ष्मी को, नजर यह स्पष्ट आया है ॥हुआ॥
- ३— खडे पद-पकजो में ये, पिपासु धर्म के प्राणी ।
कृपालू कर कृपा करिये, इन्हो पै छत्र छाया है ॥हुआ॥
- ४— महाव्रत पच की शिक्षा, भरी भिक्षा इन्हे देकर ।
शरण में शीघ्र ही लीजे कलपती इनकी काया है ॥हुआ॥

- ५— विनय श्री सध का गुरु ने, किया स्वीकार खुश होकर ।
घरा शिर हाथ बच्चों के, सभी जन मोद पाया है । हुमा ।

‘हरिगीतिका’

- १— गुरुदेव के पद पकज मे, अब प्यार भैरव तो रहे ।
स्वीकार सादर द्रुत करें, गुरुदेव जो इनको कहे ।
अध्ययन शेषकाल नदी, सूत्र का सुन्दर करें ।
यम नियम प्रत्याख्यान पीपघ आदि शुचितप को वरे ॥
- २—^१ आलोक इनकी वृत्ति निर्मल, सुगुरु खुश हो यो भने ।
वैरागियो ! है चावने ये, सार के कसे घने ।
गुरुदेव की महती कृपा लखि, बाल विनती यो करे ।
क्या कठिन है ससार मे, जिसके कि शिर गुरुकर धरे ॥

दोहा

- १— इस प्रकार अवलोकिये गुरु की सेवा माय ।
वैरागी दोनो रहे, हिय मे अति हरषाय ।

२०

राग—राधेश्याम

- १— करते विहार ग्रामानुग्राम,
शिवगज पधारे सद्गुरु जब ।
मन मुदित हुआ श्री सध करे,
गुरु से सविनय यो विनती तब ॥
- २— है योग्य उभय वैरागी,
अब दीक्षा लेने के स्वामी ।
इसलिये महोत्सव करने का,
दो हुक्म हमे अन्तर्यामी ॥
- ३— शिवगज सध का अति आग्रह,
आलोक वदे यो गुरु ज्ञानी ।

।। "यतनीयम् शुभे यथाशक्ति," -
है सुन्दर यह आगम बानी ॥

४— आदेश गुरु का ऐसा पा,
श्री सध मुदित-मन को आला ।
तन मन से दीक्षोत्सव प्रवध,
आदर्श किया है तत्काला ॥

५— दीक्षोत्सव देखन सहघर्मी,
चलि दूर-दूर से आये हैं ।
वे आत्मानदी दृश्य देखी,
मन अपने अति हर्षये हैं ॥

६— है धन्य अहा ! ये आत्माएँ जो,
भव भय को दूष निवार है ।
लो कह कर के सब एक स्वर,
जय जय जय शब्द उच्चार है ॥

दोहा

१— इस प्रकार आनन्द युत, दीक्षा ले दुहँ आत ।
ज्ञान ध्यान सीखे सदा, विचरे गुरु के साथ ॥

लावनी

राग—बिन काज आज महाराज

अब सुनो सभी नर नार चित्त निज धिर कर ।
खिमिया गुलाब की कथा नीद को परिहर ॥टेर॥

१— श्री रायकुँवर जी महासती सद्गुरुणी ।
श्री अमरगच्छ की सतियो बीच शिरोमणी ।
जो समय निष्ठा उत्तम करते करणी ।
जिनकी ये दोनों बनी अहो । अनुचरणी ।
यो करें विनय उनके पद पद्म पकर कर ॥अब॥

- २— हैं अबलाएँ हम दोनों अति दुखियारिन ।
अविलम्ब हमारी विपदा करो निवारन ॥
है विरुद आपका भव्य तिरन अरु तारन ।
इस हेतु बनावें आप हमें सुखियारन ॥
कर कृपा दिरावे सयम हमें शिवणकर ॥अब॥
- ३— तयनन मे इनके गुरुणी जी लखि पानी ।
करुणाकर करुणा भरी वदे यो वानी ॥
जो जपे जाप नवकार भूष को प्राणी ।
तो हो जावे उसके सघरे दुख फानी ।
यह कथन सत्य है भूठ न एक रती भर ॥अब॥
इस हेतु प्रथम निज दिनचर्या शुभ कीजे ।
व्रत पोषध प्रत्याख्यान बीज व्रित धीजे ॥
सविनय कर सेवा गुरु ज्ञानामृत पीजे ।
जिससे हँ, ममता-नागिन का मद छीजे ॥
हो अभय वरो फिर तुम दोनों सयम वर ॥अब॥
- ४— सुन सदुपदेश यो दोनों गुरुणी जी का ।
मन सोचे पाया कैसा गुटका धी का ।
अब तो ये दोनों तप से तन को तावे ।
अरु ज्ञान ध्यान करने मे चित्त लगावे ॥
कर करणी गुरुणी जी का लीना मन-हर ॥अब॥
- ५— यो करणी इनकी उत्तम लखि गुरुणी जी ।
अविलम्ब उचारे वाणी मनहरणी जी ।
अब सिद्ध मनोरथ करो सफल करणी जी ।
सयम-तरणी चढ तिरलो वेंतरणी जी ।
पा ऐसी आज्ञा, परम शान्ति ली उर घर ॥अब॥
- ६— अविलम्ब हि उन ने जोशी को बुलाया ।
अरु दीक्षा लेने हेतु लग्न दिखलाया ।
देवज्ञ देखि पचाग रु वचन सुनाया ।
अति-उत्तम मुहूर्त भाग्य विवश यह आया ।
मत करना इसमे फेर-फार इक-पल-भर ॥

- ८— ^६निधि ^५परमेष्ठी-^६निधि-^१विष्णु वत्सर मनभाया ।
 आषाढपुरी तृतिया का मुहुरत आया ।
 पंचभदरा सुन्दर शहर मरुस्थल माही ।
 दी दीक्षा इन को वहाँ नेमी-गुरुराई ।
 श्री रायकुंवर की शिष्याएँ धोपित कर ॥श्रव॥

राग—दिल जाने से फिदा हूँ ।

- गुरुदेव ने इन्हे जव, सयम सुधा पिलाया ।
 सानन्द पी हृदय मे शुचि योग को रमाया ॥टेर॥
 १— इनके जु मोक्ष पथ के, दोनो पाथक सयाने ।
 निज ध्येय साधेन मे, आदश जो लगाया ।गुरुदेव।
 २— अभ्यास शास्त्र का फिर, करने लगी मनोहर ।
 जिसको विलोकिजियरा, कलि कालका जलाया ।गुरु०।
 ३— दीक्षा लिये इन्हो को, पङ्मास ही'हुए थे ।
 शिर-छत्र हाथ उनका, उसने उहो उठाया ।गुरु०।
 ४— नर नाग क्या सुरासुर, सर्वज्ञ-सिद्ध हमारे ।
 भोगे अवश्य जैसा, जिसने करम कमाया ।गुरु०।

राग—राघेश्याम

- १— शुचि सयम लिये इन्हे मित्रो ।
 हा एक अयन भी हुआ नहीं ।
 हत्यारा काल अचानक आ,
 शिर-छत्र इन्हो का हरा सही ॥
 २— श्री रायकंवर जी गुरणी जी,
 रयणी मे सोते स्वप्न लखा ।
 अति-मोटा कुभ सरिसा मुक्ता,
 उसस्वप्न मे उनने जु लखा ॥
 ३— वे समजगये सकेत महा,
 यात्रा का अन्तिम है एहो ।

मतएव सजग होकर सत्वर,
जो किये कृत्य पडिलेहो ॥ —२

- ४— ऐसा विचार निश्चय करके,
अविलम्ब सघ को बुलवाया ।
अरु चोविहार उपवास शास्त्र,
उनकी से पचखा मन भाया ॥

वोहा

- १— करके शुचि सलेखना, हो समाधि म लीन ।
ज्योति ज्योति मे जा मिली, पेखो परम प्रवीन ॥ —१

राग—राघोस्याम

- १— बिन चेतन के तन को निहार,
सद्गुरुणी जी की शिष्याएँ ।
हा ! कएँ-कटु करुणा क्रन्दन,
करती वे यो है कल्पाएँ ॥ —४

- २— यो करी मौन धारण जिसका,
कहिये करुणा कर क्या कारण ॥ —५
हा दयानिधे ! करुणासागर ।
हा अशरण-शरण, तरण तारण ॥

- ३— अपराध हुआ क्या हम से जो । —३
यो आप सब मुख मोर लिया ।
भयभीत हुई भव-भय से हम,
चित चरणो मे तुमरेजु दिया ॥

- ४— तुम आश्रय किसके छोर गये,
हमको हा ! स्वामिनि ! बतलाओ ।
कलपाओ मत यो मधुर गिरा,
इक बेर कृपा कर फरमाओ ॥

- ५— यो विलपे हैं सब शिष्याएँ,
हो व्यथित शोक के बानो से ।

अन्दन पै सोहनकुँवरी का,
हा ! सुना न जाये कानो से ॥

६— कारन ही इसको हुये नही,
पड़ मास हि दीक्षा लिये सहो ।
इसलिये व्यथा इसके दिन की,
"कवि किकर" कैसे जाय कही ॥

७— श्रद्धेय सद्गुरु श्री नेमिचन्द्र,
कर करुणा धैर्य बँधाया है ।
अरु चौमासा मे शास्त्र ज्ञान,
दे इसका दुख मिटाया है ॥

दोहा

१— ऐसे वर्षावास दो, सद्गुरु अपने पास ।
कर वाया है करकृपा, सुन्दरशास्त्राभ्यास ॥

राग—राघेखान

१— यो पाकर सद्गुरु से प्रबोध,
कर आत्म-शोध के भाव जगे ।
इस कारन नश्वर तन से तप,
आदर्श अहो ! करने जु लगे ॥

२— उपदेश इन्हो का सुनकर के,
मन वशीकरण का धवराया ।
इस हेतु इन्हो के वचनो मे,
आ अपना गौरव प्रकटाया ॥

३— सानन्द सिंह सी गुजाते,
जयकारी जब ये जिनवाणी ।
हो जाते मन्त्रमुग्ध तब से,
खुनते ये शुध-मन जो प्राणी ॥

‘कुण्डलिया’

- १— नर से नारायण बने, जाको जन्म प्रमान ।
नर होकर सर जो बने, वो है नीच महान ॥
वो है नीच महान, ज्ञान अपना जो खोवे ।
गेवे वागो पाठ-पाठ, पं अत्र क्या होवे ।
या हित डरपो बन्धु ! कर्म करते हा । सर से ।
कर करणी उत्कृष्ट, वनो नारायण नर से ॥

बोहा

- १— आये मूँठी बाँध हम, जायें हाथ प्रसार ।
करणी अव ऐसी करें, अवसर लें अवतार ॥
- २— विजुरी, सो बमब निरखि रे मन । तू मन फल ।
कर मे हैं करुपाण तो, बहती नदियो भूल ॥
- ३— उपदेशामृत पान कर, इनका परमोदार ।
मंत्र-मुग्ध से मन हि मन, हो जाते नर नार ॥

राग—राघोष्याम

- १— सुनते ये कानो, व्याधि-व्यथित, है महासती जी अमुक अहो ।
तत्काल, उन्हो के निकट जाय, यो कहते क्या है दुःख कहो ॥
- २— तन मन से सेवा करने मे, लग जाते दिन अर रात अहा ।
है सेवा धर्म गहन अति ही, जो योगिन के भी अगम अहा ॥
- ३— भर यौवन मे मन्मथ-मुद्रा, जिनके पद पकज-तले रही ।
लखि छवियो जिनके लारलार, रति की मति भी हा डले रही ॥
- ४— जो चार चार महिनी तक भी तन के वस्त्र नहीं धोते थे ।
तप तपते तब तो दिन मे वे, नहि एक मिनिट भी सोते थे ॥
- ५— ये हुये वर्ष सोलह के जब तप मास-खमण का घोर किया ।
आलोक जिसे आ-बाल वृद्ध-मन मुदित हुए घयवाद दिया ॥
- ६— जब करते मास खमण तब भी, व्याख्यान हमेशा फरमाते ।
आलोक प्रभा इनकी अद्भुत, मन मे मिथ्यात्वी चकराते ॥

दोहा

- १— इस विध अति आनन्द-प्रद, जिनवाणी का स्रोत ।
यत्र तत्र सुन्दर बहा, करने धर्मोद्योत ॥

राग—राधेरयाम

- १—आहार पौरसी प्रथम वाद, आजीवन जिनने मदा किया ।
प्रत्येक पारणा तप का फिर, तज तीन पौरसी वाद किया ॥
- २—मिष्टान्न त्याग रस त्याग और, फिर विगय त्याग छोटे-मोटे ।
घुटते सदैव हा रहते थे, पचखाण के यो सुन्दर घोटे ॥
- ३—अस्वस्थ अवस्था में केवल, इन का प्रतिबन्ध खुला धरते ।
पनि दोनो आठम चौदस को, प्रतिमास न भोजन जो करते ॥
- ४—उपवास की गिनती कौन करे जिन किये अहो ! अस्सी बेला ।
फिर किये मौन रख जीवन में, निर्जल जिनने इक्कसठ तेला ॥
- ५—चोले की सख्या पैसठ है, चालीस किये जिन पचोले ।
छ छ भी जिन चालीस किये, सातो के आये दो भोले ॥
- ६—कीवी पचास अट्ठाये जिन, दस नव के थोक किये मनहरे ।
दो दफे किये दस दस रु दफे—दो एकादश हा अति सुन्दर ॥
- ७—फिर किये बार दो बारह अरु, तेरह की सख्या एक सही ।
चौदह भी एक बार जानो, पन्द्रह भी हा उससे अधिक नहीं ॥
- ८—सोलह का थोक तीन विरिया, अरु सतरह दोय दफे जानो ।
अट्ठारह एक दफे सुन्दर, उन्नीस एक फिर पहिचानो ॥
- ९—जिन किये बीस दो दफे गोर, इक्कीस एक विरिया सुन्दर ।
बावीस दोय, तेवीस एक, चौवीस किये जिन दो मनहर ॥
- १०—शुचि मास खमण जिन तीन किये, इक किया थोक तेतीसो का ।
इस भाति तपाया तन को जिन भजन हित भव-भय का घोखा ॥
- ११—पट्शास्त्र विशारद पूज्यपाद, आचार्य जवाहिरलाल अहा ।
पुनि जैन दिवाकर, जग वल्लभ, श्री चौथमल्ल मुनिराज महा ॥

१२—सानन्द चतुर्विध सध ग्रहो !, होकर प्रसन्न अपने मन में ।
 है दिया प्रवर्तिनि पद दा यो, भजमेर महा-सम्मेलन में ॥

बोहा

१—, पाई प्रभुता प्रवल यो, कर करणी उत्कृष्ट ।
 तदपि इनके वदन पै निरख्यो मद नि कृष्ट ॥

राग—राधेश्याम

- १—है नेत्रायित जिन की सुन्दर, शिष्याएँ जिनका नाम ग्रहा ।
 श्री प्यार कवर ग्रह पदम कवर, पुनि मोहन मनोज महा ॥
- २—श्री गेंदकँवर ग्रह देवकँवर, श्री राजकँवर जी महासती ।
 श्री विमल कँवर ग्रह सजन कँवर, सोभाग्य कँवर जी महासती ॥
- ३—श्री चतुर कँवर पुनि प्यार कँवर, परताप कँवर सन्मति धारी ।
 सेवा गुलाब सद्गुरणी की, आदर्श करी हा अविकारी ॥
- ४—है विनयवती कैलाश कवर, ग्रह वसुमवती विदुषी भारी ।
 व्याकरण मध्यमा पास ग्रहो ! है पुष्पवती सन्मति वारी ॥
- ५—श्री प्रभावती जी पुण्यात्मा, श्रीमती और मोहनकवरी ।
 श्री प्रेम कँवर ग्रह चाँद कवर, पुनि चन्द्रवती सद्बोध भरी ॥
- ६—श्री रतन कवर ग्रह दाखा जी, है सुगुनवती जी अति नीकी ।
 पुनि रूप कवर परकाशकवर, ये नेत्रायित गुरुणी जी की ॥
- ७—इन में से कितनी ही सतियें, कर करणी उत्तम स्वर्ग गई ।
 सेवा गुरुणी जी की साजे, जो सप्रति, मे मौजूद सही ॥

बोहा

१—, किन किन गाम र शहर मे, गुरुणी जो चौमास ।
 किये विगत उनकी सुनो, उर मे धरी उल्लास ॥

चौपाई

१—सयम ले पचभदरा माही,
 कियो प्रथम चौमास वहाँ ही ।

- पुनि झाडोल गाम पहचानो,
तत् पश्चात् थावला जानो ॥
- २—श्री सनवाड और पुनि घासा,
चन्देरा उदयापुर खासा ।
गोगुम्दा है ग्राम मनोहर,
और भीलवाडा अति सुन्दर ॥
- ३—पुनि डवोक, नाई पहिचानो,
घाणेशव सादडी जानो ।
सुखद देलवाडा जग जहारी,
और सलोदा शाताकारी ॥
- ४—ग्राम डूगले कर चोमासा,
भरी भावुको की मन आशा ।
श्री इन्दौर शहर अति मोटा,
और किया पावन पुर कोटा ॥
- ५—मदनगज, जयपुर, धजमेरा,
व्यावर अरु जेवाजा हेरा ।
नाथदुवारा परम प्रवीना,
अरु पीपाड भक्ति रस भीना ॥
- ६—जस धारी जोधाणा मांही,
धर्म ज्योति आदर्श जगाई ।
अन्तिम चोमासा पाली कर,
निर्मल ध्यान निरजन का घर ॥
- ७—वेद नेत्र नभ कर वर्षाला,
भादो सुदि तेरस तिथि आला ।
सोहनकवर समाधी ठाई,
ज्योति ज्योति मे अहो ! रमाई ॥
- ८—पाली सघ भक्ति रस भीना,
निर्वाणोत्सव सुन्दर कीना ।

कवि-किकर यो करणी करते,
वे ही नर अक्षय सुख वरते ॥

कुण्डलिया छन्द

१— शरण कर नम कर वरप, भादव पख उजियार ।
तिथि तेरस को तत्त्व विद, सुरपुर गये सिधार ॥
सुरपुर गये सिधार, छार शिष्याए उनमुनि ।
छाया शोक अपार चतुर्विध सघ बीच पुनि ॥
कवि किकर कलपाय, जाय वह तो नहि वरणा ।
गुरणी सोहन कवर, लिया जब सुरपुर शरणा ॥

छप्पय-छन्द

१— जैन-धर्म स्याद्वाद सरस सिद्धान्त प्रवीना ।
गुरु मुख से समझा रहस्य उसका अति झीना ॥
मन मतंग को तप अकुश से वश मे कीना ।
सायम का पीयूष वर्ष चौंसठ जिन पीना ॥ १—५
यो निर्मल निज जीवन बना, सुरपुर मे जा सचरे ।
उस गुरुणी सोहन कवर को, नित उठ बन्दन हम करें ।

दोहा

१— शर कर नम कर वर्षे गुरु पूनम गनमाल ।
गुरुणी जी, रा सुगुन अ, लिखिया लेखक-बाल ॥



